विक्रमादित्य वीरगाथा

पुस्तक ३

राष्ट्रीय बेस्टसेलर शृंखला

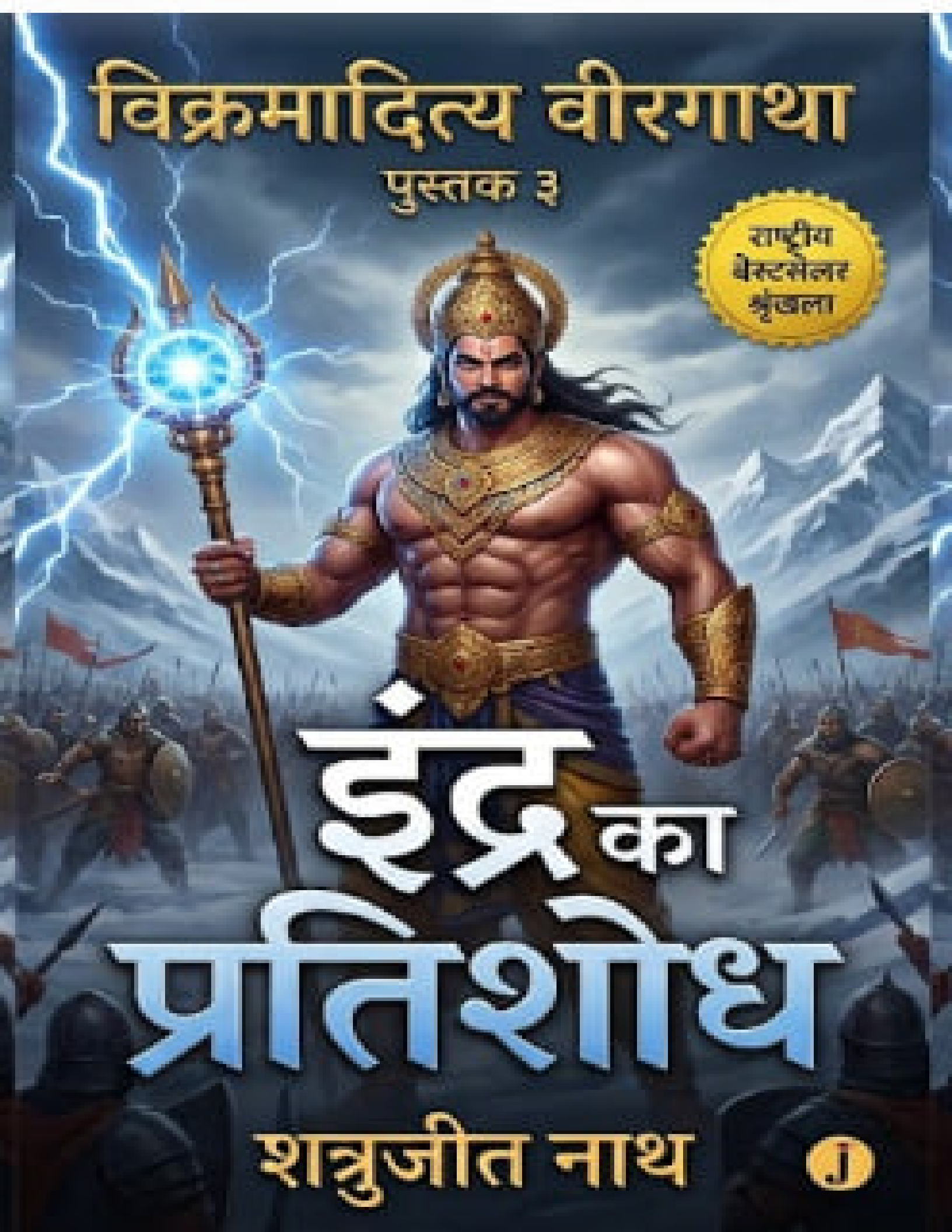

इंद्र का प्रतिशोध

शत्रुजीत नाथ

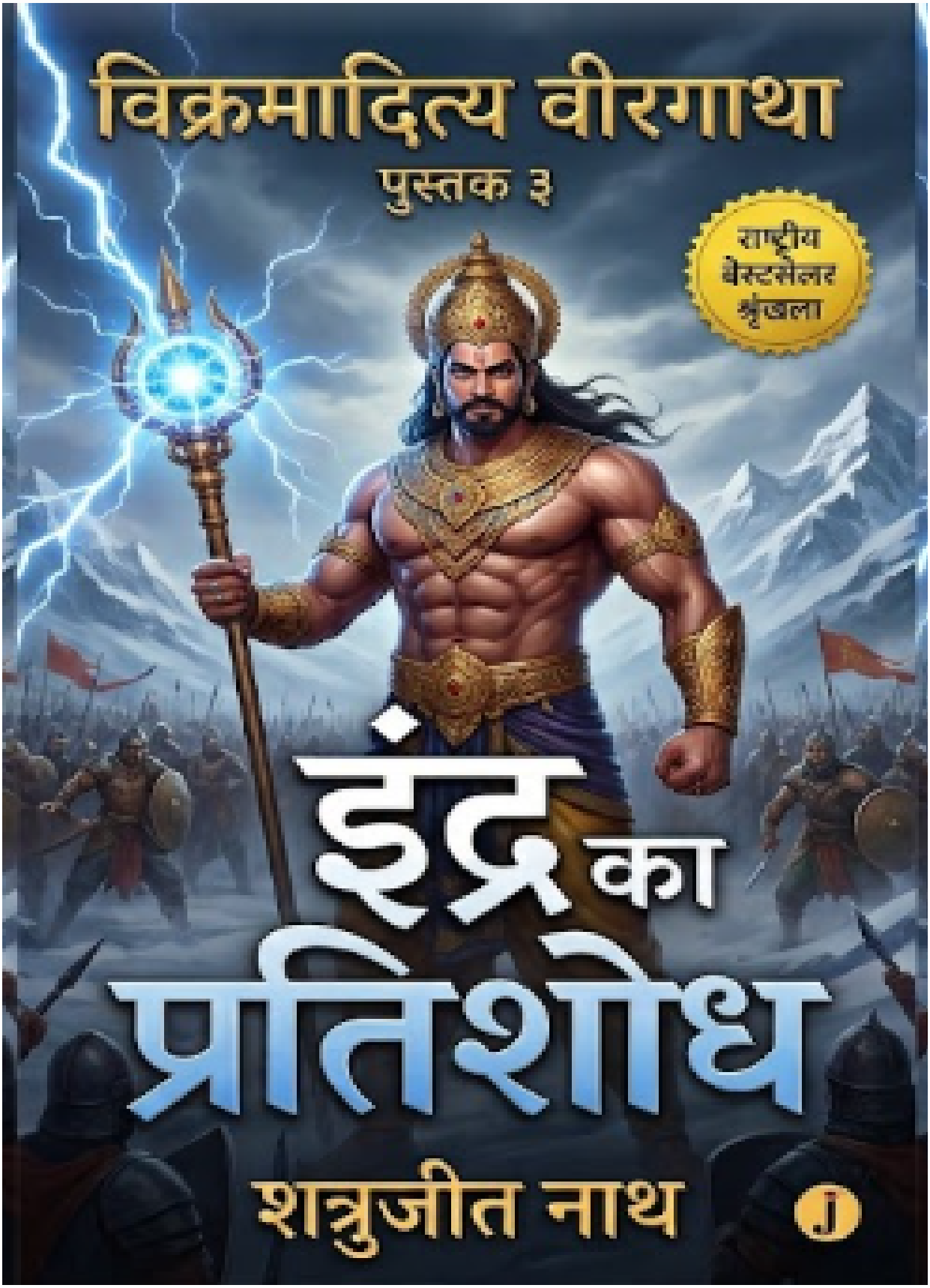
विक्रमादित्य वीरगाथा
पुस्तक ३
राष्ट्रीय बेस्टसेलर शृंखला
इंद्र का प्रतिशोध
शन्तुजीत नाथ

VIKRAMADITYA VEERGATHA

BOOK 3

THE VENGEANCE OF INDRA

NATIONAL BESTSELLING SERIES

SHATRUJEET NATH

JAICO PUBLISHING HOUSE

Ahmedabad Bangalore Bhopal Chennai
Delhi Hyderabad Kolkata Lucknow Mumbai

जैको पब्लिशिंग हाउस द्वारा प्रकाशित, ए-2 जैश चैंबर्स, 7-ए सर फिरोजशाह मेहता रोड, फोर्ट, मुंबई - 400 001, jaicopub@jaicobooks.com, www.jaicobooks.com
© Shatrujeet Nath
VIKRAMADITYA VEERGATHA: BOOK 3
THE VENGEANCE OF INDRA
ISBN 978-93-86867-57-5
पहला जैको संस्करण: 2018
तीसरा जैको संस्करण (नया कवर): 2021
इस पुस्तक का कोई भी भाग प्रकाशकों की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक रूप से, जिसमें फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी भी सूचना भंडारण और पुनर्प्राप्ति प्रणाली शामिल है, पुनरुत्पादित या उपयोग नहीं किया जा सकता है।

विजयम मामी, चित्रा मामी और रघु मामा को। आपके बिना, 1988 में कोच्चि की कहानी कभी नहीं होती, और जीवन ने इतना रोचक मोड़ नहीं लिया होता।

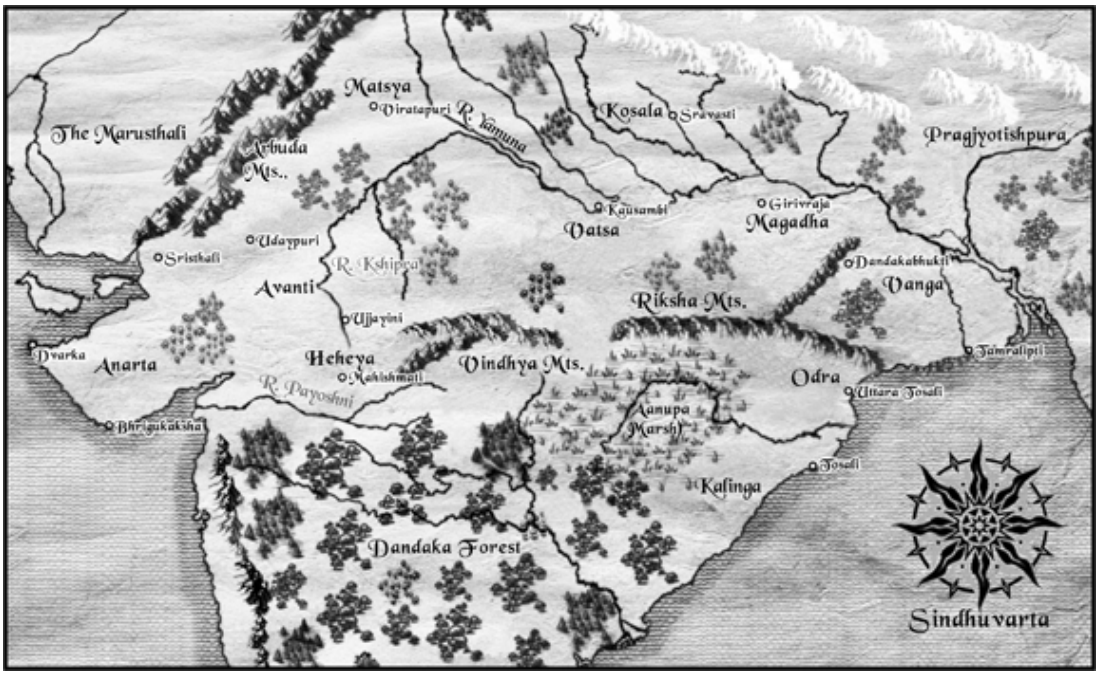

प्रमुख पात्रों की सूची

(वर्णमाला क्रम में)

इंसानों

अवंती का साम्राज्य

आत्रेया

मलावा का व्यापारी

Ajanya	शाही सेना के कमांडर
अमरा सिम्हा	अवंती के पार्षद
अंगामित्रा	संसप्तकों का कप्तान
Aparupa	आत्रेय की पुत्री
अतुल्यत	उदयपुरी के गैरीसन कमांडर
ब्रिच्छा	शंकु के पिता
Chirayu	राज्यपाल सत्यवेदा का चापलूस
ज्येष्ठ	श्रीस्थली कमांड सेंटर के कमांडर
Dhanavantri	अवंती के सलाहकार और शाही चिकित्सक
द्विया	अपारूपा का साथी
Ghatakarpara	अवंती के पार्षद; विक्रमादित्य और वररुचि के भतीजे
ग्रीष्मा	डाकू; दंडका वन से भागा हुआ
देवदार	शाही सेना का कप्तान
कालिदास	अवंती के पूर्व पार्षद
Kshapanaka	अवंती के पार्षद; रानी विशाखा की बहन
कुब्जा	आत्रेय की दुकान पर काम करने वाला मजदूर
भूख	अवंती के महल में चिकित्सक
Mahendraditya	अवंती के दिवंगत राजा; विक्रमादित्य, वररुचि और प्रलुपि के पिता
Mithyamayi	Vismaya’s niece; maid to Pralupi

मदर ओरेकल	शंकु की दादी; घुमंतू जनजाति की मुखिया
Pralupi	विक्रमादित्य की बहन; घटकर्परा की माँ
पुल्यामा	शाही सेना का कप्तान
Satyaveda	मलावा प्रांत के राज्यपाल
शंकु	अवंती की पार्षद; मदर ओरेकल की पोती
Sharamana	मुसिली के गैरीसन कमांडर
Subha	उदयपुरी की चौकी में द्वितीय कप्तान
सुहासा	शाही सेना के कमांडर
Udayasanga	संसप्तक योद्धा
Upashruti	विक्रमादित्य और प्रलूपी की माता; महेंद्रादित्य की द्वितीय पत्नी
Ushantha	वररुचि की माता; महेंद्रदित्य की प्रथम पत्नी
प्रारंभिक हमीहिरा	अवंती के पार्षद
बुनकरों	अवंती के पार्षद; विक्रमादित्य के सौतेले भाई
Vetala Bhatta	अवंती के मुख्य सलाहकार; शाही शिक्षक
विक्रमादित्य	अवंती का राजा
Vishakha	विक्रमादित्य की पत्नी; क्षपणक की बहन
विस्मया	महल के रक्षकों का प्रमुख

मगध साम्राज्य

अस्माबिंदु	मगध के पार्षद
Daipayana	मगध सेना का सेनापति

कपिला	दिवंगत राजा सिद्धसेना के दूसरे पुत्र
Shoorasena	मगध का राजा; दिवंगत राजा सिद्धसेना का बड़ा पुत्र
Siddhasena	मगध के दिवंगत राजा

पेट का साम्राज्य

Chandravardhan	वत्सा का राजा; अवंती का सहयोगी
Himavardhan	चंद्रवर्धन के भाई; घटकर्पर के पिता
पीयूषा	शशिवर्धन का अंगरक्षक
Shashivardhan	वत्स के चन्द्रवर्धन का पुत्र
जीविका	पेट के पार्षद

कोसला साम्राज्य

अधीपा	कोसला की सेना का सेनापति
भूमिपाला	कोसला का राजा; अवंती का सहयोगी
गायकेतु	घुमंतू संगीतकार
चौखटा	कोसला का दरबारी
डोरी	कोसला का दरबारी
पल्लव	कोसला के दूत और पार्षद

हेहेया का साम्राज्य

Harihara	हेहेया का राजा; अवंती का सहयोगी
रुक्मा	हेहेया के हरिहारा की पुत्री
सुमयंती	हेहेया की रानी

मत्स्य साम्राज्य

एड्रियन	कासवती के गैरीसन कमांडर
केले	मत्स्य का राजा; अवंती का सहयोगी

अनार्ता फेडरेशन

Yugandhara	अनार्ता संघ का प्रमुख; अवंती का सहयोगी
मणिधरा	अनार्ता संघ के प्रमुख

वांगा गणराज्य

Bhadraka	सरदार बनो
Sudasan	वांगा गणराज्य के चांसलर

हूण

हिल्स	Huna shaman
गाउर थ्राखा	कालिदास का हूण नाम
Khash'i Dur	हूणों का प्रमुख
ज़ो एरामी स्वर्गीय	हूण सरदार; कालिदास के पिता

ओद्रा और कलिंग के राज्य

अभिरामी	ओद्रा की रानी; वीरयंका की बहन
वीरयांक	कलिंग का राजा; अभिरामी का भाई

देवता

एग्नी	अप्सरा और अग्नि-प्रेतों की मुखिया
Brihaspati	देवों के शाही पादरी
दशहरा	अश्विनों का कप्तान; नासत्या का जुड़वा भाई

Gandharvasena	देव को
इंद्र	देवों के स्वामी; देवलोक के राजा
जयंत	इंद्र के पुत्र
मन्यु	देवलोक के महल रक्षक
प्रतिनिधित्व करना	देव को
तेल	देवलोक की अप्सरा
नारदा	देवलोक का दूत और इंद्र का सलाहकार
नासत्या	अश्विनों के कप्तान; दासरा के जुड़वां भाई
Shachi	इंद्र की पत्नी; जयंत की माता
अश्विन	नासत्य और दसरा के नेतृत्व में देवलोक की विशिष्ट घुड़सवार सेना
मरुत	दिति के सात पुत्र
Urvashi	देवलोक की अप्सरा और इंद्र की प्रेमिका

असुरों

आदेश	asura general; son of Shukracharya
Andhaka	अंधा राक्षस
Chandasura	asura general; son of Shukracharya
कहना	जादूगरनी और असुरों की कुलमाता
Hiranyaksha	असुरों के स्वामी; पाताल लोक के राजा
मलाईदार	हिरण्याक्ष की बहन और पाताल लोक की चुड़ैल रानी

Shukracharya	असुरों का महापुजारी
पोशाक	हलाहला का चोर

अन्य

अही	सर्प-ड्रैगन
वेतन	घोलमास्टर; बॉर्डरवर्ल्ड का स्वामी
क्योंकि	यक्षों का स्वामी
Shalivahana	दानवों के स्वामी
शिव	सर्वज्ञानी
Takshaka	नागों का स्वामी
त्रिभानु	किन्नरों का स्वामी

भारतीय शब्दावली
(वर्णमाला क्रम में)

अंत तक	आकाशगंगा
अम्लिक	इमली का पेड़
angavastram	धड़ को ढकने के लिए एक स्टोल या हल्का शॉल
अप्सरा	हिंदू धर्म में एक सुंदर, अलौकिक स्त्री।
badi-maa	बड़ी माँ; संबोधन का एक रूप
barasingha	दलदली हिरण
चक्रम	एक फेंकने वाला हथियार, जो आकार में वृत्ताकार होता है

danava	हिंदू धर्म में एक पौराणिक जाति
डंडा	एक छड़ी
गॉडफादर	देवदार की एक प्रजाति
धोती	पुरुषों का पारंपरिक परिधान
घाट	एक पवित्र नदी की तरह जल निकाय की ओर जाने वाली सीढ़ियाँ
gurudev	स्वामी या शिक्षक; संबोधन का एक रूप भी।
jal-yantra	एक भारतीय ताल वाद्य यंत्र
कश्यु	आयुर्वेदिक औषधि
कतरी	एक मुट्ठी खंजर
ketaki	सुगंधित स्क्रू पाइन
किमशुक	जंगल की ज्वाला
किन्नरा	वैदिक भारत की एक पौराणिक जनजाति
महान शिक्षक	गुरु या शिक्षक; संबोधन का एक रूप भी।
मंडल	हिंदू धर्म में ब्रह्मांड का प्रतिनिधित्व करने वाला एक आध्यात्मिक और अनुष्ठानिक प्रतीक
नगा	वैदिक भारत की एक पौराणिक जनजाति
parijata	मूंगा चमेली
pishacha	हिंदू धर्म में एक पौराणिक मांसाहारी राक्षस
pranaam	अभिवादन

शाही यज्ञ	प्राचीन भारतीय राजाओं द्वारा सम्राट के रूप में राज्याभिषेक से पहले किया जाने वाला अनुष्ठानिक बलिदान
राज-गुरु	शाही शिक्षक; संबोधन का एक रूप भी।
राक्षस	हिंदू धर्म में एक पौराणिक मानवाकार प्राणी
रोटी	भारतीय रोटी
रुद्र वीणा	एक भारतीय तार वाद्य यंत्र
सलमाली	लाल रेशम-कपास का पेड़
सम्राट	सम्राट या अधिपति
samsaptaka	पौराणिक योद्धाओं की एक जनजाति
सोम	वैदिक अनुष्ठान पेय
suryayantra	एक हेलियोग्राफ
छितराया हुआ	भारतीय तेजपत्ता बटेर
teetar	निशान
tilaka	हिंदुओं द्वारा माथे पर पहना जाने वाला वस्त्र
डांटना	एक लंबी तलवार जिसका ब्लेड लचीला और चाबुक जैसा होता है
डॉक्टर / वैद्यनाथ	चिकित्सक; साथ ही एक सम्मानसूचक उपाधि और संबोधन का रूप।
वामसी	बांसुरी
यक्ष	हिंदू धर्म में एक पौराणिक आत्मा

लेखक का नोट

जब मैंने 2013 में विक्रमादित्य की कहानी लिखना शुरू किया था, तब मैंने अनुमान लगाया था कि यह कहानी तीन खंडों में फैलेगी, इसीलिए इस श्रृंखला का नाम 'विक्रमादित्य त्रयी' रखा गया और इसी नाम से इसका प्रचार किया गया। लेकिन 'मेरु में षड्यंत्र' पूरा होने तक, मेरे प्रकाशक और मुझे इस बात में कोई संदेह नहीं रहा कि यह श्रृंखला चार पुस्तकों में फैलेगी। कहानी समय के साथ विस्तृत होती गई, और कई महत्वपूर्ण और रोचक उप-कथानक सामने आए जिन्हें पनपने और विकसित होने के लिए अलग स्थान की आवश्यकता थी।

स्वाभाविक रूप से, श्रृंखला को अब त्रयी नहीं कहा जा सकता था। मैं इसे 'चतुर्भाग' कहने के सख्त खिलाफ था, इसलिए थोड़ा सोचने-विचारने के बाद हम विक्रमादित्य वीरगाथा नाम पर सहमत हुए - वीरगाथा का अर्थ है वीरता का गीत या महाकाव्य।

मैं यह बात इसलिए उठा रहा हूँ क्योंकि पाठकों में कुछ भ्रम है, जिनमें से कुछ यह मान लेते हैं कि यह त्रयी की आखिरी किताब है। नहीं, ऐसा नहीं है। यह चार किताबों की श्रृंखला का तीसरा भाग है और इसके बाद विक्रमादित्य की अंतिम किताब, 'द रैथ ऑफ द हेलफायर्स' आएगी।

हमेशा की तरह, इस श्रृंखला के निर्माण में मेरा साथ देने वाले बहुत से लोगों का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। सम्मानों की सूची मैं अंतिम पुस्तक के लिए आरक्षित रखूँगा, लेकिन कुछ नाम विशेष उल्लेख के योग्य हैं। ब्लॉगर और समीक्षक देबदत्ता सहाय, उनके निरंतर समर्थन और विश्वास के लिए। मेरे मित्र रवि बालकृष्णन और वर्षा नाइक, पांडुलिपि पढ़ने और अपने विचार एवं सुझाव साझा करने के लिए। मेरी पत्नी और संपादक प्रज्ञा मदन, सभी टाइपिंग त्रुटियों और नखरों को सहन करने के लिए। और अंत में, आकाश शाह, संध्या अय्यर, सोनल सुराना और विजय ठाकुर के नेतृत्व में जैको की शानदार टीम, इस श्रृंखला को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए।

अंतर्वस्तु

ढकना

शीर्षक पेज
प्रमुख पात्रों की सूची
भारतीय शब्दावली
लेखक का नोट
1. बचाव
2. Ghatakarpara
3. फिरौती
4. गाउर थ्राखा
5. खो गया
6. सीमा
7. खोजें
8. प्रकाशितवाक्य
9. Gandharvasena
10. वादा
11. बुनकर
12. ड्रोइबा
13. चूड़ी
14. गिरफ्तारी
15. Yah’bre
16. ग्रीष्म ऋतु
17. विद्रोह
18. भाग निकलना
19. प्रस्थान

बचाव

घने काले आसमान में कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, जहाँ सूर्यास्त के ठीक बाद से ठंडी, स्तब्ध कर देने वाली बूंदा-बांदी हो रही थी। फिर भी, विक्रमादित्य ने बारिश की चुभती बूंदों से बचने के लिए अपनी आँखें सिकोड़ीं और ऊपर फैले अंधेरे के विशाल धब्बे को ध्यान से देखा। वह जानता था कि कहीं बारिश के बादलों के ऊपर नया चाँद था, जो एक शर्मीली दुल्हन की तरह धीरे-धीरे आकाश में आने के लिए तैयार था।

अगर वे आज रात अपने मिशन में असफल हो जाते हैं, तो अमावस्या हर चीज के विनाशकारी अंत का कारण बन सकती है।

भाग्य ने उन्हें बेताल को बचाने और बॉर्डरवर्ल्ड को सुरक्षित करने का यही एक मौका दिया था। भयावह रूप से, यही मरुस्थली के बर्बरों के खिलाफ टिके रहने की उनकी आखिरी उम्मीद भी थी। आज रात की विफलता अवंती और उसके सहयोगियों के सारे प्रयासों को व्यर्थ कर देगी। वर्षों का कठिन, दृढ़ प्रतिरोध; आक्रमणकारियों से ज़मीन वापस लेने के लिए लड़ी गई अनगिनत भीषण लड़ाइयाँ, एक-एक इंच खून बहाकर; सिंधुवर्त के अनगिनत बहादुर योद्धाओं की शहादत—सब कुछ व्यर्थ हो जाएगा।

विक्रमादित्य ने अपना सिर झुकाकर बाईं ओर देखा, जहाँ कालिदास का शरीर अँधेरे में मुश्किल से दिखाई दे रहा था, वे पेट के बल लेटे हुए थे। सब कुछ अमावस्या को हराने और उज्जैन के श्मशान घाट के बीचोंबीच उग रहे बरगद के वृक्ष और उनके

बीच जमा हुई विशाल हूण सेना को हराने पर निर्भर था, जहाँ बेताल को बंदी बनाया गया था।
सब कुछ इस बात पर निर्भर था कि कालिदास, हूण जादूगर द्रोइबा के चारों ओर बने भारी सुरक्षा घेरे को पार करने में सक्षम हो पाता है या नहीं और सबसे पहले उसे मार डालता है।
"हो जाएगा, भाई," कालिदास ने विक्रमादित्य के मन की बात पढ़ते हुए धीरे से कहा। "तुम उस पिशाच को वहाँ से निकालने पर ध्यान दो।"
"घोलमास्टर," विक्रमादित्य ने सुधार करते हुए कहा, उनकी निगाहें श्मशान भूमि पर बिखरी हुई लगभग एक दर्जन आग पर लौट आईं। प्रकाश इतना पर्याप्त था कि पहरा दे रहे हूण योद्धाओं के समूह और मैदान के चारों ओर लगे घोड़े की खाल के तंबुओं की आकृतियाँ दिखाई दे रही थीं।
लगभग एक महीने पहले बर्बरों द्वारा श्मशान घाट पर कब्जा करने का प्रयास अवंती के रक्षकों के लिए रणनीतिक दृष्टि से कोई मायने नहीं रखता था। तब से, हूणों ने वहां अपनी स्थिति मजबूत कर ली थी और उसे सुदृढ़ कर लिया था - कभी-कभी अवंती की सेनाओं को अन्यत्र महत्वपूर्ण क्षेत्र सौंपने की कीमत पर - और उन्हें हटाना असंभव साबित हुआ था। श्मशान घाट पर कब्जा बनाए रखने में हूणों को जो औचित्य दिखाई देता था, वह विक्रमादित्य और उनकी परिषद को समझ में नहीं आया।
दो रात पहले, उन्हें आखिरकार जवाब मिल गया। लेकिन तब तक लगभग बहुत देर हो चुकी थी।
"घोलमास्टर! भला कैसा घोलमास्टर है जो खुद को एक जादूगर के जाल में फँसने देता है?" कालिदास ने चिढ़कर कहा। "फिर, हालाँकि वह जानता है कि तुम ही उसकी एकमात्र उम्मीद हो, फिर भी वह सब कुछ लगभग खो जाने के बाद ही तुम्हारी मदद माँगता है। वह बॉर्डरवर्ल्ड का रक्षक कैसे हो सकता है? क्या इस काम के लिए कोई बेहतर व्यक्ति नहीं है?"
विक्रमादित्य ने रक्त संचार बनाए रखने के लिए अपनी बांह को हिलाया और मोड़ा। उसके नीचे की घास नम और असुविधाजनक थी। उसे डर था कि हमले के ठीक समय पर कहीं उसकी बांह या पैर सुन्न न हो जाए।

"ईमानदारी से कहूं तो, बेताल लगभग एक सप्ताह से मुझसे संपर्क करने की कोशिश कर रहा था।"
“उम्म।”
विक्रमादित्य समझ गया था कि उसका मित्र बेताल से अब भी बिल्कुल प्रभावित नहीं था। लेकिन सच तो यह था कि पिछले एक हफ्ते से बेताल हर दिन विक्रमादित्य से बात करने की कोशिश कर रहा था। या यूं कहें कि हर रात।
पहली दो रातों में जब बेताल सपने में विक्रमादित्य के सामने आया, तो उन्होंने इस घटना पर शायद ही ध्यान दिया और इसे महज़ एक सपना मान लिया। लेकिन बेताल के लगातार तीसरी बार प्रकट होने के बाद ही उन्हें इसका महत्व समझ में आया।
“राजगुरु, यह वही चीज है जिसके बाल अग्नि से बने हैं,” उन्होंने जागने पर आचार्य वेताल भट्ट से कहा था। “वही चीज मुझे महल में वापस ले आई है।”
“आपका मतलब...” आचार्य ने विक्रमादित्य को तीखी नज़र से देखा, “...जब आप छोटे थे? जब आपको मस्तिष्क ज्वर हुआ था...?” युवा राजा को सिर हिलाते देख राजगुरु ने आश्चर्य से अपनी नाक खुजलाई। “वह पिशाच स्वामी। इतने वर्षों बाद। अगर वह इतना ज़िद कर रहा है, तो ज़रूर वह आपको कुछ बताना चाहता होगा, विक्रम।”
उस रात, जब आचार्य पहरा दे रहे थे, विक्रमादित्य सो रहे थे और उन्होंने बेताल को फिर से अपने पास आने दिया। बेताल ने जो कुछ भी घटित हुआ था और अमावस्या की रात से पहले अगर उन्हें नहीं बचाया गया तो जो कुछ होगा, उसका जो विवरण दिया, उससे राजा और उनके मुख्य सलाहकार व्याकुल हो गए। परिषद को तुरंत बुलाया गया, लेकिन अमावस्या से पहले केवल एक रात का समय था, इसलिए विचार-विमर्श के लिए मुश्किल से ही समय था। निर्णय लिए गए, कार्ययोजना बनाई गई, और परिणामस्वरूप, विक्रमादित्य और कालिदास गीली धरती पर लेटे हुए हूणों के किले को घूर रहे थे।
“यह ड्रोइबा... क्या घोलमास्टर ने इसका वर्णन किया था?” कालिदास की निगाहें जलती हुई आग के बीच घूम रही थीं।
विक्रमादित्य ने बेताल की बातचीत के विवरण को याद करने की पूरी कोशिश करते हुए कहा, "वह गिद्धों के पंखों से बना एक मुकुट पहनता है।"
“इनमें से कई बर्बर लोग ऐसा करते हैं,” कालिदास ने गुस्से से कहा। “और कुछ?”

“हाँ। उसका चेहरा नीला रंगा हुआ है। नीली धारियाँ, मुझे लगता है।”
"नीली धारियाँ?"
विक्रमादित्य ने सिर हिलाया और कालिदास ने झुंझलाहट में अपनी साँस छोड़ी। “मैं इतने अंधेरे में नीले रंग से रंगे चेहरे को कैसे ढूँढ सकता हूँ?” एक पल का विराम, फिर, “भूत-प्रेत के स्वामी ने तांत्रिक के ठिकाने के बारे में और अधिक स्पष्ट जानकारी क्यों नहीं दी?”
बेताल ने जानकारी देने में उदारता दिखाई थी, भले ही भय के कारण उसकी बातें थोड़ी अस्पष्ट थीं। विक्रमदित्य का ध्यान आकर्षित होते ही उसने भय और राहत के भाव से कहा, "हूण जादूगर दो रातों बाद बॉर्डरवर्ल्ड पर कब्ज़ा करने के लिए मेरी बलि देगा।" राजा को यह समझने में काफी समय लगा कि वे किस समस्या का सामना कर रहे हैं।
ड्रोइबा बहुत चालाक था, क्योंकि उसने बीटाल को बॉर्डरवर्ल्ड छोड़कर श्मशान घाट में स्थित बरगद के पेड़ के पास आने के लिए छल कर दिया था। वह ज़ाहिर तौर पर शक्तिशाली भी था, क्योंकि उसने न केवल बीटाल को बंदी बनाया था, बल्कि वह घोलमास्टर को बलि के रूप में चढ़ाने का इरादा रखता था, जिसे बीटाल रोकने में असमर्थ प्रतीत होता था। संबंधित हूना देवताओं को प्रसन्न करने के बाद, वह जादूगर बॉर्डरवर्ल्ड पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लेगा।
“वह बॉर्डरवर्ल्ड क्यों चाहता है?” विक्रमादित्य ने बेताल से पूछा था।
“ताकि हूण सिंधुवर्त के राज्यों को जीत सकें,” यह भयावह उत्तर आया। बेताल द्वारा हूणों की इस कुटिल योजना का खुलासा होते ही विक्रमादित्य को नींद में भी रोंगटे खड़े हो गए।
बॉर्डरवर्ल्ड, जैसा कि सभी जानते हैं, जीवितों की दुनिया को मृतकों की दुनिया से अलग करता है; एक पुल, एक संक्रमणकालीन स्थान। मरने वाली सभी चीजें पहले बॉर्डरवर्ल्ड में प्रवेश करती हैं, जहाँ घूलमास्टर के अधीन घूल उनकी देखभाल करते हैं, जो आत्माओं को उनके मार्ग पर भेजने से पहले उनके भौतिक अवशेषों का निपटान करते हैं।
“जब मरने वाले बॉर्डरवर्ल्ड में आते हैं, तो वे न तो जीवित होते हैं और न ही मृत,” बेताल ने समझाया था। “वे अमृतित होते हैं। मेरे पिशाच ही उनके शरीर को नष्ट करते हैं, ताकि ये अमृतित लोग मृतकों की दुनिया में प्रवेश कर सकें। लेकिन क्या

होगा यदि अमृतित लोगों का शरीर नष्ट न हो, बल्कि जादू-टोने की सहायता से उन्हें संरक्षित और पुनर्जीवित किया जाए? क्या होगा यदि ऐसे अमृतित लोगों को सिंधुवर्त की सेनाओं के विरुद्ध युद्ध में भेजा जाए? कल्पना कीजिए, अवंती के राजा। बॉर्डरवर्ल्ड पर अधिकार करके, हूण जादूगर को अमृतित लोगों की अनंत आपूर्ति प्राप्त हो जाती है, जिनका उपयोग आपके विरुद्ध युद्ध में किया जा सकता है। कल्पना कीजिए कि आज युद्ध में आपके सैनिक मारे जाते हैं और वे कल अमृतित होकर हूणों की ओर से लड़ते हुए लौट आते हैं। हे राजा, ऐसे युद्ध में आपके और आपके सहयोगियों के जीतने की क्या संभावना है?"

इस तरह की विपत्ति को टालने के लिए अवंती के रक्षकों के पास केवल एक ही उपाय बचा था। अमावस्या की रात तक बेताल को बचाकर बॉर्डरवर्ल्ड वापस लाना था—लेकिन पहले, बेताल को उसके प्रभाव से मुक्त करने के लिए जादूगर को मारना आवश्यक था। और घोलमास्टर को बचाकर बॉर्डरवर्ल्ड में पुनः स्थापित करने का दायित्व युवा विक्रमादित्य के कंधों पर आ पड़ा।

"मैं अकेले जाने के लिए बहुत कमजोर हूँगा," बीटाल ने कहा था। "आपको मुझे वापस ले जाना होगा। आप ही एकमात्र व्यक्ति हैं जो ऐसा कर सकते हैं, क्योंकि आप ही एकमात्र ऐसे इंसान हैं जो बॉर्डरवर्ल्ड में जाने और वापस आने का रास्ता जानते हैं, राजा। आप पहले भी वहाँ जा चुके हैं, याद है?"

विक्रमादित्य को याद आया। उसे याद आया कि कैसे वह ठंडे कोहरे में लड़खड़ाते हुए चल रहा था, उसके छोटे पैर गीली, दलदली मिट्टी में फिसल रहे थे। उसे याद आया कि कोहरे से एक अजीब आकृति निकली, जिसके हाथों में रेज़र जैसे नुकीले पंजे थे और बाल नारंगी लपटों की तरह चमक रहे थे। उसे याद आया कि उसका कंकाल जैसा चेहरा और काली, खोखली आँखें, जिनमें लाल रोशनी की छोटी-छोटी बूँदें थीं, उसे घूर रही थीं। उसे याद आया कि जब उस आकृति ने धीरे से उसका छोटा हाथ पकड़ा और उससे कहा कि उसे बॉर्डरवर्ल्ड में नहीं होना चाहिए, कि अभी उसका समय नहीं आया है, तो वह बिल्कुल भी नहीं डरा। उसे याद आया कि वह उसे वापस उस संकरी और धीमी बहती नदी के पार ले गया, स्नान घाट की टूटी सीढ़ियों से ऊपर, शहर के द्वार के खंडहरों के पास से, उस सुनसान शहर में ले गया —

"क्या वे अमर सिंह और वराहमिहिर हैं?"

कालिदास लगभग उठ खड़े हुए थे, उनका शरीर धनुषाकार था, उनकी विशाल मांसपेशियां तन गई थीं, मानो वे दौड़ने के लिए तैयार हों। उनके दाहिने हाथ में एक लंबी मूठ वाली कुल्हाड़ी थी, और वे श्मशान घाट के दूर किनारे पर अंधेरे में टकटकी लगाए देख रहे थे। विक्रमादित्य ने अपने मित्र की दृष्टि का अनुसरण किया, और मानो संकेत मिलते ही, परछाइयाँ आकार लेने लगीं और रात के सन्नाटे से युद्ध की गर्जना गूंज उठी, जब अमर सिंह की विशाल, दाढ़ी वाली आकृति सामने आई। उनके ठीक पीछे वराहमिहिर अपनी तलवार लहराते हुए आ रहे थे। उनके पीछे अवंती के सैनिकों की चीखती हुई दीवार थी।

चलो, विक्रमा!

कालिदास घनी झाड़ियों से निकलकर अचानक प्रकट हुए और विक्रमादित्य के बाहर आते ही छह कदम आगे निकल चुके थे। आसपास की झाड़ियों से और सैनिक निकले और चुपचाप कालिदास की ओर दौड़े, जो अब आग की रोशनी में एक परछाई की तरह दिख रहे थे। विक्रमादित्य ने अब तक जितने भी पुरुष देखे थे, उनमें से कालिदास उनसे कहीं अधिक बड़े और चौड़े थे। उनके लंबे बाल ऊँची चोटी में बंधे थे और उनकी कुल्हाड़ी की चाप आग की रोशनी में चमक रही थी।

अपने पिता की तलवार को हाथ से निकालकर और हथेली में चमड़े से बंधी मूठ की बनावट को महसूस करते हुए, विक्रमादित्य ने लंबे-लंबे कदमों से श्मशान घाट की ओर प्रस्थान किया, अपने साथ चल रहे सैनिकों और कालिदास को पीछे छोड़ते हुए। वे अपने मित्र के ठीक बगल में पहुँचे, तभी दूसरी ओर हूण रक्षक अमर सिंह और उनकी सेना से भिड़ गए। युद्ध की गूँज ज़मीन पर गूँज रही थी, तभी कालिदास और विक्रमादित्य ने एक-दूसरे को सिर हिलाकर अभिवादन किया और अलग हो गए। कालिदास बाईं ओर एक लंबे, घुमावदार रास्ते से मुड़े, जबकि विक्रमादित्य दाईं ओर तिरछे कोण पर मुड़ गए। उनके पीछे, सैनिक भी दो समूहों में बँट गए।

विक्रमादित्य हूणों के तंबुओं की छाया में छिप गए, एक तंबू से दूसरे तंबू की ओर फुर्ती से बढ़ते हुए, यथासंभव सीधी रेखा में चलते रहे—वह रेखा जो बीच में खड़े ऊंचे बरगद के पेड़ की ओर इशारा कर रही थी। उनके पीछे उनके आदमियों के कदमों की आहट सुनाई दे रही थी।

बरगद का वह वृक्ष ही वह स्थान था जहाँ द्रोइबा ने बेताल को कैद किया था। और यदि घोलमास्टर की बात मानी जाए, तो वह वृक्ष और यह पूरा श्मशान घाट

बॉर्डरवर्ल्ड के प्राचीन बरगद के वृक्ष और चिताओं के मैदान का ही विस्तार थे। विक्रमादित्य को यह बात समझ में आई कि हूणों ने श्मशान घाट पर इतनी दृढ़ता से कब्जा क्यों जमा रखा था - उनके शमन को पता था कि बेताल को बुलाने और पकड़ने के लिए यह स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण था।

विक्रमादित्य के बाईं ओर अचानक हलचल हुई—युद्ध के शोर से आकर्षित होकर एक हृष्ट-पुष्ट हूण अपने तंबू से तलवार लिए बाहर निकला। राजा को देखते ही उस बर्बर योद्धा की आँखें चौड़ी हो गईं, लेकिन इससे पहले कि वह हमला कर पाता या चेतावनी दे पाता, एक साया तलवार उठाए उसके पीछे से आ गया। पीठ में एक तेज़ और कुशल वार हुआ और वह बर्बर योद्धा बिना किसी आवाज़ के ज़मीन पर गिर पड़ा। हूण योद्धा का हत्यारा पीछे हट गया और प्रकाश उसके चेहरे पर पड़ा—वरारुचि। विक्रमादित्य ने अपने सौतेले भाई को प्रशंसा में सिर हिलाया।

तभी, बाईं ओर से, उस दिशा से जहाँ कालिदास गए थे, चीखें सुनाई दीं। विक्रमादित्य को समझ नहीं आया कि यह क्या हो रहा है, लेकिन यह स्पष्ट था कि अचानक हमला करने का मौका खत्म हो चुका था और हूण अवंती की सेना से भिड़ रहे थे। उसी क्षण, पाँच हूण योद्धा अचानक कहीं से प्रकट हुए और सीधे विक्रमादित्य के रास्ते में आ गए।

"हम उन्हें ले जाएंगे, भाई," वरारुचि राजा को पीछे छोड़ते हुए चिल्लाया। "जाओ बेताल को ले आओ।" लगभग तुरंत ही, अवंती के आधे दर्जन सैनिक विक्रमादित्य को पीछे छोड़ते हुए वरारुचि के साथ शामिल हो गए, जो रास्ते में बाधा डाल रहे हूणों से लड़ रहा था।

विक्रमादित्य ने गहरी साँस ली, अपने पिता की तलवार (जो अब आधिकारिक तौर पर उनकी थी) दोनों हाथों में ली और बरगद के पेड़ की ओर देखा। पेड़ अभी भी कुछ दूरी पर था, लेकिन छिपने का समय समाप्त हो चुका था। उन्हें पेड़ तक पहुँचना ही था, ज़रूरत पड़ने पर तलवारों से रास्ता बनाते हुए, प्रार्थना करते हुए कि कहीं दुश्मन उनसे कहीं ज़्यादा संख्या में न हों, और आशा करते हुए कि कालिदास किसी तरह, चमत्कारिक रूप से और शीघ्रता से, द्रोइब को ढूंढकर मार डालें। एक बार फिर गहरी साँस लेते हुए, विक्रमादित्य एक तंबू के पीछे से निकले और दौड़ पड़े।

धातु से धातु टकराने की झनझनाहट, क्रोध की गर्जना जो पीड़ा और आतंक की चीखों में घुलमिल गई थी, भागते समय उसके अपने पैरों की धमक उसके कानों में गूंज रही थी, नारंगी आग की रोशनी और काला धुआं— बरगद के पेड़ों के बीच सब कुछ धुंधला सा हो गया था। हूण योद्धा उस पर टूट पड़े। पहले योद्धा ने उसके सिर पर भारी तलवार चलाई, जिससे वह बच गया। हूण योद्धा के उठे हुए हाथ से बचते हुए, उसने अपनी तलवार उसके पेट में घुसा दी, जिससे उसका पेट आगे से पीछे तक चीर गया। अगले योद्धा को सीने पर जोरदार लात मारकर रोक दिया गया। विक्रमादित्य ने इसके बाद तलवार का एक विशाल, घुमावदार प्रहार किया जिससे बर्बर योद्धा का दाहिना पैर घुटने के ऊपर से अलग हो गया।

वह लगातार आगे बढ़ता रहा, बढ़ते हुए प्रतिरोध को धकेलते हुए। अब बर्बर लोग हर तरफ से प्रकट हो रहे थे। उसने दो लोगों के सिर धड़ से अलग कर दिए और एक दर्जन से अधिक को भाले से गोदकर मार डाला। उसकी तलवार खून से लथपथ थी, लेकिन हूण सैनिक उस पर हमला करते रहे। हल्की थकान और चिंता हावी होने लगी थी - वृक्ष अभी भी निराशाजनक रूप से दूर था और हूण उसे रोकने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। विक्रमादित्य ने अपनी तलवार एक खुली गर्दन में घुसा दी। उसी क्षण, एक बर्बर ने उसके कंधे पर वार किया, जिससे गहरा घाव हो गया। राजा का कदम लड़खड़ाया, लेकिन वरारुचि ने, जो लड़ाई में कूद पड़ा था और हमलावर का गला काट चुका था, उसकी कोहनी पकड़कर उसे संभाल लिया।

"जाओ, विक्रम, जाओ," वरारुचि ने उन बर्बरों पर वार करते हुए और उन्हें पीछे धकेलते हुए आग्रह किया।

अवंती से और भी लोग वरारुचि के साथ शामिल हो गए, जिससे विक्रमादित्य के लिए रास्ता साफ हो गया। दाईं ओर दूर, अमर सिंह मरे हुए हूणों के ढेर को बेरहमी से काट रहे थे, जबकि वराहमिहिर हूणों की सेना में सीधे आगे बढ़कर उन्हें घेर रहे थे, जिससे बर्बरों को मुड़कर अपना बचाव करने के लिए मजबूर होना पड़ा। विक्रमादित्य ने देखा कि अंततः उन बर्बरों को एक लड़ाई मिल गई है जिससे उनका ध्यान उनसे हट गया है।

यह सोचते हुए कि क्या कालिदास को अभी तक तांत्रिक मिल गया है, राजा बरगद के पेड़ के पास पहुंचा। उसके कंधे पर लगे घाव से खून बह रहा था, जो पसीने के साथ

मिलकर उसकी बांह पर गिर रहा था, और विक्रमादित्य ने पेड़ की ओर देखते हुए अपने सिर में हल्कापन महसूस किया।
लगभग तुरंत ही उसने बेताल को देख लिया।
बल्कि, उसने शव को पेड़ की हवाई जड़ों से लटका हुआ देखा, जो फैला हुआ था और उसकी कलाइयाँ मोटी लता से बंधी हुई थीं। ज़मीन से आधा ऊपर लटका हुआ, वह ठंडा और गतिहीन था, मानो किसी क्रूर, भूखे देवता को चढ़ाई गई कोई घिनौनी भेंट हो।

Ghatakarpara

जब घटाकरपारा उबड़-खाबड़, पत्थरों से भरी धारा के मोड़ पर मुड़ा, तो बड़े पत्थर के सामने घास का मैदान खाली देखकर उसका चेहरा उतर गया। उसने मन ही मन अपरूपा को पत्थर की ओर पीठ करके बैठी, उसके आने की प्रतीक्षा करते हुए देखा था। इसी उम्मीद में उसने सुबह दो कठिन अभ्यास सत्र और दोपहर में सीमा रक्षकों की एक रेजिमेंट का निरीक्षण किया था। अपरूपा को धारा के किनारे न देखना उसके लिए बेहद निराशाजनक था।
विडंबना यह थी कि राजकुमार को उसकी अनुपस्थिति से थोड़ी राहत भी मिली। उसने अनुमान लगाया कि एकांत के ये कुछ अतिरिक्त क्षण भाग्य की कृपा थे, जो उसे निर्णय लेने से पहले स्थिति का एक बार फिर से मूल्यांकन करने के लिए दिए गए थे। हालाँकि, अपने मन की स्थिति को देखते हुए, उसे विश्वास नहीं था कि वह कोई निर्णय ले पाएगा। सब कुछ इतना उलझन भरा था कि घटाकरपारा ने माथे पर

शिकन डालते हुए बड़े पत्थर की खाली छाया में बैठते हुए कहा। पीछे झुककर, उसने अपने फैले हुए पैरों के पास से बहती धारा को देखा।

यह सब एक अनहोनी से शुरू हुआ था, सीमावर्ती क्षेत्र के उपजाऊ एकांत में पनपी एक हल्की सी चाहत से। राजकुमार के लिए—महल से दूर, परिवार और दोस्तों से अलग, जिनके पास अभ्यास, सीमा गश्त और सैन्य गतिविधियों के अलावा समय बिताने के लिए कुछ नहीं था—अपरूपा ताज़ी हवा के झोंके की तरह आई थी, इस बंजर, सूखी भूमि में खिले एक फूल की तरह। घटाकरपारा को आज भी वह दोपहर याद थी जब वह उदयपुरी की उत्सवपूर्ण गलियों में उससे हल्की-फुल्की बातचीत करने के लिए गए थे; उस दिन उन्हें बस किसी के साथ की चाह थी, और कुछ नहीं। फिर भी, उस एक आकस्मिक मुलाकात ने कई और सुनियोजित मुलाकातों को जन्म दिया, जो उत्तरोत्तर अधिक गुप्त होती गईं क्योंकि दोनों एक-दूसरे के साथ सहज और साहसी होते गए।

हालाँकि उसका इरादा कभी भी रिश्ते को गंभीर मोड़ देने का नहीं था, लेकिन अचानक, कुछ दिन पहले, ऐसा हो गया। वह हमेशा की तरह सपनों में खोया हुआ, अपना सिर उसकी गोद में रखकर लेटा हुआ था, और वह उसके बालों में धीरे-धीरे उंगलियाँ फेर रही थी, तभी अचानक अपारूपा ने पूछा कि क्या उसके माता-पिता उसे स्वीकार करेंगे।

घटाकरपारा ने अपनी बाईं ओर कुछ हलचल देखी। मुड़कर देखा तो आश्चर्य से पाया कि एक बैलगाड़ी नदी के बीचोंबीच खड़ी थी, जिसमें जुते हुए दो बैलों के खुर पानी में मुश्किल से डूब रहे थे। नदी छोटी-छोटी धाराओं और गड्ढों से भरी थी जो केवल बारिश के मौसम में ही भरती थी; इस तरह के सूखे मौसम में इसका कोई उपयोग नहीं होता था, इसलिए यहाँ शायद ही कोई आता था। यह एकांत उनकी मुलाकातों के लिए ही बना था, लेकिन आज ऐसा लग रहा था कि उन्हें नदी में खड़े उन दो आदमियों के साथ ही यह जगह साझा करनी पड़ेगी, जो लगन से गाड़ी और बैलों को धो रहे थे।

घटकरपारा के मन का एक हिस्सा सोच रहा था कि इतने कम गहरे पानी में बैलगाड़ी धोना क्या फ़ायदेमंद होगा, वहीं दूसरा हिस्सा दो दिन पहले की अपरूपा की यादों में खो गया। उसके सवाल ने उसे बुरी तरह झकझोर दिया था—क्योंकि उसने जो बात कही थी, वो उसके दिमाग में कभी आई ही नहीं थी। घटकरपारा वहीं

लेटा हुआ था, लड़की को देखता हुआ, कोई संतोषजनक जवाब सोचने की कोशिश कर रहा था, तभी उसके अगले शब्दों ने उसे झकझोर कर रख दिया।
"मुझे नहीं लगता कि मेरे पिता एक आम सिपाही को दामाद के रूप में स्वीकार करेंगे," उसने घास की एक पत्ती तोड़कर चबाते हुए कहा। "और तो और, एक बुनकर का बेटा? बिलकुल नहीं," उसने दृढ़ता से सिर हिलाया। "यह उनके रुतबे के बिल्कुल विपरीत होगा। लेकिन हमें उनकी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। अगर वह तुम्हें स्वीकार नहीं करते, तो मैं सब कुछ छोड़कर तुम्हारे साथ आने को तैयार हूँ।"
राजकुमार को अपारूपा के उस पर अटूट विश्वास को समझने में पूरी रात जागना पड़ा। और यह जानकर कि उसका विश्वास उसी के द्वारा रचे गए झूठ के जटिल ढांचे पर टिका था, वह शर्मिंदा और अंतरात्मा से व्याकुल हो गया। उस रात, उस सारी शर्म और पश्चाताप के बीच, घटाकरपारा ने यह भी महसूस किया कि वह अपारूपा से जितना सोच भी नहीं सकता था, उससे कहीं अधिक गहरा प्रेम करता था।
युवा राजकुमार ने अपने शॉल में हाथ डाला और सधे हुए बांस से बनी एक चूड़ी निकाली। उस पर जटिल नक्काशी की गई थी, जिसमें दो सांप एक दूसरे से लिपटे हुए थे और अनंत लूप में एक दूसरे की पूंछों को निगल रहे थे। घटकरपारा ने एक छोटे चाकू से सांपों की आंखों के लिए छोटे-छोटे छेद बनाए और बांस को घिसकर चिकना किया, ध्यान से किसी भी खुरदुरे टुकड़े और छिलके को हटा दिया। यह चूड़ी उनके द्वारा बनाई गई चूड़ियों के जोड़े की दूसरी थी; उन्होंने पहली चूड़ी कुछ दिन पहले ही अपारूपा को उपहार में दे दी थी।
नदी की दिशा में नज़र डालते हुए राजकुमार को लगा कि गाड़ी और करीब आ गई है। इस विचार को मन से हटाकर वह चूड़ी तराशने और अपने विचारों को और अधिक केंद्रित करने में जुट गया। ज़ाहिर है, उसे अपनी असली पहचान बतानी ही थी; अब रेशम बुनने वाले के बेटे घटराजा होने का दिखावा करना मुमकिन नहीं था। लेकिन उसे डर था कि उसके छल का पता चलने पर अपारूपा और भड़क उठेगी और उसकी ईमानदारी के बावजूद उसे छोड़कर चली जाएगी।
ढलते सूरज की रोशनी में चूड़ी को ध्यान से देखते हुए, उसने सोचा, "मैं उसे धीरे से बता सकता हूँ। मैं उसे एक हफ्ते में बता सकता हूँ, शायद, जब मैं उसका थोड़ा और

भरोसा जीत लूँ और उसे दिखा दूँ कि मैं उससे कितना प्यार करता हूँ।" उसने निराशा में अपना हाथ नीचे कर लिया, यह जानते हुए कि वह सिर्फ खुद को धोखा दे रहा है। जितना ज़्यादा वह अपनी पहचान छिपाएगा, जितना ज़्यादा वह झूठ को उजागर करने में देरी करेगा, लड़की के सामने सच बोलना उतना ही मुश्किल होता जाएगा। और बाद में उसके लिए उसे माफ़ करना उतना ही कठिन होगा।

अपनी दुविधा पर मन ही मन आह भरते हुए, घटाकरपारा ने उस दिशा में देखा जहाँ से अपारूपा आ रही थी। वहाँ कोई नहीं था। वह सामान्य से देर से आई थी, और एक पल के लिए उसके मन में यह डर बैठ गया कि कहीं उसने उसकी छल-कपट को जान न लिया हो और उसे उसी के लिए दंडित कर रही हो। नहीं, वह उसके बारे में कहीं और से नहीं जान सकती थी; उसे स्वयं उसकी आँखों में आँखें डालकर उसे सच बताना होगा।

यह एक बात थी। दूसरी बात भी थी। क्या होगा अगर वह उसकी बात सुन ले, उसके बेईमान होने के कारणों को समझ ले और उसकी माफी स्वीकार कर ले? फिर, अगर हालात बदल जाएं और वह अपना सवाल दोबारा पूछे तो क्या उसके माता-पिता उसे स्वीकार करेंगे?

क्या वे ऐसा करेंगे? वह राजपरिवार से थे, अवंती के शक्तिशाली आदित्य वंश के वंशज थे। उनके एक चाचा वत्स के राजा चंद्रवर्धन थे। दूसरे सिंधुवर्त के अधिपति सम्राट विक्रमादित्य थे। क्या अवंती और वत्स के दरबार उदयपुरी के बाजरा व्यापारी की पुत्री अपारूपा का राजपरिवार में स्वागत करेंगे? घटकरपारा को अपनी माँ की ठंडी, नापसंदगी भरी निगाहें याद आईं और उन्होंने निराशा में सिर हिलाया।

और अपारूपा ने क्या कहा था—अगर उसके पिता आत्रेय उन्हें आशीर्वाद न दें, तो वह सब कुछ छोड़कर उसके साथ चली जाएगी? क्या राजकुमार घटकरपारा अपारूपा के लिए उज्जैन और कौशांबी के महलों को त्याग देंगे? क्या वे एक ग्रामीण लड़की के लिए अवंती के सलाहकार पद और उससे जुड़े गौरव और अधिकार को छोड़ देंगे? यदि वे ऐसा करते हैं, तो क्या उन्हें उन सभी लोगों द्वारा क्षमा किया जाएगा जिन्होंने उन पर इतना समय, ध्यान और स्नेह बरसाया था—आचार्य, वररुचि, अमर सिंह? और क्या वे अपने मामा विक्रमादित्य को निराश नहीं करेंगे, जिन्हें उनसे इतनी उम्मीदें थीं?

अपरूपा, उसने समझा, अपने प्रेम में पूर्ण विश्वास रख चुकी थी। क्या उसे भी अपरूपा के प्रति उतना ही विश्वास था? अपने अंगवस्त्रम के नीचे छिपाए सूर्य-चिह्न वाले पदक के किनारों पर उंगलियां फेरते हुए, घटकरपारा को एहसास हुआ कि वह इस सवाल का जवाब जानने से डर रहा है। वह जानता था कि इसमें कठिन निर्णय लेने होंगे और ऐसे बलिदान देने होंगे जिन्हें कभी बदला नहीं जा सकता।

कंकड़ पर एक पत्थर के छिटकने की आवाज़ सुनकर घटाकरपारा ने उम्मीद से रास्ते के मोड़ की ओर देखा, पर अपारूपा कहीं नज़र नहीं आई। राजकुमार को यह समझने में थोड़ा समय लगा कि आवाज़ पत्थर के पीछे से आई थी और तभी उसके चेहरे पर एक शरारती मुस्कान खिल उठी। लड़की ने घूमकर लंबा रास्ता इसलिए चुना था ताकि वह चुपके से उसके पास आकर उसे चौंका सके। खैर, अब वह भी उसे ही सबक सिखा सकता है, उसे ही इस शरारत का शिकार बना सकता है, उसने धीरे से मन ही मन सोचा।

घटकरपारा फुर्ती से अपने पैरों पर खड़ा हुआ, झुककर आगे बढ़ा, मुस्कुराते हुए, लड़की को देखते ही उस पर झपटने के लिए तैयार था। उसने जमीन पर उसकी लंबी परछाई देखी, जो चट्टान से चिपकी हुई थी, उसका सिर हिल रहा था। गहरी सांस लेकर, उसने चट्टान के चारों ओर एक लंबा कदम बढ़ाया, पूरी तरह से "हो" की आवाज निकालकर उसे डराने के लिए तैयार था।

लेकिन वह अचानक रुक गया और चट्टान के पीछे छिपी आकृति को आश्चर्य से घूरने लगा।

आकृति नहीं, बल्कि आंकड़े। क्योंकि वे तीन थे। तीनों पुरुष थे, और तीनों के पास छोटी तलवारें और लोहे की लकड़ी के डंडे थे।

राजकुमार की तरह ही वे लोग भी अचंभित रह गए। वे उसकी ओर देखते-देखते उनकी आँखों में अकड़न आ गई। उनके हाथ आगे की ओर बढ़े हुए थे, उंगलियाँ पंजों की तरह मुड़ी हुई थीं, मानो उन्हें पकड़ने की कोशिश कर रहे हों। वे चाहे जो भी कर रहे हों, घटाकरपारा ने उन्हें अचानक चौंका दिया था, इसलिए वे बस वहीं खड़े होकर अनिश्चितता से उसे देखते रहे।

“ओह,” घटाकरपारा ने अपने हाथ बगल में लटकाते हुए, बेपरवाह दिखने की कोशिश करते हुए कहा। “आप... कौन हैं?”

किसानों जैसे कपड़े पहने, लेकिन सैनिकों जैसे हथियार लिए उन आदमियों ने एक-दूसरे को जल्दी से देखा। हालाँकि, उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। घटाकरपारा के सबसे करीब खड़ा एक लंबा, सांवले रंग का आदमी हिचकिचाते हुए एक कदम आगे बढ़ा। तुरंत ही, बाकी दोनों अपने नेता के पीछे फैल गए, मानो निकलने का रास्ता रोक रहे हों।

"मैं समझ गया," राजकुमार ने कहा, उनके चेहरे पर स्पष्टता आ गई। "आप स्थानीय मिलिशिया के सदस्य होंगे। शाही सेना और सीमा रक्षक दल की मदद करने का आपका तरीका बहुत अच्छा है।"

उन आदमियों ने कोई जवाब नहीं दिया। वे चौकस निगाहों से उसे देखते रहे।

"क्या?" घटाकरपारा ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। "ओह, आपको लगता है कि मैं...?" उन्होंने सिर हिलाया। "बस यही बात है। आप नहीं जानते कि मैं कौन हूँ। मैं घटाकरपारा हूँ, राजकुमार और सलाहकार..."

हमला इतना अचानक और अप्रत्याशित था कि घटाकरपारा को प्रतिक्रिया करने का लगभग समय ही नहीं मिला। नेता ने राजकुमार के सिर पर लाठी से वार करते हुए हमला किया, और यह केवल सहज ज्ञान और वर्षों के प्रशिक्षण का परिणाम था कि घटाकरपारा ने वार को रोकने के लिए तुरंत अपना हाथ उठाया। जैसे ही लाठी उनकी कलाई से टकराकर वापस आई, राजकुमार ने सहज प्रतिक्रिया से आगे बढ़कर अपनी दाहिनी कोहनी से हमलावर की छाती पर, सीने की हड्डी के ठीक नीचे, ज़ोर से वार किया। नेता दर्द से कराह उठा और सिर झुका लिया, और घटाकरपारा ने तुरंत अपनी बाईं मुट्ठी से उसके गाल पर ज़ोरदार प्रहार किया, जिससे उसका जबड़ा अपनी जगह से हट गया। वह व्यक्ति दर्द भरी चीख के साथ नीचे गिर गया, और राजकुमार उसके पास से गुजर गया, उसके हाथ मुट्ठी में उठे हुए थे।

"मैंने तुमसे कहा था कि मैं पार्षद घटाकरपारा हूँ," उसने ज़ोर से कहा, ताकि उसके सामने अनिश्चित रूप से खड़े दोनों व्यक्तियों को कोई संदेह न रहे। "रुको, अगर तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है, तो देखो..." उसने अपना हाथ अपने अंगवस्त्रम में डाला और चेन में लटके पार्षद के पदक को निकाला। "देखो? मैं अवंती का शत्रु नहीं हूँ, इसलिए कृपया हमला मत करो। अगर तुम..."

जाल बड़ी कुशलता से फेंका गया और राजकुमार पर पीछे से आकर गिरा, एक ही झटके में उसे सिर से पैर तक लपेट लिया। इससे पहले कि वह संभल पाता, जाल

का मजबूत जाल घटकरपारा के चारों ओर कसने लगा और उसे जकड़ लिया। जैसे ही वह छटपटाने लगा और कैद से निकलने की कोशिश करने लगा, उसके आगे खड़े लोग जाल फेंकने वालों की मदद के लिए कूद पड़े। जाल के बीच से देखते हुए राजकुमार ने नए आने वालों को उन आदमियों के रूप में पहचाना जो बैलगाड़ी धो रहे थे।

"इसका क्या मतलब है?" वह गुर्राया, हाथ-पैर पटके और इतना शोर मचाया कि शाम की शांति भंग हो गई। "तुम्हें अंदाज़ा भी नहीं कि तुम अपने ऊपर क्या मुसीबत बुला रहे हो? मैं सम्राट का भतीजा हूँ, मूर्खों। वह इसके लिए तुम्हारा सिर काट देगा। मुझे जाने दो!"

घटाकरपारा के सिर के पिछले हिस्से पर लगा प्रहार इतना ज़ोरदार था कि उसकी गड़गड़ाहट छोटी सी धारा के ऊपर तक गूंज उठी, जिससे हरे रंग के दो चिड़िया घबराकर उड़ गए। प्रहार इतना ज़ोरदार था कि घटाकरपारा की आँखों में अंधेरा छा गया। वह एक पल के लिए चक्कर खाकर लड़खड़ाया, फिर घुटनों के बल गिर पड़ा।

उसके हमलावरों में से एक ने स्थानीय भाषा, अवंती की एक बोली में बात की, और यद्यपि राजकुमार ने कही गई बातों को शब्दशः नहीं समझा, लेकिन वह समझ गया कि वक्ता को इस बात की चिंता थी कि इस प्रहार से उनके कैदी की मृत्यु हो जाएगी।

"नहीं", एक और आवाज धीमी सी सुनाई दी, और जैसे ही घटाकरपारा एक तरफ गिर पड़ा, उसने देखा कि समूह का नेता उसे गुस्से से घूर रहा है, एक हाथ में उसका लाठी है और दूसरे हाथ से वह अपने टूटे हुए जबड़े को सहला रहा है।

"वह सूअर ठीक हो जाएगा – हालाँकि मैं उसे मारना चाहता हूँ," नेता ने मुँह बनाते हुए बुदबुदाया।

घटकरपारा पर अंधकार की एक और लहर छा गई। उसका सिर मानो दो हिस्सों में फट गया हो, और एक गूंजता हुआ, धड़कता हुआ दर्द उसके सिर के पिछले हिस्से से अगले हिस्से तक बढ़ता जा रहा था, जो हर पल तेज और तीखा होता जा रहा था। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं।

"अगर वह मर गया तो वे पैसे नहीं देंगे। वे उसे जिंदा चाहते हैं।"

राजकुमार सोच रहा था कि अपारूपा ठीक है या नहीं। उसे खुशी थी कि वह आई ही नहीं। अगर वह यहाँ होती तो मामला और भी पेचीदा हो जाता। या फिर वह आई थी और इन आदमियों ने उसे भी नुकसान पहुँचाया था?
"वह जीवित है, इसलिए चुप रहो और बैलगाड़ी ले आओ।"
वह सचमुच चाहता था कि उसके साथ कुछ भी न हुआ होता। वह उन आदमियों से पूछना चाहता था, शायद उनसे विनती भी करना चाहता था कि अगर उन्होंने उसे बंदी बनाया है तो उसे छोड़ दें। उसने बोलने के लिए, शब्द बनाने के लिए अपना मुंह खोलने की कोशिश की, लेकिन उसे एहसास हुआ कि वह बोल नहीं सकता। ऐसा लग रहा था मानो उसके दिमाग और उसकी मांसपेशियों - उसकी स्वर रज्जु, उसकी जीभ, उसका जबड़ा - के बीच का संबंध टूट गया हो।
"जब तक उजाला है, उस जगह की अच्छी तरह तलाशी लो। उस पत्थर के पीछे देखो जहाँ वह बैठा था। अगर कुछ मिले तो यहाँ ले आओ। जब वे उसे ढूंढने आएँ तो उसका कुछ भी नहीं मिलना चाहिए।"
घटकरपारा पर अंधेरा ऐसे छा गया मानो कोई विशाल पक्षी पंखों पर सवार हो। ऐसा लगा जैसे कोई हाथ उसे ज़मीन से उठा रहा हो, ले जा रहा हो, लेकिन उसे यकीन था कि यह वही काला पक्षी है, जो उसे अपनी पकड़ में जकड़कर एक गहरे, अथाह गड्ढे में ले जा रहा है।

*

रात ने महल को घने अंधेरे में लपेट लिया था, जिससे उसके ऊंचे गुंबदों, बालकनियों और छतों की आकृति धुंधली पड़ गई थी। धनवंतरी की थकी हुई आंखों के लिए यह बताना मुश्किल था कि रात कहां खत्म होती है और महल कहां शुरू होता है। महल की खिड़कियों पर जगमगाती बत्तियां भी अंधेरे के आगे मंद और सिमटती हुई प्रतीत हो रही थीं, जबकि सड़क को रोशन करने वाली मशालें अनिश्चितता के धुंधले घेरे जैसी लग रही थीं, उनकी परछाईं नीचे झील में भूतों की तरह लहरा रही थीं। गाड़ी की खिड़की से झांकते हुए वैद्य को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि अंधेरे में महल कितना नाजुक और खोखला दिखाई दे रहा था।
रथ सड़क पर आगे बढ़ा और धनवंतरी को कुछ राहत मिली कि झील से उठती धुंध ही आँखों को धोखा दे रही थी, जिससे इमारतें धुंधली और अस्पष्ट दिखाई दे रही थीं।

फिर भी, जब रथ महल के द्वार पर रुका, तो धनवंतरी ने महल में एक गहरी, गंभीर खामोशी महसूस की, एक ऐसी खामोशी जिसने उज्जैन की अपनी वापसी यात्रा के अंतिम चरण में सुनी हर बात की पुष्टि कर दी।
"साउंसलर को नमस्कार," महल के रक्षकों के एक कप्तान ने चिकित्सक के जमीन पर उतरने पर झुककर अभिवादन किया।
“प्रणाम, कप्तान।” ऊपर देखते हुए, धनवंतरी ने देखा कि पुराना द्वार—वह द्वार जिसे महल पर हमले की रात विशाल, नीली चमड़ी वाले राक्षस ने तोड़ दिया था—उनकी अनुपस्थिति में एक नए द्वार से बदल दिया गया था, जो काले लोहे का बना था और पीतल से मजबूत किया गया था।
"क्या सम्राट अभी भी जाग रहे हैं?" उसने द्वार में बने एक छोटे दरवाजे से अंदर जाते हुए पूछा।
“मुझे पक्का नहीं पता, माननीय न्यायाधीश। मैं किसी से जाँच करवा सकता हूँ और...”
“नहीं, नहीं,” धनवंतरी ने हाथ हिलाते हुए कहा। “कोई बात नहीं। राजा को परेशान मत कीजिए। मैं रानी विशाखा का हालचाल जानने आया हूँ। क्या उनके साथ कोई है?”
मैं किसी को ला सकता हूँ...
“कोई बात नहीं। मुझे रास्ता पता है।” चिकित्सक ने कप्तान को संक्षिप्त रूप से सिर हिलाकर जवाब दिया। “आप अपने पद पर वापस जा सकते हैं।”
धनवंतरी गलियारे को पार करके ऊपरी मंजिलों की ओर जाने वाली सीढ़ियों के लगभग नीचे ही पहुँच गए थे कि तभी एक और आवाज़ ने उनका अभिवादन किया। मुड़कर देखा तो चिकित्सक ने विस्मया को पहचाना, जो नगर रक्षक दल के एक वरिष्ठ और सम्मानित कप्तान थे। लेकिन कप्तान के कांस्य पदक के स्थान पर, उनके गले में महल के रक्षकों के प्रमुख का चांदी का पदक था।
"नमस्कार," धनवंतरी ने चांदी के पदक को घूरते हुए अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। "यह कब हुआ?"
“कुछ दिन पहले, महाराज।” विस्मया कद में छोटा था, धनवंतरी के बराबर। उसकी नाक थोड़ी टेढ़ी थी और दाढ़ी छोटी, करीने से संवारी हुई और भूरे रंग की थी। “आप कौशांबी से कब लौटे?”

"लगभग दो घंटे पहले। मैंने रानी के बारे में सुना था, इसलिए मैं उन्हें देखने आया।"
“तो मुझे आपको रोकने की जरूरत नहीं है,” विस्मया ने झुककर कहा।
धनवंतरी सीढ़ियाँ चढ़ने लगे। तीन सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद वे रुके और पीछे मुड़कर बोले, “बधाई हो, कमांडर। आप इस पदक के पूरी तरह हकदार हैं।”
“धन्यवाद, पार्षद जी। मुझे उम्मीद है कि मुझे महल के मुझ पर रखे गए भरोसे को चुकाने का मौका मिलेगा।”
सीढ़ियाँ चढ़ते हुए, चिकित्सक का ध्यान उज्जैन में उनकी संक्षिप्त अनुपस्थिति के दौरान हुए अनेक परिवर्तनों की ओर आकर्षित हुआ। महल में एक नया द्वार और महल के रक्षकों का एक नया प्रमुख नियुक्त किया गया था; संभवतः ये दो ही अच्छी खबरें थीं, जो निराशाजनक खबरों के अंबार में समाई हुई थीं, जिनका सामना उन्हें और उनके साथ आए अंगरक्षकों को घर लौटते समय करना पड़ा था।
यह घटना पिछली दोपहर को शुरू हुई थी, जब वह और उसके साथी अपने घोड़ों को आराम देने के लिए एक अश्वारोह पर रुके थे। एक पहरेदार की एक शराबी शहद विक्रेता से बातचीत हो गई, जिसने उज्जैन के आधे हिस्से को आकाश से विष उगलने वाले एक सर्प द्वारा नष्ट किए जाने का विस्तृत वर्णन किया। धनवंतरी और उसके साथियों ने इस कहानी को अत्यधिक शराब के सेवन का नतीजा मानकर खारिज कर दिया, लेकिन उसी रात, जब उन्होंने एक बंजर खेत में डेरा डाला, तो उज्जैन से भाग रहे धातुकर्मियों का एक परिवार आग के पास आकर उनसे मिला। उनसे, वैद्य को उस विशाल सर्प द्वारा मचाई गई तबाही के बारे में पता चला, और कैसे अंततः क्षपणक, अमर सिंह और शंकु के संयुक्त साहस और असाधारण शक्तियों से उसे पराजित किया गया था। धातुकर्मियों ने वैद्य के उज्जैन से अचानक चले जाने का भी जिक्र किया - वे बस इतना जानते थे कि इसका संबंध सर्वज्ञ द्वारा सम्राट को दिए गए खंजर से था।
रात बेचैनी से गुज़री और सुबह और भी बुरी खबर लेकर आई। धनवंतरी और उनके साथियों को उज्जैन से आ रहे एक और भयभीत परिवार से मुलाक़ात हुई, और इस परिवार ने धातुकर्मियों की कही हुई बातों की पुष्टि की। इसके अलावा, उन्होंने विशाखा पर किसी जीव के हमले और उसके फिर से कोमा में चले जाने का एक भयावह लेकिन अधूरा विवरण दिया। इस सदमे से धनवंतरी पूरी तरह उबर भी नहीं पाए थे कि कुछ घंटों बाद, उनकी मुलाक़ात शाही सेना की एक छोटी टुकड़ी से

हुई, जिनसे धनवंतरी ने कालिदास और वरारुचि के कड़वे अतीत और संसप्तक द्वारा अवंती और उसके सिंहासन की सेवा करने से इनकार करने के बारे में सुना।
धनवंतरी अत्यंत अविश्वास के साथ उज्जैन के द्वार में दाखिल हुए, लेकिन घर पहुँचने पर उनकी पत्नी मदारी ने रास्ते में सुनी हर बात की पुष्टि की। उन्होंने उन्हें अही और उज्जैन की रक्षा के बारे में बताया, और उन चमत्कारी शक्तियों के बारे में भी बताया जो सलाहकारों ने अपने भीतर खोजी थीं। उन्होंने उन्हें रूप बदलने वाले यक्ष द्वारा विशाखा पर किए गए हमले के बारे में बताया, जिसके कारण विशाखा को फिर से विक्षिप्त होना पड़ा और शुक्राचार्य का असली चेहरा सामने आया। और उन्होंने निराशा से कालिदास के अपने हूण वंश को याद करने और वरारुचि द्वारा अपने परिवार की निर्मम हत्या को याद करने की बात सुनी।
रानी के कक्ष के द्वार पर हल्की सी दस्तक हुई और विशाखा की दो दासियों में से एक ने चिकित्सक को अंदर आने दिया। कक्ष दो दीपों से रोशन था और उनकी रोशनी में धनवंतरी ने वृद्ध महिला और दूसरी दासी को देखा, जो विशाखा के लेटे हुए शरीर पर बेंत और मोर पंखों से बना पंखा चला रही थी। रानी की खाली और स्थिर निगाहों को देखकर धनवंतरी समझ गया कि उसके बीमार पड़ने के बारे में उसे जो कुछ भी बताया गया था, वह सब सच था।
“क्या वह पर्याप्त भोजन कर रही है?” उसने मेट्रन के अभिवादन के जवाब में सिर हिलाते हुए पूछा। “पर्याप्त पानी?” उसने विशाखा की कलाई पकड़ी और उसकी नब्ज़ जाँची, जो धीमी लेकिन स्थिर थी। हालाँकि, उसका हाथ और चेहरा दोनों ही बहुत पतले और पीले थे।
“माननीय न्यायाधीश महोदय, हम यथासंभव उसे भोजन उपलब्ध कराने का भरसक प्रयास करते हैं,” मैट्रन ने उत्तर दिया। “पार्षद क्षपनाका यह सुनिश्चित करती हैं कि वह कुछ न कुछ खा ले।”
महल में मौजूद प्रशिक्षु चिकित्सकों में से एक के लिए दरवाजा खुला। विस्मया ने उसे सूचित कर दिया था, और वह धनवंतरी को प्रणाम करते हुए कमरे में तेजी से आया।
"प्रणाम, सलाहकार।" युवक अचानक रुक गया, खुद पर संदेह करते हुए। "मैं... क्या... क्या मुझे कुंजला वैद्यनाथ को बुलाना चाहिए, महाराज?"
“नहीं,” धनवंतरी ने सिर हिलाते हुए विशाखा की पलकें ऊपर उठाईं और उसकी पुतलियों को ध्यान से देखा। “मैं सुबह उनसे बात करूँगा। क्या आप मुझे बता सकती

हैं कि रानी को कौन सी दवाइयाँ दी जा रही हैं?”
राजचिकित्सक को प्रभावित करने की उत्सुकता में, शिष्य ने कुंजला द्वारा विशाखा के लिए निर्धारित सभी लेपों, काषायों और अन्य औषधियों का विस्तृत और उत्साहपूर्ण विवरण देना शुरू कर दिया। विवरण संपूर्ण था और धनवंतरी को संतुष्ट कर गया। वह सहमति में सिर हिला ही रहे थे कि तभी दरवाजा फिर खुला और विक्रमादित्य और उपश्रुति अंदर आ गए।
“महारानी माँ को प्रणाम,” चिकित्सक ने उपश्रुति को प्रणाम किया।
“हमें बताया गया था कि आप यहाँ हैं।” सम्राट के स्वर में आश्चर्य का भाव था। “आप उज्जैन कब लौटे?”
“कुछ देर पहले।” वैद्य ने महल में एक और हालिया बदलाव देखा — सम्राट के गालों और जबड़े पर अब घनी दाढ़ी थी जिसमें कुछ सफेद बाल भी थे। “मुझे इसके बारे में मदारी से पता चला और मुझे आना पड़ा।”
“यह सुबह तक इंतजार कर सकता था,” राजा ने कहा। “यात्रा ने तुम्हें काफी थका दिया होगा।”
धनवंतरी ने कंधे उचकाते हुए कहा, "मैं बस देखना चाहता था। दरबारी चिकित्सक होने के नाते यह मेरा कर्तव्य है... और आपके मित्र और सलाहकार होने के नाते भी।"
विक्रमादित्य ने विशाखा के पास जाते हुए अपना सिर झुकाया और उसके मुरझाए और भावहीन चेहरे को देखा। सम्राट पर मानो उदासी का पर्दा छा गया और धनवंतरी उनकी इस उदासी को सहन नहीं कर सका।
“तुम्हें क्या लगता है?” उपश्रुति ने पलंग की ओर इशारा करते हुए पूछा। “क्या वह... क्या वह...?”
“सच कहूँ तो, महारानी माँ, मैं कुछ नहीं कह सकता। हमें उन पर नज़र रखनी होगी, अलग-अलग तरीके आज़माने होंगे... पहले की तरह...” चिकित्सक ने सम्राट और उनकी माँ के अचानक झुके कंधों से उनकी निराशा को भांप लिया। “हमें उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए, बिलकुल नहीं। मेरा मतलब है... वे ठीक हो गई थीं, इसलिए उम्मीद है... और मैं अपनी तरफ से हर संभव कोशिश करूँगा।”
कुछ देर बाद, सम्राट और वैद्य एक गलियारे से नीचे उतर रहे थे। यद्यपि रात काफी ढल चुकी थी, फिर भी महल इतना शांत था जितना धनवंतरी ने पहले कभी नहीं

देखा था; उसे ऐसा लग रहा था मानो दीवारें और खंभे भी मौन शोक मना रहे हों।
"मैं उसे इस हालत में नहीं देख सकता।" ये शब्द राजा के होठों से पीड़ा से उधेड़ते हुए निकले, हृदय की ऐसी अभिव्यक्ति जिसने धनवंतरी को अपने मित्र के चेहरे की ओर देखने पर मजबूर कर दिया। दीर्घा में जल रही मशालों की रोशनी विक्रमादित्य की आँखों में बहते आँसुओं पर पड़ रही थी, जिन्हें उन्होंने दृढ़ इच्छाशक्ति से रोक रखा था।
क्या कहें, यह न जानते हुए चिकित्सक चुप रहे। वे सम्राट के कक्षों की ओर जाने वाले मोड़ से आगे बढ़े और धनवंतरी को एहसास हुआ कि विक्रमादित्य बात करना चाहते हैं। गलियारा एक घुमावदार, आंशिक रूप से दीवार से घिरी हुई छत पर खुलता था, जिसकी दीवार के साथ पत्थर की बेंचें लगी हुई थीं। सम्राट एक बेंच पर बैठ गए और धनवंतरी उनके बगल में बैठ गए।
"उसे मैं याद था," विक्रमादित्य ने मुस्कुराते हुए चिकित्सक की ओर देखा, और धनवंतरी ने देखा कि उदासी के पीछे उस याद से उपजी खुशी थी। "उसे मैं विक्रम के नाम से याद था, जब हम दोनों छोटे थे। और उसने दोनों के बीच संबंध जोड़ लिया।"
"मुझे पता है। मदारी ने मुझे बताया था।"
"और फिर सब खत्म हो गया।" अगर सम्राट ने धनवंतरी की बात सुनी भी थी, तो उन्होंने इसका कोई संकेत नहीं दिया। "फिर चला गया।"
वैद्य ने राजा के हाथ पर हाथ रखा। "आपने वैद्य को उसे देखने क्यों नहीं दिया? शायद इससे मदद मिल जाती।"
"तब तो मैं उनका ऋणी हो जाता। और फिर, अगर उन्होंने मुझसे कटार मांग ली होती तो क्या होता?" विक्रमादित्य ने सिर हिलाया। "मैं ऐसा कुछ भी नहीं करूंगा जिससे महादेव से किया मेरा वादा टूट जाए।"
वे एक बार फिर चुप हो गए, और एक बार फिर राजा ने ही चुप्पी तोड़ी।
"मुझे आपसे माफी मांगनी है।" धनवंतरी को तीखी निगाहों से देखते देख सम्राट ने सिर हिलाया। "मैं वैद्य की बातों में खो गया था, उनके आश्वासनों में अंधा हो गया था, उनकी प्रतिभाओं से प्रभावित हो गया था। मैं विशाखा को ठीक होते देखना चाहता था, और उस जुनून और वैद्य की सफलताओं ने मुझे वह सब भुला दिया जो आपने

किया था। मैंने आपकी अनदेखी की, मैंने वैद्य को वह महत्व दिया जो आपको देना चाहिए था। मुझे खेद है। अगर आप मुझे क्षमा कर सकें तो कर दीजिए।"
"अरे, ये क्या है..." चिकित्सक ने विक्रमादित्य का हाथ अपने दोनों हाथों में लेकर उसे तसल्ली देते हुए हल्के से दबाया। "मैं समझता हूँ, मेरे मित्र। क्षमा मांगने की कोई बात नहीं है, क्षमा करने की कोई बात नहीं है। कृपया इस बारे में फिर कभी बात न करें।"
राजा और वैद्य गैलरी से नीचे उतर रहे थे कि वैद्य ने अविश्वास से अपना सिर हिलाया। उन्होंने विक्रमादित्य की ओर देखते हुए कहा, "इतने कम समय में इतना कुछ घटित हो गया है! क्या... हमारे साथ क्या हुआ है? हम इस तरह क्यों भोग रहे हैं, हम किन पापों का प्रायश्चित कर रहे हैं?"
अपने मित्र की ओर देखते हुए सम्राट ने कंधे उचका दिए। "तुम्हें याद है ना कि देवी ओरेकल ने ग्रहण के कारण अवंती के सूर्य के नष्ट होने की बात कही थी?" धनवंतरी को सिर हिलाते देख राजा ने आगे कहा, "काश ओरेकल की भविष्यवाणी गलत होती, लेकिन मुझे लगता है कि वह गलत नहीं है।"
"उम्मीद है कि यह ग्रहण जल्द ही गुजर जाएगा।"
"यह समय भी बीत जाएगा।" वे उस मोड़ पर पहुँच गए थे जहाँ उन्हें रात के लिए अलग होना था। विक्रमादित्य ने गैलरी की ओर देखा, फिर महल का जायजा लिया। "मुझे नहीं पता कि इसकी विशाल छाया अपने साथ क्या ले जाएगी; क्या बचेगा और क्या हमेशा के लिए खो जाएगा।"

*

जड़ी-बूटी संग्रहालय के बीचोंबीच एक तालाब था, जो चौड़ा, शांत और उथला था। यह तालाब चौड़ी पत्तियों वाले पौधों और घनी लताओं से सावधानीपूर्वक ढका हुआ था, जो पास के पेड़ों की शाखाओं से पर्दे की तरह लटक रही थीं। रहस्यमयी जड़ी-बूटियों की मादक सुगंध होलिका को अपनी ओर खींच रही थी और उसे अंदर आने के लिए आमंत्रित कर रही थी। होलिका ने लताओं को हटाया और तालाब के किनारे आकर देखा कि हिरण्यक्ष सीने तक पानी में डूबे हुए हैं। असुर स्वामी की आंखें बंद थीं और वे उष्णकटिबंधीय सुगंधों से सराबोर शांति में डूबे हुए थे। पानी इतना साफ

था कि तालाब की तलहटी में गोल, काले पत्थरों के बीच तैरती मछलियां साफ दिखाई दे रही थीं।
होलिका एक पल के लिए चुपचाप खड़ी रही, पानी में नग्न अवस्था में तगड़े, बलवान और चौड़े कंधों वाले हिरण्याक्ष के दृश्य को निहारती रही; उसके माथे पर घुमावदार मेढ़े के सींग भव्य लग रहे थे, उसका चेहरा कठोर, बाल रहित और सुंदर था। असुर के शरीर पर उठती लहरों के ख्याल से ही उसके रोंगटे खड़े हो गए, उसके भीतर बिजली की गति से वासना दौड़ उठी और उसकी सांसें तेज हो गईं।
"हे भगवान!"
पाताल की चुड़ैल रानी ने आश्चर्य से असुर की ओर देखा, और पाया कि उसकी आँखें अभी भी बंद थीं। उसके होठों पर एक छोटी सी, चंचल मुस्कान तैर रही थी।
“तुम्हें कैसे पता चला कि यह मैं ही हूँ?” उसने पूछा।
मुस्कान और चौड़ी हो गई और हिरण्याक्ष ने अपनी सुनहरी आँखें खोलीं, जो सूरज की रोशनी की तरह चमक रही थीं। "रात के इस समय मेरे पास तुम्हें छोड़कर और कौन आएगा?"
असुर ने बैठने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन होलिका ने उसे अनसुना कर दिया। मुड़कर वह एक तरफ रखी काई से ढकी पत्थर की बेंच की ओर बढ़ी और उस पर बैठ गई।
"मुझे बताया गया था कि तुम देवलोक से लौट आए हो," उसने अपनी ठंडी, नीली आँखों से हिरण्याक्ष का आकलन किया।
"जी हां, महागुरु ने सुझाव दिया कि मुझे वापस आकर अपने भाई की वापसी की तैयारी करनी चाहिए।"
“हिरण्यकशिपु अपनी तपस्या से लौट रहा है?” होलिका उत्सुकता से उठ बैठी। “कब?”
"महागुरु ने तो कुछ नहीं कहा, लेकिन हड्डियों ने उन्हें बता दिया है कि भाई जल्द ही हमारे साथ होंगे।"
कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा, इस दौरान होलिका ने अनुमान लगाया कि हिरण्याक्ष अकेले ही लौट आया है।
“महागुरु आपके साथ वापस नहीं आए?” असुर स्वामी को सिर हिलाते देख होलिका ने पूछा, “उन्हें देवलोक में क्या रोके हुए है? क्या वे इंद्र को मानव राजा को हराने में

सहयोग करने की आवश्यकता के बारे में समझाने में सफल नहीं हुए?”
“ओह, इंद्र तो हमारे साथ काम करने के लिए बहुत जल्दी राजी हो गए।” हिरण्याक्ष बोलते हुए लापरवाही से पानी उछाल रहे थे। “वह जिद्दी तो हैं, लेकिन मूर्ख नहीं। नहीं, महागुरु इसलिए रुके हैं क्योंकि उनका कहना है कि उनका कुछ काम अधूरा रह गया है।”
"क्या कोई अधूरा काम बाकी है?"
असुर स्वामी ने सिर हिलाया, फिर कंधे उचका दिए।
होलिका ने बात वहीं खत्म कर दी। “महागुरु ने जिस महान योजना की बात की थी, मानव राजा को नष्ट करने के लिए बनाई गई उस योजना का क्या हुआ?” वह उत्साह से आगे झुकी। “क्या हमने उस दिशा में कोई प्रगति की है?”
“बिल्कुल,” हिरण्याक्ष ने हंसते हुए कहा। “महागुरु के अनुसार, राजा और उनके एक सलाहकार के बीच पहले ही एक ऐसा मतभेद हो चुका है जिसे ठीक नहीं किया जा सकता। इसलिए, नौ मोतियों की शक्ति कम होने लगी है। लेकिन यह तो बस शुरुआत है। मानव राजा पर असली प्रहार तो देव गंधर्वसेना करेंगे।”
“गंधर्वसेना?” होलिका नाम पहचानने की कोशिश कर रही थी। भौंहें चढ़ाते हुए उसने कहा, “यह नाम मैं नहीं जानती। ये कौन हैं?”
कुछ शक्तिशाली झटकों के साथ, असुर स्वामी तैरकर बेंच तक पहुँच गया। पानी में रहते हुए, उसने गंधर्वसेना के बारे में और घटनाओं पर उसके प्रभाव के बारे में बताया। शुक्राचार्य की धूर्तता से मोहित होकर, डायन रानी ने उत्सुकता से सुना, विक्रमादित्य के लिए रची गई तबाही को देखकर उसके लाल होंठ आश्चर्य से खुल गए।
"क्या गंधर्वसेना मानवलोक के लिए रवाना हो गए हैं?" असुर द्वारा अपना वर्णन समाप्त करने के बाद उसने विस्मय से फुसफुसाते हुए पूछा।
“उसे और इंद्र को जल्द ही रवाना होना है।”
“और उसके बाद क्या होगा... गंधर्वसेना के बाद?”
उसके बाद, मानव राजा और उसके नौ मोती महत्वहीन हो जाएंगे।
“और हलाहल?” होलिका की आवाज़ में अचानक घबराहट आ गई। “इंद्र मानव जगत में होंगे। वे किसी तरह पहुँच सकते हैं...”

हिरण्याक्ष ने हाथ बढ़ाकर होलिका का हाथ अपने हाथों में ले लिया। हाथ सहलाते हुए उसने प्यार से कहा, "वैषद के खंजर को कुछ नहीं होगा। देवताओं को उसके ठिकाने का कोई पता नहीं है। महागुरु जानते हैं कि वह जहाँ है, वहाँ सुरक्षित है, कम से कम अभी के लिए।"

"यह जगह कब तक सुरक्षित रहेगी?" होलिका बेंच से नीचे फिसल गई थी और पूल के किनारे घुटनों के बल बैठी थी।

"मुझे नहीं पता," असुर स्वामी ने होलिका का हाथ हल्के से खींचते हुए उत्तर दिया। चुड़ैल रानी ने अपने कंधों से हल्की शॉल उतारकर पानी में छलांग लगा दी। "इसीलिए महागुरु ने निर्देश दिया है कि भाई का स्वागत करने की तैयारी के साथ-साथ हमें युद्ध की भी तैयारी करनी चाहिए।"

"हम किससे युद्ध करने जा रहे हैं?" होलिका की आवाज कांप रही थी, हालांकि वह यह नहीं कह सकती थी कि यह ठंडे पानी के कारण था या हिरण्यक्ष द्वारा अचानक किए गए कठोर प्रहार के कारण।

"हो सकता है वो इंसान का राजा हो, अगर उसमें लड़ने की थोड़ी भी ताकत बची हो। हो सकता है वो देवता हों।" असुर ने चुड़ैल रानी की कमर में हाथ डालकर उसे अपने करीब खींच लिया, और रानी ने भी उसकी गर्दन को कसकर पकड़ लिया। उसकी सुनहरी आँखें उसकी आँखों में ऐसे गूँज रही थीं मानो उसकी आत्मा में झाँक रही हों। "कौन जाने, शायद हमें उन दोनों से ही लड़ना पड़े।"

होलिका अपने पंजों पर खड़ी हुई और असुर का सिर अपनी ओर खींच लिया। उनके होंठ और अंग उन्माद में एक-दूसरे से लिपट गए, कठोरता और कोमलता ने एक-दूसरे के लिए मदहोश कर देने वाली जगहें बना दीं, और उनकी कामुकता की मादक सुगंध खिल उठी और उनके आसपास की अनोखी खुशबुओं में घुलमिल गई।

*

"प्रणाम, मेरे स्वामी।"

इंद्र, अपनी कोहनियों को उस मुंडेर पर टिकाए हुए, जिस पर वह झुके हुए थे, अपने कंधे के ऊपर से अपने शयनकक्ष को बालकनी से जोड़ने वाले दरवाजे की ओर देखा, जहाँ एक आकृति परछाई के रूप में खड़ी थी, शयनकक्ष में जल रही मशालों

की रोशनी से पीछे से रोशन थी, फिर भी दरवाजे की छाया में छिपी हुई थी, बालकनी को रोशन करने वाली हल्की चांदनी से बाहर थी।
"प्रतिनिधित्व करना।"
"जी महाराज।"
जैसे ही इंद्र सीधे खड़े हुए, वह आकृति बालकनी पर आ गई। चांदनी में एक देव दिखाई दिए, जो गठीले शरीर वाले और गहरे रंग के शॉल में लिपटे हुए थे, जिससे उनमें रहस्यमयी आभा झलक रही थी। उनकी ठुड्डी पर भूरे रंग की घनी दाढ़ी थी, जो स्टाइलिश ढंग से बिखरी हुई थी, और उनका माथा चौड़ा था, जिसके बाल ऊपर की ओर बढ़ते हुए पीछे हट रहे थे। उन्होंने छोटे लेकिन भारी झुमके पहने हुए थे। उनकी आंखें बड़ी थीं, लेकिन भारी और झुकी हुई पलकों के कारण उनमें नींद का भाव झलक रहा था।
“हे प्रभु, मैं सिंधुवर्त जाने के लिए पूरी तरह तैयार हूँ,” देवता ने घोषणा की।
"विक्रमादित्य के राज्य में पहुँचने के बाद आपको पता है कि क्या करना है।"
यह कोई सवाल नहीं था। मताली ने चुपचाप अपना सिर झुकाया।
इंद्र ने संतोष से सिर हिलाते हुए कहा, "गंधर्वसेना और मैं थोड़ी देर में वहाँ पहुँच जाएँगे।"
“तो मैं आज रात ही प्रस्थान करूँगा, मेरे स्वामी। मैं आपके आगमन की प्रतीक्षा करूँगा।”
“मुझे आपको यह याद दिलाने की ज़रूरत नहीं है कि मानव राजा बुद्धिमान और...”
इंद्र थोड़ी देर रुके, फिर खुद को बोलते रहने के लिए मजबूर किया, उनके होंठ टेढ़े हो गए और उन्होंने शब्द थूकते हुए कहा, “... बहादुर है। आप जानते हैं कि अश्विनों और मरुतों का क्या हाल हुआ था। आप जो भी करें, बहुत सावधान रहें।”
“जी हां, महाराज। आप मुझ पर भरोसा कर सकते हैं।”
देवों के स्वामी ने अंतिम सहमति से सिर हिलाया। उनकी आज्ञा का पालन करते हुए, मताली ने प्रणाम किया और पीछे हट गए। आकृतियों और परछाइयों के एक भ्रामक परिवर्तन के रूप में, देव फिसलते, पिघलते और रिसते हुए बालकनी और शयनकक्ष से होते हुए तब तक आगे बढ़ते रहे जब तक कि वे पूरी तरह से दृष्टि से ओझल नहीं हो गए। एक क्षण के लिए, इंद्र ने पलकें झपकाईं और उन स्थानों को घूरते रहे जहाँ मताली तेजी से आए और चले गए, फिर अमरावती की ओर देखने लगे।

महल के सबसे ऊंचे शिखरों में से एक से बालकनी निकली हुई थी, जहाँ से शहर का एक विहंगम दृश्य दिखाई देता था, जो चांदनी के समान रंग की हल्की धुंध की चादर में जगमगा रहा था। ऐसा लग रहा था मानो प्रकाश स्वर्ग से बरसा हो और शहर के उद्यानों और जंगलों में जम गया हो। महल के करीब, धुंध ऊँची चट्टानों और पहाड़ियों के चारों ओर अपनी उंगलियाँ घुमा रही थी, लेकिन खाई से मजबूती से दूर रही, मानो उसकी गहराई में छिपे किसी रहस्य से भयभीत हो। रात की हवा एकदम शांत थी, मानो महल और अमरावती सो रहे हों।

लेकिन इंद्र स्वयं नींद से वंचित थे।

जब शुक्राचार्य ने पहली बार उन्हें गंधर्वसेना की क्षमताओं के बारे में बताया था, तो देवता की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा था। विक्रमादित्य के प्रति उनके भीतर व्याप्त घृणा, अश्विनों और मरुतों के अपमानित होकर लौटने की शर्मिंदगी, और हर पल उनके साथ रहने वाली बदला लेने की तीव्र इच्छा - गंधर्वसेना इन सबका समाधान थे। मानव राजा को कुचलने की तीव्र इच्छा ने उन्हें इतना प्रेरित किया कि उन्होंने शुक्राचार्य के हर सुझाव का पूर्णतया पालन किया, और अब वे अवंती की यात्रा पर निकलने ही वाले थे।

हालांकि, समय के शांत प्रभाव से इंद्र को यह अहसास हो गया था कि उनका यह गठबंधन अस्थायी था, और देवता और असुर पहले की तरह ही मित्र नहीं रहे थे। विक्रमादित्य के हट जाने के बाद, वैषद के खंजर के लिए संघर्ष एक बार फिर प्राथमिकता बन गया। यह मानना उनकी मूर्खता होगी कि असुरों ने सद्भावना से खंजर की खोज छोड़ दी थी, और यदि शुक्राचार्य खोज में लगे थे, तो यह आवश्यक था कि देवताओं को हलाहल के ठिकाने का पता पहले चल जाए।

और यहीं से मताली की भूमिका शुरू हुई।

इंद्र को लगा कि नीचे कहीं कुछ हलचल हो रही है, और उसने अपनी निगाहें नीचे फैले महल के विशाल प्रांगणों पर टिका दीं। प्रांगण मशालों से जगमगा रहे थे, और उनकी रोशनी में, उसे एक परछाई तेज़ी से आती-जाती दिखाई दी। उसने उस परछाई का पीछा किया जो दक्षिणी पुल पर सरक गई, लेकिन कुछ ही क्षणों में वह गायब हो गई, अथाह अंधेरे में समा गई।

मताली ने कहा था, "तुम मुझ पर भरोसा कर सकते हो।" इंद्र को पता था कि वह कर सकता है। एकांतप्रिय और संघर्षशील मताली ने अतीत में इंद्र की अच्छी सेवा

की थी। देवों में बाधाओं को भेदने का एक अनूठा तरीका था। और वह अपने हाथों को - या अपनी अंतरात्मा को - दागदार करने से नहीं डरता था।
मताली पता लगा लेगा कि उस इंसान ने खंजर कहाँ छिपाया है। मताली पता लगाने का कोई न कोई तरीका जरूर ढूंढ लेगा।

फिरौती

परिषद कक्ष का दरवाजा ठीक सामने था, अंधेरा, भारी और कठोर, मानो शंकु का रास्ता किसी पुराने शत्रु की तरह रोक रहा हो। उसे देखते ही युवा पार्षद को थोड़ी सी झिझक हुई और उसने अपनी गति थोड़ी धीमी कर दी, और एक क्षणिक क्षण के लिए उसके मन में पीछे मुड़कर चुपके से निकल जाने की तीव्र इच्छा जागी।
कुछ पल बीत गए और शंकु दरवाजे के पास पहुंची, उसे याद था कि वह आखिरी बार उस विशाल नक्काशीदार लकड़ी के ढेर के दूसरी तरफ कब थी - यह उस दिन के बाद का दिन था जब नाग-ड्रैगन ने उज्जैनी पर हमला किया था और यक्ष ने मैदान में विशाखा को मारने की कोशिश की थी। वे सभी सम्राट के साथ उस कमरे में थे और शूरसेना द्वारा दंडकभुक्ति की लौह खानों पर कब्जा करने के कारण उत्पन्न होने वाले लौह संकट पर चर्चा कर रहे थे। अयस्क की कमी को पूरा करने के लिए, परिषद ने सहमति व्यक्त की थी कि आचार्य रानी अभिरामी के दरबार में एक राजनयिक मिशन का नेतृत्व करेंगे, ताकि ओद्रा को अवंती के साथ लोहे का व्यापार करने के लिए राजी किया जा सके।

ऐसा लग रहा था मानो वो दिन सदियों पहले की बात हो। शंकु ने दरवाजा धकेलते हुए सोचा, इसमें कोई हैरानी की बात नहीं थी; महल में तब से बहुत कुछ घट चुका था। उस दिन वेताल भट्ट और कालिदास दोनों सभा में मौजूद थे, और वररुचि द्वारका को बचाने के लिए हुए युद्ध से अभी तक वापस नहीं लौटे थे; जबकि अब राजगुरु अवंती को मजबूत करने के इरादे से उत्तरा तोसली की ओर जा रहे थे, वहीं कालिदास ने वररुचि और अवंती से बेतहाशा झगड़ा किया और महल छोड़कर चले गए, फिर कभी वापस नहीं लौटे...

कालिदास के विचारों को मन से झटकते हुए—और यह सोचते हुए कि अगर आचार्य उस समय मौजूद होते जब पागलपन अपने चरम पर पहुंचा—तो क्या परिस्थितियाँ कुछ और होतीं—लड़की परिषद कक्ष में दाखिल हुई और उज्जैनी में मौजूद सलाहकारों को अभिवादन करते हुए सिर हिलाया। अमारा सिंह विक्रमादित्य की ऊँची कुर्सी के बाईं ओर बैठे थे; उनके बगल में धनवंतरी थे, जिनके बारे में उसने अनुमान लगाया कि वे पिछले दिन देर से लौटे थे। क्षपणक और वराहमिहिर सम्राट के दाहिनी ओर मेज के दूसरी ओर बैठे थे। वह जानती थी कि वररुचि महल में नहीं थे; वे तीन दिन पहले अपनी माता उषांथा से मिलने गए थे। सम्राट स्वयं एक खुली खिड़की के पास रखी एक छोटी मेज पर झुके हुए एक ग्रंथ को पढ़ रहे थे।

"शंकुबल," उसने स्क्रॉल से नज़रें उठाते हुए कहा। "बैठो। मैं अभी आता हूँ।"

धनवंतरी मुस्कुराए और अपने बगल वाली सीट पर हाथ फेरा, और शंकु धीरे से उस पर बैठ गई। सभी के भावों को देखकर यह स्पष्ट हो गया कि वह अकेली नहीं थी जो उदास महसूस कर रही थी। अमर सिंह, क्षपणक और वराहमिहिर भी सतर्क और अपने-अपने विचारों में डूबे हुए प्रतीत हो रहे थे।

"क्या तुम्हें अब भी दरवाज़े खटखटाकर अंदर आना पड़ता है?" धनवंतरी के फूले हुए होंठों के कोनों पर हल्की सी मुस्कान आ गई, और शंकु समझ गया कि उसका प्रयास माहौल को थोड़ा खुशनुमा बनाने का था। "क्या तुम बस..." उसने अपने हाथों को अस्पष्ट रूप से हिलाते हुए कहा, "...यहाँ प्रकट नहीं हो सकते... मेरे बगल में, या... कहीं भी?"

लड़की शर्माते हुए मुस्कुराई और सिर हिलाया। अपनी नई प्रतिभा—जिसे देवी ने वरदान कहा था—के साथ वह जानती थी कि अगर वह चाहे तो कर सकती है। वह प्रतिदिन चुपके से अभ्यास कर रही थी और उसमें निपुण होती जा रही थी, अपनी

प्रतिभा का उपयोग अधिक आत्मविश्वास और सटीकता के साथ कर रही थी। लेकिन वैद्य के प्रश्न का उद्देश्य यह नहीं था। धनवंतरी ने तो बस थोड़ी हंसी-मजाक करने की कोशिश की थी—हालांकि जिस तरह की प्रतिक्रिया मिली, उससे लगता है कि उन्हें ऐसा करने की ज़रूरत नहीं थी। अमर सिंह ने औपचारिक मुस्कान दी और कमरे की ऊंची छत को निहारने लगे। उनके सामने, वराहमिहिर ने अनसुना करने का नाटक किया और अपने नाखूनों को चबाते और निहारते रहे। क्षपनाका, अपने विचारों में डूबी हुई, शंकु से नज़रें मिलाईं और फिर सम्राट की ओर एक नज़र डाली। कोई कुछ कहने को तैयार नहीं था, और धनवंतरी ने भी उदासीनता में शामिल होते हुए अपने बड़े पेट पर हाथ रख लिया और शांति से किसी चीज़ को नहीं देख रहे थे।

उसके बाद छाई खामोशी अजीब, गहरी और संकोची थी। शंकु सोच रही थी कि क्या उसे शिष्टाचारवश वैद्य से पूछना चाहिए कि वह कब लौटा था, लेकिन सौभाग्य से राजा द्वारा पढ़ी जा रही ताड़पत्र की सरसराहट से सन्नाटा टूट गया। जैसे ही विक्रमादित्य सभा की मेज की ओर बढ़ा, पाँचों आँखें सतर्कतापूर्वक उसकी ओर मुड़ गईं।

"काफी समय हो गया जब हम सब यहाँ एकत्रित हुए और विचारों का आदान-प्रदान किया।" सम्राट मेज के शीर्ष पर स्थित अपनी कुर्सी पर बैठ गए और पांडुलिपि को अपनी कोहनी के पास रख लिया। "मैं आप लोगों से कुछ बातों पर चर्चा करना चाहता हूँ, लेकिन पहले, क्या आप में से कोई परिषद के ध्यान में कुछ लाना चाहेगा?"

राजा के प्रश्न ने सलाहकारों को एक-दूसरे की ओर देखने पर मजबूर कर दिया, वे समझ नहीं पा रहे थे कि क्या कहें, और उम्मीद कर रहे थे कि कोई पहले बोलेगा। अंततः, वराहमिहिर अपनी कुर्सी पर सीधे बैठे और गला साफ किया।

"मेरे पास कोई ठोस सबूत नहीं है, लेकिन... हाँ, कस्बे के लोगों में बहुत डर का माहौल है। बेशक, आप सब यह जानते हैं। साथ ही," वह कुछ देर रुका, मानो कोई फैसला कर रहा हो, "मुझे कुछ असंतोष पनपता हुआ महसूस हो रहा है।"

शंकु ने विक्रमादित्य के चेहरे पर पीड़ा का भाव देखा, लेकिन उन्होंने पलकें झपकाकर उसे छिपाने का साहसपूर्ण प्रयास किया। शंकु ने सोचा कि नई दाढ़ी

सम्राट पर जंच रही थी; इससे उनका आकर्षण तो बढ़ गया था, लेकिन साथ ही वे अधिक उदास और गंभीर भी लग रहे थे।
"मैं डर तो समझता हूँ, लेकिन नाराजगी?" वह हैरान होकर बोला। "किस बात पर?"
"मुझे लगता है, यह डर से उपजा है," वराहमिहिर ने कंधे उचकाते हुए कहा। "और हानि से भी।"
"लोगों का मानना है कि मुझे वैषाद की कटार की ज़िम्मेदारी नहीं लेनी चाहिए थी," सम्राट ने सिर हिलाया, उनकी गहरी नज़रें मेज पर बने सूर्य-शिखर के चिन्ह पर टिकी थीं। "यही हमारी सारी परेशानियों की जड़ है, और मैंने ही अवंती पर ये मुसीबतें लाई हैं। लेकिन मैं क्या करता—" उन्होंने अपने आस-पास के चेहरों को बेबसी से देखा, "क्या मैं शिव के मुझ पर, हम पर रखे भरोसे को ठुकरा देता?
"सम्राट, उस फैसले के लिए हर कोई तुम्हें दोषी नहीं ठहराता," अमारा सिम्हा ने दिलासा देते हुए कहा। "मैं शर्त लगा सकता हूँ कि जो लोग तुम्हें दोषी ठहराते हैं, वे नगण्य अल्पसंख्यक हैं, और," उसने तिरस्कार भरी मुस्कान के साथ कहा, "पूरी तरह से मूर्ख हैं।"
"उस वैद्य—मेरा मतलब शुक्राचार्य—को विदा करना भी दुखद रहा है," वराहमिहिर ने कहा। वह थोड़ा सहम गया और धनवंतरी की ओर क्षमाप्रार्थी भरी नज़र से देखा, लेकिन वैद्य ने मौन भाव से उसकी ओर देखा। "लोग उसके चमत्कारी उपचारों के आदी हो चुके थे।"
"और, बेशक, वे इसके लिए भी मुझे ही जिम्मेदार ठहराते हैं," विक्रमादित्य की आवाज में कड़वाहट और कर्कशता थी।
"फिर से, एक छोटा अल्पसंख्यक समूह," अमारा सिम्हा ने ज़ोर देकर कहा। "अवंती के लोग पीड़ा और भय में हैं, लेकिन उन्हें अपने राजा पर गर्व है। मेरी बात मानिए।"
"तो फिर असंतोष क्यों है, और यह क्यों बढ़ रहा है?" सम्राट ने पूछा।
"दरअसल..." अमर सिंह की निगाहें मिलते ही लंगड़ा आविष्कारक हिचकिचाया। उसने शंकु को एक संक्षिप्त, तिरछी नज़र से देखा, फिर गहरी साँस ली। "दरअसल, हमारी कुछ प्रजा इस बात से नाराज़ है कि हमने कालिदास को उज्जैन छोड़ने दिया। वे... उनका मानना है कि वह राज्य की सुरक्षा के लिए खतरा है।"
कक्ष सिकुड़ता हुआ और घुटन भरा प्रतीत होने लगा। सलाहकार चुपचाप बैठे रहे, एक-दूसरे की निगाहों से बचते हुए; पर्दे सादगी से लटके रहे, मानो किसी का ध्यान

अपनी ओर आकर्षित न करना चाहते हों; यहाँ तक कि लंबी खिड़कियों से आती सुबह की धूप भी फीकी पड़कर, सिमटकर, छायादार कोनों में सिमटती हुई प्रतीत हुई, मानो वराहमिहिर के शब्दों ने उसे वहाँ धकेल दिया हो।

साथी पार्षदों की संशयपूर्ण निगाहों को भांपते हुए शंकु को अचानक याद आया कि कक्ष के द्वार के पास पहुँचते ही उसे इसी बात का डर सता रहा था। वह जानती थी कि कालिदास का ज़िक्र होना तय है, खासकर अवंती की सुरक्षा के संदर्भ में, और उसने खुद को भावनाओं को काबू में रखते हुए इससे निपटने के लिए तैयार कर लिया था। लेकिन वह लोगों के उसके प्रति सहानुभूति जताने के लिए तैयार नहीं थी—यह सोचकर उसे डर लग रहा था कि उनकी सहानुभूति उसके आत्म-सम्मान को भंग कर देगी।

"हमारे कुछ प्रजाजन?" विक्रमादित्य ने वराहमिहिर की ओर देखते हुए हैरानी से भौंहें उठाईं। उनके स्वर में हल्की झुंझलाहट थी। "इतनी सारी परेशानियों में उलझे रहने के बावजूद, मुझे नहीं पता था कि हमारे प्रजाजनों के पास कालिदास के बारे में चिंता करने का समय या साधन भी होगा। अगर मैं पूछूं, तो ये प्रजाजन कौन हैं?"

वराहमिहिर अपनी कुर्सी पर थोड़ा हिल गए। क्षपणक ने उत्तर दिया।

"सैनिकों में यह भय व्याप्त है कि देर-सवेर कालिदास हमारे लिए खतरा बन जाएगा। शाही सेना के कुछ हिस्सों में यह भावना सबसे प्रबल है।"

"विक्रमा, सैनिक जानते हैं कि युद्ध में वह क्या कर सकता है।" राजा को यह बात कितनी परेशान कर रही थी, यह देखकर वराहमिहिर ने सहज भाव से कहा, अनजाने में ही उन्होंने राजा का नाम ले लिया। "उनका डर जायज़ है। उसे कई बार देखा गया है, और हर बार उसे पश्चिम की ओर जाते हुए देखा गया है। पश्चिम में क्या है, यह सब जानते हैं।"

क्षपनाका ने कहा, "हमें यह स्वीकार करना होगा कि सैनिक सही हो सकते हैं।"

"हम किसी बात को तभी स्वीकार करेंगे जब हमारे पास उसके अस्तित्व का अकाट्य प्रमाण होगा," सम्राट ने गंभीर स्वर में उत्तर दिया। मानो बात समाप्त करने का संकेत देते हुए, वे धनवंतरी की ओर मुड़े। "परिषद वत्सा की आपकी यात्रा के बारे में जानने के लिए उत्सुक है। क्या आप कृपया हमें उसका विवरण देंगे?"

कौशांबी पहुंचने से शुरू करते हुए, चिकित्सक ने राजा चंद्रवर्धन के महल में घटी सभी घटनाओं का विस्तार से वर्णन किया - अपनी यात्रा के पीछे के वास्तविक

उद्देश्य के बारे में बात करने के लिए उनका संघर्ष, चंद्रवर्धन का उनका उपचार, राजा की स्थिति में नाटकीय सुधार, राजकुमारी रुक्मा के विवाह के विषय पर उनका अंतिम विचार और चंद्रवर्धन द्वारा राजकुमार शशिवर्धन को वत्स का अगला राजा घोषित करने के लिए सहमत होना।

"तो हरिहर को वही मिला जो वह चाहता था—राजा दामाद के रूप में।" अमर सिंह ने गुस्से से मुंह बनाया, कोहनियाँ मेज पर टिकाईं और उंगलियाँ आपस में उलझाकर नाराज़गी ज़ाहिर की। "मूर्ख को अब सुधर जाना चाहिए और शूरसेना से दोस्ती करने की कोशिश करना बंद कर देना चाहिए।"

विक्रमादित्य ने कहा, "हमें तुरंत हेहेया के पास एक दूत भेजना चाहिए, जो राजा हरिहर को राजा चंद्रवर्धन के शशिवर्धन को अपना उत्तराधिकारी नामित करने के निर्णय के बारे में सूचित करे।"

"इसकी कोई आवश्यकता नहीं है," धनवंतरी ने कहा। "कौशांबी के दूत पहले ही राजा हरिहर के दरबार में भेजे जा चुके हैं, जिन्होंने उन्हें उत्तराधिकार के बारे में सूचित कर दिया है और राजकुमारी रुक्मा को वत्स की भावी रानी के रूप में स्वीकार कर लिया है।"

"तो, सिंधुवर्त के राज्यों का गठबंधन बरकरार है," वराहमिहिर ने आह भरी। "हाल ही में हमें एक अच्छी खबर मिली है। बल्कि, दो..." हल्की मुस्कान के साथ उन्होंने चिकित्सक की ओर देखा। "चंद्रवर्धन का यह इलाज – ऐसा लगता है जैसे आपने भी कोई जादुई शक्ति खोज ली हो।"

"सचमुच, तुम्हारी सीमित प्रतिभाओं के बावजूद, लगता है तुमने आखिरकार कमाल कर दिया।" पुराने अंदाज़ में हंसमुख और चंचल लहजे में, अमरा सिम्हा ने धनवंतरी की ओर मुड़कर उसकी पसलियों में गुदगुदी की। कमरे में हंसी गूंज उठी, मानो इस बार हंसी सबको लग गई और फैल गई। मानो परछाइयां भी बिखर गईं। "अरे वाह," अमरा सिम्हा मुस्कुराया, "बिना कोशिश किए ही हमें वैद्य का विकल्प मिल गया है। लेकिन सच में, तुमने ये कैसे किया?"

"मुझे नहीं पता कि इसमें मेरी कोई भूमिका थी या नहीं," धनवंतरी ने अपने चौड़े कंधों को समेटते हुए गंभीरता से कहा। "चंद्रवर्धन के चिकित्सक बीमार होने के बाद से ही उनका इलाज कर रहे थे, इसलिए यह संभव है कि उन्हीं के प्रयासों से वे ठीक हुए हों। हो सकता है कि मैं बस सही समय पर वहाँ मौजूद था।"

“बस करो,” अमारा सिम्हा ने चेतावनी दी। “विनम्रता तुम पर बिल्कुल भी शोभा नहीं देती।”
“मैं विनम्रता नहीं दिखा रहा हूँ,” डॉक्टर ने गंभीरता से विरोध किया, और कमरे में फिर से हंसी गूंज उठी। “मुझे सच में नहीं पता कि मुझमें उपचार करने की कोई शक्ति आ गई है या नहीं।”
वराहमिहिर ने बुद्धिमानी से सिर हिलाया। "देखते हैं, देखते हैं।"
“मुझे लगता है कि आप कौशांबी में पार्षद यशोभवी से मिले होंगे?”
सम्राट के लहजे और विषय के अचानक परिवर्तन ने पार्षदों का ध्यान आकर्षित किया।
“I did,” answered Dhanavantri.
“उनके बारे में आपकी क्या राय थी? क्या उनकी कोई बात— उनका व्यवहार, या उनके द्वारा कही गई कोई बात— आपको अजीब लगी? क्या इसका शशिवर्धन से कोई लेना-देना था?”
“अजीब?” चिकित्सक ने शब्द को अपने मुँह में घुमाते हुए, उसका स्वाद लिया। अंत में उन्होंने सिर हिलाया। “जहाँ तक मुझे याद है, ऐसा नहीं है। लेकिन क्यों, सम्राट?”
पांचों चेहरों को अपनी ओर आशा भरी निगाहों से देखते हुए विक्रमादित्य ने गहरी सांस ली। “क्योंकि, अगर मेरी प्रिय बहन की बात मानी जाए तो यशोभावी का मत है कि वत्स के अगले राजा का राज्याभिषेक शशिवर्धन के बजाय घातकर्पा को होना चाहिए।”
कुछ क्षणों के लिए कक्ष में पूर्ण सन्नाटा छा गया।
“प्रलूपी ने तुम्हें ये बात सीधे-सीधे बताई?” अमरा सिंह ने अविश्वास से अपना सिर हिलाया।
विक्रमादित्य ने सिर हिलाया। अपने विचारों को संजोते हुए, सम्राट ने प्रलूपी की उस ज़िद का विस्तार से वर्णन किया कि उसका पुत्र वत्स के सिंहासन का उत्तराधिकारी बने। उन्होंने राजसूय यज्ञ के बाद प्रलूपी से हुई अपनी मुलाकात का भी जिक्र किया, जब प्रलूपी ने पहली बार उनसे आग्रह किया था कि वे चंद्रवर्धन पर दबाव डालकर घातकपर को अगला राजा बनाएं।
मैंने उससे कहा कि मैं ऐसा नहीं करूँगा, और मुझे लगा कि बात यहीं खत्म हो गई। लेकिन वह कुछ दिन पहले फिर लौटी—संयोग से उसी सुबह जब कालिदास हमें

छोड़कर गए थे—और उसने मेरी बात नहीं मानी। उसने ज़िद की कि शशिवर्धन वत्स पर शासन करने के योग्य नहीं है और तर्क दिया कि राजा चंद्रवर्धन की परिषद भी यही राय रखती है। मैं पूरी तरह से हैरान रह गया और उससे इन तथाकथित सलाहकारों के नाम पूछे। मुझे लगा कि वह झूठ बोल रही है, लेकिन उसने यशोभावी का नाम लिया।

"सिर्फ वही?" अमारा सिम्हा ने पूछा।

सम्राट ने सिर हिलाया। "फिलहाल तो यही है। लेकिन शायद और भी लोग हों।"

"हम इसका क्या अर्थ निकालें?" वराहमिहिर ने चिकित्सक की ओर देखते हुए पूछा।

"मुझे नहीं पता," धनवंतरी ने कौशांबी की यात्रा से याद करने की कोशिश करते हुए उत्तर दिया। "यशोभवी हरिहर पर इसलिए क्रोधित थीं क्योंकि वह रुक्मा और वत्स के विवाह की शर्तें तय करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन चंद्रवर्धन के प्रति हरिहर की वफादारी को देखते हुए यह स्वाभाविक ही था। वास्तव में, यशोभवी की वफादारी हमेशा से अनुकरणीय रही है, इसलिए मुझे प्रलूपी की बात पर विश्वास करना कठिन लगता है।"

"मैं भी यही सोचता हूँ," अमारा सिम्हा ने सहमति जताई।

"तो फिर, क्या प्रलूपी झूठ बोल रही थी? वह तो ऐसा करने में माहिर है..." राजा ने अपनी नई उगी दाढ़ी सहलाते हुए सोचा। "लेकिन मुझे कहीं न कहीं ऐसा लगा कि वह झूठ नहीं बोल रही थी।"

"क्या वह अभी भी उज्जैन में है?" चिकित्सक ने सम्राट की ओर देखा, जिन्होंने सिर हिलाकर सहमति जताई। "शायद, फिर आप थोड़ी और जाँच कर सकते हैं..."

"मेरा मन नहीं है कि मैं प्रलूपी के साथ घटकरपारा और वत्स के सिंहासन का मुद्दा उठाऊं और उसे फिर से इस झंझट में डालूं," राजा ने थके हुए हाथों से अपना चेहरा पोंछा। "मेरे पास पहले से ही बहुत काम है, मैं और मुसीबतें नहीं बढ़ाना चाहता।"

सिर हिलाकर और इस बात को किनारे रखते हुए, उन्होंने लेख उठा लिया।

"एक और बात है जो मैं आपसे साझा करना चाहता था — यह।" उन्होंने हल्के से पांडुलिपि को मेज पर पटका। "यह वास्तव में देवी माँ का विचार है।" कुछ ही शब्दों में, विक्रमादित्य ने देवी माँ के सुझाव को संक्षेप में बताया कि उन्हें दंडक वन के दानवों से सहायता के लिए संपर्क करना चाहिए।

“दानव सचमुच मौजूद हैं?” अमर सिंह ने संदेह भरी निगाहों से चारों ओर देखा। “और अगर मान भी लें कि वे मौजूद हैं, तो क्या वे हमारी मदद करेंगे?”
“मदर ओरेकल का कहना है कि वे मौजूद हैं। वे हमारी मदद करेंगे या नहीं, यह हमें तब तक पता नहीं चलेगा जब तक हम उनसे पूछ नहीं लेते।”
“हम उन्हें कैसे ढूंढेंगे?” क्षपणक ने सोचा।
“इसके साथ, मुझे आशा है,” राजा ने पत्र लहराते हुए उसे अमर सिंह के बढ़े हुए हाथ में रख दिया। “यह हमारे सभी प्रांतों के राज्यपालों तक पहुंचेगा। यह एक घोषणा है जिसे अवंती के हर छोटे गाँव, हर बस्ती, हर छावनी और हर चौकी तक पहुँचाया जाएगा। राजमहल उन सभी को इनाम और पूर्ण क्षमादान दे रहा है जो यह साबित कर सकें कि वे निर्वासितों के वन से बचकर सिंधुवार्ता लौट आए हैं। राजमहल उन लोगों को भी इनाम दे रहा है जो दंडक वन से भागे और अब सिंधुवार्ता में रह रहे कैदियों के बारे में विश्वसनीय जानकारी दे सकें।”
“इनाम के तौर पर सौ सोने के सिक्के?” अमरा सिंह ने लेख पढ़ते हुए हैरानी से कहा। “इतने पैसों के लिए लोग झूठ बोलेंगे। दावे आने शुरू होने पर हम उनकी पुष्टि कैसे करेंगे?”
आपने पूरी बात नहीं पढ़ी है।
बलवान पार्षद ने पांडुलिपि पर दोबारा नज़र डाली। “अहा, हाँ। इसमें लिखा है... महल को झूठी जानकारी देने का दोषी पाए जाने वाले किसी भी व्यक्ति या व्यक्तियों को सीधे दंडक वन में निर्वासित कर दिया जाएगा।” वह संतुष्टि से मुस्कुराया। “इससे तो कोई भी झूठ बोलने की हिम्मत नहीं करेगा।”
“और अगर हमें वह व्यक्ति मिल गया जिसकी हम तलाश कर रहे हैं, तो हम उसे दंडक में ले जाकर जनस्थान की दानव राजधानी की खोज में हमारा मार्गदर्शन करने के लिए कहेंगे,” वराहमिहिर ने योजना की चतुराई पर मुस्कुराते हुए कहा। “बेशक, हम इस घोषणा में इसका कोई ज़िक्र नहीं करेंगे।”
“इससे शायद वे सच बोलने से हिचकेंगे,” धनवंतरी हँसते हुए बोले। मेज से थोड़ा दूर हटकर उन्होंने चारों ओर देखा। “अगर कोई और ज़रूरी काम न हो तो मुझे जाने की अनुमति दें। मैं कुंजला के साथ उज्जैन के लोगों से मिलना चाहता हूँ। शायद मैं उनकी कुछ मदद कर सकूँ।”

सभी सलाहकार अपनी सीटों से उठ खड़े हुए, लेकिन विक्रमादित्य ने शंकु को रुकने का इशारा किया। जब वे अकेले रह गए, तो राजा ने शंकु के बारे में कुछ देर सोचा। "मुझे पहले आपसे बात करने का मौका नहीं मिला, लेकिन... क्या उन्होंने आपको अपने साथ चलने के लिए नहीं कहा था?"

शंकु ने अपनी गोद में मुट्ठी बांधे हाथों की ओर देखा। फिर ऊपर देखते हुए उसने सिर हिलाया।

"अगर उसने ऐसा नहीं किया होता तो मुझे आश्चर्य होता।" सम्राट ने खिड़की से बाहर देखते हुए गहरी सोच में डूबे हुए कहा। "कम से कम अवंती का कुछ अंश तो उसके दिल में अभी भी बसा हुआ था।"

अपनी कुर्सी से उठकर विक्रमादित्य शंकु के पास आए, जो खड़ी हो गई थी। राजा ने लड़की के चेहरे को निहारते हुए कहा, उनकी आँखें कोमल थीं, फिर भी चिंता से भरी हुई थीं। "तुम और मैं अधिक कष्ट सहते हैं, क्योंकि हमने अधिक खोया है। हमने अपने उस हिस्से को खो दिया है जिसे हम प्यार करते थे। परिणामस्वरूप, यह हमारा कर्तव्य है कि हम दूसरों को उस चीज़ से बचाएँ जिसे हमने प्यार किया और खोया है। आवश्यकता पड़ने पर हमें दूसरों से अधिक साहसी होना होगा। हमें अधिक निर्दयी होना होगा - स्वयं पर भी और जिसे हमने प्यार किया उस पर भी।"

शंकु ने सिर हिलाया, गले में रहस्यमय तरीके से अटकी हुई गांठ को निगलते हुए, क्योंकि उसे खुद पर बोलने का भरोसा नहीं था।

"मैं चाहती हूँ कि तुम देवी ओरेकल से महान रेगिस्तान से आने वाले हर संकेत को पढ़ने का अनुरोध करो। मैं चाहती हूँ कि यदि संभव हो तो वह कालिदास का पीछा करे; उस पर नज़र रखे, उसकी हर हरकत को समझे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जैसे ही उसे कालिदास के चलने का कोई आभास हो, वह हमें तुरंत सूचित करे..."

सम्राट ने विराम लिया, फिर अपनी बात पूरी की।

"...हुना सेना के साथ अवंती के विरुद्ध अग्रसर।"

*

राजा हरिहर ने पांडुलिपि को लपेटकर मेज पर फेंक दिया, जहाँ वह धीमी सी खड़खड़ाहट के साथ गिरी और आंशिक रूप से खुल गई। मानो उनकी दुर्दशा का

मज़ाक उड़ाते हुए, उसकी कुछ सामग्री फिर से प्रकट हो गई, और राजा अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गए और अपनी बाईं हथेली से अपना बायाँ गाल ढककर घृणापूर्वक पांडुलिपि को देखने लगे।

वह उदास मन से सोचने लगा, हालात कितनी जल्दी अच्छे से बुरे हो गए। पिछली रात जब वह सोने गया था, तो वह बहुत खुश था, क्योंकि वत्स से एक दरबारी राजा चंद्रवर्धन का संदेश लेकर आया था, जिसमें भावी राजा, राजकुमार शशिवर्धन के लिए रुक्मा का हाथ मांगा गया था। वेताल भट्ट ने अपना वादा निभाया और सौदा करवा दिया, और जल्द ही रुक्मा वत्स की रानी बन जाएगी। इस उम्मीद ने उसकी नींद उड़ा दी थी, और हरिहर भोर से पहले ही उठ गया था, महल के बागों में टहल रहा था, गेंदे के फूलों की प्रशंसा कर रहा था और चमेली को सूंघ रहा था, तभी एक पहरेदार ने गिरिवरजा से आए उसके दूतों के लौटने की सूचना दी।

"महाराज शूरसेना की ओर से एक उत्तर," दूतों में से एक ने कहा, और सूर्य की पहली किरणें बाग के सबसे ऊंचे पेड़ों की चोटियों को आग की तरह चमका रही थीं, तभी उसने एक पत्र आगे बढ़ाया।

थके-हारे खुद को सहारा देते हुए हरिहारा ने उस पत्र को अपनी ओर खींचा और उसे खोला। वह जानता था कि उसकी सामग्री में कुछ भी नहीं बदला होगा, फिर भी उसके मन का एक हिस्सा यह मानना चाहता था कि उसने शूरसेना के पत्र का गलत अर्थ निकाला था, और उसे दोबारा पढ़ने से शायद अर्थ बदल जाए।

यह वही पत्र था जो हरिहर ने शूरसेना को भेजा था, जिसमें उन्होंने रुक्मा को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करने का प्रस्ताव रखा था। सुंदर शब्दों और उत्कृष्ट सुलेख में लिखा गया यह प्रस्ताव पत्र कागज के अधिकांश भाग में फैला हुआ था, लेकिन शूरसेना ने नीचे की ओर संक्षिप्त उत्तर लिखने के लिए पर्याप्त जगह निकाल ली थी: 'आपके चुनाव की बुद्धिमत्ता सराहनीय है। मैं स्वीकार करता हूँ।' इसके नीचे मगध की राजसी मुहर लगी थी, एक उड़ता हुआ बाज, जिसके पंख ऊपर की ओर फैलते हुए लपटों में समाप्त हो रहे थे। हरिहर की नज़र लपटों पर पड़ी, जो मगध के पुराने बाज के ध्वज में हाल ही में जोड़ी गई थीं, जाहिर तौर पर शूरसेना के राज्याभिषेक के बाद और राज्य के नव-प्राप्त युद्धप्रिय रवैये के अनुरूप।

मैं स्वीकार करता हूँ। शूरासेना के शब्दों में कोई अस्पष्टता नहीं थी।

ऐसा नहीं था कि हरिहर को इस बात का डर नहीं था कि हालात इस हद तक बिगड़ सकते हैं। चंद्रवर्धन द्वारा रुक्मा को अपनी बहू के रूप में आमंत्रित करने का आनंद लेते हुए भी, शूरसेना का साया मंडरा रहा था। फिर भी, राजा इस बात को मानने से इनकार कर रहे थे और खुद को बेवजह समझा रहे थे कि उन्हें चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है—शूरसेना वंगा में व्यस्त होंगे और संदेश कहीं खो जाएगा और उन तक तब तक नहीं पहुंचेगा जब तक बहुत देर न हो जाए; शूरसेना उनके प्रस्ताव को ठुकरा देंगे; शूरसेना रुक्मा का हाथ स्वीकार करने से इनकार कर देंगे... ये सभी पूरी तरह से सम्मानजनक विकल्प थे, लेकिन सिर्फ दो शब्दों ने उन पर दरवाजे बंद कर दिए थे।

मुझे स्वीकार है।

हरिहर ने अपनी थकी हुई आँखों पर हाथ फेरा। शूरसेना ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था। चंद्रवर्धन ने भी प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था। परिणामस्वरूप, वह विक्रमादित्य और शूरसेना, दो शक्तिशाली राजाओं के बीच फँस गया था। एक, सिंधुवर्त का स्थापित सम्राट। दूसरा, एक चुनौती देने वाला, महत्वाकांक्षी उभरता हुआ योद्धा। दोनों ही उसे और हेहेय को धूल में मिला सकते थे। अब उसे इन दोनों में से किसी एक को चुनना था।

अवंती निकटतम पड़ोसी था, इसलिए वह एक अधिक प्रत्यक्ष खतरा था। अवंती क्रूर सैन्य बल के साथ-साथ हर तरह के आर्थिक प्रतिबंधों और नाकाबंदी के माध्यम से भी विक्रमादित्य को नुकसान पहुंचा सकता था। फिर भी, विक्रमादित्य एक न्यायप्रिय और विचारशील व्यक्ति थे, और हेहेय की निर्दोष प्रजा पर वे जो अत्याचार करेंगे उसकी भी एक सीमा थी। इसके अलावा, विक्रमादित्य को इस समय अन्य समस्याओं का भी सामना करना पड़ रहा था। दूसरी ओर, मगध बहुत दूर था, लेकिन सभी प्रमाणों से संकेत मिलता था कि शूरसेना निर्दयी और प्रतिशोधी था, निश्चित रूप से उससे पंगा लेना उचित नहीं था। सिद्धसेन पहले ही कीमत चुका चुका था, और अगर वह अपने ही पिता को मार सकता था... हरिहर कांप उठा। इसके अलावा, मगध का उत्थान हो रहा था, और कौन कह सकता था कि कुछ वर्षों में सिंधुवर्त में सत्ता का समीकरण क्या होगा? अवंती पर देवताओं और असुरों का कहर टूट रहा था; यह कहना मुश्किल था कि विक्रमादित्य कब तक इस आक्रमण का सामना कर पाएंगे। वहीं शूरसेना पहले से ही अपनी सीमाओं का विस्तार कर रहे थे और मगध

शायद हेहेया से उतना दूर न रह जाए। ऐसे में गहरे द्वेष से ग्रसित और अपमानित राजा क्या करते? हरिहर को इस बात का कोई भ्रम नहीं था कि शूरसेना अपने शत्रु से बदला लेने के लिए कितनी हद तक जा सकते हैं - वे पहले ही अवसर पर महिष्मती को पूरी तरह नष्ट कर देंगे।

अवंती या मगध। यह एक कठिन निर्णय था। और पत्नी से सलाह लेने का कोई फायदा नहीं था; सुमयंती ने जिस दिन चुपके से विक्रमादित्य के दरबार में अपना दूत भेजा था, उसी दिन अपना फैसला स्पष्ट कर दिया था। हरिहर ने मन ही मन सोचा कि अगर उसने हस्तक्षेप न किया होता, तो मामला इतना गंभीर न होता। बेशक, वह उससे इस बारे में बात करने की हिम्मत नहीं कर सका। सुमयंती तो गिरिव्रज के पास दूत भेजने के अपने मूर्खतापूर्ण कार्य के लिए उस पर ताना ही मारेगी...

एक धक्के से स्क्रॉल मेज पर आधा खिसक गया, हरिहारा ने अपनी कोहनी मेज पर टिका दी और चिंता से अपना माथा पकड़ लिया।

*

राजा भूमिपाल ने अपने तीन सबसे भरोसेमंद दरबारियों को ही निजी बैठक में बुलाया था, और अब वे इन्हीं तीनों की ओर मुड़े, अपनी बाहों को सीने पर बांधकर खिड़की से टिक गए, जहाँ से आधे मील से भी कम दूरी पर शांत रूप से बहती अजिरावती नदी का अबाधित दृश्य दिखाई दे रहा था। राजा ने उन तीनों व्यक्तियों का आकलन किया - जो कोसल में युद्ध और कूटनीति के सबसे अनुभवी योद्धा थे, योग्यता और अनुभव में पल्लवन के बाद दूसरे स्थान पर - और वे इस विचार को रोक नहीं पाए कि यदि पल्लवन गिरिव्रज से जीवित वापस नहीं लौट पाता, तो उनमें से किसी एक का पद और प्रतिष्ठा अवश्य बढ़ जाएगी।

यह सोचकर कि क्या तीनों दरबारियों के मन में भी ऐसे ही विचार आए होंगे, भूमिपाला ने अपनी भौंहें ऊपर उठाते हुए उनसे पूछा, "तुमने मगध द्वारा पल्लवन की रिहाई के लिए रखी गई शर्तें तो सुन ही ली हैं। तुम्हारे विचार में हमें क्या करना चाहिए?"

तीनों में सबसे छोटे कद के काद्रू ने कहा, "हम कुछ भी कर लें, हम पार्षद पल्लवन को किसी भी तरह का नुकसान नहीं होने दे सकते।" काद्रू दुबला-पतला आदमी था जिसके कान सिर के दोनों तरफ से नुकीले ढंग से बाहर निकले हुए थे।

भूमिपाला ने देखा कि बाकी दोनों दरबारी सहमति में सिर हिला रहे हैं। अपनी सफ़ेद-काली दाढ़ी सहलाते हुए उन्होंने कहा, "इससे हमारे विकल्प घटकर एक ही रह जाते हैं – शूरसेना की मांग मान लेना और गजकेतु को उसके हवाले कर देना।" यह विचार उन्हें असहज कर रहा था, और उन्होंने खिड़की से बाहर देखने का फैसला किया। नीचे सड़कों पर, श्रावस्ती के नागरिक अपने-अपने काम में व्यस्त थे, महल में पनप रहे संकट से बेखबर। "हम अपने सहयोगियों को यह सब कैसे समझाएँगे?" उन्होंने हताशा से आह भरी।

"हम पल्लवन को भागने में मदद करने का कोई तरीका तलाश सकते हैं।"

राजा को पीछे मुड़ने की ज़रूरत नहीं थी, वह समझ गया था कि किसने बोला है – अधीपा, जो उन सबमें सबसे उम्रदराज़ था और कोसला की सेना का एक कठोर सेनापति था। "हम गुप्त सैनिकों की एक छोटी सी टीम भेज सकते हैं जो भागने की योजना बनाएगी और उसे अंजाम देगी। बेशक, हमें मगध के भीतर से भी सहायता की आवश्यकता होगी, लेकिन अगर रिश्वत काफी बड़ी हो तो सहायता प्राप्त करना कभी मुश्किल नहीं होता।"

"अगर योजना विफल हो गई तो?" भूमिपाला दरबारियों की ओर मुड़े। "अगर शूरसेना के प्रति भय या वफादारी के कारण कोई रिश्वत लेने को तैयार न हो तो क्या होगा? अगर जिन लोगों से हम संपर्क करें वे धोखा देकर हमें बेनकाब कर दें तो क्या होगा? अगर हमारे सैनिक पल्लवन को जहाँ भी कैद किया गया है, वहाँ घुस तो जाएँ, लेकिन उस तक न पहुँच पाएँ और मगध की सेना उन्हें पकड़ ले? तब पल्लवन का क्या होगा?"

सवालों की बौछार ने जनरल को चौंका दिया। "हम... लेकिन अगर इसे बारीकी से योजनाबद्ध तरीके से किया जाए तो यह कारगर भी हो सकता है," उन्होंने बचाव करते हुए धीरे से कहा।

"इस सावधानीपूर्वक योजना में कितना समय लगेगा?" राजा ने पूछा। "पल्लवन को कैद करने वाली जेल की जासूसी करने में, एहसान के बदले रिश्वत स्वीकार करने को तैयार मगधियों को भर्ती करने में, इन सब में कितना समय लगेगा?"

"बीस दिन... शायद एक महीना," अधीपा ने अचानक खुद पर संदेह करते हुए जवाब दिया।

“हमारे पास इतना समय नहीं है,” भूमिपाला ने निराशा में अपने हाथ फैलाते हुए कहा। “शूरसेना ने अदला-बदली के लिए चार दिन का अल्टीमेटम दिया है। मगध से एक दूत नीचे इंतज़ार कर रहा है। दूत आज शाम को रवाना हो जाएगा, और हमें तब तक अपना जवाब तैयार रखना होगा।”

चारों व्यक्ति गंभीर चुप्पी में डूब गए और अपने सामने मौजूद सीमित विकल्पों पर विचार करने लगे। "मगध के साथ पूर्ण पैमाने पर सशस्त्र संघर्ष का तो सवाल ही नहीं उठता, है ना?" तीसरे परामर्शदाता, कीर्तना ने पूछा, जो टूटी हुई नाक वाला एक हट्टा-कट्टा आदमी था।

“बिल्कुल,” राजा ने कहा। “हमारे पास सैनिकों की भारी कमी है, और हमने अपने सर्वश्रेष्ठ योद्धा मत्स्य को दे दिए हैं। हम वत्स से भी मदद नहीं मांग सकते— उनके अधिकांश सैनिक भी सीमा की रक्षा कर रहे हैं।” उन्होंने खेद से सिर हिलाया। “मगध की पूरी सेना से युद्ध करना मूर्खता होगी। हमारे सैनिक तलवारें म्यान से निकालने से पहले ही बुरी तरह हार जाएंगे।”

"अगर हम मगध से समय खरीद सकते हैं, तो हम ब्रेकआउट की योजना बना सकते हैं," जनरल ने कहा, जिसमें एक असामान्य मूर्खता दिखाई दी जिसने भूमिपाला को चिढ़ा दिया।

उन्होंने तीखे लहजे में कहा, "हम समय नहीं खरीद सकते क्योंकि शूरासेना इसे एक टालमटोल की रणनीति के रूप में देखने के लिए काफी चतुर हैं।"

“और अगर हम पल्लवन को जेल से छुड़ाने में कामयाब भी हो जाते हैं, तो भी वह और हमारे आदमी मगध के बीचोंबीच, सीमा से मीलों दूर ही होंगे,” कद्रू ने तर्क दिया। “उनके दोबारा पकड़े जाने की संभावना बहुत अधिक है। यह जोखिम लेने लायक नहीं है।”

दरबारी की बात सुनते ही भूमिपाला के चेहरे पर एक उदास, चिंतनशील भाव आ गया। पूरे एक मिनट तक वे सोच में डूबे रहे और आगे की रणनीति पर विचार करते रहे। अंत में, एक गहरी साँस लेते हुए और धीरे से सिर हिलाते हुए, वे दरबारियों की ओर मुड़े, जो उनसे निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे थे।

“हमारे पास ज्यादा विकल्प नहीं हैं,” उसने कंधे उचकाते हुए कहा। काद्रू से बात करते हुए उसने कहा, “क्या आप बाहर खड़े किसी गार्ड से कहेंगे कि वह मगध के दूत को हमारे पास ले आए?”

दो मिनट से भी कम समय बीता था कि दरवाजा खुला और रक्षक दूत को अंदर ले आया। दूत ने भूमिपाला को प्रणाम किया और राजा के बोलने की प्रतीक्षा में चुपचाप खड़ा रहा।

“हमारे पास आपके राजा के लिए एक संदेश है,” भूमिपाला ने अपनी छोटी, गठीली काया को जितना हो सके उतना अधिकारपूर्ण ढंग से समेटते हुए कहा। “हम संगीतकार गजकेतु को पार्षद पल्लवन की रिहाई के बदले देने को तैयार हैं। हम मगध द्वारा निर्धारित विनिमय की शर्तों को भी स्वीकार करते हैं। आज से चार दिन बाद, हम गजकेतु को आपको सौंप देंगे। आप उसी समय हमारे पार्षद को बिना किसी नुकसान के रिहा कर देंगे। विनिमय एक ही समय पर होगा—एक पक्ष देगा, दूसरा लेगा। यह एक निष्पक्ष विनिमय होगा—कोई भी पक्ष बल या धमकी का सहारा नहीं लेगा, और दोनों पक्ष अपने वचन का पालन करेंगे।” राजा दूत का आकलन करने के लिए रुका। “क्या हम दोनों ने शर्तों को सही ढंग से समझा है?”

“जी हां, महाराज,” दूत ने एक बार फिर झुककर औपचारिक अभिवादन किया। “हमने किया है।”

*

“तुम्हारा मतलब क्या है कि वह नहीं मिल रहा है?”

कमांडर अतुल्यातेजा की निगाहें उनके सामने कतार में खड़े फ्रंटियर गार्ड के तीन सैनिकों के बीच घूमती रहीं, और अंत में बीच में खड़े युवा लेफ्टिनेंट पर आकर टिक गईं।

“वह अवंती का राजकुमार है,” गैरीसन कमांडर का स्वर सपाट था, मानो वह इस स्पष्ट बात को दोहराते-दोहराते थक गया हो। “लोग उसे पहचानते हैं। किसी न किसी ने तो उसे देखा ही होगा। किसी न किसी को तो पता होगा कि वह कहाँ है।”

लेफ्टिनेंट थोड़ा हिले और हल्के से कंधे उचकाए। "हमने पूछा था," उन्होंने अपने अगल-बगल खड़े सैनिकों की ओर देखते हुए कहा। दोनों सैनिकों ने ज़ोर से सिर हिलाया। "राजकुमार को सुबह से किसी ने नहीं देखा है। असल में," वे थोड़ा हिचकिचाए, "कल दोपहर से।"

“क्या—” अतुल्यातेजा ने लेफ्टिनेंट को हैरानी से देखा। “और... अब बता रहे हो?” छावनी के अंदर अपने छोटे से दफ्तर में उसकी आवाज़ गूंज उठी। “अगर मैंने

उससे मिलने का अनुरोध न भेजा होता, तो मुझे भी पता नहीं चलता, है ना? मेरी तो बात ही छोड़ो, तुम्हें भी पता नहीं चलता!”
लेफ्टिनेंट ने अपनी निगाहें झुका लीं। "हमें... एहसास नहीं हुआ..."
“तुम्हें क्या पता नहीं चला?” अतुल्यातेजा गरज उठा। “क्या तुम राजकुमार की सुरक्षा के प्रभारी हो या नहीं, लेफ्टिनेंट?”
“मैं... हम... हम हमेशा राजकुमार के साथ सीमावर्ती कमान केंद्रों और चौकियों के दौरे पर जाते हैं, महोदय,” लेफ्टिनेंट ने धीमी आवाज़ में कहा। “यहाँ, छावनी के अंदर... हमें लगा कि यहाँ आना ज़रूरी नहीं है...”
जब सिपाही की बात अधूरी रह गई, तो अतुल्यातेजा ने खुद को उस आदमी पर गुस्सा करने से रोकने के लिए गहरी सांस ली। उसे एहसास हुआ कि लेफ्टिनेंट सही कह रहा था। जब तक घटाकरपारा उदयपुरी में था, तब तक उसे सुरक्षा देने या हर समय उसके साथ किसी को रखने का कोई ठोस कारण नहीं था। एक घनी आबादी वाले कस्बे में, अच्छी तरह से सुरक्षित चौकी के अंदर राजकुमार को क्या हो सकता था? फिर भी, उसका दोस्त कहीं नहीं मिल रहा था।
"आखिरी बार किसी ने उसे कब देखा था?"
“कल दोपहर राजकुमार ने सीमा रक्षकों की एक रेजिमेंट का निरीक्षण किया,” एक सैनिक ने बताया। खिड़की से बाहर देखते हुए उसने समय का अनुमान लगाते हुए कहा, “लगभग इसी समय, या शायद एक घंटे बाद।”
“राजकुमार की देखभाल के लिए नियुक्त सैनिक कहाँ है?” अतुल्यातेजा ने अचानक याद करते हुए पूछा। “उसे कुछ गड़बड़ जरूर समझ आ जानी चाहिए थी। उसने किसी को इसकी सूचना क्यों नहीं दी?”
“राजकुमार के आदेश पर उन्हें उस कर्तव्य से हटा दिया गया था, कमांडर।” अतुल्यातेजा की भौंहें तनते देख लेफ्टिनेंट ने आगे कहा, “राजकुमार ने ज़ोर देकर कहा कि वे नहीं चाहते कि कोई भी सैनिक हर समय उनकी सेवा में रहे। उन्होंने कहा कि सभी सैनिकों को युद्ध प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित करने देने से गैरीसन और राज्य दोनों का भला होगा।”
चौकीदार ने गुस्से में अपने गाल फुलाए और ज़ोर से हवा छोड़ी। अपने बालों में उंगलियाँ फेरते हुए, उसने खिड़की से बाहर देखा और गर्व से घटाकरपारा के बारे में सोचा। सीमा पर सैनिक का जीवन अपनाने का निर्णय लेकर, राजकुमार ने महल के

सभी सुख-सुविधाओं का त्याग कर दिया था। यह घटाकरपारा की असाधारण प्रतिबद्धता को दर्शाता था, और यदि परिस्थितियाँ भिन्न होतीं, तो अतुल्यतेज अपने मित्र के इस परिवर्तन से अत्यंत प्रसन्न होते। लेकिन अब, राजकुमार का यह निर्णय उसे खोजने में बाधा सिद्ध होगा।
"राजकुमार को आखिरी बार इसी समय सीमा रक्षक दल का निरीक्षण करते हुए देखा गया था, है ना?" उसने यह सुनिश्चित करते हुए पूछा।
"दरअसल, उसे आखिरी बार चौकी से निकलते हुए द्वार पर तैनात संतरी ने देखा था, कमांडर," दूसरे सैनिक ने जवाब दिया। "यह निरीक्षण के बाद, दोपहर काफी देर बाद की बात है।"
"घोड़े पर सवार होकर?" अतुल्यातेजा ने पूछा।
नहीं, पैदल।
चौकीदार की आंखें चतुराई से सिकुड़ गईं। "क्या तुम्हें कोई अंदाजा है कि वह कहां जा रहा था?"
जी नहीं, महोदय। लेकिन वह अक्सर शाम को बाहर जाते हैं। शायद टहलने के लिए। वह हमेशा सूर्यास्त के कुछ देर बाद लौट आते हैं।
"और कल उसे वापस आते हुए नहीं देखा गया? इससे तो संतरी को सतर्क हो जाना चाहिए था।"
"कल सूर्यास्त के समय पहरेदारी में बदलाव हुआ, जो सामान्य से पहले था," लेफ्टिनेंट ने कहा। "इसलिए किसी को इस बात का पता नहीं चला कि राजकुमार वापस नहीं लौटे हैं।"
"और हमें ये सब अब पता चल रहा है, राजकुमार के गायब होने के लगभग एक दिन बाद?" अतुल्यातेजा ने सिर झुकाए तीनों पहरेदारों को घूरकर देखा। "क्या सुबह से किसी को राजकुमार की ज़रूरत नहीं पड़ी? क्या किसी को उनकी अनुपस्थिति के बारे में जिज्ञासा नहीं हुई? क्या किसी ने यह पता लगाने की कोशिश नहीं की कि राजकुमार यहाँ हैं या नहीं?"
सैनिक असहज महसूस करते हुए इधर-उधर हिलने लगे।
"क्या हमें पूरा यकीन है कि वह छावनी में नहीं है?" जब सैनिकों ने सिर हिलाकर सहमति जताई, तो अतुल्यातेजा सीधा खड़ा हो गया। "तुम जा सकते हो, लेकिन तैयार रहना। राज्यपाल से मिलने के बाद मुझे तुम्हारी ज़रूरत पड़ सकती है।"

युवा कमांडर अंधेरी, घुमावदार सीढ़ियों से तेज़ी से नीचे उतरा और किले के दूसरे छोर पर स्थित राज्यपाल के कार्यालय तक पहुँचने के लिए छावनी के मैदान को पार करते हुए दौड़ पड़ा। मध्यमिका जाने के लिए उत्तर की ओर जाने का फैसला करने के कारण वह दुविधा में था, क्योंकि उसने घटाकरपारा को उदयपुरी में अकेला छोड़ दिया था। इसलिए उसने अपने सैनिकों को आश्चर्य से उसे घूरते हुए शायद ही देखा। सत्यवेद के कमरे में पहुँचकर वह लगभग राज्यपाल से टकरा गया, जो जाने ही वाला था।

"अरे, सेनापति! संभलकर चलो।" सत्यवेद की नुकीली नाक अरुचि से सिकुड़ गई जब उसने अतुल्यतेज को घूरकर देखा।

"गवर्नर साहब, मुझे बहुत खेद है," अतुल्यातेजा ने अपनी कमीज को ठीक किया और अपनी कटी हुई मूंछों पर उंगली फेरते हुए कहा। "लेकिन आपको एक अत्यावश्यक बात जाननी है।"

"क्या यह कल सुबह तक इंतजार नहीं कर सकता?" राज्यपाल ने अपने सिर पर आधिकारिक पगड़ी को ठीक करते हुए पूछा। "और आप माध्यमिक से कब आए?"

"दोपहर के आसपास। बात यह है कि राजकुमार घटाकरपारा लापता हैं।"

राज्यपाल की मेज के सामने बैठे गैरीसन कमांडर ने सत्यवेद को युवा पार्षद के लापता होने के बारे में अब तक मिली सारी जानकारी दी। सत्यवेद सुनते हुए मेज के किनारे पर उंगलियां थपथपा रहा था, उसकी आंखें सोच में डूबी हुई थीं और उसका दाहिना पैर मेज के नीचे बेचैनी से कांप रहा था।

अंत में अतुल्यातेजा ने कहा, "वह पैदल ही निकला था, जिसका मतलब है कि उसका इरादा ज्यादा दूर जाने का नहीं था। बिना सवारी के वह दूर जा ही नहीं सकता था, चाहे उसका इरादा ही क्यों न होता। और वैसे भी, वह हमेशा सूर्यास्त के समय चौकी पर लौट आता है, जिससे पता चलता है कि वह ज्यादा दूर नहीं जाता।"

"आप सही कह रहे हैं," राज्यपाल ने अपनी ऊँची, नाक से निकलने वाली आवाज़ में सहमति जताते हुए कहा। "लेकिन अगर वह ज़्यादा दूर नहीं गया, तो कहाँ गायब हो गया?"

"इसीलिए मैं आपके पास आया हूँ।"

"अरे?" सत्यवेद चौंककर पीछे हट गया और घबराहट से पलकें झपकाने लगा। "मैं? मैं ही क्यों?"

“गवर्नर जी, मैं राजकुमार की पूरी तरह से तलाश शुरू करने का इरादा रखता हूँ,” अतुल्यातेजा ने धैर्यपूर्वक कहा। “इसके लिए मुझे सीमा रक्षक बल और स्थानीय मिलिशिया के जवानों को जुटाना होगा। मुझे सैनिकों को बुलाने और उन्हें तलाशी अभियान में लगाने के लिए आपकी अनुमति चाहिए।”
“बिल्कुल, बिल्कुल, बिल्कुल,” सत्यवेद आगे-पीछे झूलने लगा, और अतुल्यतेज को लगा कि वह व्यक्ति किसी बात से दबे-छिपे राहत महसूस कर रहा है। “बिल्कुल, हाँ।”
“क्या मुझे आपकी अनुमति है?” कमांडर ने दोबारा पूछा।
“अनुमति... हाँ, हम्म...” सत्यवेद ने सोचते हुए अपनी उंगलियों को थपथपाया। फिर वह भौंहें चढ़ाकर आगे झुके। “आप जानते हैं, मुझे इतना यकीन नहीं है...”
“किस बात पर आपको यकीन है, राज्यपाल जी?” अतुल्यातेजा ने चिढ़कर मेज के उस पार देखा। “राजकुमार लापता हैं या हमें उनकी तलाश शुरू करनी चाहिए?”
"दरअसल, दोनों ही।"
जब गैरीसन कमांडर अविश्वास से पलकें झपका रहा था, तब सत्यवेद ने अपनी कोहनियों को मेज पर टिकाया, हाथों को आपस में जोड़ा और आगे की ओर झुक गया।
“आपने बताया कि वह अक्सर बाहर जाता है।” राज्यपाल की आवाज़ लगभग दबी हुई सी फुसफुसाहट में बदल गई। “शायद उसे अक्सर बाहर जाने का कोई कारण मिल गया है।”
“क्या कारण है?”
“वह एक नौजवान है, महल के ऐशो-आराम का आदी है, कमांडर। महल में कुछ इच्छाएँ आसानी से और गुप्त रूप से पूरी हो जाती हैं, लेकिन यहाँ... इतनी आसानी से या गुप्त रूप से नहीं। शायद उसे यहाँ आस-पास कोई ऐसी जगह मिल गई हो जहाँ उसकी ये चाह पूरी हो जाती हो।”
"क्षमा कीजिए, राज्यपाल जी, लेकिन मुझे आपकी एक भी बात समझ नहीं आ रही है," युवा व्यक्ति ने अपनी आवाज में गुस्से और झुंझलाहट को छिपाने की कोशिश करते हुए कहा।
"महिलाएं, मेरे दोस्त, महिलाएं।"

“ओह,” अतुल्यातेजा ने आखिरकार बात समझकर कहा। “नहीं, मैं घटाकरपारा को जानता हूँ। वह वैसा नहीं है।”
“कृपा करके,” सत्यवेद ने सेनापति को दया भरी नज़रों से देखा। “हम जैसे आम लोग यह दिखावा भी नहीं कर सकते कि हम समझते हैं कि राजमहल के सदस्य कैसे होते हैं।” और करीब आकर उन्होंने कहा, “ज़रा समझदारी से सोचो। वह पैदल जाता है। क्यों? क्योंकि वह नहीं चाहता कि उसका घोड़ा देखा जाए और पहचाना जाए कि वह उसका है। वह लगभग हर दिन जाता है, लेकिन सूर्यास्त के समय लौट आता है। क्यों? वह उस स्त्री से प्रेम कर रहा है, बस। फिर, एक रात वे तय करते हैं...” सत्यवेद पीछे झुककर खुशी से अपने हाथ मलने लगे।
अतुल्यातेजा को पता था कि यह उसके दोस्त की बात नहीं लग रही थी, लेकिन जैसा कि राज्यपाल ने बताया था, कौन कह सकता था - "लेकिन... वह अब तक वापस क्यों नहीं लौटा?"
कभी-कभी, आप किसी लालसा को पूरा करने जाते हैं, लेकिन पाते हैं कि आपकी भूख दुगनी हो गई है। कुछ महिलाएं ऐसी ही होती हैं। मेरा मतलब यह है कि, हालांकि हम मान रहे हैं कि राजकुमार लापता है, शायद वह बस मिलना ही नहीं चाहता।
अतुल्यातेजा ने माथे पर शिकन डाली, उनके दिमाग में असमंजस का बवंडर उठ रहा था। “लेकिन अगर... वह किसी खतरे में हो तो? देरी का हर पल अपूरणीय परिणाम ला सकता है। हम यहां अवंती के शाही परिवार से, आदित्य वंश के वंशज से निपट रहे हैं।”
“मैं आपसे सहमत हूँ। लेकिन अगर मैं सही हूँ, और हम तलाशी अभियान चलाते हैं और वह संदिग्ध परिस्थितियों में, एक संदिग्ध चरित्र वाली महिला के साथ गुप्त रूप से पकड़ा जाता है, तो क्या होगा? सोचिए कितना बड़ा घोटाला होगा। हम राजा के अपने भतीजे की बात कर रहे हैं। यहाँ से उज्जैन तक बदबू फैलेगी, है ना?”
अतुल्यातेजा ने एक गहरी आह भरी। उन्हें एहसास हुआ कि दोनों ही मामलों में परिणाम भयानक होंगे। “तो हम क्या करें?” उन्होंने पूछा। “हम यूं ही बैठे नहीं रह सकते...”
“मैं तुम्हें बताता हूँ,” सत्यवेद ने अपने हाथों से हवा को दबाते हुए, शांत रहने का आग्रह किया। “चलिए कल सुबह तक इंतज़ार करते हैं। अगर तब तक वह नहीं

आता, तो मेरी अनुमति है कि आप सीमा सुरक्षा बल और मिलिशिया के जवानों को बुलाकर तलाशी शुरू करवा लें। ठीक है?”
चौकी के कमांडर ने एक पल सोचा, फिर सिर हिलाया। उसने प्रतीक्षा करने का मन बना लिया था, लेकिन नहीं, वह खुश नहीं था।

गाउर थ्राखा

पैरों के नीचे संगमरमर की सीढ़ियाँ छूने में ठंडी थीं और खुले आँगन के धूप से झुलसे पत्थरों से बिलकुल अलग थीं, जहाँ से उषांथा घर के दूसरे हिस्से तक पहुँचने के लिए लड़खड़ाते हुए आई थी। अब वह एक हाथ से अपने गठियाग्रस्त घुटने को सहारा देते हुए, हर कदम पर हल्की सी पीड़ा सहते हुए, ऊपर से आती रुद्र वीणा की उदास धुनों को ध्यान से सुनते हुए, बड़ी मुश्किल से सीढ़ियाँ चढ़ रही थी। सीढ़ियों पर साँस लेने के लिए रुके बिना, वह संगीत का पीछा करते हुए एक चौड़े और छायादार बरामदे तक पहुँची, जहाँ वरारुचि पुआल की चटाई पर बैठी वीणा के तारों को बजा रही थी।
अपने बेटे को आँखें बंद करके, अपनी ही रचना की सुंदरता में मग्न बैठे देखकर उषांथा के दयालु चेहरे पर एक उदास मुस्कान आ गई। चौखट से टेक लगाकर, वह चुपचाप वरारुचि की उंगलियों को बांस, लकड़ी, पीतल और तार से मधुर संगीत निकालते हुए देखती रही, और एक पल के लिए उसे विश्वास करना मुश्किल हो गया कि उसके सीने में एक भयंकर तूफान छिपा हुआ है - एक ऐसा तूफान जिसे उसने यहाँ रहने के तीन दिनों तक उससे छिपाए रखा था। अब भी वह शांत प्रतीत हो रहा

था, और उषांथा को एहसास हुआ कि अगर उसकी दासी का पति उज्जैन के पशु बाजार से अपने साप्ताहिक दौरे से एक ऐसा हिसाब लेकर न लौटा होता जिसने उसे झकझोर दिया था और उसकी दोपहर की नींद छीन ली थी, तो उसे वरारुचि की पीड़ा का जरा भी अंदाजा न होता।
उसने पार्षद कालिदास के पिता और बहन की हत्या का आदेश दिया।
“क्या बात है माँ?”
उशांत ने पलकें झपकाईं और महसूस किया कि संगीत बंद हो गया था। उसकी निगाहें अपने बेटे के चिंतित चेहरे पर टिक गईं।
“माँ, आप आराम क्यों नहीं कर रही हैं?” वरारुचि ने रुद्र वीणा को एक तरफ रख दिया और खड़ी हो गईं।
“मैं तुमसे मिलना चाहती थी,” उषांथा ने लंगड़ाते हुए बरामदे में आते हुए जवाब दिया।
“आपको मुझे बुलवाना चाहिए था।” वरारुचि जल्दी से उनके पास गईं, उनका हाथ पकड़ा और उन्हें धीरे से एक नीची कुर्सी पर बैठा दिया। “माँ, सीढ़ियाँ चढ़कर अपने जोड़ों पर ज़ोर मत डालो।”
"मुझे पता है।"
वररुची ने सिर हिलाया—फिर, उसकी आवाज़ में बदलाव महसूस करते हुए, उसने हैरानी से उसकी ओर देखा। "क्या?"
“मुझे पता है,” उशांत ने दोहराया। तीन पलों का सन्नाटा छा गया। “कई साल पहले जो हुआ था... उसी वजह से तुम यहाँ हो।”
"माँ..."
उसके बेटे के होंठों से रुंधी हुई, दर्द भरी चीख के साथ ये शब्द निकले। उषांथा ने हाथ बढ़ाया, और वरारुचि ने डूबते हुए आदमी की तरह उसका हाथ थाम लिया, उसे कसकर पकड़ लिया। इतने दिनों का धैर्य टूट गया और गर्म आँसू उसकी आँखों से बहने लगे।
“मुझे समझ नहीं आ रहा था कि आपको कैसे बताऊं, मां,” उसने धीरे से कहा, तभी उषांथा ने उसे नीचे बिठाया और अपने पास खड़ा कर दिया। उसने तुरंत उसे बाहों में भर लिया, अपना सिर उसके कंधे पर रखा और रोने लगा।

“कोई बात नहीं, मेरे बेटे,” उशांत ने वरारुचि के सिर पर हाथ फेरा। उसकी आवाज़ भी दुख और सदमे से कांप रही थी। “जो कुछ हुआ, उसके लिए मैं तुम्हें दोषी नहीं ठहराती।”

सूरज क्षितिज की ओर आधा डूब चुका था जब माँ और बेटा सीढ़ियाँ उतरकर पूर्व दिशा में बने बरामदे के बीचोंबीच लगे चौड़े लकड़ी के झूले की ओर बढ़े। घर की छाया में अगल-बगल बैठे वे धान के खेतों को निहार रहे थे, जहाँ हवा के झोंके हरे रंग की कई छटाओं में लहराते रास्ते बना रहे थे और दुबले-पतले बगुले अपनी पतली टांगों से दानों की तलाश में निकले थे। ठंडी हवा ने उनके गालों पर बहते आँसू पोंछ दिए और बातचीत को फिर से जीवंत कर दिया।

“क्या तुम्हें अपने किए पर शर्म आ रही थी? क्या इसीलिए तुमने मुझे बताने में संकोच किया?” उशांता ने पूछा।

“नहीं...” वरारुची ने कुछ देर तक सवाल पर विचार किया और दृढ़ता से सिर हिलाया। “नहीं। मुझे शर्म नहीं है। यह युद्ध था, माँ। शांति के समय में युद्ध की मांगें अनुचित लग सकती हैं, लेकिन उन मांगों को पूरा करने की तत्परता ही तय करती है कि कोई विजयी होगा या पराजित।”

"तो फिर आपने कुछ कहा क्यों नहीं? आपने अही की बात की, आपने मुझे हूण युद्धपोतों के खिलाफ द्वारका की रक्षा के बारे में बताया... लेकिन इसका एक बार भी जिक्र नहीं किया।"

“माँ, मैं तुम्हें इस पीड़ा से बचाना चाहता था। मैं नहीं चाहता था कि यह तुम्हें छूए, मैं नहीं चाहता था कि यह इस जगह की सुंदरता को धूमिल करे।”

“चोट लगी?” उषांथा ने अपने बेटे के चेहरे की ओर गौर से देखा। “मुझे समझ नहीं आ रहा।”

“अस्वीकृति का दर्द, माँ। अपनों द्वारा गलत समझा जाना, यह एहसास होना कि आपके इरादे कितने भी निस्वार्थ क्यों न हों, आपके फैसलों पर सवाल उठेंगे और आपके कार्यों का मूल्यांकन किया जाएगा। एक अछूत का दर्द।”

वररुचि की आवाज में धीरे-धीरे कड़वाहट घुलती सुनकर उशांत का चेहरा पीला पड़ गया। "बेटे, तुम्हें किसने गलत समझा है?"

वररुचि की ओर से कोई तत्काल प्रतिक्रिया नहीं आई। इसके बजाय, उन्होंने कठोर आँखों से खेतों की ओर टकटकी लगा दी, मानो पूर्व दिशा में छाए धुंध और अंधकार

के पर्दों को भेदकर दूरी को कम करना चाहते हों, ताकि वे उज्जैन तक का पूरा दृश्य देख सकें। दूर क्षितिज से अपनी दृष्टि हटाए बिना, उन्होंने एक आह भरी जो उषांथा को आशा के अंत जैसी लगी।

“तुम्हें पता है ना कि मुझे महल से कितनी नफ़रत थी?” वरारुची ने अपनी माँ की ओर तिरछी नज़र से देखा। “और यह भी कि महल भी मुझसे उतनी ही नफ़रत करता था?”

"मुझे लगता है कि तुम्हारे लिए वहां मुश्किल रही होगी क्योंकि तुम मेरे बेटे थे," उशांत ने उदास होकर कंधे उचका दिए।

“यह बेहद मुश्किल था। महारानी माँ की मेरे प्रति नापसंदगी को मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकती। पिताजी चाहते थे कि मैं उनके साथ रहूँ, इसलिए वे कुछ कर भी नहीं सकती थीं, लेकिन मुझे नीचा दिखाने और मेरी औकात उजागर करने का उन्होंने कोई मौका नहीं छोड़ा। और प्रलूपी... उनके लिए तो मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं था।” वरारुचि ने बेमन से हँसते हुए कहा। “मुझे याद नहीं कि उन्होंने मुझसे कभी एक बार में दो वाक्यों से ज़्यादा बात की हो। उन दोनों के साथ रहना बेहद कष्टदायक था। शुक्र है कि प्रलूपी ने हिमवर्धन से शादी कर ली और कौशांबी चली गईं, लेकिन महारानी माँ के साथ ऐसा नहीं हुआ।”

उशांता का चेहरा निराशा से सिकुड़ गया। उसने वरारुचि के हाथ पर दिलासा भरा हाथ रखा। "तुमने मुझे कभी नहीं बताया कि हालत इतनी खराब थी।"

"पिताजी चाहते थे कि मैं महल में रहूँ और इससे बचने का कोई रास्ता नहीं था, और आपको बताने से आप केवल परेशान ही होते," वरारुची ने कंधे उचकाते हुए कहा। "कम से कम तुम अपने पिता को तो बता सकते थे।"

“माँ, तुम भूल गई हो कि बर्बर आक्रमणकारी आ चुके थे। पिताजी तो लगभग कभी घर पर होते ही नहीं थे। वे या तो आक्रमणकारियों से लड़ रहे होते थे या गठबंधन बनाने के लिए दूर चले जाते थे।” वरारुचि ने अपने विचारों को समेटने के लिए कुछ देर रुककर कहा, “पिताजी की मृत्यु के बाद महारानी माँ की मेरे प्रति घृणा और बढ़ गई। मुझे लगता है कि उन्हें डर था कि मैं विक्रम के लिए सिंहासन नहीं छोड़ूँगा। इसीलिए मैंने बर्बर आक्रमणकारियों को भगाने के अभियानों का नेतृत्व करने की स्वेच्छा से पेशकश की – किसी भी तरह से महल और उस स्त्री से दूर रहने के लिए। सौभाग्य से, विक्रमादित्य ने अपना वादा निभाया और एक उत्तम युवक बन गया।

उन्हीं की वजह से मैं महल लौटा और सलाहकार बनने के लिए राजी हुआ। उन्होंने मुझे वह प्रेम और सम्मान दिया जो मुझे पहले कभी नहीं मिला था। उन्होंने उस जगह को प्रकाशमान किया जिसे मैं हमेशा अंधकार से जोड़ता था।"
शाम की धुंध छाने के बावजूद, उषांथा ने अपने बेटे के चेहरे पर उदासी छाते हुए देखी।
"मैंने विक्रमादित्य को अपना सब कुछ दे दिया— अपना प्रेम, अपनी वफ़ादारी, यहाँ तक कि अपना प्राण भी। फिर भी, अब वह कालिदास का साथ दे रहा है और मुझ पर हूणों पर अत्याचार करने और निर्दोषों की जान लेने का आरोप लगा रहा है। मैं..." उसकी आवाज़ भावनाओं से काँप रही थी। "मैं, जिसने अवंती और सिंधुवर्त को बर्बरों के अत्याचार से मुक्त कराने के लिए संघर्ष किया, मुझसे कहा जा रहा है कि मैंने उन्हें मारकर गलती की, कि मुझे निर्दयी पर दया दिखानी चाहिए थी। कालिदास खुद को हूण घोषित करता है और अवंती को चुनौती देकर चला जाता है, और उसे आज़ाद छोड़ दिया जाता है। जबकि मैं, जो अवंती के सबसे बुरे समय में उसके साथ खड़ा रहा, मुझसे उम्मीद की जाती है कि मैं अपने राज्य को हूणों के कब्ज़े से मुक्त कराने के लिए किए गए अपने कार्यों पर पछतावा करूँ। माँ, इसमें न्याय कहाँ है?"
क्या यह सच है कि कालिदास अवंती छोड़कर हूणों से जुड़ गए हैं?
शाही सेना के घुड़सवारों और सैनिकों ने उसे पश्चिम की ओर जाते हुए देखा है। वह अपने सगे भाइयों के पास लौटने के अलावा और कहाँ जा सकता है? यह बिल्कुल स्पष्ट है, फिर भी निर्देश साफ हैं कि उसे रोका नहीं जाना चाहिए। क्यों? क्योंकि, जाहिर तौर पर, वही यहाँ पीड़ित है।
अपनी बेचैनी में वरारुचि उठ खड़ा हुआ और बरामदे में इधर-उधर घूमने लगा। अंधेरे के कारण उशांत के लिए उसके चेहरे को पहचानना मुश्किल था, लेकिन उसकी आवाज में कंपन से उसकी मानसिक उथल-पुथल का पता चल गया।
"यह तो पागलपन है! अगर कालिदास हूणों के साथ मिल गया, तो उन्हें हम पर हमला करने और हमें पंगु बनाने के लिए सारी जानकारी मिल जाएगी। वह आदमी हमारे लिए खतरा है, लेकिन उसके लिए आंसू बहाए जा रहे हैं जबकि मुझे दोषी ठहराया जा रहा है। यही बात मुझे सबसे ज्यादा दुख देती है, माँ। विक्रमादित्य का कालिदास के प्रति यह अंधा प्रेम—और उन सभी चीजों की अनदेखी जो मैंने, अपने खून के रिश्ते से, उसके और अवंती के लिए की हैं।"

वह अचानक टहलना बंद करके अपनी माँ की ओर मुड़ा। उसने पूछा, "क्या मैं सही सोच रहा हूँ?"

“मैं समझती हूँ कि तुम कैसा महसूस कर रही हो,” उशांता ने धीरे-धीरे बोलते हुए, अपने विचारों को समेटते हुए कहा। “तुम्हारा विश्वासघात का एहसास स्वाभाविक है, खासकर अवंती के लिए तुमने जो कुछ किया है उसके बाद। फिर भी, मैं विक्रम की दुविधा को भी समझती हूँ। उस दिन मरने वाले उसके सबसे प्रिय मित्र के रिश्तेदार थे, जिन्हें सिंहासन के प्रतिनिधि ने मार डाला था। यदि तुम गहरी वफादारी की भावना से प्रेरित हो, तो विक्रम न्याय की प्रबल इच्छा से विवश है।”

“क्या आप कह रहे हैं कि मैंने बीस साल पहले जो किया वह कालिदास के साथ अन्याय था, और इसलिए उनका द्वेष रखना जायज है?” वरारुचि का लहजा चुनौती भरा था।

उषांथा उठी और अपने बेटे के पास दो कदम चलकर गई। उसका दाहिना हाथ पकड़कर उसने उसे थाम लिया और होठों से लगाकर धीरे से चूमा। तभी दूर के दरवाजे से एक नौकरानी दीपक लेकर निकली और उसकी रोशनी माँ और बेटे पर पड़ी, जो एक-दूसरे का हाथ थामे एक-दूसरे की आँखों में गहराई से देख रहे थे।

“क्या उचित है और क्या नहीं, ये तो दृष्टिकोण की बात है। तुमने वही किया जो तुम्हें सही और न्यायसंगत लगा, और चाहे हम इस पर कितनी भी बहस कर लें, जो हो चुका है उसे अब बदला नहीं जा सकता। कालिदास उस दिन हुई घटना का परिणाम हैं, और उन्हें भी मिटाया नहीं जा सकता। पुत्र, हमें यह याद रखना चाहिए,” उशांत ने ऋषि भाव से सिर हिलाया। “यदि हम रक्त के बीज बोते हैं, तो हमें तलवारों की फसल काटने के लिए तैयार रहना होगा। कालिदास वह कड़वी फसल हैं जिसे अब अवंती को काटने के लिए तैयार रहना होगा।”

*

सांस गले में अटक गई, सीने में घबराहट और तेज़ी से चलने की कोशिश से धड़कन तेज़ हो गई, आत्रेय मक्के के घने पौधों के बीच लड़खड़ाता हुआ आगे बढ़ा। मक्के के बड़े-बड़े पत्ते उससे टकराते और जकड़ते रहे, उनकी सरसराहट उसके कानों में गूंजती रही, और उसे डर था कि कहीं ये आवाज़ घर तक न पहुंच जाए और कोई—नौकर, पत्नी या अपारूपा—उसे ढूंढते हुए आ जाए। और उन्हें पता चल जाएगा...

उस विचार को मन से मिटाते हुए, मोटा व्यापारी रसोई के बगीचे के विस्तार के रूप में बने छोटे से बागान के पिछले द्वार की ओर बढ़ गया। वह कभी समझ नहीं पाया था कि उसकी पत्नी ने वहाँ कुछ भी उगाने की जगह होने के बावजूद मक्का का खेत क्यों चुना था, लेकिन अभी वह इसके लिए आभारी था क्योंकि इससे उसे बहुत ज़रूरी आश्रय मिल रहा था।

सूर्यास्त के बाद अपने घर के पिछले गेट पर मुझसे मिलें।

ताड़ के पत्ते के एक टुकड़े पर लिखा संदेश उसी शाम उनके एक बैलगाड़ी चालक को सौंप दिया गया था, साथ ही यह सख्त हिदायत भी दी गई थी कि इसे बिना देरी किए आत्रेय को दे दिया जाए। सौभाग्य से, बैलगाड़ी चालक पढ़ नहीं सकता था और न ही वह ताड़ का पत्ता देने वाले व्यक्ति को पहचान पाया था। लेकिन आत्रेय तुरंत समझ गया था और तब से वह कोस रहा था, इस बात से नाराज़ था कि यह मुलाकात उसके घर के इतने करीब हो रही थी।

पीछे के द्वार पर पहुँचकर व्यापारी ने दाएं-बाएं देखा, पर कोई नहीं दिखा। उसने द्वार खोलकर दूर स्थित बाजरे के खेतों की ओर जाने वाली छोटी सी सड़क पर कदम रखा, पर सड़क सुनसान थी। झींगुरों की चहचाहट के अलावा रात में सन्नाटा पसरा हुआ था। यह सोचकर कि बैठक रद्द हो गई होगी—और इसके लिए आभारी होते हुए—आत्रेय वापस मुड़ने ही वाला था कि तभी एक आकृति सालमाली के पेड़ के पीछे से निकली।

आत्रेय को यह पहचानने के लिए प्रकाश की आवश्यकता नहीं थी कि वह राज्यपाल का चापलूस चिरायु था।

"मैंने साफ कह दिया है कि मैं घर के आस-पास कहीं भी नहीं मिलना चाहता," उसने अपने नौकर पर फुफकारते हुए कहा, और साथ ही कंधे के ऊपर से एक झलक भी दिखाई। "तो फिर ये सब क्यों? राज्यपाल के साथ बैठक कल तय है — क्या ये बैठक बाद में नहीं हो सकती थी?"

"मेरे पास दो विकल्प थे: या तो मैं तुमसे अभी यहीं मिलूँ, या फिर आज शाम को बाज़ार में तुम्हारी दुकान पर मिलूँ," चिरायु का लहजा व्यंग्यपूर्ण और धमकाने वाला था। "वहाँ हमें साथ में ज़्यादा लोग देख लेते। क्या तुम यही चाहतीं?"

"तुम्हें क्या चाहिए?" आत्रेय ने चिढ़कर पूछा।

उन्हें पता चला है कि राजकुमार लापता है।

"तो क्या हुआ?" व्यापारी ने कंधे उचकाते हुए कहा। "देर-सवेर वे ऐसा कर ही लेते।"
"कल सुबह उसकी तलाश शुरू की जाएगी। राज्यपाल ने भोर तक समय निकाल लिया है, लेकिन उसके बाद वह संदेह पैदा किए बिना समय नहीं निकाल सकते।"
चिरायु एक कदम और आगे बढ़ा, जिससे वह आत्रेय से बस एक हाथ की दूरी पर रह गया।
"पहाड़ों के उस पार रहने वाले अपने मित्रों से कहो कि वे जल्दी चलें। उनके पास राजकुमार को उदयपुरी से यथासंभव दूर ले जाने के लिए केवल आज रात का समय है।"
"तुम्हारे दोस्तों से तुम्हारा क्या मतलब है?" आत्रेय ने अपने चापलूस की असभ्यता पर नाराज़गी जताते हुए कहा। "वे सिर्फ मेरे दोस्त नहीं हैं। वे तुम्हारे भी दोस्त हैं... और उस आदमी के भी दोस्त हैं जिसकी तुम इतनी वफादारी से सेवा करते हो। यह बात मत भूलो।"
चिरायु कुछ पल चुप रहा। फिर जब उसने बोलना शुरू किया, तो ऐसा लगा मानो उसने व्यापारी की बात सुनी ही न हो। "सेनापति अतुल्यातेज राजकुमार का मित्र है। वह हर जगह और हर चट्टान के नीचे खोजबीन करेगा। अपने मित्रों से कहो कि उनके पास आज रात राजकुमार को पहाड़ों में ले जाने का समय है—आदर्श रूप से, पहाड़ों के पार और मरुस्थली में।"
वह नौकर अपनी एड़ी पर घूमा और चला गया, अंधेरा उसे एक भूखे जानवर की तरह निगल गया। आत्रेय सड़क के बीचोंबीच खड़ा रहा, अचानक उसे बिल्कुल अकेलापन महसूस हुआ।

*

मैंने सम्राट को मना लिया है कि वह मुझे घास के मैदान तक ले जाए। हम सुबह घोड़े पर सवार होकर वहाँ जाएँगे।
क्षपणका को विशाखा की आवाज़ में उत्सुकता और उस रात तकिये से नज़रें उठाते समय उसकी आँखों में चमकती विजय की झलक याद थी, जब वह दूसरी बार गिरने वाली थी। क्षपणका अपनी बहन का हालचाल जानने आई थी, और रानी उस मैदान में दोबारा जाने की खुशी में बस इसी बात का ज़िक्र कर रही थी। और, अपनी गहरी आशंकाओं के बावजूद, क्षपणका ने उसे प्रोत्साहित करते हुए मुस्कुराया, क्योंकि वह

जानती थी कि विशाखा अपने अतीत को, विशेषकर विक्रमादित्य से जुड़ी बातों को, याद करने के लिए कितनी बेताब थी।
लेकिन अब, अपनी बहन को उसी तकिये पर बेजान पड़ी देखकर, जिसकी आँखें आसपास की हर चीज़ से बेखबर थीं, क्षपणका को अपने ऊपर एक जाना-पहचाना गुस्सा उमड़ आया। उसके मन में एक आवाज़ चीखी, "क्यों, क्यों, क्यों, तुमने उस रात उसे क्यों नहीं समझाया, उसे क्यों नहीं बताया कि वहाँ वापस जाना एक बहुत बुरा विचार था? तुमने उस मूर्खता को क्यों नहीं रोका जब तुम्हें पता था कि इससे कोई भला नहीं होगा?"
आगे झुककर, युवा सलाहकार ने विशाखा के माथे पर हाथ फेरा और उसके सिर को सहलाते हुए बिखरे बालों को समेटा। दिन की शुरुआत ही हुई थी, लेकिन रानी को स्नान कराकर उनकी देखभाल कर चुकी थीं और उनकी देखरेख उन दासियों ने कर दी थी जिनकी देखरेख में उन्हें फिर से रखा गया था। दोनों दासियां अभी भी पास ही थीं - एक विशाखा के दिन के पहले भोजन के लिए आम और पपीता काट रही थी, दूसरी रानी के नाखून संवारने की तैयारी कर रही थी - और क्षपणका ने झुककर अपनी बहन के माथे पर चुंबन किया ताकि वे उसे रोते हुए न देख सकें।
उसके मन में अचानक एक आवाज़ उठी, “क्यों, क्यों, क्यों?” — बिना किसी कारण के — और सम्राट पर बरस पड़ी। “आपको उसकी बात सुनकर उसे मैदान में ले जाने की क्या ज़रूरत थी? आप मना कर सकते थे। आख़िरकार आप राजा हैं। आपने उसकी बात क्यों मानी?”
"क्या आप महारानी को भोजन कराना चाहेंगे, महाराज?"
क्षपणका ने पलकें झपकाईं और चुपके से अपनी पलकों पर अटके आंसू को पोंछ दिया। सीधी बैठी हुई, उसने दासी से फलों का कटोरा स्वीकार किया।
वैद्य की देखरेख में विशाखा के चमत्कारिक रूप से स्वस्थ होने से राहत और खुशी का ऐसा दौर शुरू हुआ, जैसा क्षपणका ने बहुत लंबे समय से अनुभव नहीं किया था। एक-एक करके, बहनों ने उन बंधनों को फिर से खोज लिया था जो उन्हें निषाद में उनके बचपन से ही करीब रखते थे, और विशाखा द्वारा अपने अतीत को संजोने के दौरान हुई अनगिनत बातचीत में ये बंधन और भी मजबूत हो गए थे। वे लगभग पूरी तरह से तैयार हो चुकी थीं, विशाखा की याददाश्त में लगभग हर कमी को पूरा कर चुकी थीं... और फिर, अचानक...

आवाज ने तीखी और आरोप भरी आवाज में पूछा, "क्यों? तुमने वैद्य को उसे देखने से क्यों रोका? इससे क्या नुकसान होता? तुमने उससे कोई एहसान तो नहीं माँगा था - वैद्य ने खुद पहल की थी। वैद्य शायद उसे होश में ला सकता था - लेकिन तुमने ऐसा नहीं होने दिया। अड़ियल। जिद्दी। इस बात पर अड़े रहे कि यह गलत होगा..."
अपने हाथों के अनियंत्रित रूप से कांपने का एहसास करते हुए, क्षपणका ने कटोरा एक तरफ रख दिया। गला साफ करते हुए, उसने दासी से कहा, "मुझे अभी कुछ याद आया। मुझे जाना होगा।" अचानक उठकर, वह दरवाजे की ओर आधी दूर ही जा चुकी थी कि उसने पीछे मुड़कर देखा। "सुनिश्चित करना कि रानी ने अच्छे से भोजन किया हो।"
महल की गलियारों से नीचे उतरते हुए सलाहकार अपने कमरे में पहुँचीं, जहाँ वे बस कुछ देर रुकीं और अपना धनुष-बाण उठाया, जिसमें तीन मजबूत तीर थे। तरकश को अपनी पीठ पर टांगकर और वापस लौटते हुए, क्षपनाका ने अपने गालों पर क्रोध की तीव्र गर्मी महसूस की और महसूस किया कि वह इसके आगे बेबस हैं। कई दिनों से उनके भीतर दुख, क्रोध और हताशा पनप रही थी, और अंततः यह मिश्रण उबल पड़ा था, जो तर्क से शांत होने को तैयार नहीं था, भावनाओं का ऐसा मिश्रण जो उनकी रगों में विद्रोह की आग की तरह सुलग रहा था।
...अड़ियल, हठी और तुम्हारी अच्छाई के नशे में चूर। उसे जाने देने पर अड़े रहे, जबकि उसे काबू में करके काल कोठरी में डाल देना चाहिए था। उसने कहा कि वह हूणों के x'sa वंश के मुखिया ज़ो ए'रामी का पुत्र है। उसने अपने हूण नाम के लिए कालिदास नाम को अस्वीकार कर दिया। उसने कहा कि वह अब अवंती के सिंहासन की सेवा नहीं करेगा। फिर भी तुमने उसे जाने दिया, एक हत्यारे हूण के पुत्र को...
क्षपणका महल के मार्ग से गुज़री और शाही अस्तबल की ओर मुड़ गई। पसीने की एक बूँद उसके माथे से रिसकर गाल पर बह गई, पर उसे इसका ज़रा भी एहसास नहीं हुआ। सुबह की शांत हवा में एक पत्ता भी नहीं हिल रहा था, और दिन गर्म और उमस भरा होने की आशंका थी।
चलते समय उसके मन में परिषद कक्ष की छवि उभर आई, और उसने राजा को भौंहें चढ़ाते हुए यह कहते हुए देखा, हम चीजों को तभी स्वीकार करेंगे जब हमारे पास उनके अस्तित्व के अकाट्य प्रमाण होंगे।

उसके दिमाग में गूंजती आवाज ने तिरस्कारपूर्वक जवाब दिया, "अकाट्य प्रमाण। हमें वह तब मिलेगा जब वह बर्बर सेना के नेतृत्व में सीमा पर आएगा। अवंती को सुरक्षित छोड़ने के लिए उसकी कृतज्ञता का प्रतीक।"
"काउंसलर साहब, मैं आपकी किस तरह मदद कर सकता हूँ?"
क्षपनाका ने अपने सामने झुकने वाले युवा अस्तबल के लड़के को देखा, फिर अस्तबल के चारों ओर नज़र डाली। इस समय अस्तबल लगभग खाली था, और अस्तबल की रखवाली करने वाली कीरी भी कहीं नज़र नहीं आ रही थी। पार्षद ने सोचा कि यह अच्छा ही हुआ। वह रखवाली करने वाली के किसी भी सवाल का जवाब देने के मूड में नहीं थी।
“मेरे घोड़े पर काठी कस दो,” उसने जवाब दिया। “बूढ़े वाले पर।”
“पुराने वाले की बात कर रहे हो, पार्षद जी?” लड़के ने उलझन में अपनी नाक खुजलाई और महिला के हाथों में आक्रामक ढंग से पकड़े धनुष को थोड़ी चिंता से देखा। “मुझे नहीं लगता कि मैं जानता हूँ...”
"मेरे पीछे आओ।"
क्षपनाका अपने साथी को पीछे छोड़ते हुए अस्तबल के भीतर और गहराई में चली गई, गलियारे के दोनों ओर घोड़ों से भरे हुए स्टॉल उसके पीछे से गुज़रे। जैसे ही वह घुमावदार रास्ते से लगभग अंत तक पहुँची, घोड़ों की हिनहिनाहट और गुर्राहट हवा में गूंज उठी, जहाँ उसने एक बड़े, खाली स्टॉल में खड़े एक विशाल, भूरे रंग के घोड़े की ओर इशारा किया।
“माननीय महोदय, उस घोड़े पर कोई सवारी नहीं करता,” लड़के का स्वर असहज था। “मुझे बताया गया है कि उसकी काफी बदनामी है।”
“इसकी तो वाकई बहुत प्रतिष्ठा है,” क्षपनाका ने संक्षिप्त उत्तर दिया। लड़का स्पष्ट रूप से उस घोड़े के इतिहास से अनभिज्ञ था। “इस पर काठी कस दो।”
देखते ही देखते क्षपनाका उज्जैन की मुख्य सड़कों पर सरपट दौड़ने लगी। दिन अभी शुरू ही हुआ था, सड़कों पर यातायात कम था, इसलिए पार्षद अपने पुराने घोड़े को तेज़ी से दौड़ा सकीं। हालाँकि विशाखा के पहले पतन के बाद से दो वर्षों में घोड़े की सवारी ज़्यादा नहीं हुई थी, फिर भी उसे अच्छी तरह से कसरत कराई गई थी - और शायद इसी वजह से या फिर पुरानी, अनभूली प्रवृत्ति के कारण, वह क्षपनाका के

सूक्ष्म आदेशों का अच्छी तरह पालन कर रहा था। कुछ ही मिनटों में वे शहर के दक्षिणी द्वार की छाया से निकलकर महिष्मती जाने वाली मुख्य सड़क पर पहुँच गए। ज़ो एरामी खसा का सरदार था—वही खसा जिसने तुम्हारी पत्नी के माता-पिता की हत्या की थी, सम्राट, मेरे माता-पिता... उसके दिमाग में गूंजती तीखी और क्रोधित आवाज़ तेज़ होती गई, जिससे उसे चेतावनी देने वाली, संयम बरतने की सलाह देने वाली छोटी, कोमल फुसफुसाहटें दब गईं। लेकिन तुमने इस पर आंखें मूंद लीं और खसा के एक वंशज को महल से जाने दिया क्योंकि वह तुम्हारा मित्र था। सम्राट विक्रमादित्य, तुम्हारी पत्नी के प्रति तुम्हारा प्रेम झूठा है। वरना, तुम वैद्य को उसका पूर्ण उपचार करने देते...

एक शाम महल की झील के चारों ओर बने सैरगाह पर टहलते हुए विशाखा ने योजना बनाते हुए कहा था, "हम दोनों को निषाद की यात्रा अवश्य करनी चाहिए।" उसे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि निषाद प्रांत में उनके पिता, राजा वल्लभ, या वल्लभ के दरबार के किसी भी व्यक्ति से संबंधित लगभग कोई भी जीवित नहीं बचा था। हूणों ने भले ही शाही परिवार के हर सदस्य का सफाया कर दिया हो, लेकिन विशाखा के लिए निषाद लौटना उसके बचपन की यादों में लौटने जैसा था, जिन्हें वह बहुत प्यार करती थी।

बेशक, विशाखा के लिए अब याद रखना एक बार फिर असंभव हो गया था...

...और इसके लिए तुम ज़िम्मेदार हो, आवाज़ फिर से उसे कोसने लगी। उसे घास के मैदान में वापस जाने से न रोकने के लिए, उसे अपने घोड़े पर सवार होने देने के लिए...

क्षपनाका ने लगाम को झटके से खींचा। वह सड़क के एक शांत हिस्से पर रुक गई, एक छोटी सी चढ़ाई जिसके दोनों ओर राजमार्ग ढलान पर था। चढ़ाई पर कुछ किमशुका के पेड़ थे, जबकि बाएँ और दाएँ खेत फैले हुए थे। जहाँ तक उसकी नज़र जाती थी, सड़क का वह हिस्सा सुनसान था। घोड़े से उतरकर, पार्षद उज्जैनी की दिशा में दो दर्जन कदम चली, फिर मुड़कर घोड़े को गंभीर निगाहों से देखा। घोड़े की काली आँखें उस पर टिकी थीं, मानो वह उसे निराशा और पश्चाताप से देख रही हो।

धनुष उठाते हुए, पार्षद ने अपने तरकश से एक तीर निकाला और उसे धनुष पर टिका दिया। डोरी को धीरे-धीरे पीछे खींचते हुए, उसने मजबूत तीर से निशाना साधा

और घोड़े के चांदी जैसे रंग के शरीर पर, उसके अगले पैरों के ठीक ऊपर, सटीक बिंदु पर निशाना लगाया। घोड़े का हृदय ठीक उसी जगह के नीचे था जहाँ वह निशाना लगा रही थी।

तुमने उसे मैदान में गिरा दिया, उस आवाज ने अपना क्रोध घोड़े पर प्रकट किया। तुम, जिसे उसने कोई नुकसान नहीं पहुँचाया, लेकिन जिसके प्रति तुम सबसे निर्दयी थे। अगर तुम न होते, तो इनमें से कुछ भी नहीं होता। तुम्हें उसी दिन मार दिया जाना चाहिए था, लेकिन सम्राट की दया ने तुम्हें बचा लिया। अब तुम्हारे लिए कोई दया नहीं, अंधकार लाने वाले। आज तुम्हें इसका हिसाब चुकाना होगा।

क्षपणका ने धनुष की डोरी को अपनी दाहिनी आँख, कनपटी और कान के पार खींचा। तनाव के कारण धनुष उसके बाएं हाथ में झुक गया और कांपने लगा, लकड़ी से चरमराहट की आवाज़ आई।

उसने मुझे अपनी पीठ पर बैठने के लिए नहीं कहा था। यह मेरा फैसला था, तो जो हुआ उसके लिए इस बेचारे जानवर को कैसे दोषी ठहराया जा सकता है?

विशाखा के वे शब्द, जो उसने अस्तबल के रखवाले से उस सुबह कहे थे जब वे दोनों घोड़े को देखने गई थीं, क्षपणका के मन में गूंज उठे। उसने तीर से घोड़े को घूरा, जो अब भी उसे खेद भरी निगाहों से देख रहा था। वह न्याय चाहती थी, लेकिन उससे भी बढ़कर, वह बदला लेना चाहती थी। वह किसी भी बात से, किसी भी चीज़ से हिसाब बराबर करना चाहती थी। वह घोड़े को मार डालना चाहती थी, लेकिन उसकी बहन ने उसे ऐसा करने नहीं दिया। और इस बात ने उसे क्रोधित कर दिया और उसकी आँखों में फिर से आँसू आ गए।

हताशा भरी चीख के साथ उसने तीर चला दिया।

हालांकि, एक पल पहले ही उसने अपना निशाना एक छोटे से चाप में बदल दिया था, इसलिए तीर घोड़े के पास से तेजी से निकल गया और सड़क के किनारे उगने वाले किम्शुका पेड़ों में से एक के तने में गहराई तक धंस गया।

कंधे झुकाए क्षमानाका धीरे-धीरे घोड़े की ओर लौटी। जैसे ही वह पास पहुँची, घोड़े ने मानो अपनी जान बख्शे जाने का एहसास होते ही अपना सिर आगे बढ़ाया और उसे प्यार से सहलाया। परामर्शदाता ने घोड़े की गर्दन में अपनी बाहें डालकर अपना चेहरा उसके पीले अयाल में छिपा लिया और अपने भीतर दबी हुई पीड़ा और क्रोध को अपने गालों पर उंडेल दिया।

क्षपणका का चेहरा घोड़े के खुरों की ओर था, इसलिए उसने किम्शुका पर तीर लगने के स्थान पर उभरे कोयले जैसे काले धब्बे को नहीं देखा। उसने न तो उस दाग को पेड़ की छाल पर स्याही के धब्बे की तरह तेज़ी से फैलते देखा, न ही पेड़ के पत्तों को मुरझाते, जलते और अचानक हवा के झोंके से उड़ते देखा। पेड़ की जड़ों के आसपास की ज़मीन सूख गई और थोड़ी धंस गई, जिससे सूखा तना नीचे झुक गया। पेड़ टेढ़ा-मेढ़ा, पीड़ादायक और एक तरफ झुका हुआ खड़ा रहा, उसकी पतली शाखाएँ आकाश से दया की भीख माँग रही थीं।

*

जब से वह सवार रेगिस्तान के मंद-मंद दृश्य में एक छोटे से बिंदु के रूप में दिखाई दिया था, तब से वे उस पर नज़र रखे हुए थे। ज़ाहिर है, दूर से दिखाई देने वाले उस बिंदु से यह पता नहीं चल रहा था कि वह एक सवार है या पुरुष है। लेकिन जैसे-जैसे वह बिंदु पास आता गया और उसका आकार स्पष्ट होता गया, सातों घुड़सवारों को उसकी पहचान साफ़ नज़र आने लगी। जिस दिशा से वह आ रहा था - पूरब, जहाँ दूर के पहाड़ धुंध में केवल धुंधली रूपरेखाओं की तरह दिख रहे थे - और जिस तरह से वह काठी पर झुका हुआ था, उससे घुड़सवारों को स्पष्ट हो गया था कि उसकी सवारी लंबी और थका देने वाली रही होगी। यहाँ तक कि घोड़ा, जो वैसे तो एक मज़बूत घोड़ा होता है, भी लड़खड़ाता हुआ चल रहा था, मानो उसने आखिरी बार पानी कई मील पहले पिया हो।

"ग्वा'के?" एक भौंह उठाकर, देखने वालों में से एक ने अपने साथियों का जायजा लिया।

माथे पर हुरिज़ का निशान खुदा हुआ था, उन आदमियों ने आते हुए घुड़सवार को देखते हुए अनिश्चितता भरी निगाहें एक-दूसरे पर डालीं, तेज धूप से बचने के लिए उनकी आंखें सिकुड़ी हुई थीं। उनमें से सबसे छोटा, खुरदरा और बिखरे बालों वाला किशोर लड़का, कठोर स्वर में बोला।

"इगा उज़ थ्रा'आख," उसने कहा, उसका दाहिना हाथ उसकी काठी से लटके तरकश की ओर बढ़ा, उंगलियां पंखों वाले तीरों पर टिकी थीं। 'चलो उसे मार डालते हैं।'

समूह के बाकी लोग बीच में बैठे घुड़सवार की ओर मुड़े, जो अपने घोड़े पर एकदम सीधा बैठा था। उसकी दाढ़ी बिखरी हुई और भूरी थी, और वह उनका नेता प्रतीत हो रहा था।

"एबा," उस आदमी ने लड़के को रोकने के लिए हाथ उठाते हुए कहा।

हुना गश्ती दल इंतज़ार कर रहा था। उनके चारों ओर, गर्म हवा के अनियमित झोंके धूल के छोटे-छोटे गुबार उड़ा रहे थे जो लगभग तुरंत ही रेगिस्तान की ज़मीन पर गिर जाते थे। हवा उन सूती शॉल को झटक रही थी जिन्हें पुरुषों ने अपने सिर और कंधों पर ओढ़ रखा था, जिससे कपड़ा फड़फड़ा रहा था और लहरा रहा था। उनकी परछाइयाँ उनके पीछे छोटी और मोटी थीं, जो दोपहर होते-होते और भी मोटी होती जा रही थीं। सात घोड़ों के अलावा—अगर अजनबी के घोड़े को भी शामिल किया जाए तो आठ—कोई जानवर, पक्षी या कीड़ा नज़र नहीं आ रहा था।

जब घुड़सवार सुनाई देने की दूरी पर पहुंचा, तो समूह के नेता ने उसे पुकारा। "एबा ज़ुह!" फिर, मानो अपनी बात स्पष्ट करने के लिए, उसने धीमी और भारी अवंती लहजे में बोलना शुरू किया। "रुक जाओ!"

घोड़े की गर्दन पर झुका हुआ सवार मानो आदेश से बेखबर था। जानवर अपनी धीमी चाल से चलता रहा और सामने खड़े हूणों के करीब आता गया, जिन्होंने उसका रास्ता रोक दिया था।

"एबा ज़ुह," नेता ने फिर से ज़ोर से चिल्लाया। उसने अपनी तलवार निकाली और बाकी छह आदमियों ने भी ऐसा ही किया, तलवारें म्यान से निकालकर धनुषों में तीर चढ़ा लिए।

इस बार आदेश समझ में आ गया और घोड़ा व सवार लड़खड़ाते हुए रुक गए। नए आए व्यक्ति ने बड़ी मुश्किल से खुद को काठी पर संभाला और तभी हूणों ने उस विशालकाय व्यक्ति के भारी-भरकम शरीर का पहली बार आभास किया। धूप से बचने के लिए ओढ़े हुए सूती शॉल के नीचे, अजनबी के कंधे चौड़े और मजबूत थे, उसकी मोटी, मांसल गर्दन एक काले चेहरे तक जाती थी जहाँ पसीने और गंदगी से सनी हुई दाढ़ी सड़क पर काफी समय बिताने का संकेत दे रही थी। सवार के लंबे बाल ऊँची चोटी में बंधे हुए थे, जो उसके योद्धा वाले अंदाज को और भी प्रभावशाली बना रहे थे। हूणों ने सहज ही अपनी तलवारें और कसकर पकड़ लीं, धनुषों को स्थिर किया और उनकी डोरियाँ खींच ली गईं।

घुड़सवारों में से एक ने धीमी आवाज़ में बुदबुदाया, "ज़ाह ह्रीज़।" 'नो ह्रीज़'।
नेता ने सिर हिलाया। जब वह बोला, तो उसकी आवाज़ ठंडी और चुनौती भरी थी। "ज़ुह तेइगो?" फिर, अवंती भाषा में, "तुम कौन हो?"
अजनबी ने थकी हुई आँखों से गश्ती दल को देखा। अपने सूजे और फटे होंठों को चाटते हुए, वह लड़खड़ाते शब्दों में बोला, उसकी आवाज़ कर्कश और फटी हुई थी, "मा... रेक'ए त्शा।" उसने अंगूठा होठों पर रखकर पीने का इशारा किया, और जब घुड़सवारों ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, तो उसने नेता की काठी से लटकी भेड़ की खाल की बोतल की ओर इशारा किया। "त्शा," उसने दोहराया।
हुना ने बोतल को ध्यान से देखा। नीचे झुककर उसने उसे उठाया, ढक्कन खोला और होठों से लगाया। पानी के कुछ घूंट पीने के बाद, उसने सावधानी से ढक्कन वापस लगाया, अपने होठों और दाढ़ी को हाथ के पिछले हिस्से से पोंछा और ताना मारती निगाहों से सवार को देखा। "ज़ुह नुखी ज़ुह तेई गो," उसने कहा और बोतल को काठी के पास वापस गिरा दिया। 'तुमने यह नहीं बताया कि तुम कौन हो।'
अजनबी ने बोलने से पहले एक पल के लिए घूरकर देखा। "ज़ुह तेई बाडोर। बुन उन्नु ज़ुहई शायोर।" 'तुम असभ्य हो। मुझे अपने सरदार के पास ले चलो।'
घुड़सवारों ने एक-दूसरे को देखा और उनकी हंसी एक से दूसरे में आग की तरह फैल गई। व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ, उन्होंने अपने घोड़ों को आगे बढ़ाया और एक साथ दोनों ओर फैल गए, पहले सवार के बगल से, फिर उसे घेर लिया। नेता तब तक आगे बढ़ता रहा जब तक कि वह अजनबी से केवल दस कदम की दूरी पर नहीं रह गया।
"मा'आ खी श्योर, उर ज़ुह की'स्लत," उसने अपनी दाढ़ी खुजाते हुए और मुस्कुराते हुए कहा। 'मैं मुखिया हूँ, दुर्भाग्य से तुम्हारे लिए।'
घुड़सवार ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, उसकी निगाहें भेड़ की खाल से बनी बोतल पर टिकी थीं। तभी, हूणों में से एक ने इशारा करते हुए चिल्लाकर कहा, "उरुग हा, शो ग्वेदे'र।" 'सावधान रहो, उसके पास तलवार है।'
तुरंत ही घुड़सवारों ने अपने हथियार उठा लिए, तलवारें और तीर सवार की ओर तान दिए, उनकी निगाहें सतर्क और चौकस थीं। नवागंतुक अविचलित प्रतीत हुआ, उसने अपने चारों ओर के घेरे का जायजा लिया और फिर काठी से पैर हटाकर अकड़कर घोड़े से उतर गया। उसने नेता की ओर तीन थके हुए कदम बढ़ाए,

चलते-चलते अपनी तलवार म्यान से निकाल ली, और घुड़सवारों ने तुरंत अपने घोड़ों को आगे बढ़ाया, उसके करीब आ गए, उनकी तलवारें और तीर अब स्थिर थे, पूरी तरह से उस आदमी के सिर और धड़ पर निशाना साधे हुए थे।
अजनबी, जिसका सिर आसानी से आठों घोड़ों के सिर के ऊपर तक पहुँच जाता था, रुका और अपनी तलवार की नोक को अपने पैरों के पास तपती मिट्टी में गाड़ दिया। सरदार की ओर देखते हुए, उसने शांत लेकिन कर्कश स्वर में दोहराया, "बुन उन्नु ज़ुही शायोर।"
"Ma nukhi zuh ma'a khi shy'or?" नेता की आँखें घुड़सवार पर गुस्से से चमक उठीं। 'क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया कि मैं मुखिया हूँ?'
अचानक, जैसे कोई पत्थर तेज़ी से नीचे गिरता है, अजनबी झुक गया। हूण तीरंदाजों ने तुरंत अपने तीर चला दिए, लेकिन निशाने पर लगने के बजाय, वे उसके सिर के ऊपर से निकल गए। एक तीर सामने खड़े घोड़े की छाती में लगा, जबकि दूसरा रेगिस्तान में बेजान होकर गिर पड़ा। घायल घोड़ा दर्द से हिनहिनाया और उछला, तभी अजनबी ने अपनी तलवार को ऊपर की ओर तेज़ी से घुमाते हुए, अपनी ओर तानी हुई तलवारों पर धातु की ज़ोरदार खड़खड़ाहट के साथ प्रहार किया, जिससे हूण घुड़सवार लड़खड़ा गए।
कुछ क्षण पहले जो थकान उसे जकड़े हुए प्रतीत हो रही थी, उसका कोई भी अंश प्रकट नहीं करते हुए, और एक प्यासे, थके-हारे यात्री से गश्त दल द्वारा कभी भी अनुमान न लगाई जा सकने वाली गति से चलते हुए, अजनबी ने पहले हूण तीरंदाज, बिखरे बालों वाले लड़के पर झपट्टा मारा। तलवार की कुंद धार लड़के की छाती पर लगी, जिससे वह दूसरा तीर धनुष में चढ़ाने से पहले ही गिर पड़ा। लड़का जैसे ही अपने नितंबों के बल गिरा, उसका पैर धनुष में अनाड़ीपन से उलझ गया, अजनबी ने अपनी ओर आती तलवारों को हटाते हुए दूसरे तीरंदाज तक पहुँच गया, जिसने एक नया तीर धनुष पर चढ़ाया था और कमान खींच रहा था। एक और जोरदार प्रहार, तलवार का एक और वार, और तीर चलने से पहले ही धनुष दो टुकड़ों में टूट गया। घूमते हुए, सवार झुकता और वार करते तलवारों से बचता हुआ, वारों और वारों को रोकता हुआ, आश्चर्यचकित घुड़सवारों को उनकी कलाई और टखनों से पकड़कर उन्हें उनके घोड़ों से नीचे खींचता हुआ आगे बढ़ गया। एक उछलते हुए घोड़े के अगले पैरों के नीचे अंतिम बार गिरने और लुढ़कने के बाद, वह उठा और उस घोड़े

पर सवार हो गया जिस पर समूह का नेता सवार था, जो घोड़े पर सवार एकमात्र हूण व्यक्ति था।
"एबा," अजनबी दहाड़ा और नेता की गर्दन में अपना विशाल हाथ लपेटकर उसे कसकर जकड़ लिया। "एबा।"
जैसे ही घोड़ा दोनों आदमियों के संयुक्त वजन को सहन करने के लिए संघर्ष कर रहा था, अजनबी ने अपने द्वारा गिराए गए योद्धाओं पर अपनी कृपाण को बड़े चापों में घुमाया, उन्हें पीछे धकेलते हुए तलवार की नोक को उनके नेता की पसलियों पर दबा दिया।
"मैं तुम्हारे किसी भी आदमी को मार सकता था," उसने नेता के कान में फुसफुसाते हुए कहा। अपनी बांह को मोड़ते हुए, उस दैत्य ने हूना की गर्दन पर अपनी पकड़ और कस दी, और ज़ोर से दबा दिया। हूना हांफने लगा और हताशा में अपनी भारी, कसती हुई बांह को खरोंचने लगा, उसकी आंखें इधर-उधर घूमने लगीं।
अजनबी ने आगे कहा, "अगर मैं चाहूँ तो तुम्हें अभी मार सकता हूँ। लेकिन मैंने उन्हें बख्श दिया है, और मैं तुम्हें भी बख्श रहा हूँ।"
हुना की गर्दन से अपनी पकड़ छोड़ते हुए, दैत्य घोड़े की पीठ से नीचे कूद गया। जब दल का सरदार खांसते हुए, गहरी सांस लेते हुए और राहत की सांस लेते हुए अपने गले को सहलाते हुए काठी पर झुक गया, तो शुक्रगुजार घोड़ा हिनहिनाया और अजनबी से दूर हट गया, जिसने अपनी तलवार वापस म्यान में रख ली।
"मैंने तुम्हें इसलिए बख्श दिया क्योंकि मैं एक मित्र बनकर आया हूँ," उसने धमकाने वाले स्वर में कहा, इतना ऊँचा कि सब सुन सकें। "परन्तु मित्र हो या शत्रु, प्यासे को पानी देने से कभी मना मत करना।" भेड़ की खाल से बनी बोतल की ओर इशारा करते हुए, उंगलियों से संकेत करते हुए उसने कहा, "मा रेके त्शा।"
खांसते-खांसते और हांफते हुए, आंखों से लगातार पानी बहते हुए, हूण योद्धा ने बोतल पकड़ी और उसे उस दैत्य की ओर बढ़ा दिया। जैसे ही उसने अपना सिर पीछे झुकाया और संतुष्टि भरे गहरे घूंट भरे, बाकी हूण योद्धा, दर्द से कराहते और अपमानित होते हुए, उस व्यक्ति को आश्चर्य, संदेह, भय और घृणा के मिश्रित भावों से घूर रहे थे, जो उनके बीच आकर उन्हें आत्मसमर्पण करने पर मजबूर कर चुका था।

"ज़ुह तेई गो?" युवा तीरंदाज ने उदास लेकिन विस्मय भरे स्वर में पूछा, दर्द से कराहते हुए और धीरे से अपनी छाती को छूते हुए जहाँ कृपाण की कुंद धार ने उसे चोट पहुँचाई थी।

अजनबी ने अपनी प्यास बुझाने के लिए बोतल का लगभग सारा पानी पी लिया, फिर तीरंदाज और उसके आसपास के अन्य चेहरों की ओर देखा। "मा'आ..." उसने हाँफते हुए कहा, "...मा'आ गा'उर थ्रा'अखा। दुज़'उर ज़ो ए'रामी। ओई बुन उन्नू ज़ुह'ई श्योर।"

'मैं गाउर थ्राखा, ज़ो एरामी का पुत्र हूँ। अब मुझे अपने सरदार के पास ले चलो।'

खो गया

विशाल, घने और झाड़ियों से भरे बगीचे के बीचोंबीच स्थित भव्य मंडप की ओर जाने वाले रास्ते पर शुक्राचार्य और जयंत की मुलाकात हो गई। रास्ता संकरा था और सुगंधित पारिजात और केतकी के घने झुंडों के बीच से होकर गुजरता था, इसलिए मुख्य पुरोहित और युवा देवता एक-दूसरे की नजरों से तब तक छिपे रहे जब तक कि वे आमने-सामने नहीं आ गए और लगभग एक-दूसरे के सीने टकराने ही वाले थे। जयंत ने माफी मांगते हुए कुछ बुदबुदाया और अजनबी के पास से निकलने की कोशिश की, लेकिन शुक्राचार्य ने रास्ता रोक दिया और एक तेज नजर से लड़के को घूरने लगे।

"मुझे पता ही नहीं था कि इस बगीचे में कोई और भी है," असुरों के गुरु ने आश्चर्य से कहा। थोड़ा घबराते हुए उन्होंने आगे कहा, "यह जगह तो एक भूलभुलैया जैसी है।

अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो क्या आप मेरे मार्गदर्शक बन सकते हैं?”
जयंता ने विरोध करने और माफी मांगने के लिए अपना मुंह खोला, लेकिन जैसे ही वह कोई बहाना ढूंढने की कोशिश कर रहा था, शुक्राचार्य ने देवता की घबराहट का फायदा उठाया और उसे कंधे से पकड़ लिया।
“मैं थक गया हूँ,” वह हांफते और खांसते हुए बोला, और अपना सिर थोड़ा झुका लिया। “क्या मुझे थोड़ी देर बैठने की जगह मिल सकती है?”
कोई विकल्प न होने पर, जयंता शुक्राचार्य को खुले मंडप तक ले गए, जिसका गुंबद बारह सुंदर संगमरमर के स्तंभों पर टिका हुआ था। एक अनोखे ढंग से डिज़ाइन किए गए झरने के चारों ओर चौड़ी संगमरमर की सीढ़ियाँ बनी हुई थीं, जो धीरे-धीरे एक कुंड में गिरता था जहाँ इंद्रधनुषी रंगों की मछलियों के झुंड इधर-उधर तैर रहे थे। फर्न और लताएँ बहुतायत में थीं, ठंडी हवा में लहरा रही थीं, जबकि ऊपर, सफेद गले वाले मुनिया पक्षियों का एक परिवार गुंबददार छत की दरारों में घोंसला बनाकर अंदर-बाहर आ-जा रहा था। कुंड के एक तरफ एक ऊंचे चबूतरे पर जल यंत्र था - आठ छोटे पीतल के कटोरे पानी से भरे हुए, एक तंग अर्धवृत्त में रखे हुए थे।
“आह, कितनी राहत मिली,” शुक्राचार्य सीढ़ियों पर बैठते हुए बोले। उन्होंने उत्सुकता से देखा कि देवता उनके पास से चले गए और पीतल के कटोरे वाले चबूतरे की ओर बढ़ गए।
मंच पर कदम रखते ही जयंता प्यालों के सामने बैठ गए, पैर मोड़े और एक फुट लंबी पतली लकड़ी की दो छड़ें उठा लीं। एक छड़ी से उन्होंने एक प्याले के किनारे पर प्रहार किया जिससे एक मधुर, लयबद्ध ध्वनि निकली। फिर, अभ्यास से भरी सहजता से, उन्होंने तेजी से प्यालों पर छड़ें बजाईं और एक ऐसी मधुर ध्वनि उत्पन्न की जो आत्मा को गहरी शांति प्रदान करती थी। अंत में, उन्होंने शुक्राचार्य की ओर देखा, जो प्रशंसा में सिर हिला रहे थे।
“शानदार। आपको इतना अच्छा खेलने की ट्रेनिंग किसने दी?”
“किसी ने नहीं,” देव ने कंधे उचकाते हुए कहा और नए सुर छेड़ने लगे। “मैंने इसे खुद ही सीखा है।”
शुक्राचार्य ने मन ही मन सोचा, "सचमुच! हे देव, आपने तो बड़ी-बड़ी चतुराई भरी बातें सीख ली हैं। जैसे जल यंत्र बजाना सीखना... या अहि को जागृत करना।" उन्होंने

जयंत की ओर सौम्य मुस्कान के साथ देखा, जिसे जरा भी अंदाजा नहीं था कि यह एक सुनियोजित मुलाकात थी, न कि अजनबियों के बीच एक आकस्मिक मुलाकात। महापुजारी कई दिनों से देव का पीछा कर रहे थे—व्यक्तिगत रूप से, अस्थियों और मंडल की सहायता से—उनके कार्यक्रम का अध्ययन कर रहे थे, उनकी कमजोरियों का पता लगा रहे थे और उनसे संपर्क करने के तरीके खोज रहे थे। उस सुबह इंद्र के अवंती के लिए प्रस्थान करने के बाद, शुक्राचार्य ने युवा राजकुमार से मिलने का फैसला किया।

"क्या तुम संयोगवश... जयंता हो?" वह अचानक भौंहें चढ़ाकर बोला। "देवलोक के उत्तराधिकारी?"

"हाँ।" जयंता ने खेलना बंद कर दिया और ऊपर देखा। "तुमने कैसे अनुमान लगाया?"

"मुझे तुममें इंद्र की झलक दिखती है," शुक्राचार्य ने झूठ बोला। "पुराने इंद्र, वो सुंदर इंद्र। वास्तव में, मैं कहूंगा कि तुम अपनी उम्र में उनसे भी बेहतर हो।"

जयंता को शरमाते और आनंद से सीना फुलाते देख, प्रधान पुरोहित को एहसास हुआ कि उसने युवा देवता के अहंकार को जगाने में अच्छा काम किया है।

और आप... आप मेरे पिता को कैसे जानते हैं?

"अरे, मुझे देखो, मैंने तो अपना परिचय भी नहीं दिया। मैं शुक्राचार्य हूँ।"

पीतल के कटोरे के ऊपर छड़ियों को पकड़े हुए हाथों में तनाव आ गया। "गुरु शुक्राचार्य, असुरों के गुरु?" जयंता ने आदर भरी निगाहों से मुख्य पुरोहित की ओर देखा, उसकी आवाज़ में श्रद्धा थी।

"वही। आपने सुना ही होगा कि मैं आपके पिता का मेहमान हूँ।"

जयंता ने संदेह भरी निगाहों से अपना सिर हिलाया।

"सिर्फ मैं ही नहीं, असुर स्वामी हिरण्याक्ष भी दो दिन पहले तक यहाँ थे।" जयंता की उलझन देखकर मुख्य पुरोहित मुस्कुराए। "हम शांति और आपसी हित के मामलों पर चर्चा करने आए थे।"

देवता को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे, इसलिए वह चुप रहा, यह सोचता रहा कि खेलना जारी रखे या उठकर चला जाए।

"तुम जल यंत्र बहुत अच्छे से चलाते हो, तुम जवान और सुंदर हो—मुझे यकीन है कि तलवारबाजी में भी तुम माहिर होगे। अप्सराएँ तुम्हें देखकर बेहद आकर्षित होती

होंगी," शुक्राचार्य ने मुस्कुराते हुए जयंत को आँख मारी। "बेचारी, वे सब तुम्हारी ओर आकर्षित होने के लिए एक-दूसरे पर टूट पड़ती होंगी। और जिस अप्सरा पर तुम्हारी नज़र पड़ेगी... उसे पता होगा कि वह कितनी भाग्यशाली है।" मुख्य पुरोहित देव को देखता रहा। "क्या ऐसी कोई अप्सरा है?"

राजकुमार ने तुरंत कोई उत्तर नहीं दिया। वह उदास होकर बैठे रहे, और सन्नाटा गहराता चला गया, मानो कोई बेल उन्हें जकड़ रही हो। अंत में, जब उन्होंने देखा कि महापुजारी अभी भी उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे हैं, तो जयंता ने आधे मन से सिर हिलाया।

"जैसा मैंने सोचा था," शुक्राचार्य ने विजय की खुशी में ताली बजाई। वे सीढ़ियों से नीचे उतरकर जयंता के पास बैठ गए। उनके व्यवहार में मित्रता झलक रही थी, उन्होंने पूछा, "यह अप्सरा... क्या उसे एहसास है कि वह विशेष है? क्या आपने उसे बताया है?"

जयंता ने अपना मुंह खोला, फिर बंद कर दिया, स्पष्ट रूप से वह दुविधा में फंसा हुआ था।

"आप मुझे बता सकते हैं," शुक्राचार्य का लहजा अनौपचारिक लेकिन आश्वस्त करने वाला था। "मैं तो बस देवलोक में एक आगंतुक हूँ। मेरा यहाँ कुछ भी नहीं है और मैं यहाँ ज्यादा दिन नहीं रहूँगा। मेरे जाने के बाद, आप जो कुछ भी मुझे बताएंगे, वह भी हमेशा के लिए भुला दिया जाएगा।"

देव राजकुमार ने एक पल के लिए इस पर विचार किया। "वह... वह मेरे पिता की प्रेमिका है।"

"सचमुच?" हड्डियों ने शुक्राचार्य को पहले ही वह सब कुछ बता दिया था जो उन्हें जानना था, इसलिए उन्हें आश्चर्य का भाव दिखाने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ी। "आपका मतलब... उर्वशी से है?"

जयंता ने अचानक आशंका से प्रधान पुरोहित की ओर देखा, और शुक्राचार्य ने तुरंत अपने हाथ ऊपर उठा लिए।

"इससे मेरा कोई लेना-देना नहीं है। मैं किसी को नहीं बताऊंगा, इसलिए चिंता मत करो।" शुक्राचार्य की आवाज़ बदल गई और उनके चेहरे पर एक शरारती मुस्कान फैल गई। "लेकिन यह तो साफ है – सबसे खूबसूरत अप्सरा आप जैसे सुंदर देव पर मोहित हो गई। आप आस-पास होते हुए भी वह इंद्र के साथ कैसे रह पाती है?"

“वह कहती है कि वह मुझसे प्यार नहीं करती। वह मुझे नजरअंदाज करती है; वह मुझसे नफरत करती है।”
जयंता के इस खुलासे ने प्रधान पुरोहित को आश्चर्यचकित कर दिया। उन्हें देव से इतनी स्पष्टवादिता की उम्मीद नहीं थी, लेकिन यह अच्छा था; इससे पता चलता था कि जयंता अपने संकोच को छोड़कर उनके सामने खुल रहे थे।
“देखो उसे, मुझे अलविदा कहे बिना ही चली गई,” राजकुमार का चेहरा क्रोध, दुख और आत्मदया से भर आया। “मुझे तो पता भी नहीं था कि वह महल में नहीं है, जब तक कि मैंने कुछ अप्सराओं को यह कहते हुए नहीं सुना कि वह पिताजी के साथ कहीं चली गई है।”
शुक्राचार्य भी उस समय अचंभित रह गए थे जब उन्हें पता चला कि उर्वशी इंद्र और गंधर्वसेन के साथ अवंती जा रही हैं। गंधर्वसेन का जाना तो समझ में आता था - उनका उद्देश्य मानव राजा के प्रतिरोध को ध्वस्त करना था। लेकिन किसी अप्सरा को साथ ले जाने की बात कभी नहीं हुई थी। मुख्य पुरोहित को संदेह था कि उर्वशी को इंद्र की इच्छावश, केवल उनके मनोरंजन के लिए ही साथ ले जाया गया था।
हालांकि उर्वशी की अनुपस्थिति का एक सकारात्मक पहलू भी था। जयंत अपने सबसे बुरे दौर से गुजर रहे थे, अकेलेपन में जी रहे थे और उन्हें सहारा देने वाला कोई नहीं था। शुक्राचार्य का मानना था कि अगर उन्हें यह विश्वास दिलाया जा सके कि अंततः अप्सरा उन्हीं की होंगी, तो देवता आसानी से प्रभावित हो जाएंगे।
“राजकुमार, उसके पास क्या विकल्प है? वह आपके पिता की प्रेमिका है। उसका काम उनके आदेशों और इच्छाओं का पालन करना है। वह आपसे अपने प्रेम का इज़हार करते हुए पकड़ी नहीं जा सकती, है ना? वह जानती है कि आप दोनों का प्रेम इंद्र के क्रोध को भड़काएगा; वह आपको और खुद को उस क्रोध से बचा रही है।”
"क्या तुम्हारा मतलब है कि वह मेरे लिए अपनी भावनाओं के बारे में झूठ बोल रही है?"
शुक्राचार्य ने देवता की आँखों में उत्साह और आशा की चमक देखी। "क्या यह स्पष्ट नहीं है?"
“मैंने नहीं... वो...” जयंता ने जल यंत्र की ओर देखते हुए, पुरोहित द्वारा मन में पैदा किए गए विचार को समझने की कोशिश की। “वो मेरी रक्षा कर रही है, और मैं...”

उसने ऊपर देखा, उसके होठों पर हल्की सी मुस्कान थी। "तुम सही कह रहे हो। वो मुझसे प्यार करती है।"
अब तक हुई प्रगति से संतुष्ट होकर शुक्राचार्य ने अपने लाभ का पूरा फायदा उठाने का फैसला किया। "पर तुम्हें उससे अपने प्रेम का इजहार करवाना होगा। वरना तुम दोनों कभी गले कैसे मिलोगे, प्रेम कैसे करोगे," मुख्य पुरोहित का लहजा बदल गया, "जब तक कि तुम उसे अपने पिता के साथ दूर से देखकर संतुष्ट न हो जाओ..."
"नहीं," जयंता ने झुंझलाहट में कहा। "मैं चाहता हूँ कि हम साथ रहें। लेकिन..." वह शुक्राचार्य की ओर मुड़ा। "मैं उर्वशी को अपने लिए प्यार जताने के लिए कैसे मनाऊँ? पिताजी के रहते हम अपना प्यार कैसे बाँट सकते हैं?"
प्रधान पुजारी ने अपने पैरों के पास तालाब में तैरती मछलियों को ध्यान से देखा। अंत में उन्होंने कहा, "मुझे थोड़ा समय दीजिए। मैं आपकी सहायता करूँगा—लेकिन एक शर्त पर। इसके बदले में आपको कुछ देना होगा। क्या आप सहमत हैं?"
आप मुझसे क्या चाहते हैं?
शुक्राचार्य रहस्यमयी मुस्कान के साथ खड़े हुए। "अभी बताने का कोई फायदा नहीं, क्योंकि बदले में मेरे पास आपको देने के लिए कुछ नहीं है। आपकी समस्या का समाधान मिलने पर मैं आपको बता दूंगा कि मुझे क्या चाहिए।"
उन्हें सीढ़ियाँ चढ़कर मंडप से बाहर निकलते देख राजकुमार इस बात से चकित रह गया कि असुरों का गुरु न तो थका हुआ लग रहा था और न ही बगीचे से बाहर निकलने का रास्ता खोजने में असमर्थ था।

*

"हम रास्ता भटक गए हैं, राजगुरु।"
जवाब देने के बजाय, वेतला भट्ट नीचे और चारों ओर फैले आनूपा पर्वत को निहारते रहे। उनका चेहरा थका हुआ था, लेकिन भावहीन था। वे अपनी कमर पर बंधी लता से खेलते रहे, जो उन्हें ओड्रा तक ले जाने वाले उनके नौ जीवित साथियों से बांधे हुए थी।
विशाल विस्तार के बावजूद, घोस्ट मार्श एकरसता का प्रतीक था। यह पहाड़ी की तलहटी से, जहाँ पार्षद और उनके अंगरक्षक खड़े थे, हर दिशा में फैला हुआ था। धुंध की बहती चादरों से घिरा एक नीरस और असीमित परिदृश्य, जिसमें धुंध के

बीच से काईदार जंगल के गुच्छे और चमकते दलदली तालाब दिखाई दे रहे थे। दलदल धुंध की उठती हुई धारा में विलीन हो गया, और धुंध और पीले-भूरे बादल इस तरह मिल गए कि यह कहना असंभव था कि धरती कहाँ खत्म होती है और आकाश कहाँ शुरू होता है। हर जगह से रंग गायब हो गया था, केवल निर्जीव धूसर और फीके हरे रंग के धब्बे ही बचे थे। हवा नम और स्थिर थी, फिर भी ठंडी हवा के झोंके, जो पेड़ों की पत्तियों को हिला भी नहीं रहे थे, अवंती से आए यात्रियों को कंपकंपा रहे थे। दलदल में या उसके ऊपर कुछ भी नहीं हिल रहा था।

आचार्य के दाहिनी ओर खड़ा सिपाही हताशा भरी आह भरते हुए बोला, "हम सचमुच खो गए हैं।" वह केदारा था, जो अंगरक्षक दल का कप्तान था, एक भरोसेमंद सिपाही जिसकी हिम्मत पिछले दो दिनों में टूट चुकी थी।

“स्थायी रूप से नहीं,” मुख्य पार्षद ने सिर हिलाते हुए क्षितिज की ओर इशारा किया। “देखो, वहाँ सूरज है?”

वेताला भट्टा ने महसूस किया कि उनके अंगरक्षक उनके चारों ओर जमा हो गए हैं, आवाजें विस्मयकारी थीं, उंगलियां धुंध को चीरते हुए उभरे प्रकाश के मंद घेरे की ओर इशारा कर रही थीं। प्रकाश धीरे-धीरे एक निर्मल, हल्के पीले रंग की डिस्क का रूप ले रहा था, और क्षितिज से एक हाथ की दूरी पर चमकने के लिए उसमें थोड़ी सी शक्ति आ गई थी।

"वह पश्चिम दिशा है," सैनिकों में से एक ने सूर्य की दिशा की ओर इशारा करते हुए कहा।

“मतलब पूरब की ओर आइए,” आचार्य ने अपने कंधे के ऊपर अंगूठा हिलाते हुए कहा। “उत्तरा तोसाली हमारे पीछे है। चलिए, सूर्यास्त से पहले थोड़ा आगे बढ़ते हैं।”

राजगुरु के शब्दों में जो तत्परता थी, वह क्रियान्वित नहीं हुई, क्योंकि उनके साथ आए लोग मृतकों को चिता तक ले जाने वाले लोगों की तरह सुस्ती से पहाड़ी से नीचे उतर रहे थे। पार्षद उनकी सुस्ती का कारण जानता था—उन लोगों को यह उम्मीद नहीं थी कि पहाड़ी की तलहटी में चमत्कारिक रूप से कोई रास्ता निकल आएगा जो उन्हें आनूपा से बाहर ले जाएगा। वे लगभग दो दिनों से दलदल में भटक रहे थे, लेकिन फिर भी उन्हें यह पता नहीं था कि वे उस जगह से कितनी दूर हैं जहाँ वे पहली बार रास्ता भटके थे, या अपने गंतव्य से कितनी दूर हैं। फिर भी, वह उनका मनोबल गिरने नहीं दे सकता था।

जब वे ऋक्षा पर्वतमाला के दूसरी ओर खुले मैदानों में थे, तभी आंधी-तूफान के रूप में मुसीबत आ पड़ी। गीले कपड़ों की मामूली असुविधा के अलावा उन्होंने तूफान को ज्यादा गंभीरता से नहीं लिया, लेकिन अगली शाम जब वे पर्वतीय चोटियों को पार कर रहे थे, तो उनके मार्गदर्शक - एक छोटा व्यापारी जो रास्ते से अच्छी तरह वाकिफ था - को तेज बुखार हो गया। वह तेजी से बेहोशी की हालत में चला गया, और आचार्य ने समझदारी से उसे आराम देने के लिए यात्रा रोक दी। दो दिनों में मार्गदर्शक इतना ठीक हो गया कि वे फिर से यात्रा शुरू कर सकें, लेकिन जैसे ही वे पर्वतमाला की दक्षिणी ढलानों से नीचे उतरे, कमजोरी के कारण उसकी हालत फिर बिगड़ गई, और कुछ ही घंटों में वह उनसे हमेशा के लिए अलग हो गया।

अवंती लौटने या बिना मार्गदर्शक के आगे बढ़ने के विकल्प का सामना करते हुए, मुख्य सलाहकार ने सोचा कि ओड्रा तक तीन-चौथाई रास्ता तय कर लेने के बाद मिशन को रद्द करना एक मूर्खतापूर्ण विचार होगा। इसलिए, वे ऋक्षा पर्वतमाला की छाया में ही रहे ताकि आनूपा के चंगुल से सुरक्षित रह सकें। लेकिन अगली सुबह घना कोहरा छा गया, और देखते ही देखते, समूह अनजाने में पहाड़ों से भटककर दलदल में पहुँच गया। इससे भी बुरा यह हुआ कि बाहर निकलने का रास्ता खोजने की कोशिश में, तीन लोग समूह से अलग हो गए और कोहरे में गायब हो गए, फिर कभी दिखाई नहीं दिए। बाकी लोगों ने समझदारी से खुद को लताओं की एक श्रृंखला से बांध लिया, ताकि उनमें से और लोग कोहरे और उसके भीतर छिपे दलदल में खो न जाएँ।

एक कतार में एक-दूसरे को खींचते हुए आगे बढ़ते समय, वेताला भट्टा को अपनी हथेली और कमर पर बेल का खुरदुरा स्पर्श महसूस हुआ और वह समूह की दुर्दशा को लेकर चिंतित हो गया। मार्गदर्शक की बीमारी के कारण हुई देरी से उनके भोजन भंडार का एक बड़ा हिस्सा पहले ही खत्म हो चुका था, और दलदल में भटकना संसाधनों पर और भी दबाव डाल रहा था। हालांकि उनका राशन तेजी से खत्म हो रहा था, आनूपा में इस कमी की भरपाई के लिए कुछ खास नहीं था - उन्हें न तो कोई खाने योग्य पौधा दिखा था, न ही कोई पक्षी या जानवर। घोड़ों और खच्चरों को भी चरने के लिए कुछ नहीं मिल रहा था, और परिणामस्वरूप, वे तेजी से कमजोर हो रहे थे।

दलदल की भूलभुलैया जैसी बनावट ने मुख्य सलाहकार को सबसे ज़्यादा परेशान कर दिया। ज़मीन पर, कोहरा लगातार चालें चलता रहता था, कभी इधर तो कभी उधर, रास्ते कभी खुलते तो कभी बंद हो जाते थे, इसलिए यह पता लगाना हमेशा एक चुनौती थी कि कहाँ जाना है। काई से ढके पेड़ों और रुके हुए सरकंडों के तालाबों की स्थलाकृति निराशाजनक रूप से एक जैसी थी, जिससे आँखों और दिमाग को याद रखने के लिए कोई स्पष्ट निशान नहीं मिलते थे। ऊपर से, सूरज लगभग हमेशा बादलों से ढका रहता था, इसलिए दिशा का पता लगाना, ज़्यादा से ज़्यादा, एक अंदाज़ा ही था। अंत में, दलदल बहुत बड़े क्षेत्र में फैला हुआ था; आचार्य को एक भयानक आशंका के साथ एहसास हुआ कि समूह एक भयानक स्थिति का सामना कर रहा है, जहाँ वे गोल-गोल घूमते हुए बाहर निकलने का रास्ता ढूँढ़ेंगे, और भूख से मर जाएँगे - अगर पागलपन उन्हें पहले खुद को या एक-दूसरे को जान से मारने के लिए मजबूर न कर दे।

आनूपा को भूतिया दलदल कहना व्यर्थ नहीं था।

वेतला भट्टा इन्हीं निराशाजनक विचारों में डूबा हुआ था कि तभी सामने खड़े पहरेदारों में से एक ने चिल्लाकर आवाज लगाई।

“देखो, एक घर! बिल्कुल वैसा ही जैसा कल था।”

सबकी निगाहें उस दिशा में घूमीं और पार्षद ने बाँस और घास-फूस से बनी एक झोपड़ी देखी—जो शायद कभी किसी शिकारी की रही होगी, लेकिन बहुत पहले वीरान पड़ी थी—जो नीची, झुकी हुई शाखाओं वाले पेड़ों के झुरमुट के नीचे स्थित थी। झुरमुट दलदल के बीचोंबीच था, इसलिए घर तक पहुँचने का एकमात्र रास्ता लकड़ी के लट्ठों और तख्तों से बने एक जर्जर पुल से होकर जाता था।

"क्या यह वही जगह नहीं है जहां हमने पिछली रात बिताई थी?" दूसरे आदमी ने पूछा।

इस सवाल के जवाब में सन्नाटा छा गया, क्योंकि हर कोई इसके नतीजों पर विचार कर रहा था। वेताला भट्टा ने जर्जर ढांचे का फिर से जायजा लिया और उन्हें यह असहज एहसास हुआ कि वह आदमी सही था। आखिरकार, कप्तान बोला।

कहना मुश्किल है। आइए इस पर और गौर करें।

एक के बाद एक, कतार में, लता से बंधे हुए, समूह फिसलन भरे लकड़ी के पुल को पार कर रहा था, झोपड़ी और उसके आसपास के वातावरण को ध्यान से देख रहा

था कि कहीं कोई ऐसा संकेत तो नहीं मिल रहा जिससे पता चले कि यह कोई दूसरी झोपड़ी है। उनके चेहरों पर आशा थी, लेकिन निराशा का भय भी था। जब आचार्य, जो सबसे पीछे चल रहे थे, ने झोपड़ी के सामने गीली मिट्टी पर कदम रखा, तब तक केदारा और कुछ सैनिक झोपड़ी में प्रवेश कर चुके थे।

"मुझे नहीं लगता कि यह वही झोपड़ी है," एक सैनिक ने झोपड़ी के आसपास का जायजा लेते हुए कहा। "मुझे याद नहीं आ रहा..."

केदारा को झोपड़ी के अंदर से निकलते देख वह रुक गया। सभी ने कप्तान की ओर देखा, और उसकी आँखों में दिख रही पीड़ा ने उन्हें वह बात बता दी जो वे जानना नहीं चाहते थे।

"यह वही झोपड़ी है। जिस जगह हमने कल रात का खाना बनाने के लिए आग जलाई थी, वह जगह भी वही है। राख भी अभी तक गर्म है। हम एक ही घेरे में घूम रहे हैं।"

कप्तान की निगाहें पार्षद की निगाहों से मिलीं। "हम रास्ता भटक गए हैं, राजगुरु। हम बुरी तरह से भटक गए हैं।"

*

देवी माँ अपने कमरे में नहीं थीं, और शंकु को उन्हें ढूंढने के लिए कई जगह देखना पड़ा, तब जाकर वे महल की झील के दक्षिण-पूर्वी कोने की ओर देखने वाली एक छत पर मिलीं। देवी एक मुंडेर से टेक लगाकर बैठी थीं, उनकी निगाहें पास के एक पेड़ की डाल पर उछलते हुए दो मोरों और झील के पूर्वी किनारे पर टिकी थीं, जो शाम ढलने के साथ ही तेज़ी से अंधेरा हो रहा था। ऊपर आसमान में पहले तारे टिमटिमा रहे थे और दक्षिण से ठंडी हवा चल रही थी, जिससे झील में हलचल मच रही थी और छोटी-छोटी, चांदी जैसी लहरें महल की ओर आ रही थीं।

उसकी दादी ने उसे देखा तक नहीं था, इसलिए शंकु कुछ पल वहीं खड़ी रही और उम्र के कारण झुके हुए दुबले-पतले शरीर को निहारती रही। महल से बाहर देखती हुई वह बूढ़ी औरत उदास लग रही थी, उसका दिल और आत्मा उस जंगल के लिए तड़प रही थी जो जीवन भर उसका साथी रहा था। शंकु को एहसास हुआ कि शहर और महल धीरे-धीरे उस देवी के अस्तित्व को मिटा रहे हैं, और उसके मन में यह

ख्याल आया कि शायद उसे अपनी दादी को वापस घुमंतू जनजाति में ले जाना चाहिए, ताकि वह शांति से अपने दिन बिता सकें।
“मेरे बच्चे, तुम वहाँ क्यों खड़े हो? इधर आओ।”
शंकु मुस्कुराते हुए अपनी दादी के पास पहुंची और सोचने लगी कि किसी चीज़ ने तो उसकी मौजूदगी का पता लगा दिया होगा। देवी ने शंकु का हाथ थाम लिया और वे दोनों कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हो गईं, रात को धीरे-धीरे दिन को अपने अंधकारमय आलिंगन में समाते हुए देखने लगीं।
“क्या तुमने कालिदास के बारे में कुछ सीखा है?” शंकु ने अंततः चुप्पी तोड़ी।
भविष्यवक्ता ने कुछ क्षण उस लड़की को देखा। “कौन जानना चाहता है? तुम या राजा?”
शंकु ने कोई उत्तर नहीं दिया। इसके बजाय, उसने अपना हाथ छुड़ा लिया और दूसरी ओर मुँह करके झील के किनारे को धीरे-धीरे अंधेरे में विलीन होते हुए देखने लगी। कई मिनटों के बीतने के बाद, भविष्यवक्ता ने अपना सिर हिलाया।
मैंने अभी तक कुछ नहीं सीखा है।
लड़की ने झट से सिर हिलाया। उसकी दादी ने तिरछी नज़र से उसे देखा, फिर उसकी ओर मुड़ गईं।
"तुम दोनों ने एक-दूसरे को अपने दिल की बात क्यों नहीं बताई - तुम दोनों के दिल की बात?"
शंकु ने कुछ देर इस बारे में सोचा। “शायद इसलिए कि हम दोनों स्वभाव से शांत हैं।” उसने कंधे उचकाते हुए कहा। “शायद इसलिए कि हम हमेशा यही मानते थे कि दूसरा बिना कुछ कहे ही समझ जाएगा।”
“और कहने की अनिच्छा और समझने की झिझक के बीच, वह पल खो गया। आप यह समझते हैं, है ना?” मातृ ओरेकल की आह विलाप से भरी थी। “हम उन बातों को शब्दों में व्यक्त करने के लिए संघर्ष क्यों करते हैं जिन्हें हम अपनी आँखों से इतनी आसानी से व्यक्त कर देते हैं? और हम शब्दों में आश्वासन क्यों खोजते हैं जबकि आँखें इतनी स्पष्टता से, इतनी ईमानदारी से बोलती हैं?”
कुछ देर तक दोनों में से किसी ने कुछ नहीं कहा।
शंकु ने उदास स्वर में कहा, "शायद यही बेहतर है। इससे बिछड़ने का दर्द कुछ हद तक सहनीय हो जाता है।"

"अगर तुम दोनों साथ होते, तो क्या तुम अलग हो जाते, बच्चे?"
“वह तब भी हूण ही होता, और मैं तब भी सम्राट के प्रति वफादार रहती। वह जाना चाहता; मैं रुकने पर अड़ी रहती। हम अपनी असलियत से कभी पूरी तरह उबर नहीं सकते।”
शंकु रुकी और अपनी दादी की ओर देखा। “आपने संदेश भेजा था कि आपको कुछ बताना है।” उनके लहजे और विषय के बदलाव से यह स्पष्ट था कि वह अब कालिदास के बारे में और चर्चा नहीं करना चाहती थीं।
“जी हां,” भविष्यवक्ता की आवाज थकी हुई सी हो गई। समय लेने के लिए, उसने आगे कहा, “क्या हम अंदर जा सकते हैं? यहां ठंड बढ़ रही है।”
वापस आकर, शंकु ने अंधेरे को दूर भगाने के लिए दो दीपक जलाए, जबकि उसकी दादी ने फर्श पर चटाई बिछाई। एक घरेलू छिपकली दीवार पर ऊँचाई से उन्हें सतर्कतापूर्वक देख रही थी।
जब वे सब बैठ गए, तो शंकु ने कहा, "मुझे बताओ।" उसका लहजा पहले से कम कठोर था, और उसकी आँखें भविष्यवक्ता का आकलन करते हुए अधिक दयालु थीं।
“जी हां...” मदर ओरेकल परेशान और असमंजस में लग रही थी कि शुरुआत कैसे करें। “याद है वो रात जब हमने बात की थी... जिस दिन मैं बीमार पड़ गई थी?”
लड़की ने सिर हिलाया। "जिस रात तुमने मुझे द्वारका के लिए रवाना होने वाले हुना जहाजों और डार्क रिवर पर उड़ने वाली काली तितलियों के बारे में बताया था।"
“हां, हां... उसी रात। आपको याद होगा कि मैंने आपको यह भी बताया था कि मैंने भूलभुलैया में मकड़ी के जालों में आपके लिए एक संदेश पढ़ा था।”
“तुमने कहा था कि काल कोठरी में प्रायश्चित करने की इच्छा थी,” शंकु का चेहरा भावहीन था, मानो उसमें कोई भाव न हो। “मुझे लगता है कि तुम पिता की बात कर रहे थे।”
“जी हां,” भविष्यवक्ता ने आह भरी। “मैंने और भी संकेत पढ़े हैं जो यही बात कहते हैं, बच्चे। तुम्हारे पिता चाहते हैं कि तुम उन्हें क्षमा कर दो। मुझे पता चला है कि वह तुमसे मिलने की विनती कर रहे हैं?”
लड़की ने अपने हाथ के पिछले हिस्से को ध्यान से देखा। उसने भारी स्वर में कहा, “उसने कुछ दिन पहले पहरेदारों के ज़रिए संदेश भेजा था। वह मिलना चाहता था।”

"और?"
“और नहीं, दादी माँ। मैं उस आदमी से नहीं मिलना चाहती। अचानक पश्चाताप करने से माफ़ी की उम्मीद नहीं की जा सकती। यह बहुत आसान होगा। हर चीज़ की कीमत चुकानी पड़ती है, और उस सज़ा का एक हिस्सा यह न जानना है कि कब... या माफ़ी मिलेगी भी या नहीं। यही कीमत मेरे पिता को राजा के साथ विश्वासघात करने और मुझे माँ के प्यार से वंचित करने के लिए चुकानी पड़ेगी।”

*

सम्राट का रात्रिभोज चल रहा था, तभी विस्मया ने उस घुड़सवार का स्वागत किया, जो राजा के लिए संदेश लेकर लावा की चौकी से लगभग आधी दूरी तय करके आया था। संदेश उसी दोपहर उदयपुरी से भेजा गया था और सूर्ययंत्रों के माध्यम से पूर्व की ओर सूर्यास्त तक पहुँचाया गया था, जिसके बाद घुड़सवार को स्वयं महल में संदेश पहुँचाने का दायित्व सौंपा गया था। महल के रक्षकों के प्रमुख ने संदेश का सार सुनते ही, उसकी तात्कालिकता को समझते हुए, घुड़सवार को राजा के भोजन कक्ष में ले गए।
“माफ़ कीजिए, सम्राट,” विस्मया ने पर्दे को धीरे से हटाते हुए और झुकते हुए कहा। “कमांडर अतुल्यातेजा की ओर से आपके लिए एक संदेशवाहक आया है।”
विक्रमादित्य ने भोजन से नज़रें ऊपर उठाईं, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाते, एक और आवाज़ ने हल्के से चिढ़ते हुए विस्मया को संबोधित किया।
"क्या सवार सम्राट के भोजन समाप्त होने तक प्रतीक्षा नहीं कर सकता?"
पर्दा और चौड़ा खींचते हुए, महल के रक्षकों के प्रमुख ने दाईं ओर झाँका तो देखा कि रानी उपश्रुति उन्हें कड़े शब्दों में घूर रही थीं। उन्होंने सम्राट के साथ उन्हें देखने की उम्मीद नहीं की थी, और अब वे झिझक गए।
“यह... मुझे खेद है, महारानी माँ, लेकिन... मुझे लगा था...”
“कोई बात नहीं,” राजा ने बीच में ही टोकते हुए कहा। उन्होंने विस्मया की ओर देखते हुए, भौंहें उठाकर उस घुड़सवार से पूछा, “अतुल्यतेज को क्या कहना है?”
घुड़सवार और विस्मया ने एक-दूसरे को देखा, तभी अंगरक्षकों के मुखिया ने रानी उपश्रुति की ओर अनिश्चितता भरी नज़र डाली। जिस तरह से वह घुड़सवार को रोककर खड़ा था, उसे कमरे में प्रवेश करने और राजा से बात करने से रोक रहा

था, उससे स्पष्ट था कि मुखिया को इस बात पर आपत्ति थी कि घुड़सवार का संदेश किसे सुनाया जाना चाहिए।
विस्मया की दुविधा को सही ढंग से समझते हुए विक्रमादित्य ने घुड़सवार से कहा, "तुम बोल सकते हो। महारानी माँ से कुछ भी छिपाने की जरूरत नहीं है।"
दरवाजे पर खड़े दोनों व्यक्तियों ने एक बार फिर एक-दूसरे की ओर देखा, लेकिन इस बार पहरेदारों के मुखिया ने हल्के से कंधे उचका दिए। कमरे में प्रवेश करते हुए, उन्होंने घुड़सवार को रास्ता दिया, फिर भी वे स्थिति से संतुष्ट नहीं दिखे। घुड़सवार ने भी बोलने से पहले गला साफ करते हुए उपश्रुति की ओर असहजता से देखा।
"महामहिम, मैं यह सूचना लाया हूँ..." वह रुका, फिर बोलने लगा। "कमांडर अतुल्यतेजा चाहते हैं कि आप जानें कि राजकुमार घटाकरपारा छावनी से लापता हैं।"
एक पल के लिए भोजन कक्ष में पूर्ण सन्नाटा छा गया क्योंकि सम्राट और उनकी माता अविश्वास से सवार को घूरते रहे।
"लापता होने का क्या मतलब है?" राजा ने हैरानी से पलकें झपकाईं।
"माननीय महोदय, मेरी बात स्पष्ट न होने के लिए क्षमा चाहता हूँ," घुड़सवार ने सिर हिलाते हुए खुद को संभाला। "मेरा मतलब यह था कि राजकुमार पिछले दो दिनों से उदयपुरी में नहीं दिखे हैं। उनकी तलाश शुरू कर दी गई है, लेकिन उनका कोई सुराग नहीं मिला है।"
"हे भगवान!" रानी उपश्रुति ने भय से अपना हाथ अपने मुँह पर रख लिया, उनकी आँखें अपने पोते के लिए चिंता से चौड़ी हो गईं। उन्होंने घुड़सवार की ओर दो अनिश्चित कदम बढ़ाए। "उसे क्या हुआ है?"
घुड़सवार ने अपना सिर हिलाना शुरू कर दिया, लेकिन विक्रमादित्य, जो अब समझ गए थे कि विस्मया महारानी माँ के सामने घुड़सवार को बोलने देने से क्यों हिचकिचा रही थीं, अपने आधे खाए भोजन को भूलकर छोटी मेज से उठ खड़े हुए। "मुझे यकीन है कि वह ठीक है, माँ। यह कोई गलतफहमी होगी। वह बिना किसी को बताए कहीं चला गया होगा..."
"लेकिन वह कहता है कि दो दिन बीत चुके हैं..." उपश्रुति ने राजा की ओर देखा और कांपती हुई उंगली से घुड़सवार की ओर इशारा किया।

"माँ, हम इस मामले को देखेंगे। वह मिल जाएगा..." सम्राट ने अपनी माँ को कंधे पर हाथ रखकर धीरे से उन्हें सोफे की ओर ले जाते हुए कहा, "कृपया बैठ जाइए और चिंता मत कीजिए। मैं यहाँ हूँ; मैं सब संभाल लूँगा।"

रानी उपश्रुति दीवान के मुलायम गद्दों पर बैठ गईं, उनकी आँखों में आँसू भर आए क्योंकि वे सबसे बुरे की कल्पना कर रही थीं। तभी विक्रमादित्य ने महल के एक सेवक को इशारा किया और उसे महारानी माँ की देखभाल करने के लिए कहा। उसी समय, उन्होंने अपने कंधे के ऊपर से सवार और विस्मया की ओर देखा। "मुझसे सभा कक्ष में मिलो। और पूरी सभा को जल्द से जल्द वहाँ इकट्ठा होने की सूचना दो।"

बीस मिनट से भी कम समय बीता था कि अमर सिंह, क्षपणक, शंकु और धनवंतरी सम्राट और घुड़सवार के साथ सभा कक्ष में आ पहुँच गए। चारों पार्षदों को अतुल्यतेज का संदेश मिल चुका था और अब वे मेज के चारों ओर बैठकर एक-दूसरे को अविश्वास भरी निगाहों से देख रहे थे।

"मुझे उसे वहाँ अकेला नहीं छोड़ना चाहिए था," अमारा सिम्हा ने सिर हिलाते हुए बेतुके ढंग से कहा। "मुझे द्वारका से उसके लौटने का इंतजार करना चाहिए था और उसे अपने साथ वापस लाना चाहिए था।"

"मूर्खता मत करो," धनवंतरी ने उसे धीरे से डांटते हुए कहा, "इसका तुमसे कोई लेना-देना नहीं है।"

"जी हां," विक्रमादित्य ने कहा। "इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है।"

"लेकिन आपने ही तो उसे मेरी देखरेख में सीमावर्ती इलाके में भेजा था," अमारा सिम्हा ने पलटवार किया।

"मैंने ऐसा किया था, लेकिन मेरा इरादा था कि वह आपकी छत्रछाया से बाहर निकलकर आत्मनिर्भर बने। और ठीक यही हुआ जब उसने समुद्र के रास्ते हुए हूणों के आक्रमण की खबर लेकर द्वारका जाने की स्वेच्छा से पेशकश की। अगर मैं चाहती कि वह आपकी देखरेख में रहे, तो क्या मैंने आपसे उज्जैन लौटने का अनुरोध करते समय उसे वापस लाने के लिए नहीं कहा होता?"

सम्राट की बात समझकर अमर सिंह ने सिर हिलाया, लेकिन वे अब भी दुखी दिख रहे थे। इसी बीच क्षपणक ने सभा को संबोधित किया।

“अतुल्यतेजा ने घटाकरपारा के उदयपुरी के दक्षिण में सीमावर्ती क्षेत्र की कमान संभालने की बात कही है। शायद वह निरीक्षण के लिए किसी दूरस्थ चौकी पर गए हों...” यह संभावना उन्हें खुद भी असंभव लग रही थी, इसलिए उनकी बात अधूरी रह गई।
धनवंतरी ने कहा, "संदेश में लिखा है कि उन्होंने जांच कर ली है।"
"वे हर चौकी की जाँच नहीं कर सकते थे," अमारा सिम्हा ने वास्तविक विश्वास से अधिक आशा के साथ कहा।
“हां, लेकिन अगर वह किसी भी चौकी का दौरा कर रहा होता तो कमान केंद्रों को पता चल ही जाता, है ना?” चिकित्सक ने तर्क दिया।
“हम यह बात भूल रहे हैं कि वह बिना घोड़े के ही चौकी से निकला था,” विक्रमादित्य ने बीच में ही टोकते हुए घुड़सवार की ओर एक पल के लिए देखते हुए कहा। “और ऐसा लगता है कि उसने हर शाम चौकी से निकलने और सूर्यास्त के समय लौटने की आदत बना ली थी। जिस शाम उसे आखिरी बार देखा गया था, उस शाम भी उसने यही दिनचर्या अपनाई थी। घटाकरपारा निरीक्षण के लिए कहीं नहीं गया था। यह तो स्पष्ट है।”
“तो फिर वह कहाँ हो सकता है?” क्षपनाका ने आश्चर्य से अपने सह-सलाहकारों की ओर देखा।
“हमें यह पता लगाना है कि क्या घटकर्परा के...” राजा रुक गए, तभी परिषद कक्ष का दरवाजा खुला और वराहमिहिर अंदर आए। उनके चेहरे के भाव से स्पष्ट था कि इस अचानक हुई बैठक का उद्देश्य पहले ही बता दिया गया था। विक्रमादित्य को आगे बोलने का इशारा करते हुए, वे लंगड़ाते हुए पास की एक कुर्सी पर बैठ गए।
“मैं कह रहा था कि हमें उदयपुरी में घटाकरपारा की दिनचर्या के बारे में और अधिक जानकारी जुटानी होगी, खासकर हर शाम छावनी छोड़कर जाने की उनकी आदत के बारे में,” सम्राट ने कहा। “अकेले टहलने जाने की यह आदत – मुझे लगता है कि इसका उनके लापता होने से कुछ संबंध है।”
“जब वह छावनी से बाहर गए तो उनके साथ उनके सुरक्षाकर्मी क्यों नहीं थे?” वराहमिहिर ने बीच में ही टोकते हुए कहा। “उनकी सुरक्षा के लिए सैनिक तैनात किए गए थे, है ना?” लंगड़े पार्षद ने पुष्टि पाने के लिए मेज के चारों ओर देखा।

“हाँ, थे, लेकिन वह उन्हें अपने साथ तभी ले जाता था जब वह शहर से बाहर जाता था,” क्षपनाका ने समझाया। “अतुल्यतेज के संदेश में यही लिखा है।”
“यह इस बात का और सबूत है कि घटाकरपारा का उदयपुरी छोड़ने का कोई इरादा नहीं था,” सम्राट ने कंधे उचकाते हुए कहा।
राजा और उनके सलाहकारों द्वारा सुनी गई बातों पर विचार करने के कारण कमरे में अनिश्चितता और आशंका से भरी खामोशी छा गई। अंत में अमर सिंह ने विक्रमादित्य की ओर देखा और बोलना शुरू किया।
“मुझे लगता है मैं जाऊंगा।” अपने आसपास के चेहरों पर असमंजस देखकर उसने झट से कहा, “उदयपुरी।”
“किसलिए?” चिकित्सक ने आश्चर्य से अपने मित्र की ओर देखा।
"घटकरपारा को ढूंढने में मदद करने के लिए।" जब बाकी लोगों ने उसे संदेह भरी निगाहों से देखा, तो उसने आगे कहा, "मुझे पता है यह बेवकूफी भरी बात लग रही है, लेकिन मुझे लगता है कि मैं किसी न किसी तरह इसके लिए जिम्मेदार हूं।"
"तुम नहीं हो," धनवंतरी ने झुंझलाहट में कहा, जबकि बाकी लोग विरोध करने लगे। लेकिन इससे पहले कि कोई चिकित्सक की बात में कुछ जोड़ पाता, अमरा सिंह ने हाथ उठाकर चुप रहने का आदेश दिया।
“मुझे पता है, लेकिन फिर भी,” उसने दृढ़ता और दृढ़ता से कहा। “साथ ही, जैसा कि सम्राट ने कहा, हमें यह पता लगाना होगा कि वहाँ क्या हुआ था—घटकरपारा कहाँ जाता था, किससे मिलता था और किससे दोस्ती करता था... हमें खोज में और अधिक लोगों को लगाना होगा; हमें वहाँ किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो त्वरित निर्णय ले सके।”
“सेनापति अतुल्यातेज यह सब क्यों नहीं कर सकते?” वराहमिहिर ने पूछा।
“क्योंकि वह मूर्ख सत्यवेद उदयपुरी में बैठा है,” अमर सिंह ने गुस्से से कहा। “वह अपनी सत्ता का दुरुपयोग करके लोगों के जीवन में बाधाएँ उत्पन्न करने और उन्हें दुखी करने में आनंद लेता है। वह अपनी छोटी सोच में ही मग्न रहता है।” लोगों को सहमति में सिर हिलाते देख वह आगे बोले, “अगर हमें इस मामले में कोई प्रगति करनी है, तो किसी को सत्यवेद की सत्ता को चुनौती देनी होगी, और मुझे संदेह है कि अतुल्यतेज यह काम मेरी तरह कर पाएगा। साथ ही, ईमानदारी से कहूँ तो,

अतुल्यतेज से सीमा पर तैनात होकर घातकपरपरा की खोज की निगरानी करने की अपेक्षा नहीं की जा सकती। अधिक शांतिपूर्ण समय में, शायद...”
राजा और सलाहकारों ने एक-दूसरे की ओर देखा, क्योंकि वे जानते थे कि अमरा सिंह सही कह रहा था। फिर भी, राजा उस सुझाव से परेशान लग रहा था।
“मैं आपकी बात समझता हूँ, लेकिन... मुझे नहीं पता कि हम आपको उज्जैन से दूर भेजने का जोखिम उठा सकते हैं या नहीं,” उन्होंने अंत में स्वीकार किया। “आप सीमा पर थे, लेकिन हमने आपको एक कारण से वापस बुलाया है।” सम्राट ने मेज के चारों ओर देखा। “वह कारण, वह खतरा, अभी भी अवंती पर मंडरा रहा है। हमें आपकी यहाँ आवश्यकता है — मुझे आप सभी की यहाँ आवश्यकता है — जब देव या असुर हलाहल के लिए अगली बार आएंगे। उज्जैन आपको जाने नहीं दे सकता, सलाहकार।”
“तो फिर घटाकरपारा का क्या होगा? क्या हम इसे वहन कर सकते हैं...”
इससे पहले कि अमरा सिम्हा कुछ और कह पाते, कमरे का दरवाजा ज़ोर से खुला और प्रलूपी क्रोध और आशंका से भरी आँखों के साथ कमरे में घुस आई।
“ये मैं क्या सुन रही हूँ—क्या ये सच है?” वो चीख पड़ी। मेज़ के चारों ओर बैठे लोगों के चेहरों पर दिख रही गंभीरता ने उसे उसका जवाब दे दिया, और उसने गुस्से से अपने भाई को घूरा। “मैंने तुमसे कहा था। मैंने तुमसे सौ बार कहा था कि मेरे बेटे को सीमा पर मत भेजो। क्या तुमने सुना? नहीं। मैंने तुमसे विनती की, गिड़गिड़ाया, गिड़गिड़ाया कि उसे उज्जैन वापस आने दो। क्या तुमने सुना? नहीं। तुमने वही किया जो तुम्हें अच्छा लगा, और अब देखो इसका नतीजा क्या हुआ है मुझे और मेरे बेटे को। वो लापता है,” वो नाटकीय अंदाज़ में रोने लगी। “दो दिन से कहीं नहीं मिल रहा। क्या तुम्हें पता है, विक्रम? क्या तुम्हें पता है?”
“बहन, मैं जानती हूँ कि तुम इस बारे में कैसा महसूस करती हो...”
“नहीं, ऐसा नहीं है,” प्रलूपी ने सम्राट के पास आते हुए तीखे स्वर में कहा। “आप यहाँ बैठकर खेल खेल रहे हैं, जबकि मेरा बेचारा बेटा उस भयानक सीमा पर कहीं अकेला है...”
“बहन, कृपया मेरी बात सुनिए,” विक्रमादित्य ने शांत रहने की कोशिश करते हुए कहा, उनकी आवाज़ कोमल और आश्वस्त करने वाली बनी रहने के प्रयास में कांप रही थी। “कृपा करके... आपको अपने बेटे पर और अधिक विश्वास रखना चाहिए,

भले ही आप मुझ पर विश्वास न करती हों। वह एक सैनिक बनने के लिए प्रशिक्षित है, आचार्य, अमर सिंह और काल जैसे प्रतिष्ठित गुरुओं द्वारा प्रशिक्षित...” सम्राट ने खुद को थोड़ा देर से रोका। “वह एक योद्धा और जीवनरक्षक है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि उसे कुछ नहीं होगा। और नहीं, बहन, हम यहाँ कोई खेल नहीं खेल रहे हैं – हम घातकपारा को खोजने के लिए एक कार्य योजना पर काम कर रहे हैं।”
“सचमुच?” प्रलूपी ने क्रोध से कहा। “और तुमने क्या योजना बनाई है?”
राजा के कुछ कहने से पहले ही अमरा सिंह ने बीच में कहा, “मैं आपके पुत्र प्रलूपी को ढूंढने के लिए उदयपुरी जा रहा हूँ। हमने यह निर्णय आपके आने से ठीक पहले लिया था।”
जब राजा और बाकी परिषद के सदस्य अमरा सिंह को घूर रहे थे, तभी प्रलूपी ने उस बलवान पार्षद की ओर मुड़कर पूछा, “आप मेरे बेटे को ढूंढ लेंगे, है ना? आप उसे सुरक्षित मेरे पास वापस लाएंगे?” उसने शांत भाव से पूछा।
“बिल्कुल, मैं करूँगा। चिंता मत करो।”
“तो फिर आप कब जा रहे हैं?” न धन्यवाद, न ही राजा की बहन की ओर से कृतज्ञता का कोई संकेत।
सम्राट विक्रमादित्य ने अमर सिंह को देखते हुए मन ही मन सोचा कि प्रलूपी कितना कृतघ्न, निर्लज्ज और धूर्त था। वह सोच रहे थे कि क्या उस व्यक्ति ने अपने धूर्त झूठ से उन्हें और अधिक निंदा और आलोचना से बचाया था, या फिर उसने उदयपुरी जाने की अपनी योजना को पुख्ता करने के लिए एक पेचीदा स्थिति का फायदा उठाया था। दोनों ही स्थिति में, विक्रमादित्य के होठों पर हल्की सी मुस्कान आ गई।
“मैं...” अमारा सिम्हा एक पल के लिए असमंजस में पड़ गया। “कल। मैं सूर्योदय के समय रवाना हो जाऊंगा।”
“आप अभी भी जा सकते हैं,” प्रलूपी ने बेवजह कहा। धनवंतरी ने आंखें घुमाईं और सम्राट की ओर देखा, जिसने मुंह बनाकर कंधे उचका दिए।
“जी हाँ, दरअसल, मैं ऐसा करने का इरादा रखता हूँ, जैसे ही संभव होगा,” अमारा सिम्हा ने सहज भाव से जवाब दिया और महिला को कक्ष से बाहर ले जाने के लिए उठ खड़े हुए। विक्रमादित्य यह नहीं कह सकते थे कि पार्षद की बड़ी, लाल दाढ़ी के पीछे छिपी झुंझलाहट भरी मुस्कान को उन्होंने सिर्फ कल्पना ही देखा था।

अमर सिंह और प्रलूपी के चले जाने के बाद, वराहमिहिर ने विक्रमादित्य के बारे में सोचा। "लगता है, हमारा एक फैसला तो हो ही गया है," उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा। "एक तीर से दो निशाने। अमर सिंह ने बड़ी चतुराई दिखाई।"

पार्षदों ने प्रशंसा में सिर हिलाया, तभी विक्रमादित्य ने घुड़सवार की ओर देखा। "मैं सुबह तक संदेश तैयार रखूंगा। आप जा सकते हैं और थोड़ा आराम कर सकते हैं।"

वे सब मेज से उठकर जाने की तैयारी कर रहे थे, तभी धनवंतरी राजा के पास आया। उसने कहा, "अमरा सिंह के जाने के बाद, हमें वरारुचि को वापस बुला लेना चाहिए।" कुछ देर रुककर उसने आगे कहा, "कहीं कोई बात न हो जाए तो।"

सम्राट ने सुझाव पर विचार किया। "नहीं, ऐसा नहीं करते," उन्होंने सिर हिलाते हुए कहा। "भाई महल के कामों में इतना समय बिताता है कि बड़ी माँ से मिलने का समय ही नहीं मिलता। यह दोनों के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है, लेकिन शायद कुछ किया नहीं जा सकता। अब जब उसने उनके लिए समय निकाल लिया है, तो माँ और बेटे के बीच महल की ज़रूरतों को थोपना नहीं चाहिए—कम से कम जब तक संभव हो।"

*

शुक्राचार्य अपने घुटनों के बल बैठकर चावल के आटे से मंडल बना रहे थे, और उनके मन में गहरी असंतुष्टि का भाव व्याप्त था। कोयले के विपरीत, चावल का आटा आसानी से साफ हो जाता था और देवताओं द्वारा उनके और हिरण्यक्ष के लिए उपलब्ध कराए गए आलीशान ग्रीष्मकालीन निवास के सफेद संगमरमर के फर्श पर कोई निशान नहीं छोड़ता था। यद्यपि देवताओं ने उन्हें अधिकतर समय स्वतंत्र और बिना निगरानी के छोड़ दिया था, फिर भी मुख्य पुरोहित ने ताक-झांक करने वालों से बचाव के लिए अपने कक्ष की सभी खिड़कियाँ बंद कर रखी थीं।

मंडल के सामने बैठकर, शुक्राचार्य ने अपने मंत्रों का जाप किया और मानव कशेरुकाओं के छह टुकड़ों को फेंकते हुए वही प्रश्न पूछा जो वे इन दिनों हड्डियों से हमेशा सबसे पहले पूछते थे: 'वीषाद का खंजर कहाँ है?'

बरगद के वृक्ष में ही अंतहीन चिताओं के मैदान को सहारा मिलता है।

हालांकि जवाब बार-बार दोहराया गया था, फिर भी उसकी परिचितता से तसल्ली मिली—कम से कम खंजर तक पहले कोई और नहीं पहुंचा था। जब तक हलाहल के

ठिकाने का रहस्य नहीं सुलझ गया, तब तक मुख्य पुजारी इस स्थिति से संतुष्ट था। उसने अपना अगला सवाल पूछा, जो वह हाल ही में अक्सर पूछने लगा था: 'अही नाग-अजगर को जगाने के मंत्र कहां हैं?'

हड्डियों ने कर्तव्यनिष्ठा से उसे बताया कि मंत्र बृहस्पति के अधिकार में सुरक्षित हैं।

जयंता की उस मूर्खता पर शुक्राचार्य ने गहरी नाराज़गी जताई, जिसके कारण उसने स्वेच्छा से मंत्र बृहस्पति को सौंप दिए थे। उन्होंने कुछ और प्रश्न पूछे। जब उन्हें अपने सभी सवालों के जवाब मिल गए, तो उन्होंने मंडल के सभी निशान मिटा दिए और फिर अपने कक्ष से सटी बालकनी में चले गए। बाहर, रात ठंडी और शांत थी और देवदारु की खुशबू से भरी हुई थी। मेरु पर्वत से एक शांत धुंध नीचे उतर रही थी, जिससे घाटी चांदनी की हल्की रोशनी में नहा रही थी। दाईं ओर दूर, अमरावती की रोशनी धुंधले आकाश में प्रतिबिंबित हो रही थी।

क्षितिज पर फैली धुंधली रोशनी पर निगाहें गड़ाए शुक्राचार्य ने कई बार यह सोचा कि देवलोक आने के बाद से उन्होंने व्यावहारिक रूप से कुछ भी महत्वपूर्ण हासिल नहीं किया है। हाँ, मानव राजा ने अपने मित्र और सबसे भरोसेमंद सलाहकार को खो दिया था, लेकिन यह अपरिहार्य था और पूरी तरह से उनकी गलती नहीं थी। हाँ, उनका अगला कदम एक ऐसा महाप्रवर्तन था जिससे विक्रमादित्य का सर्वथा अंत हो जाता, लेकिन यह प्रहार इंद्र और गंधर्वसेना को करना था - और वे दोनों अभी भी उस लक्ष्य को प्राप्त करने से काफी दूर थे। इसके अलावा उन्होंने क्या किया था?

शुक्राचार्य को आशा थी कि उन्हें अहि को जागृत करने वाले मंत्र मिल जाएंगे, लेकिन जयंत ने मूर्खतापूर्वक उन्हें पहले ही दे दिया था। उन्होंने अमरावती के महल में गुप्त रूप से घुसकर मंत्र वापस लाने का विचार किया था, लेकिन चूंकि उन्हें सतर्क देवताओं की सेना से बचने की कोई उम्मीद नहीं थी, इसलिए उन्हें जयंत पर निर्भर रहना पड़ा कि वह बृहस्पति से मंत्र वापस चुरा ले, जो कि उर्वशी का स्नेह जीतने जैसे उचित प्रलोभन के बिना संभव नहीं था। शुक्राचार्य उर्वशी को भली-भांति जानते थे और समझते थे कि इंद्र के कमजोर पुत्र का अप्सरा को आकर्षित करने का कोई अवसर नहीं है, फिर भी उन्हें ऐसा करने का कोई न कोई तरीका निकालना ही था। यदि ऐसा नहीं हुआ, तो उन्हें अप्सरा को लुभाने की एक विश्वसनीय योजना से जयंत को बहकाना होगा, ताकि वह मूर्ख मंत्र चुराकर बदले में दे दे। यह सब बहुत अनिश्चित था, मुख्य पुरोहित ने सोचा।

फिर हलाहल था, जो उज्जैन के बाहर बरगद के जंगल में रहस्यमय तरीके से छिपा हुआ था। फिलहाल, इसका रहस्य असुरों के पास सुरक्षित था, लेकिन कौन कह सकता था कि देवताओं को इसके बारे में पता नहीं चलेगा? अगर उन्हें पता चल गया, और इंद्र उनसे पहले ही वहाँ पहुँच गए? इंद्र अवंती में होंगे - अगर मानव राजा ने अनजाने में ही कटार के छिपने की जगह बता दी तो क्या होगा? और अगर देवताओं को इसकी भनक भी नहीं लगी, तो विक्रमादित्य के पराजित होने के बाद क्या होगा? यह संधि टिक नहीं पाएगी। कटार की खोज में मानव राज्य को सबसे पहले कौन नष्ट करेगा - असुर या देवता? इसका उत्तर स्पष्ट था; इस दौड़ में असुरों को बढ़त हासिल करनी ही थी। इसीलिए उन्होंने हिरण्याक्ष को पाताल लोक वापस भेजा था, ताकि वह असुरों को युद्ध के लिए तैयार कर सके। लेकिन विक्रमादित्य पर हमला करने का सही समय कब होगा, और देवताओं को रोकने की आदर्श रणनीति क्या होगी?

इन अनिश्चितताओं को लेकर चिंतित होने के बावजूद, मुख्य पुरोहित के मन के एक कोने में कुछ बिल्कुल अलग ही विचार घर कर गया था, जो उसे लगातार परेशान कर रहा था। यह वही बात थी जो उसने मानव सलाहकार वेताल भट्ट के मन में उस सुबह देखी थी जब सलाहकार ने स्नानघर के पास उसका मन पढ़ने की कोशिश की थी। उसने मुख्य सलाहकार के मन में मानव राजा को देखा था, उसने नारद को देखा था, उसने उस युवती को उसे चिकित्सक कहते हुए सुना था... उसने घने, सफेद कोहरे में छिपी किसी चीज की एक झलक भी देखी थी...

वह दृश्य तब से उसके मन में बसा हुआ था, और अक्सर उसे तब याद आता था जब वह इसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं कर रहा होता था। सफेद कोहरे का एक पर्दा किसी विशाल और धुंधली चीज़ के पीछे से गुज़र रहा था—कुछ ऐसा जो विशाल आकार का प्रतीत होता था। कोहरे से घिरी कोई चीज़, कोहरे में छिपी हुई। कुछ धुंधला सा परिचित, किसी चीज़ की याद दिलाता हुआ... क्या?

शुक्राचार्य ने बेहतर दृश्य प्राप्त करने के लिए कोहरे को चीरते हुए आगे बढ़ने की कोशिश की थी, लेकिन हर बार उन्हें निराशा ही हाथ लगी। फिर भी, उनके भीतर कहीं न कहीं यह बात उन्हें बता रही थी कि यह देखना महत्वपूर्ण है।

एक ऐसी सहज प्रवृत्ति जो लगातार इस बात पर जोर देती रही कि कोहरे में छिपी यह मायावी चीज ही हर चीज की कुंजी है।

सीमांत

भोर होने में अभी कुछ घंटे बाकी थे, जब चाँद आखिरकार काले, तेज़ी से भागते बादलों से बाहर निकला और उस छोटी सी नाव पर अपनी रोशनी बिखेरी जो अंधेरे, लहरदार समुद्र के विशाल विस्तार पर अकेले आगे बढ़ रही थी। नाव का अगला हिस्सा ऊपर की ओर उठा हुआ था और सीधे उस धुंधले अर्ध-गोलाकार चाँद की ओर इशारा कर रहा था, जो कुछ दिन पहले ताम्रलिप्ति के पूर्व में स्थित मुहाने से रवाना होने के बाद पहली बार दिखाई दिया था। नाव पर पूरी तरह सन्नाटा छाया हुआ था, सिवाय कभी-कभार हवा के झोंके से टिके हुए बड़े पाल के फड़फड़ाने की आवाज़ के।

दो दिनों तक बारिश और तूफानी हवाओं के कहर के बाद, चांदनी से जगमगाती शांत रात चांसलर सुदासन के लिए राहत की बात होनी चाहिए थी, लेकिन वांगा की पूर्व ग्रैंड असेंबली के प्रमुख, अपने कुछ साथियों के साथ जहाज के डेक पर खड़े होकर बेचैनी से इधर-उधर हिल रहे थे। सातों लोग एक साथ huddled होकर खड़े थे, उनके चेहरों पर पड़ रही चांदनी उनकी चिंता को बयां कर रही थी, जिसे वे अनिश्चित निगाहों के आदान-प्रदान के माध्यम से बार-बार एक-दूसरे को बता रहे थे।

"काश चाँद बादलों में वापस चला जाए," उनमें से एक आदमी ने डरते हुए कंधे के ऊपर से पीछे मुड़कर बुदबुदाया, उसकी आँखें जहाज के पीछे बन रहे समुद्र के अँधेरे हिस्सों पर टिकी थीं। "यह बहुत तेज़ रोशनी है और हमें देखे जाने का खतरा है।"

“भाई, यह बहुत बड़ा समुद्र है, और वैसे भी, हम तट से बहुत दूर दक्षिण में हैं, इसलिए हमें कोई देख नहीं सकता,” दूसरे ने उत्तर दिया। “मुझे नहीं लगता कि हमें किसी बात का डर है।” अपने पूरे आत्मविश्वास के बावजूद, वक्ता ने जहाज के चारों ओर सतर्कता से नज़र डाली।

“लेकिन हमें डरने की हर वजह है,” एक तीसरे व्यक्ति ने पतली, कर्कश आवाज में जवाब दिया। “क्या तुम ताम्रलिप्ति के बाजार चौक को पहले ही भूल चुके हो?”

बाजार चौक की याद आते ही समूह में एक अजीब सी खामोशी छा गई। यह घटना मगध की सेना द्वारा राजकुमार कपिला और सेनापति दैपायन के नेतृत्व में ताम्रलिप्ति पर आक्रमण करने के एक दिन बाद घटी थी। वंगा की महासभा ने लगभग सर्वसम्मति से आगे बढ़ती सेना से लड़ने का निर्णय लिया था - लगभग सर्वसम्मति इसलिए क्योंकि गणतंत्र की अठारह रियासतों के तीन प्रमुखों ने महासभा का साथ छोड़ दिया था और आत्मसमर्पण के माध्यम से मगध से क्षमादान मांगा था। ताम्रलिप्ति का युद्ध मुश्किल से आधा दिन चला था। मगध की सेना ने वंगा की कमजोर रक्षा पंक्ति को तोड़ दिया था, जिससे महासभा के सदस्य छिपने पर मजबूर हो गए थे। कुछ ही घंटों में, महासभा के सत्रह सदस्यों - जिनमें चार रियासतों के प्रमुख भी शामिल थे - को गिरफ्तार कर लिया गया था, और अगली सुबह, सत्रह शव ताम्रलिप्ति के बाजार चौक में लटके हुए थे, जो मगध को चुनौती देने की हिम्मत करने वालों के लिए एक भयानक चेतावनी थी।

“मैं कुछ भी नहीं भूला हूँ,” सबकी चिंताओं को दूर करने की कोशिश करने वाले उस व्यक्ति ने गुस्से में जवाब दिया। तनाव, अनिश्चितता और असमंजस के कारण सबकी नसें तन गई थीं। “मैं बस इतना कह रहा हूँ कि इस रफ्तार से चलते रहे तो हम अपनी ही परछाई से डरने लगेंगे।”

“यह कहना कि हमें डरने की कोई ज़रूरत नहीं है, बिल्कुल अलग बात है,” तीसरे वक्ता ने तीखी आवाज़ में कहा। “हमारी हालत देखिए। अठारह से अब हमारे पास सिर्फ़ छह मुखिया बचे हैं। अगर कुलाधिपति को भी शामिल कर लें तो सात। वांगा की महान सभा का बस यही बचा है। मगध ने हमारे घर छीन लिए हैं और हमारे पास जाने के लिए कोई जगह नहीं है। फिर भी आप कहते हैं कि हमें डरने की कोई ज़रूरत नहीं है?”

बूढ़े आदमी की आवाज पहले तो बेकाबू होकर ऊंची हो गई, फिर कांपने लगी और वह सिसकने लगा। सुदासन ने दिलासा देते हुए उस आदमी के कंधों पर हाथ रख दिया।

“हम अपने घर वापस पाने के लिए पहले ही रास्ते पर हैं। चिंता मत करो, हम मगध से वह सब कुछ वापस ले लेंगे जो हमारा था।” चांसलर ने धीरे से उस आदमी को जहाज के पिछले हिस्से की ओर मोड़ दिया। “क्यों न तुम थोड़ी देर सो जाओ?”

तीन सरदार उस व्यक्ति को अपने साथ ले गए, और बाकी लोगों को शांत समुद्र को निहारने के लिए डेक पर छोड़ दिया। जब यह स्पष्ट हो गया कि ताम्रलिप्ति पर कब्ज़ा हो चुका है, तो सुदासन और पंद्रह सरदार शहर छोड़कर आसपास के ग्रामीण इलाकों में शरण लेने चले गए। उनमें से चार को पकड़कर सार्वजनिक रूप से फांसी दिए जाने के बाद, सुदासन पूर्व की ओर बढ़ते रहे, और मगध के सैनिक उनका पीछा करते रहे। अंत में, सुदासन यमुना और लौहित्या नदियों के डेल्टा के चारों ओर फैले घने, बाघों से भरे मैंग्रोव दलदल में अपने पीछा करने वालों को चकमा देने में सफल रहे, और यहीं पर वंगा के बचे हुए सरदार फिर से एकत्रित हुए।

हालांकि मैंग्रोव वनों में छिपने के लिए पर्याप्त जगह थी, लेकिन मलेरियाग्रस्त दलदल में अनिश्चित काल तक रहना संभव नहीं था; ताम्रलिप्ति की ओर पश्चिम की ओर जाना भी एक विकल्प नहीं था। इसलिए सुदासन और सरदारों के सामने तीन विकल्प थे: या तो नदी के मुहाने को पार करके उत्तर की ओर प्राग्ज्योतिषपुरा तक लंबी यात्रा करें, या फिर श्रीभोज और श्रीविजया के दूरदराज के तटों तक नौका विहार करें।

उनके सामने तीसरा विकल्प यह था कि वे अभिरामी या उसके भाई वीरयंका के दरबार में शरण लें।

सुदासन के दाहिनी ओर खड़े मुखिया ने पूछा, "क्या आपको लगता है कि हमारा खुले दिल से स्वागत किया जाएगा?"

कुलाधिपति ने कंधे उचका दिए। यह सवाल उन्हें तब से परेशान कर रहा था जब वे मैंग्रोव के बीच छिपी झोपड़ियों में बारिश और आने वाले तूफान से बचने के लिए बैठे थे। वे बार-बार खुद से पूछ रहे थे कि क्या रानी अभिरामी और राजा वीरयंका से संपर्क करना उचित होगा, लेकिन उन्हें कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिला था।

असल बात यह थी कि प्राग्ज्योतिषपुरा, सिंधुवर्त के बाकी हिस्सों से बहुत दूर होने के कारण, वांगा के साथ कभी भी सीधे तौर पर संपर्क में नहीं आया था। उत्तरी राज्य और गणराज्य के बीच सारा संपर्क छोटे, असंगठित व्यापारियों की पहल तक ही सीमित था। इसलिए, यह मानने का कोई ठोस आधार नहीं था कि प्राग्ज्योतिषपुरा उनका स्वागत करेगा। श्रीभोज और श्रीविजय के मामले में तो संभावनाएं और भी धूमिल हो गईं, क्योंकि ये दोनों राज्य ताम्रलिप्ति बंदरगाह के साथ व्यापार पर बहुत अधिक निर्भर थे। श्रीभोज और श्रीविजय के शासक सुदासन को जानते थे और वांगा की दुर्दशा से प्रभावित हो सकते थे। हालांकि, यह अनिश्चित था कि क्या वे वांगा के भगोड़े सरदारों को समर्थन देकर ताम्रलिप्ति के नए शासकों को नाराज करने का जोखिम उठाएंगे।

अब केवल पर्वतीय राज्यों ओद्रा और कलिंग ही शेष रह गए थे। दुर्भाग्यवश, प्राग्ज्योतिषपुरा की तरह, इन दोनों राज्यों ने सिंधुवर्त के अन्य राज्यों से संबंध स्थापित करने का प्रयास नहीं किया था और उनके साथ मित्रता स्थापित करने के सभी प्रयास चुपचाप ठुकरा दिए गए थे। जहाँ तक याद है, कलिंग और ओद्रा उत्तर में ऋक्ष पर्वत, पश्चिम में आनूपा या भूत दलदल और दक्षिण में दंडक वन द्वारा संरक्षित, शानदार एकांत में विद्यमान थे।

तीन निराशाजनक विकल्पों के बीच फंसे सुदासन और उनके सरदार हताश हो चुके थे, तभी उनके एक मुखबिर ने ताम्रलिप्ति से एक अधूरी खबर दी - ऐसा प्रतीत होता है कि मगध ओद्रा के खिलाफ अपनी सेना को आगे बढ़ाने की विस्तृत योजना बना रहा था।

इस घटनाक्रम में एक मामूली अवसर को भांपते हुए, सुदासन ने उस बिखरे हुए समूह के भाग्य का फैसला किया। दो छोटे जहाजों को चुपके से डेल्टा में लाया गया था, और आने वाले तूफान का फायदा उठाते हुए, वे रवाना हो गए, तट से दूरी बनाने के लिए दक्षिण की ओर काफी दूर चले गए, फिर पश्चिम की ओर मुड़ गए। यह दांव सफल प्रतीत हुआ क्योंकि वे मगध के जहाजों और नौकाओं की नजरों से बच गए थे, लेकिन इसकी भारी कीमत भी चुकानी पड़ी। भयानक तूफान ने एक जहाज को उसके पूरे माल सहित निगल लिया, जिसमें भाग रहे पांच वांगा सरदार भी शामिल थे।

“हम ओड्रा के लिए महत्वपूर्ण समाचार लेकर आए हैं,” कुलाधिपति ने कहा। “हम केवल यही आशा कर सकते हैं कि यह हमें महारानी अभिरामी से मिलने का अवसर दिलाने के लिए पर्याप्त होगा। उसके बाद हमारा भाग्य उन्हीं के हाथों में होगा।”
ठीक उसी क्षण चंद्रमा बादलों के पीछे छिप गया। हवा तेज़ हो गई, जिससे जहाज़ के डेक पर हल्की ठंडक फैल गई। सुदासन को अपनी नंगी बांहों पर रोंगटे खड़े होते महसूस हुए। कंपकंपी के साथ उसने पश्चिम क्षितिज की ओर, उत्तरा तोसाली की दिशा में देखा।

*

आधी रात तक करवटें बदलते रहने के बाद, मदर ओरेकल ने आखिरकार सोने की कोशिश करना छोड़ दिया। वह कुछ देर तक अपने सामने की खाली दीवार को घूरती रही, फिर उसने सोचा कि जब वह जाग ही रही है, तो क्यों न कुछ और सुखद देख ले। जैसे कि उसकी खिड़की के बाहर लालटेन की तरह लटकता हुआ पीला अर्धचंद्र।
हाल ही में उसे नींद नहीं आ रही थी—दरअसल, सम्राट के अनुरोध पर महल में आने के एक-दो दिन के भीतर ही उसकी नींद उड़ने लगी थी। उज्जैन जैसे विशाल और भीड़भाड़ वाले शहर में जीवन यापन करने को लेकर उसे हमेशा से ही गंभीर आशंकाएँ थीं; दुर्भाग्य से, उसकी सबसे बुरी आशंकाएँ सच हो रही थीं। हर दिन उसकी खाने की इच्छा कम होती जा रही थी, पाचन क्रिया खराब हो रही थी और वह लगातार थकी हुई रहती थी क्योंकि वह ठीक से खा नहीं पाती थी और सो भी नहीं पाती थी। अपनी बीमारी के बाद, जब उसके कबीले के लोग उससे मिलने आए थे, तो उसे उनके साथ महल छोड़ने का मन हुआ था। राजा को दिए अपने वचन और संकट के समय सिंहासन की सहायता न करके शंकु को निराश करने के डर ने ही उसे ऐसा करने से रोका था।
अपनी आँखों में बची-खुची नींद को झटकते हुए, वह अब चाँद को निहार रही थी, उसका मन उस शाम अपनी पोती के साथ हुई बातचीत में उलझा हुआ था। कालिदास के जाने से पोती का दिल टूट गया था, हालाँकि उसने अपने भावों को बड़ी कुशलता से छिपाए रखा था। फिर भी, अपने इस दुख के बावजूद, वह अपने राजा पर बहुत गर्व करती थी और सिंहासन के प्रति बहुत वफादार थी (और अपनी ही

भलाई के लिए बहुत जिद्दी भी थी, भविष्यवक्ता के मन ने बीच में कहा) कि कालिदास के प्रति उसका प्रेम उसके निर्णयों को प्रभावित नहीं करने देगा। और इन्हीं कारणों से, भविष्यवक्ता माता को एहसास हुआ, शंकु कभी भी ब्रिच्छा को क्षमा नहीं करेगा, जो महल की कालकोठरी में क्षमा की भीख मांग रहा था।

हालाँकि अपनी बेटी को आत्महत्या के लिए उकसाने वाले व्यक्ति के प्रति उसकी घृणा तीव्र थी, फिर भी भविष्यवक्ता शंकु के लिए चिंतित थी। लड़की पहले से ही अंतर्मुखी थी, और सहारा पाने के लिए किसी के बिना, भविष्यवक्ता का मानना था कि शंकु और भी अधिक अकेली और कड़वी हो जाएगी। ब्रिच्छा चाहे जो भी दोष रखता हो, वह उसका पिता था और पश्चाताप करने वाला पिता था; बुढ़ापे में वह उसे वह भावनात्मक सहारा दे सकता था जो उसने बचपन में कभी नहीं दिया था। वह चाहती थी कि लड़की अपने अतीत से भागना बंद करे और उसका सामना करे।

मदर ओरेकल ने पलकें झपकाईं और घूरकर देखा। फिर, अपना सिर थोड़ा ऊपर उठाकर, उसने अपनी आँखों को फिर से केंद्रित किया और पूरी तरह सतर्क होकर खिड़की से बाहर, चंद्रमा की सतह पर तैरते हुए बादलों के छोटे-छोटे टुकड़ों को देखा।

हां, कुछ तो था, उसे पूरा यकीन था।

अपनी बढ़ती उम्र के बावजूद, भविष्यवक्ता जैसे ही किसी तरह उठ खड़ी हुई, वह खिड़की तक लंगड़ाते हुए गई और आकाश की ओर देखने लगी। पश्चिम से और बादल आ रहे थे। जैसे ही वे चंद्रमा के पास से गुजरे, उसने उनके बिखरे हुए शरीरों और फटी हुई पूंछों में एक पैटर्न पढ़ा। अस्पष्ट, धुंधला, लेकिन फिर भी एक पैटर्न।

उसने बादलों में एक संदेश पढ़ा, एक संदेश जो पश्चिम से, महान रेगिस्तान की दिशा से आ रहा था।

*

जैसे ही अमारा सिंह और उनके आठ सैनिकों का दल उज्जैन के उत्तरी द्वार से निकला, क्षितिज पर भोर की हल्की-हल्की रोशनी फैल रही थी। सलाहकार ने राजा की बहन से वादा किया था कि वह भोर होते ही सीमा के लिए रवाना हो जाएगा और उसने अपना वचन निभाया भी था। ऐसा इसलिए नहीं था कि अगर वह ऐसा नहीं करता तो प्रलूपी उसे इसके लिए बाध्य करती, बल्कि इसलिए कि उसे उदयपुरी

पहुँचने की बहुत जल्दी थी। बाकी सभी के आश्वासनों के बावजूद - और यह जानते हुए भी कि वे सही थे - अमारा सिंह सीमा पर घटाकरपारा को छोड़ने के लिए अप्रत्यक्ष रूप से स्वयं को जिम्मेदार महसूस कर रहा था। उसने ठान लिया था कि चाहे कुछ भी हो जाए, वह उस लड़के को ढूंढकर महल वापस लाएगा।

सूर्य अभी क्षितिज से पूरी तरह निकला भी नहीं था और वे अभी दो मील ही चले थे कि पीछे चल रहे सैनिकों में से एक ने दूर से, उज्जैन की दिशा से, एक सींग की तेज़ आवाज़ सुनी। पीछे मुड़कर देखने पर सैनिक ने एक घुड़सवार को तेज़ी से उनका पीछा करते देखा। उसने यह सूचना आगे दी और बाकी सैनिक रुक गए, घुड़सवार के आने का इंतज़ार करने लगे। जब घुड़सवार आया, तो वह सीधे अमर सिंह के पास गया और प्रणाम किया।

"साक्ष्य महोदय, नमस्कार। सम्राट ने मुझे आपको महल तक वापस ले जाने के लिए कहा है।"

"लेकिन मैं तो अभी-अभी महल से निकला हूँ," अमारा सिम्हा ने भौंहें चढ़ाते हुए जवाब दिया।

"मुझे आपको वापस लाने का आदेश मिला है, महोदय," घुड़सवार ने क्षमाप्रार्थी लहजे में कहा। "मुझे बताया गया है कि यह अत्यंत आवश्यक है।"

पूरी तरह से हैरान होकर, बलवान पार्षद ने अपने अंगरक्षक से कहा, "मुझे नहीं पता कि इसमें कितना समय लगेगा, इसलिए बेहतर होगा कि आप मेरे साथ वापस चलें।" फिर, अपने घोड़े को शहर की ओर घुमाकर, उन्होंने उसे सरपट दौड़ाया। सवार से उन्होंने कंधे के ऊपर से कहा, "आपने अपना काम कर दिया है। अब आप जा सकते हैं।"

जब अमरा सिंह परिषद कक्ष में दाखिल हुए, तो उन्होंने देखा कि उन्हें देखकर सम्राट का चेहरा राहत से खिल उठा, हालांकि उनका जबड़ा कसा हुआ, दृढ़ और गंभीर था। उसी समय, उन्होंने कमरे में मौजूद सभी लोगों - उनके साथी पार्षदों और देवी माँ - के कंधों पर तनाव का दबाव महसूस किया, जो सभी गंभीर और नींद से वंचित दिख रहे थे।

"क्या बात है?" उसने मेज के चारों ओर बैठे लोगों के चेहरों को देखते हुए पूछा। उसने भविष्यवक्ता पर एक टकटकी लगाई, क्योंकि उसे सहज रूप से पता था कि इस सब में उसका कुछ हाथ है। "तुमने मुझे वापस क्यों बुलाया?"

“देवी ओरेकल ने अभी-अभी हमें एक बात बताई है,” राजा ने कहा। बुढ़िया से बात करते हुए उन्होंने आगे कहा, “माँ, क्या आप बता सकती हैं कि आपने क्या देखा?”
भविष्यवक्ता ने सिर हिलाया और पार्षदों की ओर मुड़ी। उसने तीखे लहजे में कहा, “मुझे अच्छी नींद नहीं आ रही थी—कई रातों से ऐसा ही हो रहा है। लेकिन कोई बात नहीं। मैं खिड़की से बाहर चाँद और बहते बादलों को निहार रही थी। हवा पश्चिम से बादलों को लेकर आई थी, और मुझे उनमें एक संकेत, एक संदेश दिखाई दिया।”
“संदेश में क्या लिखा था?” धनवंतरी ने उत्सुकता से पूछा।
“बादलों ने तीन बातों का संकेत दिया। एक बात यह थी कि एक युवक को शहर के बाहर एक नदी में पीट-पीटकर बेहोश कर दिया गया था।”
“कौन सा शहर?” क्षपनाका ने बीच में ही टोकते हुए पूछा।
“बादलों ने कुछ नहीं कहा,” भविष्यवक्ता ने कंधे उचकाते हुए कहा। “दूसरी बात जो उन्होंने बताई, वह यह थी कि एक युवक को पहाड़ों के ऊपर से, विशाल रेगिस्तान की ओर ले जाया जा रहा था। वह व्यक्ति या तो मर चुका था या बेहोश था।”
"या फिर उसे नशा कराया गया था," विक्रमादित्य ने थोड़ी जल्दबाजी में कहा।
भविष्यवक्ता ने इस संभावना पर अपना सिर झुकाया, लेकिन वह कुछ नहीं बोली।
“और तीसरी बात?” अमारा सिम्हा ने पूछा।
भविष्यवक्ता ने उसकी ओर देखा और फिर बारी-बारी से प्रत्येक सलाहकार की ओर सिर घुमाकर देखा। "तीसरी बात जिसके बारे में उन्होंने बताया वह सुनहरा सूरज था जो उस व्यक्ति के साथ था जिसे पहाड़ों के ऊपर से ले जाया जा रहा था।"
क्षपनाका ने हैरानी से सिर हिलाते हुए पूछा, "इस आदमी को कौन ले जा रहा था?"
“बादलों ने फिर कुछ नहीं कहा।” मातृ भविष्यवक्ता अचानक थकी हुई और चिड़चिड़ी दिखने लगीं। “मैं सवाल नहीं पूछ सकती। मैं केवल संकेतों को सुनकर और समझकर ही अर्थ निकाल सकती हूँ।”
“और इसके लिए हम आपके सदा आभारी रहेंगे, माताजी,” सम्राट ने उन्हें शांत करते हुए कहा। “लेकिन...” उन्होंने क्षपनाका की ओर और फिर अन्य सलाहकारों की ओर मुड़कर कहा, “इस व्यक्ति को कौन ले जा रहा है, यह महत्वपूर्ण नहीं है। इसका अनुमान हम लगा सकते हैं। प्रश्न यह है कि यह व्यक्ति कौन है। मेरा कहना है कि यह घटकर्परा है।”
"सचमुच?" अमारा सिम्हा ने अपनी दाढ़ी को उंगलियों से संवारते हुए सोचा।

"जी हां, और शंकु भी," विक्रमादित्य ने एक तरफ चुपचाप बैठी लड़की की ओर इशारा करते हुए कहा। "उसने मुझे बताया कि देवी ओरेकल ने उसे क्या बताया था।"

"मैं यह देखने गया था कि क्या भविष्यवक्ता को किसी चीज़ की ज़रूरत है, और उसने मुझे बताया कि उसने बादलों में क्या पढ़ा था," शंकु ने समझाया। "मैं राजकुमार के अलावा किसी और के बारे में सोच ही नहीं सकता था।"

"तुम्हें इतना यकीन कैसे है?" वराहमिहिर ने झुककर लड़की को ध्यान से देखा।

"यह तर्कसंगत है," उसने उत्तर दिया। "एक व्यक्ति को शहर के बाहर पीट-पीटकर बेहोश कर दिया जाता है। शहर उदयपुरी हो सकता है, हालांकि यह ज़रूरी नहीं है। फिर, उस व्यक्ति को पहाड़ों के ऊपर से विशाल रेगिस्तान की ओर ले जाया जाता है, और वह या तो मर चुका होता है या बेहोश होता है। यदि वह मर चुका है, तो उसे विशाल रेगिस्तान में ले जाने का कोई कारण नहीं है। इसलिए, संभावना है कि वह बेहोश है। एक व्यक्ति को पीट-पीटकर बेहोश कर दिया गया, दूसरे बेहोश व्यक्ति को ले जाया जा रहा है - वे शायद एक ही व्यक्ति हैं। अब, पहाड़ों के ऊपर से ले जाए जा रहे व्यक्ति के साथ एक सुनहरा सूर्य है। यह समझ में नहीं आता, जब तक कि बादलों का मतलब पार्षद का सुनहरा सूर्य-चिह्न वाला पदक न हो। इसलिए, वह व्यक्ति निश्चित रूप से घटाकरपारा है।"

"और उसे विशाल रेगिस्तान में, हुना-साका क्षेत्र में ले जाया जा रहा है," अमारा सिम्हा ने क्रोध में आकर अपनी मुट्ठी हथेली पर पटकी। "उसका अपहरण कर लिया गया है।"

वह शब्द एक कोड़े की तरह गूंज उठा और उसकी भयावहता कमरे में फैल गई, जिससे अनिवार्य रूप से छा जाने वाली खामोशी और भी गहरी हो गई।

"इसीलिए मैंने तुम्हें वापस बुलाया।" विक्रमादित्य का चेहरा गंभीर था, उसकी आँखें बेचैन और अस्थिर थीं। "हमें एक नई कार्ययोजना बनानी होगी।"

"हूणों ने उसे उदयपुरी से अगवा कर लिया?" धनवंतरी हैरान और अविश्वास से भर उठा। "वे सिंधुवर्त के इतने अंदर तक गए थे?"

"उन्हें स्थानीय लोगों की मदद मिली थी," सम्राट ने दबी हुई क्रोध भरी आवाज़ में कहा। "किसी ने हूणों को घटाकरपारा के बारे में जानकारी दी थी—उदयपुरी में उसकी मौजूदगी, उसकी गतिविधियाँ, उसका ठिकाना। वे यह सब खुद नहीं पता

लगा सकते थे। स्थानीय सहायता के बिना वे उसे पकड़ नहीं सकते थे। सीमावर्ती इलाकों में हमारे बीच गद्दार मौजूद हैं।"
"संभवतः ये वही लोग हैं जो श्रीस्थली कमांड सेंटर में हुना स्काउट की मौत के लिए जिम्मेदार थे," अमारा सिम्हा ने टिप्पणी की।
"शायद, लेकिन इस बार उन्होंने महल के किसी सदस्य, मेरी अपनी परिषद के सदस्य, मेरे प्यारे भतीजे को छूने की हिम्मत की है।" ये शब्द धीमी, प्रतिशोधी गुर्राहट में निकले। "मेरे रास्ते में आकर उन्होंने अपना भाग्य खुद तय कर लिया है। मैं उन्हें उस दिन का पछतावा करवाऊंगा जब उन्होंने घटाकरपारा को अपनी वफादारी का सौदा बनाया।"
"हम करेंगे, विक्रम, लेकिन पहले हमें घटकर्पर को मुक्त कराने का कोई तरीका ढूंढना होगा," वराहमिहिर ने विनम्रतापूर्वक लेकिन दृढ़ता से बातचीत को सही दिशा में मोड़ते हुए कहा। "हूण उसे छुड़ाने के लिए फिरौती मांगेंगे..."
"फिरौती?" अमरा सिंह दहाड़ा, उसकी आवाज़ कमरे की दीवारों से ऐसे टकराई जैसे कोई विशाल लहर पथरीले तट से टकराती है। "हम उन बर्बरों का इंतज़ार नहीं करेंगे कि वे घटाकरपारा के जीवन या उसकी आज़ादी के बदले कोई माँग लेकर लौटें। नहीं—हम महान रेगिस्तान में जाएँगे और उसे छुड़ाएँगे। यह अपहरण युद्ध का एक कृत्य है। चलो हम उन्हें ऐसा युद्ध दें जिसे वे कभी न भूलें।"
अन्य सलाहकारों और सम्राट ने एक-दूसरे की ओर देखा, वे सहज रूप से जानते थे कि अमर सिंह के शब्द मानो उनके अपने हृदय और मन से निकले हों। यह एक बार फिर युद्ध था, बस एक छोटा सा अंतर था। इस बार, अवंती बर्बरों की मातृभूमि में युद्ध छेड़ेगी। इस बार, मरुस्थली की धूल खून का स्वाद चखेगी।
"तो फिर नेतृत्व कौन करेगा..." वराहमिहिर ने अभी शब्द पूरे किए ही थे कि अमर सिंह ने उन्हें दूसरी बार बीच में ही रोक दिया।
"मैं करूँगा," उसने झल्लाकर कहा। उसके लहजे से साफ था कि वह इस बारे में चर्चा और बहस करने के मूड में नहीं था। "मैं वैसे भी उदयपुरी जा रहा था। मैं चौकी पर अतुल्यतेजा को जानता हूँ। मैं बृहत्स को भी जानता हूँ, जो मध्यमिका में कमान केंद्र का प्रभारी है। और अपनी पिछली यात्रा के दौरान, मैं दत्ताका से मिला था, जो श्रीस्थली कमान केंद्र का प्रमुख है। इन दोनों की मदद से मैं हूणों पर हमले की योजना बनाऊँगा।"

“बहुत अच्छा, लेकिन यद्यपि उन्हें उचित रूप से तैयार रहने की आवश्यकता है, मैं सुझाव देता हूं कि हम अतुल्यतेज, बृहत्स और दत्तक को उस घटना के बारे में जानकारी न दें जो हमें संदेह है कि घटकर्परा के साथ घटी है,” वराहमिहिर ने चेतावनी दी।
“बिल्कुल नहीं,” विक्रमादित्य ने दृढ़ता से सिर हिलाया। “सीमा पर गद्दारों के सबूत हैं। हमें उन्हें अपनी जानकारी और योजनाओं के बारे में कुछ भी पता नहीं चलने देना चाहिए। उन बर्बरों को हमारी किसी भी योजना की भनक नहीं लगनी चाहिए।”
“लेकिन अतुल्यातेजा को महल से जवाब की उम्मीद होगी,” धनवंतरी ने कहा। “हमारा जवाब न देना खतरे की घंटी बजा सकता है।”
“हम उन्हें संदेश भेजेंगे, जिसमें उनसे तलाशी तेज करने और अधिक पुलिसकर्मियों को भेजने का अनुरोध करेंगे। हम ऐसा व्यवहार करेंगे मानो हमें लगता है कि हर जगह गहन तलाशी करने पर घाटकरपारा अवंती की सीमा के भीतर ही मिल सकता है। हम पार्षद अमारा सिम्हा का नाम तक नहीं लेंगे,” सम्राट ने उत्तर दिया।
"लेकिन हम उसे उदयपुरी में ही रुकने के लिए कहेंगे, ताकि जब मैं पहुंचूं तो वह वहीं मौजूद हो," उस हट्टे-कट्टे पार्षद ने स्पष्ट किया।
“मेरी राय में, हममें से किसी एक को आपके साथ चलना चाहिए,” क्षपणका ने कहा। मेज के चारों ओर देखते हुए, उन्होंने शंकु, धनवंतरी और वराहमिहिर को देखा। वह जानती थीं कि विशाखा की देखभाल की आवश्यकता को देखते हुए, धनवंतरी को नहीं छोड़ा जा सकता था। बैसाखी के सहारे चल रहे वराहमिहिर युद्ध में ज्यादा उपयोगी नहीं होंगे, जबकि शंकु की उज्जैन में देवी माँ की देखभाल और भविष्यवाणी करने के लिए आवश्यकता थी। “मैं आऊँगी,” उन्होंने कहा।
“नहीं, तुम्हें यहीं रहना चाहिए,” अमर सिंह ने सिर हिलाते हुए कहा। “जब अगली बार देव या असुर आएंगे, तो इस नगर को सुरक्षा की आवश्यकता होगी। और चिंता मत करो...” उनके चेहरे पर आशा भरी भेड़ियानुमा मुस्कान खिल उठी, “मैं हूणों को नरक का स्वाद चखाने के लिए काफी हूँ।”
“अमरा सिंह सही कह रहे हैं,” विक्रमादित्य ने कहा। “फिर भी...” सम्राट ने अमर सिंह की ओर मुड़कर कहा, “आपको अपने साथ कुछ और अनुभवी और भरोसेमंद योद्धा ले जाने चाहिए, खासकर जब आप युद्ध को विशाल रेगिस्तान में ले जा रहे हैं।

मेरा सुझाव है कि आप अंगमित्र और संसप्तकों की एक बड़ी सेना को अपने साथ ले जाएं।"
"यह अच्छा विचार है," धनवंतरी ने कहा। उन्होंने अमरा सिंह की ओर देखा। "ना मत कहो। वहाँ इतने हुने हैं कि सब मिलकर खा सकते हैं और फिर भी कुछ बच जाएँगे।"
"तुम्हें क्या लगता है कि वे घटकर्परा को कहाँ ले गए हैं?" क्षपणक ने अचानक पूछा।
बाकी सभी सलाहकारों और राजा ने एक-दूसरे की ओर देखा। इन सब बातों में वे इस तथ्य को नज़रअंदाज़ कर गए थे कि उनमें से कोई भी कभी मरुस्थली में नहीं गया था। हूणों का यह गढ़ उन सभी के लिए पूरी तरह से अनजान था।
"हां, जब तक हमें यह नहीं पता चलेगा कि कहां देखना है, आप केवल निराशा के साथ इधर-उधर भटकते रहेंगे," वराहमिहिरा ने कहा।
कक्ष में उदासी छा गई। बाहर सूरज की तेज गर्मी पड़ रही थी, जो एक उमस भरे और पसीने से तर दिन की नींव रख रही थी। विक्रमादित्य ने अपना सिर उठाया और आशा भरी निगाहों से भविष्यवक्ता की ओर देखा।
"क्या आप या घुमंतू जनजाति का कोई और सदस्य मदद कर सकता है, माँ?"
देवी ओरेकल ने अपना सिर हिलाया। "मुझे खेद है, महाराज, ऐसा नहीं है। हम खानाबदोश हो सकते हैं, लेकिन रेगिस्तान एक शापित जगह है। हम अंधकारमय नदी के बारे में जानते हैं क्योंकि यह हमारी प्राचीन कहानियों में मौजूद है, बस इतना ही। हम महान रेगिस्तान को नहीं जानते; और हम इसे कभी जानना भी नहीं चाहते।"
सभी निराश दिख रहे थे, सामने टकटकरपारा को बचाने की उम्मीद धीरे-धीरे खत्म होती जा रही थी। अमर सिंह सबसे ज्यादा निराश थे, उनका चेहरा उदास और गुस्से से भरा था क्योंकि उन्हें अज्ञानता के कारण निराशा हाथ लगी थी। फिर अचानक उनकी आँखों में चमक आ गई और उन्होंने विजयी मुस्कान बिखेरी।
"मुझे मिल गया," उसने खुशी से मुट्ठी भींचते हुए कहा। "मुझे पता है कि रेगिस्तान में आदिवासियों के छिपने के ठिकाने कैसे ढूंढे जाते हैं।"
"कैसे?" चिकित्सक ने पूछा। कमरे में फिर से उत्साह का संचार हो उठा।
"वह हुना जासूस," अमारा सिम्हा ने कहा। "वही जिसे मैं श्रीस्थली से वापस लाया था, जिसने हमें द्वारका पर हमला करने की हुना योजना के बारे में बताया था।"

“वही जो शहर की चौकी में पड़ा हुआ है,” वराहमिहिर ने ताली बजाते हुए कहा। “वाह! वह तो जाहिर तौर पर विशाल रेगिस्तान को अच्छी तरह जानता है। उसे पता होगा कि नखलिस्तान कहाँ हैं, बर्बरों के शहर और किले कहाँ स्थित हैं।”
"लेकिन क्या उस पर भरोसा किया जा सकता है कि वह पहला मौका मिलते ही आपको धोखा नहीं देगा?" क्षपनाका ने पूछा।
“मुझे लगता है मैंने उसे इतना डरा दिया है कि अब वो इस विचार पर विचार भी नहीं करेगा,” अमारा सिम्हा ने हल्की सी हंसी के साथ जवाब दिया। “लेकिन मैं अपने साथ एक दुभाषिया ले जाऊंगा, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वह ठीक से व्यवहार करे। अब, यदि आप अनुमति दें, तो मुझे ये सभी व्यवस्थाएं करनी होंगी। मैं बिना देरी किए निकलना चाहता हूं।”
“जी हां,” सम्राट ने अपनी ऊँची कुर्सी से उठते हुए कहा। “मैं अंगमित्र और उनके संसप्तकों को आपके समक्ष पेश होने के लिए कहूंगा।” वे मेज के चारों ओर घूमकर अमर सिंह के सामने खड़े हो गए। सलाहकार की लंबाई राजा की छाती से अधिक नहीं थी, लेकिन वह कद-काठी में राजा से दुगुना था। दोनों पुरुषों ने एक-दूसरे की आँखों में गंभीरता से देखा।
“मैं तुम्हें एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी सौंप रहा हूँ,” विक्रमादित्य ने कहा। “हो सकता है मैं उनके प्रति अपना स्नेह न दिखाऊँ, लेकिन घातकपारा मुझे बहुत प्रिय हैं। और माता और वरारुचि को भी... और, बेशक, प्रलूपी को भी। अगर उन्हें कुछ हो गया तो मैं कभी खुद को माफ नहीं कर पाऊँगा। कृपया उन्हें सुरक्षित वापस ले आओ – आदित्य वंश तुम्हारा ऋणी रहेगा।”
“विक्रमा, जब इस नन्हे-मुन्ने को अपनी धोती बाँधना भी नहीं आता था, तब मैंने उसे तलवार चलाना सिखाया था,” दाढ़ी वाले सलाहकार ने राजा का कंधा थामते हुए कहा। “मैं अरबुदा पर्वत पार करके उसे वापस लाने जा रहा हूँ। लेकिन आपने मुझ पर भरोसा किया, इसके लिए धन्यवाद। मुझे जाने दीजिए, ताकि मैं आपके विश्वास का प्रतिफल दे सकूँ।”

*

जब यशोभावी चंद्रवर्धन के निजी स्नानागार में पर्दों के पीछे से गुजरा, तो ताजे पिसे हुए सरसों के तेल की तीखी सुगंध उसकी नाक में समा गई। ऊँची खिड़कियों की

पट्टियों से छनकर आती सुबह की धूप राजा की पीठ और कंधों पर पड़ रही थी, जो सुनहरे पीले रंग के थे और तेल से सने हुए थे। राजा एक छोटी सी चौकी पर बैठे थे, उनके पैर सामने की ओर फैले हुए थे, और उन्होंने कमर से जांघ तक एक सादी सूती धोती पहनी हुई थी। उनके दाएं और बाएं, दो मालिश करने वाले उनकी उम्रदराज जोड़ों और मांसपेशियों में तेल लगा रहे थे, जबकि तीसरा उनके पैरों के पास बैठा राजा के दाहिने पैर पर तेल मल रहा था। एक महल का वैद्य पास ही खड़ा था, जो इन सभी कामों पर पैनी नजर रख रहा था। चंद्रवर्धन स्वयं स्वस्थ और शांत दिख रहे थे, मालिश से मिले आराम के कारण उनका सिर थोड़ा झुका हुआ था।
"अफसोस की बात है कि मैं राजा से नहीं मिल सका क्योंकि मैं बाहर था।"
शशिवर्धन की आवाज सुनकर यशोभावी चौंक गया और बीच रास्ते में ही रुक गया। उसे उम्मीद नहीं थी कि राजकुमार इतनी सुबह अपने पिता के साथ होगा, और दरवाजे के पास जहां वह खड़ा था, वहां से शशिवर्धन यमुना की ओर खुलने वाली खिड़की के पास खड़ा दिखाई नहीं दे रहा था।
“जी हाँ... आप... प्रयाग में थे... मुझे बताया गया था।” चंद्रवर्धन को अभी भी शब्दों और वाक्यों को जोड़ने में थोड़ी कठिनाई हो रही थी, जो हाल ही में ठीक हुए लकवे के झटके की याद दिला रही थी। “नाव दुर्घटना... हाँ।”
अंदर जाने या बाहर निकलने को लेकर असमंजस में यशोभावी द्वार पर खड़ा रहा। तभी एक मालिश करने वाले ने उसे देखा और राजा के कान में कुछ फुसफुसाया, जिससे फैसला हो गया। चंद्रवर्धन ने अकड़ी हुई गर्दन घुमाई और उनकी निगाहें मिलीं, जिससे चुपचाप पीछे हटने की उसकी संभावना खत्म हो गई।
“यश... शोभवी... आओ,” राजा ने सिर हिलाकर इशारा किया।
पार्षद ने अभिवादन में सिर झुकाया और आगे बढ़े, गलती से गिरे तेल पर फिसलने से बचने के लिए संभलकर कदम बढ़ाते हुए। जैसे ही शशिवर्धन का लंबा और सुगठित शरीर नज़र आया, मालिश करने वालों और चिकित्सक ने भी उन्हें प्रणाम किया।
"नमस्कार, पार्षद जी," शशिवर्धन ने अपने लंबे भूरे बालों की एक लट को चेहरे से पीछे हटाते हुए कहा।
“नमस्कार, मेरे... राजकुमार।”

यशोभावी सोच रही थी कि क्या कमरे में मौजूद किसी और ने भी उसकी झिझक को महसूस किया था। एक पल के लिए ही सही, उसने शशिवर्धन को 'राजा' कहकर संबोधित करने का सोचा था—वैसे भी कुछ दिनों में इस संबंध में औपचारिक घोषणा होने वाली थी। फिर भी, उसने ऐसा करने से इनकार कर दिया, यह कहते हुए कि शशिवर्धन अभी भी वत्सा का राजकुमार ही था। काश, चंद्रवर्धन को घोषणा करने से रोकने के लिए कुछ और आसान तकनीकी बातें उपलब्ध होतीं।

"अच्छा हुआ... तुम चले गए," चंद्रवर्धन ने कहा। सलाहकार को यह समझने में थोड़ा समय लगा कि राजा ने शशिवर्धन से अपनी बातचीत फिर से शुरू कर दी है। "अपनी प्रजा के पास जाओ... जब... जब वे संकट में हों। लोग उस राजा का सम्मान करते हैं... जो उनकी परवाह करता है। तुम सिंहासन पर बैठकर शासन नहीं करते। तुम अपनी प्रजा के दिलों में जगह बनाकर शासन करते हो।"

"मैं याद रखूंगा, पिताजी।" शशिवर्धन यशोभावी की ओर मुड़ा। "हम राजा बाणहस्त के यहाँ आने के बारे में चर्चा कर रहे थे, जब पिताजी अस्वस्थ थे। आपने सुना होगा कि कल रात मत्स्य का एक घुड़सवार आया था?"

पार्षद ने सिर हिलाया, उनका चेहरा गंभीर हो गया। "मैं समझता हूँ कि सीमा पर स्थिति काफी खराब है। शक घुड़सवार अधिक साहसी होते जा रहे हैं और मत्स्य क्षेत्र में गहराई तक घुसपैठ कर रहे हैं, मनमाने ढंग से छापे मार रहे हैं और सिंधुवर्त की सेना को परेशान कर रहे हैं।"

"द्वारका में हु... हुना... का बेड़ा," चंद्रवर्धन ने घबराए हुए स्वर में कहा। "मत्स्य की सीमा पर शक... ये... ये सब फिर से हो रहा है।"

"पिताजी, सब ठीक है।" शशिवर्धन चंद्रवर्धन की ओर दो कदम बढ़ाए और उनके बगल में बैठ गए। अपने पिता के तेल लगे कंधे पर तसल्ली भरा हाथ रखते हुए, उन्होंने चंद्रवर्धन की आँखों में देखते हुए कहा, "हम जानते हैं द्वारका में क्या हुआ। हूणों का बेड़ा नष्ट हो गया। वरारुचि के नेतृत्व में सिंधुवर्त के सैनिकों ने शेरों की तरह लड़ाई लड़ी।"

लेकिन... लेकिन समुद्र से कुछ निकला... हमारी मदद करने के लिए।

"कोई बात नहीं, पिताजी। महत्वपूर्ण बात यह है कि हूणों को करारा झटका लगा है। कौन जानता है कि उन्हें किस तरह का नुकसान हुआ है? उन्हें फिर से संगठित होने में समय लगेगा। यह हमारे लिए अच्छी खबर है।"

"इससे बुरी खबर भी आ सकती है।"
पिता और पुत्र ने आशंका से यशोभावी की ओर देखा।
“अगर हूणों को कुछ समय के लिए निष्क्रिय कर दिया गया है, तो हम सीमा पर दबाव बनाने के लिए साकाओं पर भरोसा कर सकते हैं,” पार्षद ने समझाया। “बर्बर लोग जानते हैं कि वे पीछे हटते हुए नहीं दिख सकते।”
“पार्षद सही कह रहे हैं,” चंद्रवर्धन ने अपने बेटे की ओर सिर हिलाते हुए कहा। “और... अगर द्वारका में इतनी बड़ी संख्या में सैनिक हैं, तो सीमा कमज़ोर हो जाती है।”
“क्या हम मत्स्य के पास अपनी कुछ और सेना नहीं भेज सकते?” शशिवर्धन ने राजा से यशोभावी की ओर देखा।
“मुझे नहीं लगता कि हम एक हजार से ज़्यादा सैनिक दे सकते हैं—तीरंदाज, पैदल सैनिक और घुड़सवार, सब मिलाकर,” पार्षद ने कहा। “ज़्यादा से ज़्यादा पंद्रह सौ। हमें राज्य में भी सैनिकों की ज़रूरत है...अगर कभी ज़रूरत पड़े तो।”
यदि शक सेना सीमा तोड़कर नदी के मैदानी इलाके से होते हुए सिंधुवर्त के हृदय तक पहुँच जाए, तो यही बात पार्षद का तात्पर्य था।
“हम सेना भेज सकते हैं। लेकिन सीमावर्ती क्षेत्र को नेताओं की ज़रूरत है।” चंद्रवर्धन ने आह भरी और पीठ झुका ली, ताकि मालिश करने वाला उनकी पीठ पर और तेल लगा सके। “द्वारका में, वरारुचि ने हूणों के विरुद्ध लड़ाई का रुख मोड़ दिया। हमें भी ऐसे ही किसी व्यक्ति की ज़रूरत है। कोई ऐसा जो सैनिकों को प्रेरित कर सके और उदाहरण पेश करते हुए नेतृत्व कर सके।”
कुछ देर तक स्नानागार में सन्नाटा छाया रहा। शशिवर्धन उठकर खिड़की के पास गए और यमुना नदी को निहारने लगे, जहाँ धुंध की लकीरें अभी भी पानी पर छाई हुई थीं और नदी के किनारों पर उगे सरकंडों से चिपकी हुई थीं। केवल मालिश करने वालों के हाथों की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं जो चंद्रवर्धन की पीठ पर थपथपा रहे थे और दूर से कौवों की आवाज़ आ रही थी। यशोभावी ने बोलने के लिए गला साफ किया, लेकिन राजकुमार ने उनसे पहले ही बोलना शुरू कर दिया।
"पिताजी, मुझे सीमावर्ती क्षेत्र में जाने की अनुमति दीजिए।"
कमरे में मौजूद सभी लोगों का ध्यान शशिवर्धन की ओर मुड़ गया, जो प्रकाश में खड़ा था और हल्की हवा से उसके मुलायम, कंधे तक लंबे बाल लहरा रहे थे।

उसका दाढ़ी वाला चेहरा छाया में था, लेकिन अपने पिता से विनती करते समय उसके हावभाव में गंभीरता झलक रही थी।
"मुझे... नहीं पता, पुत्र।" चंद्रवर्धन ने राजकुमार से यशोभावी की ओर असमंजस में देखा। मालिश करने वाले अपना काम फिर से शुरू कर पाए, जबकि चिकित्सक ने छुपकर सुनने की कोशिश नहीं की।
"क्यों, पिताजी? मैं जाना चाहता हूँ।"
राजा ने हाथ हिलाकर मालिश करने वालों को जाने का स्पष्ट संकेत दिया। उन्होंने झुककर प्रणाम किया, तेल के कटोरे और हाथ पोंछने के तौलिए उठाए और फिर से प्रणाम किया। वैद्य ने भी इशारा समझकर प्रणाम किया और जाने की तैयारी करने लगे। चंद्रवर्धन धैर्यपूर्वक कमरे के खाली होने का इंतजार करते रहे, फिर उन्होंने अपना पूरा ध्यान शशिवर्धन पर केंद्रित किया।
"क्यों... अभी? कुछ दिनों में... तुम्हें राजा घोषित किया जाएगा... योजनाएँ... बन चुकी हैं।"
"पिताजी, इसीलिए तो मुझे जाना चाहिए," राजकुमार पास आया और चंद्रवर्धन के बगल में फिर से बैठ गया। "अगर सैनिकों को युद्ध में नेतृत्व करना हो, तो वे राजकुमार के नेतृत्व में जाना पसंद करेंगे या राजा के? और अगर मुझे राजा बनाया जाना है, तो क्या महल में बैठे रहकर मैं उस अधिकार को व्यर्थ नहीं कर रहा हूँ? क्या मुझे इसके बजाय उस अधिकार का उपयोग सीमा पर नहीं करना चाहिए, जहाँ यह सिंधुवर्त के लिए लड़ने वाले सैनिकों को प्रेरित करने में सहायक हो सके?"
यशोभावी पर एक और नज़र डालते हुए चंद्रवर्धन ने एक परेशान करने वाली आह भरी। उसने अनिर्णय में अपना सिर हिलाया और राजकुमार का जवाब देने के लिए कोई तर्क खोजने लगा। "सीमा... बहुत कठिन है। आप... आपको इसकी आदत नहीं है..."
"पिताजी, सिंधुवर्त संकट में है। उससे भी अधिक गंभीर बात यह है कि मत्स्य संकट में है। क्या आपने हमेशा नहीं कहा कि राजा बाणहस्त आपके भाई के समान हैं? जब आप बीमार थे, तब वही अकेले थे जो आपसे मिलने आए थे। पिताजी, अब उन्हें हमारी ज़रूरत है। हम उन्हें शकों का अकेले सामना नहीं करने दे सकते। कृपया," उन्होंने राजा का हाथ अपने हाथ में लिया और विनती की, "मुझे जाने दीजिए।"

चंद्रवर्धन ने सिर हिलाया, उनकी आँखें अचानक थोड़ी नम हो गईं। राजा की आँखों में आँसू देखकर यशोभावी सोचने लगे कि क्या यह भावना उस पुत्र के प्रति गर्व की भावना का परिणाम थी जिससे अब कोई उम्मीद नहीं बची थी, या इस डर का कि उनका पुत्र ऐसी जगह जा रहा है जहाँ से सुरक्षित वापसी की संभावना बहुत कम है। सलाहकार को दोनों ही कारणों का मिश्रण होने का संदेह था। एक तो उन्होंने शशिवर्धन से इतनी कठिन सीमांत भूमि पर स्वेच्छा से जाने की उम्मीद नहीं की थी। और यद्यपि शशिवर्धन का यह कदम आश्चर्यजनक और सराहनीय था, फिर भी सलाहकार प्रभावित नहीं हुए। राजकुमार के स्वभाव की गहरी समझ ने उन्हें बताया कि यह युवक अपने जोशीले शब्दों को कार्यों में नहीं बदल सकता। यदि यशोभावी शर्त लगाने वाले होते, तो चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हों, वे राजकुमार के कौशांबी लौटने पर दांव नहीं लगाते।

शशिवर्धन कुछ कहने ही वाले थे कि दरवाजे से एक धीमी आवाज आई, "प्लालुपी कहाँ है?"

तीनों आदमी मुड़कर देखने लगे तो हिमवर्धन दरवाजे पर खड़ा था, पर्दों को पकड़े हुए और अपनी बड़ी-बड़ी मासूम आँखों से उन्हें घूर रहा था। उन्हें अपनी ओर देखते देख हिमवर्धन ने एक पर्दे का किनारा अपने मुँह तक उठाया और झिझकते हुए उसे काट लिया। "प्लालुपी कहाँ है?" उसने कमरे में चारों ओर देखते हुए फिर पूछा। मुँह फुलाते हुए उसने कहा, "मैं प्लालुपी के साथ खेलना चाहता हूँ।"

"ज़रूर, तुम प्रलूपी के साथ खेल सकते हो," शशिवर्धन ने ताली बजाई और अपने चाचा के पास चला गया। उसकी आवाज़ में चंचलता थी और उसकी आँखें उत्साह से चमक रही थीं। "लेकिन पहले, क्या तुम नाव की सवारी नहीं करना चाहते?"

"जी हां।" हिमवर्धन ने राजकुमार की ओर मुस्कुराते हुए कहा, प्रलूपी के सारे विचार भुला दिए। पर्दा छोड़कर उसने शशिवर्धन का हाथ पकड़ा और मुड़ गया। चाचा और भतीजा दोनों स्नानागार से बाहर निकल गए।

"वह हिमवर्धन से कितना प्यार करता है...," राजा ने खाली द्वार की ओर स्नेह से देखते हुए कहा। "जब शशि सीमा पर चला जाएगा, तो मेरा छोटा भाई कैसे संभालेगा? प्रलूपी को उसकी ज़रा भी परवाह नहीं है। क्या वह अभी तक अव्वन्ती से वापस नहीं आई है?"

जब पार्षद ने कोई जवाब नहीं दिया, तो चंद्रवर्धन उनकी ओर मुड़े। उन्होंने प्रशंसा भरे स्वर में कहा, "उसने स्वेच्छा से सीमावर्ती क्षेत्र में जाने की पेशकश की थी। वह दिल से हमेशा एक अच्छा लड़का था... मुझे लगता है कि अब वह आखिरकार जिम्मेदार भी बन गया है। मुझे उसमें एक अच्छे राजा बनने के गुण दिखाई देते हैं। और आपको पता है... आज सुबह मुझे उसकी सांसों से सोमा की गंध नहीं आई।"
"यह अच्छा है, महाराज," यशोभावी ने संक्षिप्त रूप से सिर हिलाया। उसकी आँखों में कोई भाव नहीं था।
"जी हाँ... जी हाँ।" राजा अचानक चिंतित हो गए, और उनके शब्द सलाहकार से ज़्यादा खुद से ही निकल रहे थे। "वह... बेहतर हो रहे हैं। ज़्यादा ज़िम्मेदार बन रहे हैं। सीमा पर उन्हें कुछ भी नहीं होना चाहिए। हमें सुनिश्चित करना होगा... सुरक्षाकर्मी... उन्हें सुरक्षा के लिए अच्छे सुरक्षाकर्मियों की ज़रूरत है।" फिर, जैसे अचानक उन्हें याद आया कि यशोभावी अभी भी उनके साथ हैं, उन्होंने ऊपर देखा। "आप इतनी सुबह यहाँ क्यों आ गईं?"
"माननीय महोदय, करुणा और दशार्ण रियासतों से व्यापारियों और किसानों का एक प्रतिनिधिमंडल आपसे मिलने आया है। उनका दावा है कि हाल ही में आई बाढ़ ने उनकी फसलों को नष्ट कर दिया है और वे करों में छूट की मांग कर रहे हैं। उनका कहना है कि हमारे कर संग्रहकर्ता उन्हें परेशान कर रहे हैं।"
चंद्रवर्धन ने एक तरफ रखी पीतल की छोटी घंटी उठाई और उसे बजाया। एक तीखी झंकार सुनाई दी, और लगभग तुरंत ही, जो मालिश करने वाले चले गए थे, वे वापस अंदर आ गए।
"मैं स्नान और नाश्ता करने के बाद प्रतिनिधिमंडल से मिलूंगा," राजा ने कहा। "राजकीय अभिलेख एवं लेखा प्रमुख को भी बैठक में उपस्थित रहने के लिए कह दें।"
"महामहिम," यशोभवी ने झुककर अभिवादन किया और कमरे से निकलकर उस स्थान की ओर चल पड़ी जहाँ प्रतिनिधिमंडल अपने राजा से मिलने की प्रतीक्षा कर रहा था। परन्तु सलाहकार का ध्यान कहीं और था, उस दुर्गम और दुर्गम सीमावर्ती क्षेत्र की ओर जहाँ शशिवर्धन जा रहा था।
पार्षद के दिमाग में पहले से ही एक योजना बन रही थी।

खोज

जल यंत्र की स्पष्ट ध्वनि से निर्देशित होकर, शुक्राचार्य बगीचे में फैली झाड़ियों से भरी पगडंडियों में से एक से होते हुए संगमरमर के मंडप की ओर बढ़े। उनके कदम उस सुबह की तुलना में कहीं अधिक दृढ़ थे जब उनकी जयंत से पहली मुलाकात हुई थी। उस दिन वे सतर्क थे और अपने शिकार के चारों ओर चक्कर लगा रहे थे; आज वे उसे अपने जाल में फंसाने के लिए दृढ़ संकल्पित थे।

इसका यह अर्थ नहीं था कि उसने उर्वशी को जयंत के प्रति आकर्षित करने की कोई तरकीब खोज ली थी। बल्कि, असुरों का गुरु अप्सरा का स्नेह जीतने के अपने सुझावों की खोखलेपन से भलीभांति परिचित था और उसे डर था कि जयंत उसकी चाल को समझ जाएगा। फिर भी, समय कम था और इंद्र और मानव राजा के मिलने से पहले उसे अहि को जागृत करने वाले मंत्रों को प्राप्त करने के लिए प्रयास करना ही था। इसलिए, उसने राजकुमार का इंतजार किया और चुपके से उसके पीछे-पीछे उद्यान में चला गया। उसका दांव इस उम्मीद पर टिका था कि उर्वशी के प्रति देव की इच्छा अंततः उसकी सामान्य बुद्धि से कहीं अधिक होगी।

मंडप की सीढ़ियाँ चढ़कर और उसकी सुखद छाया में शरण लेकर, प्रधान पुजारी ने तालाब के किनारे स्थित चबूतरे की खोज की, जहाँ उन्हें पता था कि जल यंत्र और उसे बजाने वाला मौजूद होंगे। उनकी यह इच्छा पूरी हुई कि युवा राजकुमार उनकी ओर पीठ करके बैठे, लयबद्ध ढंग से पीतल के प्याले बजाते और संगीत में खोए हुए अपना सिर हिलाते हुए दिखाई दें; एक क्षण के लिए प्रधान पुजारी भी उस आनंद में

डूब गए। फिर, अपने आप को उस कार्य पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मजबूर करते हुए, जिसके लिए वे यहाँ आए थे, शुक्राचार्य तालाब और चबूतरे की ओर जाने वाली सीढ़ियों से नीचे उतरने लगे।

संगमरमर की चौड़ी सीढ़ियों से आधे रास्ते नीचे उतरते हुए और अपने लक्ष्य के करीब पहुँचते ही, मुख्य पुरोहित को अचानक कुछ गड़बड़ का आभास हुआ। एक तो उन्हें लगा कि कोई उन्हें देख रहा है। और जैसे ही उनकी नज़र मंडप के अंदर के अँधेरे में अभ्यस्त हुई, उन्हें लगा कि जल यंत्र के सामने बैठा वादक इंद्र के पुत्र के लिए कुछ ज़्यादा ही भारी-भरकम है। शुक्राचार्य जहाँ खड़े थे वहीं जम गए, लेकिन इससे पहले कि वे कोई और प्रतिक्रिया दे पाते, एक जानी-पहचानी आवाज़ ने उन्हें पुकारा।

मुझे याद नहीं आता कि आपने कभी संगीत में इतनी गहरी रुचि विकसित की हो। क्या यह आपका हालिया शौक है?

धीरे से मुड़कर शुक्राचार्य ने पीछे मुड़कर देखा, जहाँ बृहस्पति एक स्तंभ के पीछे से प्रकट हुए थे। मोटे-ताज़े दरबारी के चिकने चेहरे पर धूर्तता और श्रेष्ठता का भाव था, और उनका लंगड़ाते हुए पैरों से सीढ़ियों से नीचे उतरते समय उनका व्यवहार तिरस्कारपूर्ण था। शुक्राचार्य अपने पुराने प्रतिद्वंद्वी के निकट आने का इंतज़ार करने लगे, ताकि उनकी आँखें एक-दूसरे के सामने आ सकें।

"व्यक्ति जितना हो सके उतना सीखने का प्रयास करता है, जो कि दूसरों के बारे में नहीं कहा जा सकता, जो पुरानी आदतों और पुरानी मूर्खताओं को ही अपनी पहचान का आधार बनाने में खुश रहते हैं।"

“जी हाँ, जी हाँ,” बृहस्पति ने एक हाथ से अपने सिर के सफेद बालों को सहलाते हुए कहा। “तो फिर, मुझे लगता है कि तुमने अपनी पढ़ाई पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया है। वरना, तुम समझ जाते कि वह,” शुक्राचार्य ने महसूस किया कि वादक ने बजाना बंद कर दिया था, “राजकुमार जयंत जितना प्रतिभाशाली नहीं है। और अगर तुम यह अंतर समझ पाते, तो तुम मेरे बिछाए इस जाल में नहीं फँसते।”

“जयंता? जाल?” महापुजारी ने अपनी इज्जत बचाने की कोशिश में हैरानी से अपनी दाढ़ी खुजलाई। “क्या तुम होश में हो, मेरे मित्र?”

बृहस्पति की मुस्कान फीकी और आनंदहीन थी। "निश्चित रूप से, तुम भी इतने मूर्ख तो नहीं होगे कि यह मान लो कि तुम्हें देवलोक में बिना निगरानी के घूमने दिया

जाएगा, और राजकुमार से दोस्ती करने के तुम्हारे प्रयास अनदेखे और अनसुने रह जाएंगे?"
"मुझे क्षमा करें, लेकिन मुझे नहीं पता था कि मेहमानों की जासूसी करना देव शिष्टाचार का नवीनतम चलन है।"
"शिष्टाचार, सम्मान की तरह, उन्हीं को दिया जाता है जो इसके योग्य होते हैं। कोई भी अतिथि होने के विशेषाधिकार का दुरुपयोग करके बदले में शिष्टाचार की अपेक्षा नहीं कर सकता।"
"राजकुमार से बात करना अब विशेषाधिकार का दुरुपयोग है?" शुक्राचार्य ने बनावटी हंसी के साथ कहा। "मुझे किसी के साथ की बहुत इच्छा थी; राजकुमार अकेले थे। हम अचानक मिल गए, इसलिए मैं उनसे बातचीत करने के लिए रुक गया। बस इतना ही था।"
"दो बातें," चैंबरलेन ने दो उंगलियां उठाते हुए कहा। "अगर आपको साथ की ज़रूरत है, तो आप अभी भी यहाँ क्यों हैं? हिरण्यक्ष कुछ दिन पहले पाताल के लिए रवाना हो गया। आप उसके साथ जा सकते थे। किसी ने आपको रुकने के लिए नहीं कहा है, तो फिर आपको क्या रोक रहा है? जिस तरह से मैं..."
शुक्राचार्य ने उग्र स्वर में बीच में ही टोकते हुए कहा, "मैं आपके स्वामी इंद्र का अतिथि हूँ।" उन्होंने बृहस्पति को उनकी औकात दिखाने के लिए 'स्वामी' शब्द पर विशेष जोर दिया। "मुझे आपके स्वामी के अलावा किसी और को यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि मैं अभी भी देवलोक में क्यों हूँ। लेकिन जैसा कि आपने पूछा है, मैं आपको बता दूँ कि मैंने इंद्र से कहा था कि मैं उनके लौटने का इंतजार करूँगा, ताकि हम आगे की रणनीति पर मिलकर निर्णय ले सकें।"
"ठीक है। लेकिन... लेकिन... जयंता की बात पर वापस आते हैं, मैं आपको बताता हूँ कि राजकुमार के साथ आपकी बातचीत उतनी मासूम क्यों नहीं है जितनी आप उसे बता रही हैं," बृहस्पति ने जवाब दिया। "आप जानती हैं कि जयंता के पास अहि को जगाने के लिए आवश्यक मंत्र हैं; आप यह भी जानती हैं कि केवल देव और असुर के मिलन से उत्पन्न संतान ही सर्प-ड्रैगन को वश में कर सकती है। जब मैं जयंता के अलावा अहि को वश में करने वालों की तलाश करता हूँ, तो केवल दो नाम सामने आते हैं - चंदासुर और अमरका। आपके पुत्र, आधे असुर। काश उनके पास भी मंत्र होते..."

"बकवास," प्रधान पुजारी ने मुस्कुराते हुए और सिर हिलाकर बात को टाल दिया, हालाँकि वह जानता था कि वह बृहस्पति को बेवकूफ नहीं बना रहा है। "तुम अपने डर के मारे बहुत ज्यादा पढ़ते हो।"

"अपनी बात को परखने के लिए मैंने यह छोटा सा जाल बिछाया," दरबारी ने ऐसे बोलना जारी रखा मानो शुक्राचार्य ने कुछ कहा ही न हो। उन्होंने उस देवता की ओर इशारा किया जो अब तालाब के किनारे आदरपूर्वक चुपचाप खड़े थे। "मैंने उन्हें जयंत की तरह कपड़े पहनाए, इस बगीचे में भेजा और जल यंत्र बजाने को कहा। और देखिए उनके पीछे क्या आया..." बृहस्पति मुस्कुराए और शुक्राचार्य को ऊपर से नीचे तक ऐसे देखा जैसे मधुमक्खियों का झुंड शहद के घड़े की ओर आकर्षित हो रहा हो।

"तुम हद से ज़्यादा सोचते हो, और मैंने तुम्हारे ऊपर अपना बहुत सारा समय बर्बाद कर दिया है।" अपनी कमज़ोरी को भांपते हुए और पीछे हटने की ज़रूरत समझते हुए, प्रधान पुजारी मुड़ा और मंडप से बाहर जाने वाली सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। "मुझे कभी-कभार साथ की ज़रूरत हो सकती है, लेकिन अगर तुम्हारे और अकेलेपन के बीच चुनाव करना हो, तो मैं हर बार अकेलापन ही चुनूंगा।"

शुक्राचार्य अभी धूप से भरे बगीचे की ओर जाने वाले मेहराब के पास ही पहुंचे थे कि तभी देवताओं के गुरु ने उन्हें पुकारा।

"आपको यह जानकर खुशी होगी कि देवलोक में आपके शेष प्रवास के दौरान आपको एकांत ही मिलेगा। क्योंकि जयंता से आपकी मुलाकात तो बिल्कुल नहीं होगी, इतना तो मैं आपको बता सकता हूँ। मैंने महल के पहरेदारों को निर्देश दे दिए हैं कि आगे से ऐसी कोई संभावना न रहे।"

*

शूरसेना के नज़रिए से तो शिकार बिल्कुल भी अच्छा नहीं चल रहा था। हाँ, उन्होंने एक शानदार बारहसिंगा को घेरकर मार गिराया था, इसके अलावा उन्होंने चार चित्तीदार हिरणों का वध किया था और कुछ तीतर भी पकड़े थे। शिकार दल के साथ चल रही गाड़ियों में इन जानवरों के शवों का ढेर लगा हुआ था। लेकिन बाघ और तेंदुए हाथ नहीं आ रहे थे, और अपनी पूरी कोशिश के बावजूद शाही खोजी और ढोल बजाने वाले उन्हें खुले में नहीं ला पाए थे। शूरसेना जानते थे कि कुछ दिन

ऐसे ही होते हैं, फिर भी उनके स्वाभिमान को ठेस पहुँच रही थी कि मगध के राजा के रूप में उनके पहले शिकार में उन्हें कोई खूंखार शिकार नहीं मिला। अगर वे अंधविश्वासी होते, तो इसे अपशगुन मानते, लेकिन न होने के कारण उन्होंने बस कोसते हुए आगे बढ़ते रहे, इस उम्मीद में कि कोई शिकारी जानवर आखिरकार दिखाई देगा।

भोर से ही यात्रा पर रहने के कारण, थके-हारे और निराश होकर, दल दोपहर के आसपास आराम और भोजन के लिए रुका था, तभी एक घुड़सवार यह खबर लेकर आया कि राजा भूमिपाला ने संगीतकार गजकेतु के बदले उनके राजनयिक पल्लवन को छोड़ने पर सहमति जताई है।

"अद्भुत!" शूरासेना ने अपनी टांग थपथपाते हुए कहा और उस दीवान पर उठ बैठ गए जिस पर वे लेटे हुए थे। उन्होंने कपिला और जनरल दैपायाना की ओर मुस्कुराते हुए देखा, जो उनके लिए लगाए गए तंबू में उनके साथ थे। "बिल्कुल वैसा ही जैसा मैंने आशा और अपेक्षा की थी।"

"जी हां, महाराज," दैपायन ने अपने दागदार और टेढ़े-मेढ़े दांतों के बीच मुस्कुराते हुए कहा। "भूमिपाला के व्यवहार का सही अनुमान लगाना और उसे जासूसी और छल के उसी खेल में फंसा देना आपकी बड़ी चतुराई थी। आप सलाम के पात्र हैं, महाराज।" नशे में लड़खड़ाते हुए उसने शराब का घड़ा उठाया और उसमें से थोड़ी सी शराब अपने प्याले में डाली, फिर उसे उठाकर सलामी दी। "मगध के राजा को सलाम!"

"भाई, जब हम इस संगीतकार को गिरिव्रजा ले आएंगे, तो आप इसके साथ क्या करने का इरादा रखते हैं?" कपिला ने पूछा।

"वह कभी गिरिव्रज में कदम नहीं रखेगा," शूरासेना ने खड़े होते हुए उत्तर दिया। "यह बहुत खतरनाक है। वह बहुत कुछ जानता है। मैं नहीं चाहता कि किसी को भी, गलती से भी, उसके ज्ञान का पता चले।" राजा ने तंबू का पर्दा हटाकर जंगल की ओर देखा, जहाँ हल्की बूंदा-बांदी हो रही थी। "नहीं, हम उसे मार डालेंगे और अदला-बदली पूरी होते ही उसे दफना देंगे।"

चाहे भूमिपाल के विनम्रतापूर्वक आत्मसमर्पण की खबर हो या ठंडक देने वाली बारिश, शूरसेना का मन प्रसन्न हो गया और वह संतुष्ट मुस्कान के साथ अपने भाई और सेनापति की ओर मुड़ा। "पहले तो राजा हरिहर ने मुझे अपनी पुत्री का हाथ

दिया, और अब भूमिपाल ने दुम दबाकर कुत्ते की तरह हमारी मांगें मान लीं। याद रखो, ये सिंधुवर्त के शक्तिशाली राज्य हैं। हेहेया और कोसल। वे हमें हमारे असली रूप में देखते हैं... मगध, आशा, शक्ति और प्रतिष्ठा की भूमि। एक दिन, निकट भविष्य में, हम उन्हें अपने पैरों तले जंजीरों में जकड़ लेंगे। अवंती समेत उनमें से हर एक को।"

"भाई, एक तरह से हमने उन्हें जंजीरों में जकड़कर बंधक बना लिया है," कपिला ने कहा। "मैंने सुना है कि दंडकभुक्ति से लोहे के व्यापार पर लगाए गए हमारे प्रतिबंधों का असर सिंधुवर्त के अन्य राज्यों पर पड़ना शुरू हो गया है। लोहे की कीमत दोगुनी हो गई है, और फिर भी बाजार में लगभग कुछ भी नहीं है। जल्द ही सभी हताश हो जाएंगे।"

"अभी तो लोहे का बोलबाला है," राजा ने हंसते हुए अपने लिए शराब डाली। "देखो, फिर क्या होता है जब हम मगध से होकर पश्चिम की ओर जाने वाले सभी सामानों पर कर लगाना शुरू कर देंगे। प्राग्ज्योतिषपुरा की घाटियों से सागौन, बांस और मसाले, वंगा से उत्तम और सुगंधित चावल, श्रीभोज और श्रीविजय से रेशम, रंग और मोती... हमारे पड़ोसी अपनी हर ज़रूरत की चीज़ के लिए ज़्यादा कीमत चुकाएंगे, जब तक कि वे हमारी कुछ मांगें नहीं मान लेते। ऐसे कर जो उन्हें व्यापारिक रियायतें दिलाएंगे, लेकिन हमें उन पर अधिक शक्ति और प्रभाव प्रदान करेंगे, ऐसे सैन्य गठबंधन जो हमारे लिए फायदेमंद होंगे... बस देखते रहो।"

"जी महाराज, लेकिन सिंधुवर्त राज्यों का गला घोंटने के लिए, हमें सबसे पहले ओद्रा और कलिंग पर तेज़ी से कार्रवाई करनी होगी," दैपायन ने कहा। "ताम्रलिप्ति पर नियंत्रण करने का कोई लाभ नहीं है यदि तोसाली और उत्तरा तोसाली बंदरगाहों से माल का प्रवाह निर्बाध रूप से जारी रह सकता है। और ओद्रा में स्थित लौह अयस्क की खानों को भी न भूलें। यहाँ भंडार दंडकभुक्ति की तुलना में प्रचुर मात्रा में न हों, लेकिन अयस्क की गुणवत्ता उत्कृष्ट है। हमें वहाँ से भी सभी आपूर्ति रोकनी होगी।"

"निःसंदेह, सेनापति।" शूरासेना ने शराब का एक लंबा घूंट लिया। "संगीतकार से जुड़ा यह मामला सुलझते ही, मैं अपना सारा ध्यान कलिंग और ओड्रा पर केंद्रित करने का इरादा रखता हूँ। वास्तव में," उन्होंने कपिला की ओर देखते हुए कहा, "मैं चाहता हूँ कि आप तुरंत ताम्रलिप्ति के लिए प्रस्थान करें।"

कपिला ने चुपचाप एक बार सिर हिलाया।

"जब आप वहां पहुंचें, तो भद्रका और मगध के प्रति निष्ठा की शपथ लेने वाले बाकी वांगा सरदारों से मिलें और उन्हें उत्तरा तोसाली पर आक्रमण करने की हमारी योजना से अवगत कराएं।"

“क्या यह बुद्धिमानी होगी, महाराज?” दैपायना ने पूछा। “उन पर इतनी जल्दी भरोसा करना?”

“महाराज, हमारे पास क्या विकल्प है?” राजा ने अपनी सँवारी हुई दाढ़ी सहलाते हुए पूछा। “यदि हमें तोसाली और उत्तरा तोसाली पर विजय प्राप्त करनी है, तो समुद्र के रास्ते ही करनी होगी। हमें जहाजों की आवश्यकता है, और ऐसे लोगों की भी जो उन जहाजों को चला सकें और समुद्र में मार्ग प्रशस्त कर सकें। मुझे नहीं पता कि मगध में ऐसे लोग हैं या नहीं, लेकिन वंगा में तो अवश्य हैं। ओद्रा और कलिंग पर विजय प्राप्त करने के लिए हमें वंगा के सरदारों की सहायता की आवश्यकता है।”

“भाई, मैं तुम्हारी बात समझ गया, लेकिन सेनापति की बात में दम है।” कपिला आगे झुकी। “क्या वांगा सरदारों पर भरोसा किया जा सकता है कि वे रानी अभिरामी और राजा वीरयंका के दरबार में चेतावनी नहीं भेजेंगे? उन्होंने हमारे प्रति वफादारी की शपथ ली थी, लेकिन क्या उनकी वफादारी अब भी पूरी है? उनके लिए, हम अभी भी आक्रमणकारी हैं जिन्होंने जबरदस्ती उनकी ज़मीन छीन ली है—और उस ज़मीन पर शासन करने का उनका अधिकार भी।”

“आप सही कह रहे हैं। इसीलिए, अब समय आ गया है कि हम उन्हें बता दें कि हम वास्तव में उनकी भूमि या उस पर शासन करने का उनका अधिकार नहीं छीन रहे हैं।” शूरासेना रुका और अपने भाई से अपने सेनापति की ओर देखा, जिन्होंने उलझन भरी निगाहों से एक-दूसरे को देखा। “जब आप ताम्रलिप्ति पहुँचेंगे, तो आप मेरी ओर से एक आधिकारिक घोषणा करेंगे, जिसमें भद्रक को वंगा का मुख्य राज्यपाल नियुक्त किया जाएगा। वह सभी रियासतों का प्रशासनिक प्रमुख और मगध राज्य का आधिकारिक प्रतिनिधि होगा।”

“भद्रक,” दैपायन ने आश्चर्य से कहा, लेकिन उनकी आँखों में धीरे-धीरे समझ आने का भाव भी झलक रहा था। “महाराज, यह एक चतुर चाल है।”

“वांगा के सरदारों में सबसे समझदार और महत्वाकांक्षी। उन्होंने जल्दी ही समझ लिया कि हमारे खिलाफ खड़े होने का कोई फायदा नहीं है, इसलिए उन्होंने जल्दी ही पाला बदल लिया। और उन्होंने दूसरे सरदारों को भी अपने साथ मिला लिया।

थोड़ा अवसरवादी, जो हमें खूब भाता है। उन्हें हमारा यह कदम पसंद आएगा, और वे यह सुनिश्चित करेंगे कि बाकी सरदार भी हमारी इच्छा का पालन करें।"
"भाई, मैं आज रात ताम्रलिप्ति के लिए रवाना हो जाऊँगा," कपिला ने कहा।
दैपायन के माथे पर चिंता की लकीरें उभर आईं और शूरसेना ने इसे तुरंत देख लिया। "महाराज, क्या कोई बात है?" राजा ने पूछा।
"माननीय महोदय, मैं बस यह जानना चाहता था... हम भद्रक को वंगा का मुख्य राज्यपाल बना रहे हैं। लेकिन हमने यह पद दरबारी असमबिंदु को देने का वादा पहले ही कर दिया है। आपको याद होगा कि यही वह सौदा था जो उसने उत्तम, दिगंत और भास्कर को बेनकाब करने और उन्हें तथा पल्लवन को हमारे हवाले करने के लिए हमसे किया था।"
"हम्म।" इस उलझन को देखकर शूरासेना की आँखों में अचानक गुस्सा और नाखुशी झलकने लगी।
"माननीय न्यायाधीश, हम इस समस्या का समाधान कैसे करें?"
शूरासेना उठी और तंबू के द्वार पर जाकर खड़ी हो गई, हरे-भरे जंगल की ओर निहारने लगी। ऊपर हल्की बारिश की बूँदें पत्तों पर पड़ रही थीं और तंबू के भारी कपड़े पर टपक रही थीं।
"यह बहुत बुरा है कि अस्माबिंदु भी यह पद चाहता है," राजा ने अंत में अपने चौड़े कंधों को बेबसी से झुकाते हुए कहा। "उसे यह पद नहीं मिल सकता। कम से कम अभी तो नहीं। शायद भद्रक का काम पूरा होने के बाद। राज्यपाल के रूप में भद्रक का मूल्य अस्माबिंदु से कहीं अधिक होगा। इसलिए नहीं... भद्रक ही रहेगा।" वह दैपायन की ओर मुड़ा। "अस्माबिंदु को मुआवज़ा देने का कोई और तरीका ढूंढो। उसे किसी चीज़ का मुखिया बना दो... या... शायद उसे धन दे दो। जो ज़रूरी हो वही करो।" शूरसेना ने हाथ हिलाकर बात को टाल दिया। "मुझे लगता है कि अब गिरिव्रज लौटने का समय हो गया है। हमें पल्लवन की अदला-बदली की तैयारी करनी होगी, और देर हो रही है..."
ठीक उसी समय, एक सैनिक तंबू में पहुँचा। उसने झुककर कहा, "महामहिम, खोजकर्ताओं ने घाटी में आगे दक्षिण की ओर एक मील दूर एक बाघ को देखा है।"
"सचमुच? इतना करीब?" शूरसेना ने चमकती आँखों से कपिला और दैपायन की ओर देखा। "अपने धनुष उठाओ। चलो चलें।"

मुझे लगा आपने अभी कहा था कि देर हो रही है और...
"हाँ, भाई, देर हो रही है," राजा ने कपिला की बात काटते हुए मुस्कुराते हुए कहा। "लेकिन तुमने उसकी बात सुन ली। बाघ बस एक मील दूर है। अगर जो तुम दिल से चाहते हो, वो तुम्हारे बिल्कुल करीब है और तुम उसे पाने के लिए नहीं जाते, तो ये मूर्खता है। चाहे वो बाघ हो, ताज हो या सिंधुवर्त जितना बड़ा साम्राज्य, अगर वो तुम्हारे हाथ में है, तो उसे जरूर हासिल करो।"

*

"उन्होंने उसे बंधक बना लिया है। क्या आपको इसका एहसास है? बंधक!"
प्रलूपी की तीखी बड़बड़ाहट एक कर्कश चीख में बदल गई, और शंकु तुरंत धीमा हो गया, फिर सम्राट के कक्षों से सटे चबूतरे के दरवाजे से कुछ फीट की दूरी पर रुक गया।
"मैं समझता हूँ, बहन," विक्रमादित्य का स्वर धैर्यपूर्ण था, लेकिन थका हुआ भी। "इसीलिए मैंने आपको संदेश भेजा था, जिसमें मैंने आपको घटकर्परा के बारे में मिली जानकारी दी थी।"
"इसलिए?"
"तो...?" राजा ने प्रश्न को दोहराया, क्योंकि वह प्रलूपी के प्रश्न का अर्थ नहीं समझ पा रहा था।
तो क्या तुम बस यहीं खड़े रहोगे, कुछ नहीं करोगे?
"अमरा सिंह संसप्तकों की सेना लेकर सीमा की ओर रवाना हो चुके हैं। क्या दूत ने मेरा पूरा संदेश नहीं पहुँचाया?" सम्राट ने झुंझलाहट भरे स्वर में कहा। "सलाहकार घातकपर की खोज में महान रेगिस्तान में जा रहे हैं।"
"मुझे पता है," प्रलूपी ने झट से जवाब दिया। "लेकिन अमारा सिम्हा अकेले क्यों गए हैं? उनके साथ और पार्षद क्यों नहीं गए? वे अकेले क्या कर सकते हैं, वे कहाँ-कहाँ खोजबीन कर सकते हैं?"
"वह अकेला नहीं है। उसकी मदद के लिए वहां एक सेना मौजूद है।"
"छी!" प्रलूपी ने उपेक्षा भरे लहजे में कहा। "तुम्हें चले जाना चाहिए था। तुम्हें जाना चाहिए। तुम अभी भी जा सकते हो।"

शंकु सोच रही थी कि क्या उसे कुछ देर के लिए चले जाना चाहिए और थोड़ी देर बाद लौट आना चाहिए। उसे राजा की बातचीत छुपकर सुनने का विचार पसंद नहीं था, लेकिन महल के सेवक ने ज़ोर देकर कहा था कि राजा उससे तुरंत मिलना चाहते हैं।

"बहन, मैं नहीं जा सकता, क्योंकि उज्जैनी को मेरी ज़रूरत है। इसी कारण मैं अमर सिंह के साथ और पार्षद नहीं भेज सकता। नगर को देवताओं और असुरों से सुरक्षा की आवश्यकता है।"

"क्या मेरे बेटे से ज़्यादा तुम्हें यह शहर और यहाँ के लोग महत्वपूर्ण लगते हैं?" प्रालुपी ने ताना मारा। "अरे, ये सोचकर ही दुख होता है कि मेरा बेटा इसी शहर और सिंहासन की सेवा करना चाहता है।"

"मेरे लिए यह शहर और यहाँ के लोग उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितना कि घटाकरपारा," विक्रमादित्य ने कठोर स्वर में कहा। "मुझे लगता है कि आपका बेटा इस बात को आपसे कहीं बेहतर समझता है।"

"तो बस यही बात है—न तो तुम खुद जाओगे, न ही मेरे बेटे को बचाने के लिए और पार्षद भेजोगे?" प्रलूपी की आवाज़ चुनौती भरे लहजे में ऊंची उठी, कठोर और अटल। "तुम्हारे भाई वरारुचि का क्या? मुझे तो वो शहर की रक्षा करते कहीं नज़र नहीं आ रहे।" शंकु को आखिरी तीन शब्दों में छिपे व्यंग्य पर थोड़ी झुंझलाहट हुई। "उसे मेरे बेटे को ढूंढने भेजो।"

"वरारुचि हमारा भाई है, चाहे आपको पसंद हो या न हो। और नहीं, कोई और नहीं जाएगा, शहर को इंद्र और शुक्राचार्य की अगली योजना के भरोसे छोड़कर।

"जो चाहो करो, लेकिन तुम मेरे बेटे के मामा बनने के लायक नहीं हो," प्रलूपी की आवाज़ गुस्से और कुंठा से भर उठी, और शंकु को लगा कि वह औरत बाहर निकलने के लिए, उसकी तरफ बढ़ रही है। "मैंने इससे ज़्यादा बेरहम और बेपरवाह आदमी कभी नहीं देखा। मैंने ऐसा क्या किया था कि तुम्हें भाई के रूप में पाया?"

प्रलूपी आंसू भरी आंखों और पीड़ा में छत से निकली, और शंकु को टक्कर से बचने के लिए जल्दी से पीछे हटना पड़ा। उनकी नज़रें मिलीं, लेकिन अगर प्रलूपी ने शंकु को पहचाना भी तो उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं आया, क्योंकि वह तेज़ी से आगे बढ़ते हुए गैलरी से नीचे चली गई, मानो कोई तूफ़ान चल रहा हो। शंकु ने उसे एक पल के लिए देखा, फिर मुड़कर दरवाजे से बाहर निकल गया।

“शंकुबाला, तुम यहाँ हो,” सम्राट ने थके हुए स्वर में, लेकिन कुछ राहत के साथ कहा। “भाग्यशाली हो कि उस बवंडर में उड़ नहीं गए।” उनकी आँखों में हास्य की झलक थी।
"मुझे माफ करना, लेकिन मैंने अनजाने में कुछ बातें सुन लीं," लड़की ने हल्की मुस्कान के साथ जवाब दिया।
“जिस तरह से वह बोल रही थी, मुझे आश्चर्य नहीं होगा अगर उज्जैन के आधे लोग जानते हों कि क्या कहा गया था,” राजा मुस्कुराया, और शंकु अपनी हंसी नहीं रोक सका।
“तुम मुझसे मिलना चाहते थे?”
"हाँ।"
विक्रमादित्य मुड़े और प्राचीर की ओर चल पड़े। पत्थर की रेलिंग पर हाथ टिकाकर वे झील की ओर देखने लगे, जो दोपहर की हल्की धूप में जगमगा रही थी। शंकु कुछ कदम अंदर आईं और लताओं से घिरे एक मेहराब के नीचे रुक गईं। वे राजा के बोलने का इंतज़ार करने लगीं। अंत में, विक्रमादित्य ने उनकी ओर मुड़कर उन्हें निहारा।
"मुझे लगता है कि आपको हाल ही में अपने पिता से कोई संदेश मिला है?"
लड़की का चेहरा तुरंत सख्त हो गया। "जी सम्राट। क्या तुमने यह बात देवी से सुनी?"
“तुम्हारी दादी मुझे यह क्यों बताएंगी? नहीं,” विक्रमादित्य ने सिर हिलाते हुए कहा। “मैंने यह उनसे सुना है।”
“वह?” शंकु ने सम्राट की ओर देखते हुए पलकें झपकाईं। “मेरे पिता से?”
विक्रमादित्य ने सिर हिलाया। “उसने एक घंटे पहले एक गार्ड के ज़रिए मुझे संदेश भेजा था। संदेश में लिखा था कि वह आपसे मिलने की कोशिश कर रहा है।”
“उसने एक गार्ड के जरिए मुझे संदेश भी भेजा था,” लड़की ने पुष्टि की। “कुछ दिन पहले।”
"तुम जानती हो कि वह चाहता है कि तुम उसे माफ कर दो।"
यह कोई सवाल नहीं था, इसलिए शंकु ने जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, उसने अपना सिर झुकाया और संगमरमर के फर्श पर बने पैटर्न को ध्यान से देखने लगी।

“जानते हो दिलचस्प बात क्या है? तुम्हारे पिता ने मुझे भेजे अपने संदेश में मुझसे एक बार भी क्षमा नहीं मांगी। लेकिन उन्होंने मुझसे कहा कि वे तुमसे क्षमा मांग रहे हैं।”
"उसके लिए तो बहुत बुरा हुआ," शंकु ने कड़े स्वर में जवाब दिया और अपना सिर हिलाया।
सम्राट ने गहरी सांस ली और झील के दूर किनारे की ओर देखने लगे। “क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि उसने मुझे संदेश क्यों भेजा? उसका संदेश किस बारे में था?”
शंकु राजा के चेहरे को निहार रहा था, उसे नहीं पता था कि आगे क्या होने वाला है।
विक्रमादित्य ने कुछ पल के लिए सस्पेंस बनाए रखा, फिर लड़की की ओर देखा। “उसका दावा है कि वह किसी ऐसे व्यक्ति को जानता है जो दंडक वन से भाग निकला है, और वह कहता है कि वह उस व्यक्ति के ठिकाने के बारे में हमें जानकारी दे सकता है।”
“यह व्यक्ति कौन है और वह कहाँ है?”
राजा ने कंधे उचकाते हुए कहा, "तुम्हारे पिता नहीं बता रहे हैं। वे किसी को नहीं बता रहे हैं। उनका कहना है कि वे यह जानकारी केवल एक ही व्यक्ति के साथ साझा करेंगे।"
शंकु की आंखें समझ आने पर चौड़ी हो गईं, फिर तुरंत सिकुड़ गईं। "वह सोने के सिक्कों के लिए ऐसा कर रहा है।"
"अगर इससे कोई मदद मिलती है तो बता दूं कि उन्होंने इनाम का कोई जिक्र नहीं किया।"
“यह मुझसे मिलने की एक चाल है,” लड़की ने दृढ़ता से कहा। “उसे कुछ नहीं पता।”
विक्रमादित्य ने जिस रेलिंग का सहारा लिया था, उससे उठकर शंकु के पास जाकर कहा, “हो सकता है तुम सही कह रहे हो, शंकुबल। लेकिन क्या पता वो हमें सच बता रहा हो? क्या पता वो किसी ऐसे व्यक्ति को जानता हो जो वनवास से भाग निकला हो, कोई ऐसा व्यक्ति जो हमें वापस ले जा सके?”
लड़की ने कोई जवाब नहीं दिया। उसे चुपचाप और उदास खड़े, कहीं और घूरते हुए देखकर, सम्राट आगे बढ़ा और उसके कंधों पर हाथ रखा। “मैं तुमसे उससे मिलने जाने के लिए नहीं कह सकता...”

"तुम कर सकते हो," शंकु ने मंद स्वर में कहा। "तुम मेरे राजा हो।"
"मैं तुम्हें तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध उससे मिलने के लिए नहीं कहूँगा," विक्रमादित्य ने अपनी बात सुधारते हुए कहा। "ब्रिच्छा झूठ बोल रहा हो या न बोल रहा हो, लेकिन अगर तुम्हें लगता है कि यह तुम्हें उससे मिलवाने के लिए एक सोची-समझी चाल है, तो हम इसकी इजाज़त नहीं देंगे। मुझे खेद है कि मैंने यह बात उठाई।"
शंकु ने सम्राट के चेहरे की ओर देखा। उनकी आँखों में आशा धीरे-धीरे मिटती जा रही थी, और निराशा और बेबसी हावी होती जा रही थी। सम्राट ने अपने हाथ शंकु के कंधों से हटाकर अपने बगल में लटका लिए।
"आप जा सकते हैं," उसने जल्दी से सिर हिलाया और मुस्कुराने की कोशिश की, लेकिन मुस्कान उसकी आँखों तक नहीं पहुँची। फिर, एक नया विचार उसके मन में आया और उसने लड़की से कहा, "कृपा करके मेरी एक मदद कीजिए। मुझे बड़ी-माँ के घर वरारुचि के लिए एक संदेश लेकर जाने के लिए एक घुड़सवार की ज़रूरत है। उसे घातकपारा के अपहरण के बारे में पता होना चाहिए। साथ ही, अमर सिंह के न रहने से, अगर वरारुचि उज्जैन की रक्षा के लिए वापस आ जाए तो अच्छा होगा। घुड़सवार को तुरंत भेज दीजिए।"
शंकु ने अपना सिर झुकाया। मुड़कर वह बिना कुछ कहे छत से चली गई।

*

उदयपुरी की चौकी की ओर जाने वाला द्वार चौड़ा और भव्य था, जो भारी लोहे की लकड़ी से बना था और काले लोहे की मोटी पट्टियों से मजबूत किया गया था। इसका ऊँचा मेहराब, जिसके दोनों ओर तीरंदाजों के लिए कवचनुमा बाड़ें थीं, देखने वाले की नज़र को अपनी ओर खींच लेता था, और चारों ओर बनी पत्थर और गारे की दीवार के साथ मिलकर यह आसपास की शहर की इमारतों को बौना बना देता था। द्वार इस समय खुला हुआ था, जिससे अंदर के चौड़े प्रांगण और किले के कुछ हिस्से दिखाई दे रहे थे। सैनिक मेहराब के नीचे से तेज़ी से अंदर-बाहर आ-जा रहे थे। मधुमक्खी के छत्ते जैसी हलचल को देखकर अपारूपा ने अनुमान लगाया कि कोई महत्वपूर्ण घटना होने वाली है।
"वह कहीं नज़र नहीं आ रहा?" उसने अपना सिर बाईं ओर खड़े आदमी की तरफ आधा घुमाते हुए पूछा, उसकी निगाहें अभी भी गेट पर टिकी हुई थीं। उसके चेहरे

पर मानो चिंता की लकीरें छाई हुई थीं।
अपारूपा की दासी का बेटा द्विजा, द्वार की ओर मूर्खतापूर्ण ढंग से दो-तीन बार पलकें झपकाता रहा, फिर उसकी नज़र दीवार पर टिक गई। "आई...आई..." उसने सिर हिलाते हुए कहा, जिसका अर्थ कुछ भी हो सकता था, लेकिन अपारूपा को वह अर्थ समझ आ गया।
“मुझे भी वो दिखाई नहीं दे रहा,” उसने एक लंबी आह भरते हुए कहा। गर्दन घुमाकर उसने सीमा रक्षकों के एक समूह की ओर देखा जो पहरेदारों से बातचीत करने के लिए रुके हुए थे। “थोड़ी देर और इंतज़ार करते हैं।”
सच तो यह है कि लड़की सुबह से ही चौकी के द्वार के सामने वाले पेड़ के नीचे खड़ी थी और दोपहर का खाना खत्म होते ही द्विज के साथ वहीं लौट आई थी। जैसे-जैसे दोपहर ढलती गई और परछाइयाँ ज़मीन पर रेंगती और लंबी होती गईं, उसकी बेचैनी बढ़ती ही गई, और वह बढ़ती हुई हताशा को काबू में रखने की कोशिश करती रही। उसने सैनिक को आखिरी बार चार दिन पहले देखा था और उससे तीन दिन से कोई खबर नहीं मिली थी।
तीन दिन पहले, जब अपारूपा अपने बिस्तर पर आराम से लेटी हुई, उसके द्वारा उपहार में दी गई सांप की चूड़ी घुमा रही थी और खुशियों भरे विचारों में खोई हुई मुस्कुरा रही थी, तभी खुली खिड़की से बांस के एक भारी टुकड़े से बंधा एक ताड़ का पत्ता अंदर आ गिरा। पत्ते पर सिपाही का एक छोटा सा संदेश था, जिसमें उसने बताया था कि वह किसी काम में व्यस्त है और उस शाम उससे मिल नहीं पाएगा। हालांकि अपारूपा निराश थी, फिर भी उसने वह पत्ता ले लिया। अगला दिन भी बिना उसकी ओर से कोई खबर आए बीत गया, और जब अगले दिन - यानी कल - भी कोई खबर नहीं आई, तो वह इस उम्मीद में उनके तय किए गए मिलने के स्थान पर गई कि वह हमेशा की तरह आ जाएगा। वह बड़े पत्थर के पास घास पर बैठी, शाम ढलते हुए देख रही थी, झरने की धीमी कलकल ध्वनि के बीच उसके कदमों की आहट सुनने की कोशिश कर रही थी, लेकिन वह नहीं आया। जब वह आखिरकार घर लौटने के लिए उठी, तब तक लगभग अंधेरा हो चुका था। वह उसकी अनुपस्थिति से परेशान, गम से भरी और तड़प से बेहाल थी।
और अब, लगभग पूरा दिन बीत चुका था, और अभी भी उसकी तरफ से कोई खबर नहीं थी, उसके ठिकाने का कोई संकेत नहीं था।

“मुझे यकीन है कि पहले संदेश के अलावा उससे कोई और संदेश नहीं आया था,” उसने कहा, आधा द्विज से और आधा खुद से। सहज ही उसने अपने दाहिने हाथ में पहनी हुई बांस की चूड़ी को छुआ। “मैंने हर जगह देखा... कुछ नहीं मिला।”
दूर बाईं ओर से ढोल की आवाज़ आती सुनाई दी। अपारूपा और द्विज ने मुड़कर देखा तो गले में ढोल लटकाए दो आदमी एक गली से निकले और किले से दूर शहर के केंद्र की ओर चल पड़े। उनके पीछे बच्चों का एक छोटा सा समूह था, जो ढोल बजाने वालों को देखकर शोर मचा रहा था और उत्साहित था। द्विज भी यह नज़ारा देखकर मंत्रमुग्ध हो गई और उस छोटे से जुलूस को देखती रही, लेकिन फिर वह द्वार की ओर देखने लगी। सुबह से ही नगर के उद्घोषक ढोल बजा रहे थे और निर्वासितों के जंगल से भागे हुए लोगों के बारे में कुछ घोषणा कर रहे थे, और यह भी बता रहे थे कि सूचना देने वाले को महल से बड़ा इनाम मिलेगा। इनाम मिले या न मिले, अपारूपा को दंडक से भागे हुए लोगों की ज़रा भी परवाह नहीं थी। उस पल उसे बस अपने प्रिय को ढूंढने की चिंता थी।
अचानक, मानो उसने मन बना लिया हो, उसने अपनी नौकरानी के बेटे का हाथ पकड़ लिया। "आओ।"
द्विज को अपने पीछे खींचते हुए, अपारूपा ने अचानक ही फाटक की ओर कदम बढ़ा दिया, जहाँ कुछ क्षणों के लिए लोगों का आना-जाना थम गया। लेकिन सड़क के दूसरी ओर पहुँचते ही वह अनिश्चितता से घिर कर झिझक उठी।
“जी?” एक संतरी ने भौंहें उठाकर उन दोनों की ओर देखा। “तुम क्या चाहते हो?”
अपारूपा संभलकर द्वार की ओर बढ़ी, उसे इस बात का एहसास था कि तीन निगाहें उस पर टिकी हुई हैं। "मैं... मुझे एक सैनिक की तलाश है," उसने किसी तरह कहा।
“यहां बहुत सारे सैनिक हैं,” संतरी ने उत्तर दिया। “यह एक बड़ी चौकी है।”
“उनका नाम घटराज है।”
संतरी ने अपना सिर हिलाया; उसके लिए उस नाम का कोई मतलब नहीं था। उसने बातचीत सुन चुके बाकी दो संतरियों की ओर देखा। दोनों ने कंधे उचकाए और सिर हिलाकर अपनी अनभिज्ञता जाहिर की।
“मुझे उसे ढूंढना ही होगा,” उसकी आवाज़ में विनती का भाव आ गया। “क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं, कृपया?”

पहरेदारों ने एक-दूसरे की ओर देखा, फिर बोलने वाले ने बेबसी से कंधे उचका दिए। "हम ड्यूटी पर हैं। और हम उस सैनिक को नहीं जानते जिसके बारे में आप बात कर रहे हैं।"
“क्या कोई ऐसी जगह है जहाँ मैं जाकर पूछ सकूँ, या कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे पता हो?” अपारूपा की आवाज़ हताशा से काँप उठी और लड़खड़ा गई।
“मुझे... पता नहीं...” लड़की की दयनीय हालत देखकर संतरी इतना दुखी हुआ कि उसकी मदद करना चाहता था, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि कैसे करे।
“शायद आपको...”
किले के अंदर से घोड़ों के खुरों की आवाज से उनकी बात में खलल पड़ा, और कुछ ही क्षणों बाद, चार घुड़सवारों का एक दल अचानक सामने आ गया। अपारूपा और द्विजा उनके रास्ते में आ गए थे, और घुड़सवारों को घोड़ों को उन दोनों के ऊपर से गुजरने से रोकने के लिए तुरंत लगाम कसनी पड़ी।
“ये क्या है?” गुलाबी चेहरे और बड़ी-बड़ी भूरी मूंछों वाले एक घुड़सवार ने गरजते हुए कहा। संतरी की ओर मुड़कर उसने फटकार लगाई, “ये दोनों फाटक के सामने क्यों खड़े हैं? ये तो खुद को मरवा लेते और शायद हमें और भी बुरा हाल झेलना पड़ता। इन्हें हटाओ।”
“माफ़ कीजिए कप्तान,” संतरी ने धीमी आवाज़ में कहा और झुककर प्रणाम किया। फिर अचानक उसके मन में एक विचार आया और उसने कहा, “कप्तान, वे एक सैनिक की तलाश कर रहे हैं। एक सैनिक जिसका नाम...” उसने अपारूपा की ओर जिज्ञासा भरी नज़रों से देखा और उसे बोलने के लिए प्रेरित किया।
“घटराज,” लड़की ने जल्दी से कहा।
“तो?” कप्तान ने पहरेदार से अपारूपा और फिर द्विजा की ओर देखा, जो घुड़सवार की तीखी निगाहों से सहमकर अपारूपा के पीछे दुबक गई और हल्की सी सिसकी भरी। “तो क्या?” कप्तान ने फिर पूछा।
"यह उदयपुरी चौकी का दूसरा कप्तान है," संतरी ने अपारूपा को एक अर्थपूर्ण संकेत देते हुए सिर हिलाया।
“घटराजा... महोदय,” लड़की ने जल्दी से बात समझते हुए दोहराया। “मैं इसी नाम के एक सिपाही को ढूंढ रही हूँ, महोदय।”

थोड़ा शांत होकर कप्तान ने अपने तीनों साथियों की ओर देखा। हालाँकि, उनमें से किसी को भी वह नाम जाना-पहचाना नहीं लगा।
“वह किस सेना का सिपाही है, लड़की?” कप्तान ने पूछा। उसके भावहीन चेहरे को देखकर उसने आगे कहा, “क्या वह सीमा रक्षक दल का सिपाही है या शाही सेना का?”
“मुझे नहीं पता, महोदय। मुझे बस इतना पता है कि वह इस चौकी का एक सिपाही है। उसने मुझे यही बताया था।”
दो घुड़सवारों ने एक-दूसरे की ओर देखा और लड़की के भोलेपन पर सिर हिलाया। वहीं कप्तान ने frowning किया।
“इससे कोई फायदा नहीं,” उसने कहा। “इस चौकी में सीमा रक्षक, शाही सेना के सैनिक और यहाँ तक कि स्थानीय मिलिशिया के सदस्य भी हैं जो उदयपुरी के नहीं हैं।” वह रुका, फिर चिढ़कर बोला, “अरे, यहाँ तो अनार्ता और हेहेया जनजाति के सैनिक भी हैं, लड़की। तुम्हारा यह सैनिक इनमें से कोई भी हो सकता है।”
“महोदय, वह अवंती से हैं, महोदय। एक रेशम बुनकर के पुत्र हैं,” अपारूपा के मुंह से शब्द फूट पड़े।
"दुर्भाग्यवश, हम सैनिकों को उनके पिता के पेशे के आधार पर वर्गीकृत नहीं करते हैं। यदि आपको यह नहीं पता कि वह किस विभाग में कार्यरत है, तो उसे ढूंढना असंभव होगा।"
“महोदय, मेरी उनसे पहली मुलाकात बालिपुरा गाँव के पास, सीमावर्ती इलाके में हुई थी,” अपारूपा कप्तान से विनती करते हुए गिड़गिड़ा रही थी। “हाल ही में मेरी उनसे यहाँ दोबारा मुलाकात हुई, और वे चार दिन पहले तक यहीं थे। वे...”
“सुनो, लड़की,” कप्तान ने सख्ती से बीच में टोकते हुए कहा। “यह एक छावनी मुख्यालय है। यहाँ हर जगह से सैनिक आते हैं, और उन्हें सीमा पर स्थित कमान केंद्रों और चौकियों पर तैनात किया जाता है। यह शांति काल में भी नियमित प्रक्रिया है — और अब हम हुना-साका के संभावित आक्रमण का सामना कर रहे हैं।” उन्होंने अपने घोड़े को आगे बढ़ाया, अपारूपा और द्विजा से आगे निकलने की कोशिश करते हुए। “तुम्हारा सैनिक इस समय कहीं भी हो सकता है, और मैं अपना समय बर्बाद नहीं कर सकता...”
“सर, कृपया, किसी को तो पता होगा। इस बारे में कुछ रिकॉर्ड तो जरूर होंगे...”

“सुनो, लड़की। मेरी बात सुनो।” कप्तान ने अपनी आवाज़ तेज़ कर ली, उसका सब्र जवाब दे रहा था। जब उसे यकीन हो गया कि लड़की उसकी बात सुन रही है, तो उसने आगे कहा, “अभी मेरे पास इससे भी बड़ी समस्याएँ हैं। इस राज्य का एक राजकुमार लापता हो गया है, सम्राट का भतीजा। इसी चौकी से बिना किसी निशान के गायब हो गया है। अगर मुझे किसी को ढूंढना ही है, तो मैं अपना समय राजकुमार को ढूंढने में लगाना पसंद करूँगा, न कि तुम्हारी इस सिपाही को, समझी? अब हट जाओ और हमें जाने दो।”

सैनिकों का दल उनके पास से तेज़ी से गुज़रा और घोड़ों पर सवार होकर निकल गया। उनके जाने का समय शाही सेना की एक और पलटन के सैनिकों की छुट्टी के साथ मेल खाता था, जिसका नेतृत्व एक सख्त और निर्भीक रवैया रखने वाले कप्तान कर रहे थे। अपारूपा के कंधे हार से झुक गए, और जैसे ही वह मुड़ी, उसने देखा कि संतरी उसे सहानुभूति भरी नज़रों से देख रहा है। किसी तरह, वह नज़र दूसरे कप्तान की उदासीनता से भी ज़्यादा चुभी।

“चलो, द्विज, घर चलते हैं,” उसने कहा। हार मानकर सिर झुकाए चलते हुए उसने कड़वाहट से कहा, “ज़ाहिर है, वे राजकुमार को ही ढूँढेंगे, घटराज को नहीं। मेरे प्रेम के महत्व के बारे में उन्हें क्या समझ है, उन्हें क्या परवाह है?”

“आआ...” द्विज ने अपारूपा का हाथ दबाया। वह जानता था कि वह परेशान है, और उसके अपने होंठ भी नीचे की ओर मुड़ गए। “आउउउ...”

“कोई बात नहीं।” लड़की के सीने में निराशा का गहरा बोझ महसूस हो रहा था, और उसने अपनी आवाज़ को स्थिर रखने की पूरी कोशिश की। “हम उसे ढूंढते रहेंगे। हमें कोई नहीं रोक सकता।”

आगे का रास्ता धुंधला सा दिखाई देने लगा, क्योंकि लंबे समय से दबे हुए आंसू आखिरकार विद्रोह करते हुए उमड़ पड़े।

रहस्योद्घाटन

कोठरी की भारी लोहे की सलाखों के बीच से झांकते हुए उस आदमी की काली, तीखी आंखें मशालों की रोशनी को टिमटिमाते नारंगी धब्बों की तरह प्रतिबिंबित कर रही थीं। उसकी निगाहें आश्चर्य और अविश्वास के मिले-जुले भाव से टिकी हुई थीं, और उसने खुद को जमीन पर गिरने से रोकने के लिए कोठरी की सलाखों को कसकर पकड़ रखा था, क्योंकि उसके पैर कांप रहे थे, मानो किसी भी क्षण जवाब दे देंगे। अचानक उसकी आंखों में आंसू आ गए, और सलाखों को छोड़कर वह धीरे-धीरे दरवाजे से पीछे हट गया, कोठरी के गहरे अंधेरे में गायब हो गया।

शंकु कोठरी के दरवाजे से दस कदम बाहर, वहीं जड़वत खड़ी रह गई, यहाँ आने के फैसले को लेकर दुविधा में थी। उसके मन का एक हिस्सा उसे आश्वस्त कर रहा था कि उसने सही चुनाव किया है; दूसरा हिस्सा कह रहा था कि उसके पास अभी भी अपना फैसला बदलने और कालकोठरी से बाहर निकलने का समय है। यह महसूस करते हुए कि वह अपनी सांस रोके हुए है—और कोठरी में मौजूद आकृति अंधेरे में एक परछाई मात्र है—उसने सांस छोड़ी और दरवाजे के करीब गई।

"कृपया ताला खोल दीजिए," उसने अपने साथ चल रहे गार्ड से कहा, उसे इस बात का एहसास था कि उसका गला अजीब तरह से सूख गया था, जिससे उसकी आवाज थोड़ी लड़खड़ा रही थी।

कम तेल लगे कब्ज़ों पर दरवाज़ा खुल गया, धातु के आपस में रगड़ने की कर्कश आवाज़ आई। पास की दीवार पर लगे ब्रैकेट से टॉर्च लेकर पार्षद कोठरी में दाखिल

हुईं। टॉर्च की रोशनी से वह छोटी सी कोठरी रोशन हो गई, और शंकु ने देखा कि वह आदमी सबसे दूर वाली दीवार से सटकर घुटनों के बल बैठ गया था, उसका चेहरा हाथों में छिपा था, उसके कंधे कांप रहे थे और वह चुपचाप, बेकाबू होकर रो रहा था। पार्षद उस आदमी की ओर कुछ कदम बढ़ीं, फिर रुक गईं और अंदर आए गार्ड की ओर देखा। उनकी नज़रें मिलते ही गार्ड ने सम्मान से सिर झुकाया और कोठरी से बाहर निकल गया।

पीछे मुड़कर, शंकु कुछ बचे हुए कदम चलकर उस दुबके हुए व्यक्ति के सामने खड़ी हो गई। उसे स्पष्ट रूप से देखने के लिए टॉर्च ऊपर उठाते हुए, उसने अपनी आवाज़ को शांत और तथ्यात्मक रखने का प्रयास करते हुए बात की।

तुम मुझसे मिलना चाहते थे।

उस आदमी ने अपना सिर उठाया और पार्षद की ओर देखा, उसकी आँखों से अभी भी आँसू बह रहे थे। "आप आ गए," उसने राहत भरी भीगी हुई आवाज़ में कहा।

“हां,” शंकु ने गहरी सांस लेते हुए खुद को संभाला। “आपने ही मुझे आने के लिए ज़ोर दिया था।”

उस आदमी ने सिर हिलाया, फिर हथेलियों से अपनी आँखें पोंछीं और बांहों से अपने गालों को सुखाया। कुछ देर चुपचाप बैठा रहा और एक तरफ देखता रहा।

“मैं जानता हूँ कि तुम राजा के लिए आए हो, मेरे लिए नहीं,” उसने एक बार सिसकते हुए कहा। “मुझे तुम्हारे जैसा होना चाहिए था, राजा को सबसे ऊपर रखना चाहिए था। लेकिन मैं नहीं था। मुझे तुम्हें गर्वित करना चाहिए था। लेकिन मैं नहीं कर पाया। मुझे खेद है कि मैं तुम्हें निराश कर गया, शंकुबला।”

पार्षद ने बोलने के लिए मुंह खोला, लेकिन पाया कि शब्द उनके गले में अटक गए हैं, मानो वहां अचानक बनी दर्दनाक गांठ को पार करने के लिए संघर्ष कर रहे हों। उन्होंने निगलने की कोशिश की और ब्रिच्छा के झुके हुए सिर की ओर देखा।

शंकु को अपने बचपन के उस आदमी की बहुत कम यादें थीं—जब ब्रिच्छा का विश्वासघात उजागर हुआ और उसे शाही अस्तबल के रक्षक पद से हटा दिया गया, तब वह मात्र आठ वर्ष की थी। उसे बस इतना ही स्पष्ट रूप से याद था कि वह उसे घोड़े पर बिठाकर महल के मैदानों में घुमाने ले जाता था, हवा उसके बालों को लहराती थी और वे दोनों खुलकर हंसते थे। उसे ब्रिच्छा को दंडक में निर्वासित किए जाने, उसकी माँ द्वारा शर्म से आत्महत्या करने और विक्रमादित्य द्वारा उस पर दया

करके ब्रिच्छा को निर्वासन से बख्श कर कालकोठरी में डाल दिए जाने की भी ज़्यादा याद नहीं थी। ये सब बातें उसने महल में वेताल भट्ट की देखरेख में पलते-बढ़ते हुए धीरे-धीरे इकट्ठा कीं। लेकिन इस जानकारी और समझ के साथ ही उस आदमी के प्रति क्रोध और घृणा भी पैदा हो गई, जिसने उससे इतना कुछ छीन लिया था। धीरे-धीरे कालकोठरी में उसके जाने की आवृत्ति कम होती गई, यहाँ तक कि एक दिन, पाँच साल पहले, उसने ठान लिया कि वह उस आदमी का चेहरा फिर कभी नहीं देखेगी।

पांच साल पहले, ब्रिच्छा लंबा-चौड़ा और अभिमानी स्वभाव का था। लेकिन उसके पैरों के पास बैठा हुआ वह व्यक्ति कमजोर और झुका हुआ था, उसके काले बाल और दाढ़ी की जगह पीले-सफेद रंग के बाल आ गए थे। उसके कंधे पतले हो गए थे और गाल धंस गए थे, और शंकु को एहसास हुआ कि अगर वह उससे उसकी कोठरी के बाहर मिलती तो शायद ही उसे पहचान पाती। उसे यह जानकर गहरा सदमा लगा कि ब्रिच्छा उम्र के कारण नहीं, बल्कि उसकी उपेक्षा के कारण टूट गया था। उसे यह जानकर बहुत दुख हुआ कि उस आदमी से लिया गया उसका बदला कारगर साबित हुआ था।

"तुम्हें लगता है कि मैं क्षमा मांग रहा हूँ, ताकि मुझे काल कोठरी से रिहा कर दिया जाए," उस आदमी ने उदास मुस्कान के साथ उसकी ओर देखा और सिर हिलाया। "नहीं, मैं इस कोठरी में खुश हूँ, जो पिछले दस या उससे अधिक वर्षों से मेरा घर है। नहीं, शंकुबाला, यह मेरी जेल नहीं है। मैं अपने अपराध बोध का कैदी हूँ, अपने किए पर शर्म का कैदी हूँ—खुद के प्रति, तुम्हारी माँ के प्रति, और सबसे ज़्यादा तुम्हारे प्रति। यही वह जेल है जिससे मैं मुक्ति चाहता हूँ। और केवल तुम ही मुझे यह मुक्ति दिला सकती हो। मैं तुमसे क्षमा माँगता हूँ, शंकु। मुझे मेरे अपराध बोध और शर्म से मुक्त कर दो।"

दुःख की एक नई लहर ने आंसुओं की एक नई बाढ़ ला दी, और ब्रिच्छा ने अपना चेहरा अपनी बाहों में छिपा लिया। उस आदमी के सामने झुककर, शंकु ने कांपते हुए हाथ से ब्रिच्छा के कंधे को छुआ।

"पिताजी," उसने कांपती हुई आवाज को रोकने की पूरी कोशिश करते हुए कहा, लेकिन वह इसमें असफल रही। "पिताजी।"

ब्रिच्छा ने सिर उठाकर पार्षद की ओर कृतज्ञतापूर्वक देखा। फिर, उसने धीरे से उसका हाथ अपने कंधे से हटाकर अपने हाथों के बीच में रखा और उसे अपने झुके हुए सिर तक ले गया।
"मुझे माफ कर दो, शंकुबाला, मुझे माफ कर दो," वह आंसू बहाते हुए बुदबुदाया और अपनी बेटी का हाथ अपने माथे पर दबा लिया।
“हाँ, पिताजी,” लड़की ने अपने आप को सिसकियों के बीच कहते सुना, जो उसके भीतर से फूट-फूट कर निकल रही थीं। उसे पूरी तरह से यकीन नहीं था कि उसने ये शब्द सिर्फ मन में सोचे थे या ज़ोर से बोले थे, इसलिए उसने ब्रिच्छा के कंधों पर बाहें लपेटते हुए, उसे अपने करीब खींचते हुए, अपने चेहरे पर आँसू बहाते हुए, उन्हें दोहराया। “मैं आपको माफ करती हूँ, पिताजी।”
पिता और पुत्री कांपते हुए एक-दूसरे को गले लगाए बैठे थे, जिसे तोड़ने की हिम्मत उनमें से किसी की नहीं थी। ऐसा लग रहा था मानो वे अपने भविष्य को अपनी बाहों में थामे हुए हों, और एक-दूसरे को छोड़ने पर उन्हें डर था कि उनकी सारी उपलब्धियाँ बिखर जाएँगी और उनके सामने ही बिखर जाएँगी। जब डर और आँसू थम गए, तब जाकर वे धीरे-धीरे एक-दूसरे से अलग हुए और एक नई नज़र से एक-दूसरे को देखने लगे।
“मुझसे वादा करो कि तुम मुझसे अक्सर मिलने आओगे,” ब्रिच्छा ने शंकु का हाथ पकड़े हुए कहा। “दस दिनों में एक बार, पंद्रह दिनों में एक बार... अगर तुम चाहो तो महीने में एक बार भी...”
“मैं हर हफ्ते आऊंगी,” शंकु ने अपने पिता के होठों पर उंगली रखकर उन्हें चुप करा दिया।
"आपका वादा?"
शंकु के सिर हिलाते ही, ब्रिच्छा ने अपनी बेटी को गौर से देखा और उसके चेहरे के भावों को निहारा। “पिछले पाँच वर्षों में तुम कितनी बड़ी हो गई हो। अब बच्ची नहीं रही। मैं तुम्हारे बारे में सुनता आ रहा हूँ,” उसकी आवाज़ में गर्व झलक रहा था। “उन्होंने मुझे बताया कि कैसे तुमने देवलोक के घुड़सवारों के विरुद्ध आक्रमण का नेतृत्व किया, कैसे तुमने उन्हें हमारे तीरंदाजों की सीमा में आने पर मजबूर कर दिया। मेरी बेटी, कितनी बहादुर हो तुम! उन्होंने मुझे यह भी बताया कि तुम... गायब हो सकती हो।”

“क्या आपने इन सब बातों के बारे में सुना है?” पार्षद आश्चर्यचकित होकर बोला।
“बेशक। यहाँ तो हम सब गपशप ही करते हैं। हमारे पास तो समय ही समय है। लेकिन तुम्हारे बारे में तो मुझे बहुत दिलचस्पी थी – मैंने तो गार्डों को परेशान करके तुम्हारे बारे में खबरें निकलवाने की आदत बना ली है। मैंने तुम्हारी जिंदगी में जो कुछ भी घट रहा है, उससे अवगत रहने की पूरी कोशिश की है।”
शंकु ने अपना सिर झुका लिया, उसे अचानक अपने पिता की वर्षों तक अनदेखी करने का अपराधबोध हुआ। लेकिन ब्रिच्छा को अब कोई फर्क नहीं पड़ा, क्योंकि उसे शंकु की क्षमा मिल चुकी थी। “तुम ये प्रकट होने-लुढ़कने का काम करो... अब तुम्हारे लिए कालकोठरी में आना-जाना आसान हो जाएगा,” उसने मुस्कुराते हुए शंकु से कहा। “तुम्हें सीढ़ियाँ चढ़नी-उतरनी नहीं पड़ेंगी। तो हर हफ्ते आना, ठीक है? बस ऐसे ही,” उसने उंगलियाँ झटकते हुए कहा।
लड़की मुस्कुराई, फिर अपने पिता की ओर देखा। “आपने सम्राट को संदेश भेजा था कि आप किसी को जानते हैं, एक निर्वासित व्यक्ति को...”
“...जो दंडका वन से सफलतापूर्वक भाग निकला था,” ब्रिच्छा ने उसकी बात पूरी की। “हाँ। मुझे नहीं पता कि वह अभी भी जीवित है या नहीं, लेकिन जब मैं अस्तबल का वार्डन था तब वह जीवित था।”
“ओह, वो तो बहुत पहले की बात है,” शंकु का चेहरा उतर गया।
"हां, लेकिन उसे ढूंढने में कोई हर्ज नहीं है।"
“वह कौन है और हम उसे कहाँ पा सकते हैं?”
“वह लगभग बीस साल पहले लावा और विराटपुरी के बीच सड़क पर सक्रिय लुटेरों के एक गिरोह का सरगना था। उन दिनों यह गिरोह जंगलों में छुपकर मत्स्य, अवंती और अनार्ता के बीच चलने वाले व्यापारिक काफिलों को लूटने के लिए कुख्यात था। मुझे याद है कि वे लंबे समय तक पुलिस की पकड़ से बचते रहे। लेकिन फिर उन्होंने एक ऐसी गलती कर दी जिसे कानून अनदेखा नहीं कर सका और उसी के कारण उनका अंत हुआ।”
“मतलब?” शंकु ने मासूमियत भरी जिज्ञासा से पूछा। उस पल वे बाप-बेटी थे, नींद आने तक कहानियाँ सुनाते रहे। “क्या हुआ?”
मुझे संदेह है कि गिरोह इतने लंबे समय तक कानून की पकड़ से इसलिए बच पाया क्योंकि वे उस क्षेत्र के कानून प्रवर्तकों को उपहार देकर खुश रखते थे।

"रिश्वत की बात कर रहे हो?"
“रिश्वत, लूट का हिस्सा, जो भी कह लो,” ब्रिच्छा ने कहा। “वहाँ का जंगल घना है—उस समय तो और भी घना था—इसलिए कानून लागू करने वालों के पास गिरोह के सदस्यों को पकड़ने में नाकाम रहने का एक आसान बहाना था। और चूंकि गिरोह के अपराध केवल धनी व्यापारियों को लूटने तक ही सीमित थे, इसलिए इनमें से कई व्यापारी गिरोह की नाराज़गी मोल लेने के बजाय सुरक्षा के लिए पैसे देने में खुश थे। इस प्रकार, किसी ने भी उन्हें न्याय के कटघरे में लाने की परवाह नहीं की, और अपराधी लगभग बेखौफ होकर अपना काम करते रहे। फिर एक दिन, गिरोह ने एक शादी के जुलूस पर हमला कर दिया। उन्होंने बेशक पैसे और गहने तो ले ही लिए, लेकिन गिरोह के तीन सदस्यों ने दुल्हन का अपहरण भी कर लिया। अगले दिन उसका शव सड़क किनारे एक खाई में मिला। उसके साथ दुष्कर्म किया गया था, उसकी हत्या कर दी गई थी और उसे जंगली जानवरों के लिए छोड़ दिया गया था।”
“और इसी से अवंती का पूरा प्रकोप गिरोह पर फूट पड़ा,” शंकु ने कहा। “यह कहानी मैंने पहले कभी क्यों नहीं सुनी?”
“अवंती नहीं। निषाद। यह मरुस्थली के बर्बरों के आने से ठीक पहले की बात है।” हूणों और शकों का ज़िक्र सुनकर ब्रिच्छा ने थोड़ा संकोच से अपना सिर खुजाया। “उस समय निषाद एक स्वतंत्र राज्य था। खैर, इतना गंभीर अपराध नज़रअंदाज़ करना नामुमकिन था। निषाद ने गिरोह की तलाश शुरू की और उन सभी ग्यारहों को पकड़ लिया गया। इस बार रिश्वत भी उन्हें नहीं बचा सकी। उन सभी पर मुकदमा चला और उन्हें दंडक देश में निर्वासित कर दिया गया। उनके नेता ने दया की भीख मांगते हुए कहा कि केवल दुल्हन का अपहरण करने वाले तीन लोगों को ही दंडक देश की कठोर सज़ा मिलनी चाहिए, लेकिन उन सभी ग्यारहों को वहीं भेज दिया गया, ताकि सिंधुवर्त के अन्य लुटेरों के गिरोहों के लिए सबक बन सकें।”
"आपको कैसे पता चला कि वह निर्वासितों के जंगल से बच निकला?"
“उसने खुद मुझे बताया था। मैं उससे क्षिप्रा नदी के किनारे एक शराबखाने में मिला था। हमारी खूब जमी और हमने देर रात तक बातें कीं। उसने शराब पीकर खुद को नशे में चूर कर लिया और मुझे सब कुछ बता दिया।”
“अगर तुम्हें पता था कि वह दंडक से भाग निकला है, तो तुमने इसकी सूचना नगर सुरक्षा बल को क्यों नहीं दी?” शंकु आक्रोश से अधिक आश्चर्यचकित लग रहा था।

“खैर...” बूढ़े व्यक्ति ने हिचकिचाते हुए माफी मांगते हुए कंधे उचकाए, “...उस समय मुझे परवाह नहीं थी। मेरी वफादारी वैसे भी सिंहासन के प्रति नहीं थी, इसलिए...”
पार्षद ने सिर हिलाया। “आप कैसे यकीन कर सकते हैं कि जिस व्यक्ति से आप मिले, वह वही था जो उसने होने का दावा किया था, और वह सब मनगढ़ंत कहानी नहीं बना रहा था, आपको झूठी कहानी सुनाकर बहला नहीं रहा था? आखिर वह नशे में था।”
“वह नशे में था, लेकिन दंडका के बारे में बात करते हुए डरा हुआ भी था। शराब पीने से साहस बढ़ता है, डर नहीं, और वह बुरी तरह डरा हुआ था। उसने बताया कि दंडका में चार साल उसने अपनी सूझबूझ और किस्मत के सहारे गुज़ारे, फिर वहाँ से निकल पाया। उसने बताया कि उसने अपने दोस्तों को एक-एक करके मरते देखा, और अंत में सिर्फ़ दो ही बचे। उसने कहा कि वह अकेला ही ज़िंदा बच निकला। उसके आगे क्या होगा, कौन जाने...” ब्रिच्छा ने कंधे उचकाते हुए कहा।
“तो अब वो लुटेरा कहाँ है? कहीं वो उज्जैन में ही तो नहीं है?” लड़की की आवाज़ में उत्सुकता झलक रही थी।
“नहीं, वह तो उज्जैन से होकर गुजर रहा था, अपने उस गाँव की ओर लौट रहा था जहाँ से उसने कहा था कि वह आता है। लावा के उत्तर में, मध्यमिका जाने वाली सड़क पर भीवाहा नाम की जगह है। मुझे लगता है कि उसने वहाँ लौटना सुरक्षित समझा होगा क्योंकि वह जगह बर्बरों से भरी हुई थी, और निषाद में कोई भी दंडक से भागे हुए कैदी की परवाह नहीं करता था।”
“लावा-मध्यमिका मार्ग पर स्थित भीवाहा,” शंकु ने दोहराया। “क्या आपको इस बात का पूरा यकीन है? अच्छा। लेकिन आपने अभी तक उसका नाम नहीं बताया है।”
ब्रिच्चा ने कहा, "ग्रीष्मा। एक लुटेरे के रूप में, वह जंगली ग्रीष्मा के नाम से मशहूर था।"
“इसके लिए धन्यवाद, पिताजी,” शंकु उठने लगी। “आशा है आपने जो बताया है वह मेरे काम आएगा।”
“तुम जा तो नहीं रही हो ना?” ब्रिच्छा ने अपनी बेटी का हाथ पकड़ते हुए विनती की। “थोड़ी देर और रुक जाओ। तुम्हें देखे हुए कितने साल हो गए हैं।”
“मुझे जाना होगा, पिताजी। ग्रीष्मा के बारे में यह खबर हमारे लिए बहुत ज़रूरी है। मुझे यह खबर सम्राट को बतानी है, ताकि हम लावा में उसकी तलाश के लिए सेना

भेज सकें।" लड़की ने धीरे से अपना हाथ छुड़ाया। "लेकिन मैं जल्दी वापस आ जाऊंगी। मैंने वादा किया है ना?"
"ठीक है, मैं समझ गया।" बूढ़े आदमी का चेहरा उतर गया, लेकिन फिर भी वह मुस्कुराया। "आपका भला हो।"
शंकु ने उसकी ओर मुस्कुराते हुए देखा और कोठरी से बाहर निकलने के लिए उठी, लेकिन ब्रिच्छा ने उससे फिर बात की।
"ग्रीष्मा को ढूंढने के बाद, और महल को यह तसल्ली हो जाने पर कि मैंने उसके बारे में झूठ नहीं बोला है, मैं महल द्वारा प्रस्तावित इनाम चाहूँगा... सौ सोने के सिक्के।"
पार्षद ने मुड़कर अपने पिता की ओर देखा। बोलते समय उनका लहजा थोड़ा ठंडा था। "आपने इनाम पाने के लिए यह जानकारी साझा की?"
"नहीं, लेकिन इनाम मिलने की वजह से मैं उसे लेना चाहूँगा," ब्रिच्छा ने जवाब दिया। "लेकिन अपने लिए नहीं। मैं चाहूँगा कि महल मेरे सौ सोने के सिक्के लोहे के व्यापारियों के घरों के पुनर्निर्माण में लगाए, जिन्हें उस साँप जैसी चीज़ ने नष्ट कर दिया था। इससे भी बेहतर होगा कि यह पैसा अस्तबल के वर्तमान रक्षक को दे दिया जाए, ताकि वह राज्य के लिए सबसे अच्छे घोड़े खरीद सके। मुझे बताया गया है कि आने वाले दिनों में घोड़ों की ज़रूरत पड़ेगी।"
शंकु ने राहत भरी मुस्कान के साथ अपने पिता की ओर देखा। "मैं आपकी इच्छा सम्राट तक पहुंचा दूंगी।"
"आखिरी बात। मुझे पता है कि मदर ओरेकल महल में हैं। जब आप उनसे अगली बार मिलें, तो उन्हें बता देना कि मैंने उनकी बेटी के साथ जो किया उसके लिए मुझे बहुत बुरा लग रहा है।"
"मैं करूँगी," लड़की ने कहा। "लेकिन मुझे लगता है कि दादी को पहले से ही पता है कि आपको पछतावा है।"

*

मुसिली की छोटी सी चौकी पर रात छाने लगी थी, तभी वरारुची चौकी के पुराने, केंद्रीय बुर्ज पर खड़े होकर लकड़ी की बाड़ के पार दक्षिण-पूर्व दिशा में एक घंटे की घुड़सवारी की दूरी पर स्थित उज्जैन की ओर देखने लगे। बढ़ते अंधेरे के कारण

सलाहकार के चेहरे को पहचानना मुश्किल हो रहा था, लेकिन उनके दोनों ओर खड़े शाही सेना के दो सैनिक - चौकी के कमांडर शरमाना और युवा कप्तान पुल्यामा - समझ गए थे कि वरारुची के चेहरे पर गंभीर शिकन थी, जो उस दोपहर से लगभग स्थिर हो गई थी।

"और संसप्तकों का क्या विश्वास किया जा सकता है?" चौकीदार ने धीमी लेकिन चिंतित आवाज़ में कहा। "मृत्यु शपथ लेने के कारण उनका आपस में गहरा संबंध है। और उनमें से अधिकांश कालिदास से बहुत प्रेरित हैं, इसीलिए उन्होंने स्वेच्छा से मृत्यु शपथ ली। समय आने पर क्या वे अवंती के प्रति निष्ठा रखेंगे और अपने पूर्व सेनापति और नायक के विरुद्ध खड़े होंगे?"

वररुचि ने शरमाना को देखने के लिए अपना सिर घुमाया, हालांकि उनके चेहरे के भाव लगभग न के बराबर ही दिखाई दे रहे थे। कुछ क्षण तक गहन चिंतन करने के बाद, वे वापस मुड़ गए और कुछ नहीं बोले।

"और हम हेहेया, वत्सा और अनार्तस से हमारे साथ शामिल हुए उन सैनिकों को क्या संदेश दे रहे हैं—" यह बात कप्तान पुल्यामा ने कही— "कि हम बिना कोई सवाल पूछे किसी को भी सीमा पार करके दुश्मन से मिलने देने को तैयार हैं?"

"पुल्यामा सही कह रहे हैं, महाराज," शरमाना ने ज़ोर देकर कहा। "सैनिकों में यह चर्चा है कि सिंधुवर्त के बाकी हिस्सों के सैनिकों के बीच हम मज़ाक का पात्र बन गए हैं। वे देख रहे हैं कि क्या हो रहा है, और वे सवाल ज़रूर पूछेंगे। लेकिन हमारे पास कोई संतोषजनक जवाब नहीं है।" कमांडर का लहजा थोड़ा कठोर हो गया। "अवंती की शाही सेना को मज़ाक का पात्र नहीं बनाया जा सकता, महाराज।"

"कमांडर, मैं समझता हूँ कि आप इसके बारे में कैसा महसूस करते हैं," वरारुची ने गुर्राते हुए जवाब दिया।

शरमाना पार्षद से इस पर कोई ठोस टिप्पणी आने का इंतजार कर रहा था, लेकिन जब उसे कोई जवाब नहीं मिला, तो उसने इस मामले को आगे बढ़ाने का फैसला किया। "हमें कुछ करना होगा, महोदय। शायद आप सम्राट को स्थिति से अवगत करा सकें। हमें अपने सैनिकों के साथ-साथ अपने सहयोगियों के सैनिकों के लिए भी स्थिति स्पष्ट करनी होगी।"

"अगर माहौल शांत हो जाए, तो क्या कालिदास का सामना करने में सबको ज़्यादा आसानी होगी?" वरारुचि ने एक बार फिर चौकीदार की ओर देखा। उनके लहजे से

साफ था कि वे तीखे लहजे में बोल रहे थे, और दोनों सैनिकों की चुप्पी उनके शब्दों से कहीं ज़्यादा असरदार थी। "मुझे तो ऐसा नहीं लगता," सलाहकार ने चिढ़कर कहा। "लेकिन मैं सम्राट से बात करूँगा। किसी को मेरा घोड़ा लाने को कहिए।"

जब वरारुचि छावनी से निकले तब तक पूरी तरह अंधेरा हो चुका था, लेकिन उज्जैनी से श्रीस्थली को जोड़ने वाली सड़क का यह हिस्सा सीधा और अच्छी तरह से बना हुआ था, इसलिए परामर्शदाता को दिशा-निर्देश के लिए तारों की रोशनी पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं थी। और चूंकि उनका घोड़ा रास्ते से परिचित था, इसलिए उन्होंने अपने मन को उन सभी बातों में खो जाने दिया जो उन्हें उज्जैनी की इस अंधेरी और सुनसान सड़क पर ले आई थीं।

शरमना द्वारा भेजा गया घुड़सवार, जो मरुस्थली से आए आक्रमणकारियों के खिलाफ अंतिम युद्ध के दिनों से उसका वफादार था, दोपहर के भोजन के तुरंत बाद आ गया था। वह अपने साथ दो दिन पहले कालिदास के दर्शन की सूचना लेकर आया था - विशालकाय कालिदास अर्बुदा पर्वत के निकट पहुँच रहा था और निश्चित रूप से सीमा की ओर बढ़ रहा था। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी; आश्चर्य की बात यह थी कि घुड़सवार ने अमर सिंह और अंगामित्र के बारे में बताया कि वे समसप्तकों की सेना के साथ उदयपुरी गए थे, ताकि घटकरपारा को खोज सकें, जो जाहिरा तौर पर लापता हो गया था।

इस खबर से वरारुचि स्तब्ध होकर तुरंत उषांथा से विदा लेकर महल लौटने के बजाय मुसिली की चौकी की ओर मुड़ गए। मुसिली की चौकी अवंती की सबसे पुरानी चौकियों में से एक थी, जो अब रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं रही और आजकल केवल उन सैनिकों को रखने के लिए उपयोग की जाती है जिन्हें शहर की नई चौकी में जगह नहीं मिल पाती। यह चौकी शरमाना के अधीन थी। शरमाना और युवा पुल्यामा से वरारुचि को अपने भतीजे के हूणों द्वारा अपहरण किए जाने की पूरी कहानी पता चली। उन्होंने पहली बार निर्वासितों के वन से भागे हुए लोगों की तलाश के बारे में भी सुना।

...और उन्हें इस दुखद अहसास ने घेर लिया कि अब महल के लिए उनकी कोई प्राथमिकता नहीं रह गई थी।

इसके साथ ही, महल की संवेदनहीनता और इतने वर्षों की निस्वार्थ सेवा में उसके द्वारा किए गए सभी कार्यों के प्रति अनादर के कारण उसके मन में गहरा गुस्सा पनप

रहा था।
यह सब तब शुरू हुआ जब कालिदास ने उन पर वर्षों पहले लावा के पास अपने परिवार की निर्मम हत्या करने का आरोप लगाया। वरारुचि ने स्वीकार किया था कि उन्होंने सिंधुवर्त की बेबस प्रजा पर हूणों द्वारा किए जा रहे अत्याचारों का बदला लेने के लिए हूणों की पूरी सेना को तलवार से मार डाला था, लेकिन राजमहल ने निर्लज्जतापूर्वक और अन्यायपूर्वक कालिदास का पक्ष लिया, उनके बचाव में कही गई बातों को अनसुना कर दिया और उन्हें निर्दोषों की जान लेने का दोषी ठहराया। उनके घावों पर नमक छिड़कते हुए, राजमहल ने कालिदास से माफी मांगी, जिसे उस निर्दयी हूण ने ठुकरा दिया और अवंती से संबंध तोड़कर पश्चिम की ओर अपने कबीले में शामिल होने के लिए चला गया - जैसा कि सभी को स्पष्ट था, राजमहल के आशीर्वाद से।
स्वाभाविक रूप से, राजसेना में बेचैनी फैल रही थी; कालिदास न केवल युद्ध में एक भयंकर शत्रु थे, बल्कि उनके पास अवंती के सभी सैन्य रहस्य भी थे, जो अब निश्चित रूप से उनके नए हूण मित्रों के हाथों में पहुँच जाएँगे। कालिदास को अपनी मनमर्जी करने देने का राजमहल का निर्णय न केवल अवंती की सेना के मनोबल के लिए भयानक था, बल्कि इसने अवंती के उन सहयोगियों को भी विरोधाभासी संकेत दिए जिन्होंने हूणों और शकों को सिंधुवर्त से दूर रखने के लिए अवंती का साथ दिया था। वरारुचि ने कड़वाहट से सोचा कि राजमहल की यही हालत हो गई थी - एक गद्दार का विश्वास जीतने के लिए हर संभव प्रयास करना, जबकि राजमहल को सहारा देने वाले वफादार व्यक्ति का उपहास उड़ाया जा रहा था और उसे दरकिनार किया जा रहा था। इस तरह राजमहल उनके पिता, गौरवशाली राजा महेंद्रदित्य की विरासत को बर्बाद कर रहा था।
कालिदास को दी जा रही विशेष छूट से अगर उन्हें दुख हुआ था, तो यह तथ्य कि महल ने उन्हें अपने भतीजे, घातकपर के अपहरण की सूचना देना भी उचित नहीं समझा, उनके लिए एक तमाचे के समान था। जहाँ तक उन्हें समझ आया था, राजकुमार के लापता होने की खबर महल में पिछली शाम ही पहुँच गई थी, और पूरे एक दिन बाद भी महल ने उन्हें सूचित करना तक नहीं समझा था। ऐसा लग रहा था मानो महल ने उनसे नाता तोड़ लिया हो, उन्हें अकेला छोड़ दिया हो, इस उम्मीद में

कि इससे किसी तरह गद्दार कालिदास मान जाएँगे और अवंती की सेवा में लौट आएँगे।

क्रोध से व्याकुल, लेकिन अलगाव और निराशा की गहरी भावना से ग्रस्त, वरारुचि क्षिप्रा के पास पहुँचते ही अपने अगले कदम के बारे में सोचने लगा। उसका एक हिस्सा वापस लौटकर अपनी माँ की गोद में जाना चाहता था, वही एक इंसान जिसने वर्षों पहले लावा में हुई घटना के लिए उसे कभी दोषी नहीं ठहराया था। अगर महल उसे नहीं चाहता, तो उसे भी महल की ज़रूरत नहीं है, और यह पूरी तरह से महल का नुकसान है, उसने खुद से कहा। लेकिन उसका एक और उग्र हिस्सा चीख रहा था, अपने साथ हुए इस बुरे बर्ताव से नाराज़ था, जवाब माँग रहा था, न्याय की गुहार लगा रहा था और अपने जन्मसिद्ध अधिकार - परिषद में स्थान और अपने भतीजे की कुशलक्षेम जानने के चाचा के अधिकार - को छोड़ने से इनकार कर रहा था।

वररुचि का यही वह पहलू था जिसने उसे प्रभावित किया, और उसे प्रेरित किया कि वह क्षिप्रा नदी के पार नाव से जाए, उज्जैन के पश्चिमी द्वार से शहर में प्रवेश करे और महल के रास्ते को पार करके अपने भाई से जवाब मांगने के लिए जाए।

महल में प्रवेश करते ही वरारुचि गलियारे से होते हुए सीढ़ियाँ चढ़ने लगे। क्रोध, दुःख और पश्चाताप उन्हें अलग-अलग दिशाओं में खींच रहे थे। शीर्ष पर पहुँचकर वे विक्रमादित्य के कक्षों की ओर जाने वाली गैलरी में मुड़े, तभी अचानक उनकी मुलाकात उपश्रुति और प्रलूपी से हो गई, जो विपरीत दिशा से आ रही थीं। एक-दूसरे से बस एक हाथ की दूरी पर खड़े तीनों एक-दूसरे को घूर रहे थे, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहें, फिर भी वे एक-दूसरे को अनदेखा करने का नाटक भी नहीं कर पा रहे थे। वरारुचि को महारानी माँ की ओर से आ रही शत्रुतापूर्ण भावनाएँ लगभग महसूस हो रही थीं।

"नमस्कार, माँ," उसने सिर झुकाते हुए धीरे से कहा, अचानक वह खुद पर संदेह करने लगा था।

“सचमुच नमस्कार,” उपश्रुति ने अपनी भौंहें चढ़ाते हुए व्यंग्य भरे स्वर में कहा। “देखा आपने महल की जरूरतों का ध्यान रखने का समय निकाल लिया है। मुझे लगता है कि हम सबको आपका आभारी होना चाहिए।”

“माँ, मैं महल के लिए हमेशा तत्पर हूँ,” वरारुचि ने कहा, और लगभग तुरंत ही अपने शब्दों पर पछतावा हुआ। वह सही बातें कह रहा था, विनम्रता भरी बातें, और

अपने सीने में उबल रही बगावत की आवाज़ को दबा रहा था। उसे इस बात का बहुत अफ़सोस हुआ।

"बेशक," महारानी माँ ने मुस्कुराते हुए आँखें घुमाईं। "तुम्हारे भतीजे को हूणों ने अगवा कर लिया है, अमर सिंह सीमा के आधे रास्ते तक पहुँच चुके हैं और तुम बस यूँ ही आकर कह रही हो कि मैं महल के लिए हमेशा उपलब्ध हूँ।" उपश्रुति ने एक पुरुष की आवाज़ की नकल करते हुए उन्हीं शब्दों को दोहराया। "ज़रूर, मैं आपकी बात मान लेती हूँ।"

"मैंने किया..." वरारुचि ने कहना शुरू किया, लेकिन दोनों महिलाओं को अपने पास से गुज़रते और दूर जाते देख वह रुक गया। उसने प्रलूपी के चेहरे की ओर देखा और पाया कि उसकी सौतेली बहन भी उसे घूर रही है, उसकी आँखें बेजान और आधी बंद थीं, मानो वह जानबूझकर अकड़ दिखा रही हो। प्रलूपी ने सिर हिलाकर तिरस्कार का भाव दिखाया और माँ-बेटी वरारुचि की ओर देखे बिना चली गईं।

वे आपकी बात नहीं सुनेंगे। वे आपकी बात सुनना ही नहीं चाहते। क्या आपको नहीं दिख रहा कि उन्होंने आपके बारे में पहले ही अपनी राय बना ली है?

पीछे हटती हुई आकृतियों को घूरते हुए, सम्राट के भाई के भीतर क्रोध की तीव्र लहर दौड़ उठी, जिससे उसके गाल जलने लगे और भीतरी भाग में गर्मी सी महसूस हुई। अचानक कांपते हाथों को काबू में करने के लिए उसने मुट्ठी भींच ली, फिर एक बार और फिर दूसरी बार ज़ोर से घूंट भरा, मानो ज़हर की तरह उसके गले से ऊपर उठ रही कड़वाहट को उसने ज़बरदस्ती अंदर खींच लिया। आक्रोश के आँसू उसकी आँखों में चुभ रहे थे, और उन्हें पलकें झपकाकर रोकते हुए वह मुड़ा और उस दिशा के विपरीत चल पड़ा जो उसे सम्राट विक्रमादित्य तक ले जाती।

*

दत्ताका अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गए और अपने सामने मेज पर पड़े ताड़ के पत्तों के पन्ने को घूरने लगे। दोपहर भर से उनके चेहरे पर ये शिकन बनी हुई थी, मानो त्वचा के नीचे बुखार हो, जब से ये पन्ने उदयपुरी से आधिकारिक संदेश के साथ आए थे। लेकिन इतने सारे ज़रूरी कामों में व्यस्त होने के कारण दत्ताका को पन्ने को अपने दिमाग से निकालना पड़ा था। अब जब दिन का अभ्यास पूरा हो चुका था, गार्ड्समैन की टुकड़ियाँ गश्त पर थीं और कमान केंद्र रात्रि के लिए तैयार हो रहा था,

तब जाकर कमांडर के पास उस परेशान करने वाले ताड़ के पत्ते को पढ़ने का समय आया।

पत्र में कोई चौंकाने वाली बात नहीं थी। यह श्रीस्थली कमान केंद्र में तैनात उन सैनिकों के नामों की एक साधारण सूची थी जिन्हें पदोन्नति के लिए चुना गया था। चूंकि वह कमान केंद्र के प्रमुख थे, इसलिए प्रक्रिया के अनुसार पदोन्नति की सूचना देते हुए यह सूची उन्हें सौंपी गई थी। देखने में तो इसमें कुछ भी असामान्य नहीं था। लेकिन पत्र पर लिखे नामों को देखकर दत्ताका थोड़ा असहज महसूस कर रहे थे - उन्हें सहज रूप से कुछ गड़बड़ लग रही थी, फिर भी वह इसका कारण स्पष्ट नहीं कर पा रहे थे।

पत्र को पास खींचते हुए कमांडर ने तीनों नामों पर फिर से गौर किया। सभी जाने-पहचाने नाम, तीनों साधारण से आदमी, ऐसे सैनिक जिन पर आदेशों का पालन करने का भरोसा किया जा सकता था, लेकिन जिनसे सूझबूझ या चतुराई की उम्मीद नहीं की जा सकती थी। यह ठीक था; हर सेना ऐसे लोगों से भरी होती है, और यह तर्क दिया जा सकता है कि सेनाओं को ऐसे लोगों की ज़रूरत होती है जो आदेशों का पालन करें और ज़्यादा न सोचें या ज़्यादा सवाल न पूछें। फिर भी, दत्ताका को समझ नहीं आ रहा था कि इतने योग्य उम्मीदवारों के होते हुए भी इन तीनों को पदोन्नति के लिए क्यों चुना गया। पिछली बार जब छावनी मुख्यालय ने उपयुक्त नामों के लिए कहा था, तब उन्होंने खुद आधा दर्जन सैनिकों के नाम सुझाए थे, लेकिन उनमें से किसी को भी नहीं चुना गया था। इसके बजाय, इन तीनों को...

अपनी ठुड्डी खुजाते हुए दत्ताका ने पत्र के निचले भाग पर राज्यपाल की मुहर का अध्ययन किया; इससे स्पष्ट हो गया कि उसके द्वारा अनुशंसित किसी भी व्यक्ति को अभी तक पदोन्नति क्यों नहीं मिली थी। यह सूची सैन्य छावनी से नहीं आई थी। यह राज्यपाल के कार्यालय से ही तैयार हुई थी।

और कमांडर समझ गया कि यही बात वास्तव में उसे परेशान कर रही थी।

राज्यपाल कार्यालय द्वारा सैनिकों को पुरस्कार या पदोन्नति के लिए सिफारिश करना अत्यंत असामान्य था, और जब भी ऐसे सम्मान दिए जाते थे, चयनित सैनिक की सेवा इतनी सराहनीय और उपलब्धि इतनी असाधारण होती थी कि राज्यपाल की सिफारिश सम्मान की एक अतिरिक्त मुहर, सिंहासन के प्रति कर्तव्य की एक सुनहरी स्वीकृति मात्र होती थी। लेकिन इन तीनों व्यक्तियों द्वारा अपने कर्तव्यों का

निर्वहन करने के तरीके में कुछ भी असाधारण या सराहनीय नहीं था। वे औसत दर्जे के सैनिक थे जो निश्चित रूप से राज्यपाल की सिफारिश के पात्र नहीं थे।
जैसे-जैसे दत्ताका नामों का बारीकी से अध्ययन कर रहा था, उसे उनमें एक पैटर्न नज़र आने लगा, कुछ जाना-पहचाना सा। जितना ज़्यादा वह इसके बारे में सोचता गया, उतना ही उसका विश्वास बढ़ता गया, लेकिन वह पैटर्न उसकी समझ से परे ही रहा। तीन नाम जिनसे वह परिचित था, तीन सैनिक जिन्हें वह जानता था, तीन आदमी...
हार की गहरी आह भरते हुए कमांडर ने अपनी थकी हुई बाहों को फैलाया, जिससे हाथों, पीठ और कंधों की मांसपेशियों की जकड़न दूर हो गई। फिर, एक थकी हुई जम्हाई लेते हुए, उसने पत्र उठाया और उसे उदयपुरी से आए बाकी संदेशों के साथ रख दिया। कुछ ही मिनटों में, उसने दीपक बुझा दिया और अपने बिस्तर पर लेटकर चैन की नींद में डूबने की तैयारी करने लगा।
तीन नाम जिनसे वह परिचित था, तीन सैनिक जिन्हें वह जानता था, तीन आदमी... एक जिद्दी बच्चे की तरह जो अपने खिलौनों को छोड़ने से इनकार करता है, उसका दिमाग बार-बार उस समस्या पर विचार कर रहा था। तीन नाम जिनसे वह परिचित था, तीन सैनिक, ताड़ के पत्ते पर लिखे तीन नाम...
ताड़ के पत्ते पर लिखे तीन नाम।
दत्ताका उठ बैठा, अंधेरे में उसकी आँखें चौड़ी हो गईं, उसका दिल उत्साह से धड़क रहा था। उसे मिल गया था। उसने उस पहेली को सुलझा लिया था जो उस पांडुलिपि की सामग्री को देखने के बाद से ही उसे परेशान कर रही थी। वह समझ गया था कि वे तीन नाम उसे इतना क्यों सता रहे थे।
ये उन छह संदिग्धों के नामों में से तीन थे, जिन्हें उन्होंने और पार्षद अमारा सिम्हा ने ताड़ के पत्ते पर लिखा था, जब यह पता चला कि उनके द्वारा पकड़े गए हुना स्काउट की रहस्यमय सांप के काटने से मौत हो गई थी। ये तीन नाम उस रात ड्यूटी पर तैनात छह गार्डों में से थे, जिस रात हुना स्काउट की मौत हुई थी।
ताड़ के पत्ते पर लिखे तीन नाम। यही वह पैटर्न था जिसे उसके दिमाग ने नोटिस किया था।
हालांकि दत्ताका जानता था कि वह एक अधूरी उम्मीद पर टिका हुआ है, फिर भी वह उपलब्धि की भावना से भर कर तकिए पर लेट गया। पार्षद अमारा सिम्हा ने उसे

स्काउट की मौत की जांच का जिम्मा सौंपा था, और यह उसके लिए अब तक का सबसे अहम सुराग था। स्काउट की मौत के समय ड्यूटी पर तैनात तीन गार्ड। तीन बेहद साधारण सैनिक। फिर भी, इन्हीं लोगों को राज्यपाल की सिफारिश पर पदोन्नति मिल जाती है — और स्काउट की मौत वाली रात राज्यपाल कमान केंद्र में मौजूद थे।

उसके मन में जो ख्याल आया, उससे कमांडर सदमे में आ गया। उसके शरीर में सिहरन दौड़ गई और उसे एहसास हुआ कि उसे तीनों सैनिकों से दोबारा पूछताछ करनी होगी ताकि वे उस रात हूना जासूस के साथ हुई घटना का सच कबूल कर सकें।

*

शर्म और क्रोध से जलते हुए और नींद न आने के कारण, शुक्राचार्य ने अपना लोहे का दंड उठाया और अंगवस्त्रम कंधे पर टांगकर रात के अंधेरे में बाहर निकल पड़े। आकाश काला और साफ था, तारे चारों ओर बिखरे हुए थे, सिवाय उस जगह के जहाँ मेरु पर्वत की चोटी के पास चाँद चमक रहा था। वनों से भरी घाटी देवदारू की खुशबू लिए बहती हवाओं से भरी थी और ठंडी, सफेद धुंध की हल्की परतें बारी-बारी से छाई हुई थीं। दाईं ओर, हमेशा की तरह, क्षितिज अमरावती की रोशनी से जगमगा रहा था।

राजधानी की रोशनी पर विशेष रूप से तीखी निगाह डालते हुए - उन्हें अपनी बहुतायत में अपना उपहास करते हुए, अपनी बदनामी में आनंद लेते हुए देखते हुए - मुख्य पुजारी ने उनसे मुंह मोड़ लिया और मेरु की दिशा में चल पड़े, अपने डंडे और अंतर्ज्ञान का उपयोग करते हुए देवदारू के घने उपवनों से अपना रास्ता खोजते हुए, जहां चांदनी भी मुश्किल से पहुंच पाती थी।

उद्यान के विनाशकारी मिशन से लौटने के बाद से ही वह व्याकुल था, अपने सबसे पुराने शत्रु बृहस्पति द्वारा किए गए व्यवस्थित अपमान से दुखी था। शाम क्रोध और आत्म-निंदा में गुम सी हो गई थी, जहाँ वह बृहस्पति से बदला लेने की कसम खा रहा था और जयंत के पीछे भागने की उसकी अविवेकी चाल को कोस रहा था, जिसने असुरों के मंत्रों को प्राप्त करने की संभावनाओं को बुरी तरह प्रभावित किया था।

लेकिन स्पष्ट रूप से, सबसे अधिक कष्टदायक बात यह थी कि दरबारी शुक्राचार्य ने अपनी ही धूर्तता के खेल में उसे मात दे दी थी और इस बात पर आत्मसंतुष्ट था।
मैंने उसे जयंता की तरह कपड़े पहनाए और इस बगीचे में जल यंत्र बजाने के लिए कहा। महापुजारी के मन में बृहस्पति का प्रसन्न चेहरा उभर आया। और देखो, उसके पीछे मधुमक्खियों के झुंड की तरह शहद के घड़े की ओर आकर्षित होकर कौन आया।
जंगल से गुजरते हुए, जहां गिरी हुई चीड़ की सुइयां उसके पैरों के तलवों को आराम दे रही थीं, प्रधान पुजारी को इस बात का एहसास था कि जयंता से दोस्ती करने की अपनी उत्सुकता में उसने अपनी सतर्कता कम कर दी थी, और बदले में, इसने बृहस्पति को उसे पूरी तरह से मूर्ख बनाने का सही अवसर दे दिया था।
आपकी मुलाकात जयंता से बिल्कुल नहीं होगी। मैंने महल के पहरेदारों को निर्देश दे दिए हैं कि भविष्य में ऐसी कोई संभावना न रहे।
शुक्राचार्य के मन में यह पहली बार नहीं आया था कि उन्हें देवलोक में रुकने का कोई कारण नहीं बचा था, लेकिन यह जानकर कि उन्हें खाली हाथ लौटना पड़ेगा, क्योंकि उन्होंने जुआ खेलकर उसी से हार गए थे जिससे उन्हें हारना सबसे ज़्यादा नापसंद था, उन्हें बहुत दुख हुआ। असुरों के महागुरु, वे इस तरह कैसे जा सकते थे, देवताओं द्वारा उपहास उड़ाए जाने पर, उनकी गरिमा तार-तार हो गई थी? यही बात उनके लिए देवलोक से अंधेरे में निकल जाने के विचार के लिए काफी थी, लेकिन उन्हें यह विचार भी उतना ही बुरा लग रहा था कि उन्हें कायर कहा जाए जो रात में भाग जाता है। फिर भी, बिना किसी उद्देश्य के वहीं रुके रहना और बृहस्पति को उन्हें तड़पता और असहाय देखकर संतुष्टि देना भी उन्हें अच्छा नहीं लग रहा था।
अतः शुक्राचार्य ने परिस्थितियों के अनुसार जो कुछ भी संभव हो सका, वही किया। वे धुंध, अंधेरे और ऊबड़-खाबड़ ज़मीन की परवाह किए बिना, जहाँ भी उनके पैर ले गए, वहीं चलते रहे। उन्होंने देवताओं को प्रतिशोध की भयंकर चेतावनी देते हुए अपना क्रोध प्रकट किया और बृहस्पति के अहंकार को किसी भी तरह, किसी भी तरह, अहि को जागृत करने वाले मंत्रों को छीनकर नष्ट करने की शपथ ली।
वह अपने दुख और आत्म-निंदा में इतना डूबा हुआ था कि उसे अपने चारों ओर बन रहे कोहरे के आवरण का पता ही नहीं चला। वह धीरे-धीरे कोहरे की परतों में और अंदर चला गया, और कोहरा उसे और भी कसकर जकड़ता चला गया। फिर भी,

महायाजक चलता रहा - तभी अचानक चांदनी की एक तेज किरण ने उसे अपने आसपास के वातावरण से अवगत कराया। वह रुककर चारों ओर देखने लगा, और सीधे सामने, कोहरे की परतों के बीच से, उसने एक विशाल वृक्ष का तना देखा।
उसे एहसास हुआ कि अगर चंद्रमा ने सही समय पर अपना प्रकाश न डाला होता तो वह सीधे पेड़ से टकरा जाता।
शुक्राचार्य अपना रास्ता बदलने ही वाले थे कि अचानक रुक गए और अपने रास्ते में आ रहे पेड़ को घूरने लगे, उनकी धड़कनें तेज़ हो गईं। उन्होंने धुंध को देखा, मानो पर्दे हटाए जा रहे हों, और उन्होंने पेड़ के तने को उभरते और आकार लेते हुए देखा।
उसकी एकमात्र अच्छी आंख के सामने जो दृश्य चल रहा था, उसने उसे कहीं और देखी हुई किसी चीज़ की याद दिला दी। धुंध। और उसके अंदर कुछ छिपा हुआ। कोई विशाल चीज़।
धुंध नहीं, कोहरा।
घना, सफेद कोहरा। और उसके अंदर कुछ विशाल और छायादार। कुछ बहुत बड़ा।
एक पेड़। एक विशाल पेड़।
प्रधान पुरोहित की सांसें लगभग रुक गईं। सुबह स्नानघर के पास वेताल भट्ट के मन में उन्होंने वही दृश्य देखा था - कोहरे में छिपा एक विशाल वृक्ष। और अचानक ही शुक्राचार्य को समझ आ गया कि वह दृश्य उन्हें इतना परिचित क्यों लगा था और इतने समय तक उनके मन में क्यों बसा रहा था।
उसके अवचेतन मन ने जो देखा था उसे पहचान लिया था।
वह बरगद का पेड़ जो अंतहीन चिताओं के मैदान को थामे हुए है।
बॉर्डरवर्ल्ड।

Gandharvasena

तेज धूप से तपती सुबह की धुंध महल की झील से उठ रही थी, तभी विस्मया ने राजा हरिहर को दिन की भीषण गर्मी और चकाचौंध से दूर एक आश्रयस्थल पर ले गई। यह परदा पश्चिम की ओर थी और फूलों से लथपथ लताओं और लटकती बेलों से सजी हुई थी, जो क्षिप्रा नदी के पार से बहने वाली हवा में लहराती, सरसराती और लहराती हुई प्रतीत हो रही थीं।

"मुझे उम्मीद है कि स्नान की व्यवस्था आपको पसंद आई होगी, महाराज," महल के रक्षकों के प्रमुख ने कहा।

“जी? ओह जी हाँ... बिलकुल,” हरिहारा ने पलकें झपकाते हुए और कुछ खोया हुआ सा चेहरा बनाते हुए जवाब दिया।

महल का एक सेवक उन दोनों आदमियों के पीछे-पीछे छत तक गया, जिसके हाथ में एक थाली थी जिस पर पीतल का एक लंबा गिलास रखा था। महल के रक्षकों के मुखिया ने गिलास उठाया और राजा को भेंट किया।

“महोदय, छाछ,” उन्होंने झुककर कहा। “बहुत कम करी पत्तों के साथ, जैसा कि आपने निर्देश दिया था।”

राजा ने ठंडे, मसालेदार पेय का एक घूंट लिया और प्रशंसापूर्वक सिर हिलाया। थोड़ी देर बाद उन्होंने पूछा, “रानी उपश्रुति कहाँ हैं? मुझे वो कहीं नज़र नहीं आ रही हैं...”

“महामहिम, महारानी माँ और राजकुमारी प्रलूपी पवित्र क्षिप्रा नदी के किनारे स्थित काली मंदिर में दर्शन करने गई हैं। वे आपके आगमन से पहले ही सूर्योदय के समय

रवाना हो गई थीं और अभी तक वापस नहीं लौटी हैं।"
"आह, मैं समझ गया।" हरिहारा ने छाछ की एक घूंट ली और चुप हो गया।
"क्या आपको वाकई थोड़ा आराम नहीं चाहिए?" विस्मया ने पूछा। "पूरी रात का सफर काफी थका देने वाला रहा होगा।"
"स्नान से काफी ताजगी मिली। मैं बिल्कुल ठीक हूँ," हरिहारा ने प्रस्ताव को ठुकरा दिया और फिर महल की ओर ध्यान से देखा। "क्या सम्राट को मेरे आने की सूचना है?"
"बिल्कुल। जैसे ही मुझे पता चला कि आप महल के द्वार पर हैं, मैंने उन्हें सूचित कर दिया था। अगर कोई दूत पहले आ जाता तो मैं सम्राट को और भी जल्दी बता देता।" फिर, राजा के प्रश्न के पीछे के इरादे को सही ढंग से समझते हुए, उन्होंने तुरंत कहा, "सम्राट रानी विशाखा के कक्ष में गए हैं; वे किसी भी क्षण आपके पास पहुँच जाएँगे।"
"ओह, क्या रानी की तबीयत अब बेहतर है?" हरिहारा ने महल के अधिकारी की ओर आश्चर्य से देखा। "मेरा मतलब है, क्या वह... किसी बीमारी से उबर रही हैं...?"
"मुझे खेद है कि नहीं, महाराज," विस्मया ने दुख से अपना सिर हिलाया।
"ओह," हरिहर ने फिर कहा।
प्रतीक्षा को स्वीकार करते हुए, राजा ने छाछ का एक और घूंट लिया और झील में हंसों को शान से तैरते हुए देखने के लिए टहल पड़े, जबकि किंगफिशर भोजन की तलाश में पानी में गोता लगा रहे थे। विस्मया को क्षमा मांगते हुए सुनकर हरिहर ने कंधे के ऊपर से सिर हिलाकर सहमति जताई, लेकिन उनका ध्यान फिर से उस बात पर केंद्रित हो गया था जिसके कारण वे इतनी जल्दी और बिना सूचना दिए उज्जैनी आए थे।
तीन दिन पहले, कालिदास और विक्रमादित्य के बीच हुए मतभेद की पहली खबरें महिष्मती तक पहुँची थीं, जो सीमावर्ती इलाकों से लौट रहे व्यापारी और सैनिकों के ज़रिए आई थीं। ये खबरें टुकड़ों-टुकड़ों में आ रही थीं और तथ्यों और अफवाहों में फर्क करना मुश्किल था, इसलिए हरिहर ने अपने सबसे भरोसेमंद सहायकों में से एक को सच्चाई का पता लगाने का काम सौंपा था। उस अधिकारी ने सराहनीय काम किया था, और अवंती की स्थिति का जो विवरण उसने दिया था, उससे हरिहर को

आने वाले दिनों में सिंधुवर्त की राजनीति पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

अवंती की सेवा छोड़ते समय कालिदास ने स्पष्ट कर दिया था कि वे अपने सभी पुराने संबंध तोड़ रहे हैं, और पश्चिम की ओर उनकी यात्रा से संकेत मिलता था कि वे बर्बरों के साथ गठबंधन करने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। लेकिन निष्ठा में इस बदलाव का वास्तव में क्या अर्थ था? एक तो, इससे हूण सेना और भी अधिक शक्तिशाली हो गई; अब बर्बरों के पास न केवल सबसे खूंखार योद्धाओं में से एक था, बल्कि अवंती और उसके सहयोगियों के बारे में उस योद्धा के पास मौजूद सभी जानकारी भी उनके पास उपलब्ध थी। फिर, यह तथ्य कि कालिदास स्वाभाविक रूप से अवंती के सहयोगियों को अवंती का ही हिस्सा मानते थे, इसका अर्थ था कि कोई भी सहयोगी उनके क्रोध से बच नहीं पाएगा। हरिहर के लिए यह चिंताजनक था।

कालिदास के पाला बदलने के ये स्पष्ट और अपेक्षित परिणाम थे। हरिहर विक्रमादित्य की उस चुनौती पर प्रतिक्रिया जानने में अधिक व्यस्त थे जो कालिदास ने दी थी, और यह जानने में भी कि जब कालिदास हूण सेना के साथ लौटेंगे तो सम्राट क्या रणनीति अपनाएंगे। हरिहर समझते थे कि यही बात सिंधुवर्त के युद्ध का परिणाम निर्धारित करेगी।

रुक्मा का हाथ शशिवर्धन या शूरसेना में से किसे देना है, यह तय करने से पहले उसे यह समझना जरूरी था कि वह युद्ध किस तरह आगे बढ़ेगा।

या अब कालिदास की बात करते हैं।

अब तक, कालिदास के प्रति विक्रमादित्य का रवैया अनावश्यक रूप से सुलहकारी प्रतीत हो रहा था; उन्होंने सचमुच अपने पुराने मित्र को आगामी युद्ध में पक्ष चुनने की स्वतंत्रता दे दी थी। हरिहर को सम्राट के ये निर्णय तर्कहीन लगे और वह सोचने लगा कि चंद्रवर्धन, बाणहस्त, भूमिपाल और अनर्त सरदार युगंधर में से कौन विक्रमादित्य द्वारा कालिदास को हूण खेमे में जाने देने की सराहना करेगा। उसे संदेह था कि उनमें से कोई भी नहीं करेगा, जिसका अर्थ था कि कालिदास के सीमा पर पहुंचते ही उनका गठबंधन टूटने के कगार पर था। और विक्रमादित्य की परिषद के बाकी सदस्य इस सब पर कैसी प्रतिक्रिया दे रहे थे?

एक किंगफिशर को झील में गोता लगाते और चोंच में मछली फँसाकर बाहर निकलते देख हरिहर ने निश्चय किया कि यदि सिंधुवर्त राज्यों का गठबंधन टिकने

वाला नहीं है, तो शूरसेना को रुक्मा देना ही सर्वोत्तम होगा। एक मजबूत गठबंधन के अभाव में, वत्सा - यहाँ तक कि अवंती भी, लेकिन निश्चित रूप से वत्सा, इस बात का हरिहर को पूरा विश्वास था - बर्बरों के हाथों पराजित हो जाएगा, और शशिवर्धन की मृत्यु हो जाएगी। इसलिए, शूरसेना को ही रुक्मा देना होगा। लेकिन क्या होगा यदि हूण वत्सा पर न रुकें और मगध तक जाकर शूरसेना को भी पराजित कर दें? क्या तब रुक्मा सुरक्षित रहेगी? बहुत कम संभावना है। तो, इसके बजाय, क्या होगा यदि वह चतुराई से पूरे गठबंधन से खुद को अलग कर ले और हूणों को स्पष्ट कर दे कि जहाँ तक उसका सवाल है, वे सिंधुवर्त में बसने के लिए स्वतंत्र हैं? क्या वे उस पर विश्वास करेंगे और हेहेया को बख्श देंगे? संभवतः... यदि वह कालिदास को सद्भावना और मित्रता के प्रतीक के रूप में रुक्मा भेंट कर दे।

लेकिन फिर, क्या होगा अगर विक्रमादित्य के नेतृत्व में गठबंधन कायम रहता है, और हूणों को परास्त कर दिया जाता है? अवंती का साथ देने वालों को इनाम मिलेगा, और शशिवर्धन सिंधुवर्त के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक बन सकता है। हरिहर ने झुंझलाहट में दांत पीस लिए, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे, क्योंकि सही भविष्यवाणी करना लगभग असंभव था। लेकिन हां, अगर उसे पता चल जाए कि विक्रमादित्य के मन में क्या है और युद्ध शुरू होने पर वह क्या करने वाला है, तो इससे उसे मदद मिलेगी...

"माननीय महोदय, सम्राट चाहते हैं कि आप उनके साथ नाश्ते पर उपस्थित हों।"

हरिहारा ने पीछे मुड़कर देखा तो विस्मया उसके पीछे खड़ा था। उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान देखकर राजा को यह अजीब सा ख्याल आया कि शायद उस अधिकारी ने उसके मन की बात पढ़ ली है और जान गया है कि वह यहाँ क्यों आया है।

“ज़रूर,” उसने खांसते हुए कहा और झिझकते हुए अपना मुंह ढँक लिया। “बहुत खुशी हुई।”

हरिहारा अभी हिला भी नहीं था कि अचानक एक तीखी और तेज़ आवाज़ उसके कानों में पड़ी। यह आवाज़ उसके बाईं ओर दूर से, उज्जैन की छतों के ऊपर से हवा के साथ आती हुई सुनाई दी, लेकिन इसकी तीव्रता पर कोई संदेह नहीं था। यह तुरही की तेज़ आवाज़ जैसी थी, कर्कश और युद्ध जैसी, जिससे उसके रोंगटे खड़े हो गए। घबराकर उसने विस्मया की ओर देखा, जो उत्तर की ओर देखते हुए, सिर एक

तरफ झुकाए, सुन रहा था। जब आवाज़ दोबारा नहीं आई, तो महल के अधिकारी ने अपने अतिथि की ओर रुख किया। हरिहारा की भौंहें उठने पर विस्मया ने हल्के से कंधे उचका दिए।

"इस ओर, महाराज," विस्मया ने झुकते हुए कहा। सीधे खड़े होते ही उनकी निगाहें शहर के उत्तर की ओर गईं, जहाँ वे ठहर गईं; उनके भावों को समझना कठिन था। जब हरिहारा को छत पर ले जाया गया जहाँ एक नीची मेज पर नाश्ता परोसा गया था, तो विक्रमादित्य आगे बढ़े और प्रणाम किया।

उन्होंने कहा, "आपको इंतजार कराने के लिए मैं तहे दिल से माफी मांगता हूं। आइए, बैठिए।"

"रास्ते में मुझे घटाकरपारा के बारे में पता चला। बर्बरों ने उन्हें बंधक बना लिया है," हरिहारा ने निराशा से सिर हिलाया। "बहुत बुरी खबर है।"

"जी हां," सम्राट का चेहरा गंभीर हो गया। "लेकिन अमर सिंह संसप्तकों के एक दल के साथ सीमा की ओर रवाना हो गए हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि राजकुमार को बचा लिया जाएगा और सुरक्षित हमारे पास वापस लाया जाएगा।"

हरिहारा ने छोटे राजा के चेहरे को ध्यान से देखते हुए कहा, "बर्बर लोग दिन-प्रतिदिन और अधिक निर्भीक होते जा रहे हैं।"

विक्रमादित्य ने सिर हिलाया, लेकिन जवाब में उन्होंने हरिहरा के लिए रखी कुर्सी की ओर इशारा किया। दोनों बैठ गए और इंतज़ार करने लगे, तभी दो दासियों ने उन्हें ताज़ा कटे खरबूजे, शहद में डूबे चावल के पैनकेक और मसालेदार धनिये की चटनी के साथ बाजरे की रोटियाँ परोसीं। दासियों के जाने के बाद, विक्रमादित्य ने अपनी रोटी का एक टुकड़ा खाया और हरिहरा की ओर देखा।

"अगर मैं पूछूं, तो आप यहां क्यों आए हैं? आपका आगमन स्वागत योग्य है, लेकिन यह बिल्कुल अप्रत्याशित था।"

हरिहारा ने जीरे के स्वाद वाले पानी का एक घूंट लिया और फिर जवाब दिया, "काफी समय हो गया है जब मैं आया था। बहुत कुछ घटित हुआ है – विशाखा, सर्प राक्षस... कालिदास। तो, मैंने सोचा... मुझे बताया गया है कि विशाखा अभी भी... ठीक नहीं है..." वह शब्दों को ढूंढते हुए बोला, "ठीक नहीं है।"

"वह नहीं है, लेकिन आपने जो सहानुभूति दिखाई है उसके लिए मैं आभारी हूं। धन्यवाद।"

राजाओं के भोजन चबाने के दौरान कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया।
अंत में हरिहर ने कहा, "कालिदास से जुड़ा यह सारा मामला दुखद है।"
सम्राट ने अपने अतिथि की ओर देखा, लेकिन कुछ नहीं कहा।
मेरा मतलब है... जिस तरह से वह चला गया।
विक्रमादित्य अभी कुछ बोलने ही वाले थे कि अचानक बाहर हलचल मच गई—तेज आवाजें गूंज उठीं, एक घोड़ा हिनहिनाता हुआ नीचे से सरपट भागा, एक दरवाजा जोर से बंद हुआ और पैरों की आवाज पगडंडी पर सुनाई दी। सम्राट ने रुककर ध्यान से सुना, उनकी निगाहें पैनी थीं, लेकिन आवाजें शांत हो गईं। उन्होंने अपना ध्यान वापस अपने अतिथि की ओर मोड़ा।
“आप कालिदास के बारे में बात कर रहे थे...” सम्राट ने सिर हिलाया और कंधे उचका दिए। “हाँ, यह दुखद है, लेकिन इसमें कुछ नहीं किया जा सकता था।”
“तुमने उसे रोका नहीं?”
"नहीं।"
और अगर वह वापस आ गया तो? आप जानते हैं कि वह वापस आएगा ही।
"इसके बारे में क्या?"
हरिहारा ने अपने सामने खड़े व्यक्ति के चेहरे को देखा, गहरी काली आँखें, ऊँचा माथा, सफ़ेद बालों की लकीरों वाली दाढ़ी। "क्या तुम उसे रोकोगे?"
“यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह कैसे लौटता है,” विक्रमादित्य ने अपने चेहरे पर बिखरे बालों को पीछे करते हुए कहा। “अगर वह दोस्त बनकर आता है, तो मैं उसे क्यों रोकूंगा?”
"ऐसा नहीं लगता कि वह एक दोस्त के रूप में लौटने के लिए गया है," हरिहारा असहज होकर बोला।
“तब उसका सामना युद्ध में शत्रु की तरह किया जाएगा। आदर के साथ, लेकिन बिना दया के।”
“क्या आप अपनी सेना को उससे लड़ने का आदेश देंगे? हमारे सहयोगियों को भी? क्या आप उन्हें यही संदेश देना चाहते हैं?” हरिहारा ने सम्राट को ध्यान से देखा। “क्या आप इसलिए पीछे नहीं हटेंगे क्योंकि वह कभी आपका मित्र था?”
विक्रमादित्य ने चतुराई से राजा की ओर देखा। उन्होंने बोलने के लिए मुँह खोला, लेकिन अपना इरादा बदल दिया और हरिहर को देखते रहे, जो उनकी तीखी निगाहों

से बेचैन हो रहा था। अंत में, सम्राट ने सिर हिलाया।
"अगर सिंधुवर्ता की रक्षा करनी है, तो हां। कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी।"
और आपकी परिषद के बाकी सदस्य?
“उनका क्या?” विक्रमादित्य ने चटनी का कटोरा उठाते हुए हैरानी से भौंहें चढ़ाते हुए पूछा।
हरिहारा के कुछ कहने से पहले ही, छत की ओर कदमों की आहट सुनाई दी। जैसे ही दोनों राजा दरवाजे की ओर मुड़े, विस्मया ने पर्दों को हटाकर प्रणाम किया।
"अंतर्मुख होने के लिए मैं क्षमा चाहता हूँ, सम्राट।" वह असामान्य रूप से परेशान और कुछ हद तक भयभीत भी लग रहा था।
“क्या बात है?” विक्रमादित्य ने पूछा, उनके माथे पर अभी भी हल्की सी शिकन थी।
"माननीय न्यायाधीश महोदय, आपके यहाँ... आपके यहाँ आगंतुक आए हुए हैं, माननीय न्यायाधीश महोदय।"
“कौन?” भौंहें थोड़ी और तन गईं, आवाज संदेह से भर उठी।
“सम्राट...” पहरेदारों का मुखिया हिचकिचाया और रुक गया, फिर उसने बोलना शुरू किया। “सम्राट, नगर रक्षक दल का संदेश है कि आने वाले मेहमानों का नेतृत्व देवों के स्वामी इंद्र कर रहे हैं।”
छत पर सन्नाटा छा गया। फव्वारे की कलकल ध्वनि के अलावा कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था। दूर कहीं से किसी ने कुछ ऐसा कहा जो हरिहारा के कानों को जल्दबाजी में दिए गए आदेशों जैसा लगा।
“वे किस द्वार पर प्रतीक्षा कर रहे हैं?” सम्राट ने सपाट स्वर में पूछा।
“वे उत्तरी द्वार से आए हैं, महाराज... लेकिन वे वहाँ प्रतीक्षा नहीं कर रहे हैं। उन्होंने पहरेदारों को हटाकर उज्जैन में प्रवेश कर लिया है। वे शहर के अंदर हैं और महल की ओर बढ़ रहे हैं, सम्राट।”
अचानक चटकने की तेज़ आवाज़ आई और हरिहारा ने विस्मय से उस लकड़ी के चटनी के चम्मच को देखा जिसे विक्रमादित्य अपने लिए परोस रहे थे। चम्मच दो टुकड़ों में टूट गया था, उसका कटोरा मेज पर पड़ा था जहाँ चटनी के छींटे पड़े थे, उसका हैंडल अभी भी विक्रमादित्य की मुट्ठी में था, दबाव के कारण उनकी उंगलियों के जोड़ मोम की तरह सफेद हो गए थे। हरिहारा की नज़र टूटे हुए हैंडल से सम्राट

के चेहरे पर पड़ी, जो भावहीन था, सिवाय आँखों के, जहाँ क्रोध बेकाबू होकर भड़क रहा था।
"उनमें से कितने?"
“इंद्र के अलावा, एक रथ और एक अकेला घुड़सवार, सम्राट भी हैं।” राजा के चेहरे पर हैरानी देखकर विस्मया ने घबराकर अपने होंठ चाटे। “महाराज, यह इंद्र का हाथी है। कहते हैं कि यह बहुत ही भयानक है। कोई भी इसके रास्ते में आने की हिम्मत नहीं करता।”
“परिषद को तुरंत सूचित करो और महल को सुरक्षित करो।” टूटा हुआ चम्मच गिराकर सम्राट उछल पड़े। बाहर, शहर की पहली खतरे की घंटियाँ बजने लगीं। मानो घंटियों को टक्कर देने के लिए, हरिहारा ने छत पर जो कर्कश, तुरही जैसी आवाज़ सुनी थी, वह फिर से सुनाई दी, और भी भयावह और बहुत करीब। “परिषद के सदस्यों को कहो कि वे उज्जैन की रक्षा के लिए पूरी तरह तैयार रहें, और उन्हें बता दें कि मैं इंद्र को रोकने के लिए निकल रहा हूँ।”

*

दत्ताका ने अपनी कुर्सी मेज के पास खींचकर बैठ गए और सामने बैठे बुजुर्ग सैनिक को देखकर मुस्कुराए। कमांडर को लगा कि उनकी मुस्कान सौम्य और हानिरहित थी, हालांकि सैनिक की घबराहट भरी निगाहों को देखकर उन्हें अपना विचार बदलना पड़ा।
“मैं आपको बताना चाहता था कि आपको पदोन्नति मिल गई है,” दत्ताका ने अपने सामने बैठे व्यक्ति को ध्यान से देखते हुए कहा। खबर की अचानकता से उसके चेहरे पर कोई चमक नहीं आई, कोई आश्चर्य नहीं, खुशी का कोई निशान नहीं। ऐसा लग रहा था मानो उस व्यक्ति को पहले से ही पता था कि उसे पदोन्नति मिल रही है, लेकिन वह इससे बहुत दुखी था, मानो पदोन्नति उसके लिए बहुत बड़ा बोझ हो। या शायद वह बस चिंतित था, छोटे से कमरे की घुटन उसे फंदे की तरह कसती हुई महसूस हो रही थी। “बधाई हो।”
“धन्यवाद, महोदय,” सैनिक ने धीमी आवाज़ में कहा।
“स्वयं राज्यपाल द्वारा अनुशंसित,” दत्ताका विस्मय से बोले। “बहुत बड़ा सम्मान।”

वह आदमी पलकें झपकाते हुए घबराकर कमरे में इधर-उधर देखने लगा, मानो बाहर निकलने का रास्ता ढूंढ रहा हो।
"आपने राज्यपाल को इतना प्रभावित किया होगा कि उन्होंने ऐसा किया।"
"धन्यवाद महोदय।"
“तुमने उसके लिए ऐसा क्या किया है कि वह तुम्हारा इतना बड़ा प्रशंसक बन गया है? मुझे बताओ,” कमांडर मुस्कुराया, “ताकि मैं भी कुछ ऐसा ही करके पदोन्नति के अगले दौर में गैरीसन कमांड हासिल करने की कोशिश कर सकूं।”
सिपाही ने हल्की सी मुस्कान दी और अपनी सीट पर थोड़ा हिल गया, उसकी आंखें अभी भी चारों ओर घूम रही थीं।
“आप कुछ असहज लग रहे हैं। क्या बात है? क्या गर्मी की वजह से ऐसा है?”
मैं ठीक हूँ, महोदय।
नहीं, कुछ तो है। बताओ। तुम्हें क्या परेशान कर रहा है?
“कुछ नहीं, महोदय।” सैनिक के माथे पर पसीने की बूँदें थीं, और उसने अपने होंठ चाटे।
“ठीक है।” दत्ताका ने सिर हिलाया। यह महसूस करते हुए कि उसकी बात में कोई प्रगति नहीं हो रही है, उसने अपना सौहार्दपूर्ण लहजा छोड़ दिया और गंभीर चेहरे से उस आदमी को घूरने लगा। “बताइए आपने राज्यपाल के लिए ऐसा क्या किया जिससे उन्होंने आपको पदोन्नति के योग्य समझा?”
मुझे नहीं पता, महोदय।
“हम दोनों जानते हैं कि ये सिफ़ारिशें दुर्लभ हैं। हम यह भी जानते हैं कि सामान्य परिस्थितियों में आपको कभी ऐसी सिफ़ारिश नहीं मिलती। इसलिए, बेहतर होगा कि आप मुझे वह असाधारण परिस्थिति बताएँ जिसके कारण आपको यह सिफ़ारिश मिली।”
सिपाही ने अपने कंधे पर पसीने की बूँद पोंछने के लिए अपना सिर झुकाया और जवाब में सिर हिलाया। "केवल आदरणीय राज्यपाल ही जान सकते हैं, महोदय।"
“चालाक।” अपनी कुर्सी पीछे धकेलते हुए दत्ताका खड़े हो गए। “आप जानते हैं कि मैं राज्यपाल पर सवाल उठाने की हिम्मत कभी नहीं करूँगा।” वे उस तंग जगह में इधर-उधर घूमने लगे, चार कदम इधर, पाँच कदम उधर, उनके हाथ पीछे बंधे हुए थे। सैनिक की निगाहें उनका पीछा कर रही थीं, चिंतित लेकिन सोच-समझकर।

“मैं यह बताना भूल गया कि हम दोनों यह भी जानते हैं कि मेरे पास केवल संदेह है, कोई सबूत नहीं है। अगर मेरे पास कोई सबूत होता, तो अब तक मैं उसे तुम्हारे चेहरे पर दिखा चुका होता, तुम सोच रहे होगे। तो, अगर तुम कुछ नहीं कहते, कुछ स्वीकार नहीं करते, तो मैं कुछ नहीं कर सकता और तुम सुरक्षित हो। है ना?”
"मुझे समझ नहीं आया कि आपका क्या मतलब है, महोदय।"
“अच्छा विचार है, निर्दोष होने का ये ढोंग।” कमांडर ने टहलना बंद किया और सिपाही की ओर झुककर उसके दुबले-पतले कंधे पर एक हाथ रखा। “मैं सचमुच तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। सिवाय...”
दत्ताका रुका और अचानक संदेह से उसकी ओर घूर रहे पतले, दाढ़ी वाले चेहरे को ध्यान से देखा। "सिवाय इसके कि, जैसा कि आपको याद होगा, उस रात आप तीन लोग थे।"
मुझे नहीं पता... मुझे माफ़ करना, आप किस रात की बात कर रहे हैं, महोदय?
“उस रात आप तीनों मौजूद थे, और आप तीनों को राज्यपाल कार्यालय से पदोन्नति के लिए सिफारिशें मिली हैं। मुझे पता है, इससे कुछ साबित नहीं होता। लेकिन अगर आप ध्यान दें, तो मैंने आप तीनों को तीन अलग-अलग कमरों में रखा है, ताकि आप एक-दूसरे से मिल न सकें। क्या आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि ऐसा क्यों किया गया है?”
सिपाही ने पलकें झपकाईं।
“मैं आपको बताता हूँ क्यों।” दत्ताका मेज के किनारे, उस आदमी की कोहनी के पास बैठ गया। “हम दोनों इस बात पर सहमत हैं कि अगर आप में से कोई भी उस रात हुना जासूस के साथ हुई घटना के बारे में कुछ नहीं कहता जिसे हमने पकड़ा था, तो मैं आप में से किसी के खिलाफ कुछ नहीं कर सकता। आप मुझे कुछ नहीं बताते; मेरे पास अपने संदेह को साबित करने के लिए कुछ नहीं होगा; आप तीनों को पदोन्नति मिल जाएगी और आप खुश रहेंगे। ठीक है? लेकिन बात यह है। आप तीन लोग हैं, और मैं आप में से हर एक से अलग-अलग बात करूँगा, और वही सवाल पूछूँगा। अब, अगर आप में से कोई भी मुझे उस रात की घटना के बारे में बताता है, तो वह भाग्यशाली होगा - उसे पदोन्नति मिल जाएगी, और उसे कोई सजा नहीं मिलेगी।”

सेनापति रुका और उस सिपाही की ओर देखा, जो आगे झुककर हर शब्द को ध्यान से सुनने की कोशिश कर रहा था। "लेकिन उन दो लोगों का क्या होगा जिन्होंने कबूल नहीं किया?" दत्ताका ने नाटकीय अंदाज़ में पूछा, मानो उसे मज़ा आ रहा हो। "मुझे उनकी सूचना छावनी और राजमहल को देनी होगी, और फिर मैं उन्हें हूण और शक सेनाओं के आक्रमण का सामना करने वाली पंक्ति में सबसे आगे रखूँगा। बिल्कुल... आगे... अगर किसी दैवीय कृपा से वे बच गए, तो मैं अपने सम्राट से विनती करूँगा कि उन्हें अवंती और उसके राजा के विरुद्ध षड्यंत्र रचने के आरोप में निर्वासितों के वन में भेज दिया जाए। इस प्रकार, कबूल करने वाला तो बच जाएगा, लेकिन बाकी..." सेनापति ने सिर हिलाया और उदास चेहरा बना लिया।
"अगर दो लोग कबूल कर लें तो क्या होगा...?"
"अगर उनके बयान मेल खाते हैं, तो उन्हें पदोन्नति मिलेगी, जबकि जिसने बयान नहीं दिया उसे बर्बरों को रोकने के लिए मोर्चे पर भेजा जाएगा," दत्ताका ने तुरंत जवाब दिया और सैनिक के सुरक्षा घेरे को पार करते हुए, उसे खत्म करने के लिए आगे बढ़ गया।
"और अगर तीनों कबूल कर लें, तो क्या तीनों को पदोन्नति मिल जाएगी और वे बरी हो जाएंगे?" बूढ़े आदमी की आँखों में अप्रत्याशित अवसर की चमक दिखाई दी।
"क्या मैं तुम्हें बेवकूफ लगता हूँ?" कमांडर ने पूछा। "अगर तुम तीनों कबूल कर लेते हो, तो अवंती के सैनिक के रूप में जीवन भर में किसी को भी पदोन्नति नहीं मिलेगी। और नहीं, तुम बरी नहीं हो सकते। तुम्हें सीमा सेना में सेवा करनी होगी और बर्बरों से लड़ना होगा। लेकिन तुम्हें मोर्चे पर नहीं भेजा जाएगा, और न ही तुम्हें दंडका जाना होगा, यह मैं वादा करता हूँ। मोर्चा और दंडका उनके लिए हैं जो कबूल नहीं करते।"
इसके बाद काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा, जिसे केवल बूढ़े सैनिक की धीमी साँसें ही तोड़ रही थीं, जो अपने विकल्पों और प्राथमिकताओं को व्यवस्थित करने की कोशिश कर रहा था। कहीं बाहर परेड ग्राउंड पर आदेश दिए जा रहे थे, और श्रीस्थली के नागरिक क्षेत्रों की ओर जाने वाले पुल की दिशा से सैनिकों के कदमों की थाप सुनाई दे रही थी।
"अगर आपमें से कोई भी कबूल नहीं करता, तो किसी को कोई दिक्कत नहीं होगी," दत्ताका ने संक्षेप में बताया। "अगर आपमें से एक या दो कबूल कर लेते हैं, तो उनके

लिए अच्छा है, लेकिन जो कबूल नहीं करते उनके लिए बड़ी समस्या होगी। अगर आप तीनों कबूल कर लेते हैं, तो तीनों को सजा मिलेगी, लेकिन झूठ बोलने की तुलना में कहीं कम। इस बारे में सोचिए।"

"अगर मैं आपको दूसरों से ज़्यादा बताऊँ तो क्या होगा?" सैनिक ने कमांडर पर लालची निगाहें गड़ाते हुए पूछा, उसकी आवाज़ में कंपकंपी साफ झलक रही थी, जो उसके टूटने के कगार पर थी। "इनाम के तौर पर, क्या मुझे बर्बरों के खिलाफ लड़ने से छूट दी जाएगी?"

दत्ताका मेज से नीचे उतरा और अपनी कुर्सी की ओर बढ़ा। बैठते ही उसने कुर्सी को मेज के पास खींच लिया, फिर उसे हिलाकर और समायोजित करके आरामदेह स्थिति खोजने का प्रयास किया, जानबूझकर देरी करते हुए सैनिक को असमंजस में डाल दिया। जब अंततः उसने ऊपर देखा, तो बूढ़ा व्यक्ति अपनी आँखों से विनती कर रहा था।

"इनाम... हम्म..." दत्ताका इस विचार पर गौर करने लगा। "यह पूरी तरह इस बात पर निर्भर करता है कि वह अतिरिक्त जानकारी कितनी अनोखी और उपयोगी है। लेकिन इसका पता लगाने का सिर्फ एक ही तरीका है।" उसने अपनी कोहनियाँ मेज पर टिकाईं और सिपाही की ओर झुक गया। "सच बोलो और मुझे बताओ कि उस रात हूण जासूस के साथ क्या हुआ था..."

*

घोड़ों के खुरों की धमक से धरती कांप उठी, और उससे उत्पन्न गर्जना हरिहारा के कानों में गड़गड़ाहट जैसी गूंजी। वह डर के मारे काठी से लिपटा रहा और घोड़े की लगाम कसकर पकड़े रहा। वह कहीं और होना चाहता था, पर बचने का कोई रास्ता नहीं था – वह नगर भ्रमण के दो दर्जन घुड़सवारों और महल के रक्षकों की भीड़ के बीचोंबीच फंसा हुआ था, जो दोनों ओर से और पीछे से घिरे हुए थे। उसके पास जाने का एक ही रास्ता था, आगे बढ़ना। वह खुरों और हवा में लहराते बालों के सैलाब में ऐसे बह रहा था मानो नदी की धाराओं में फंसी कोई असहाय शाखा विनाश की ओर बढ़ रही हो।

शाप बड़बड़ाते हुए उसने विक्रमादित्य की ओर देखा, जो दल का नेतृत्व कर रहा था, गड्ढों को पार करते हुए, मोड़ों पर तेज़ी से मुड़ते हुए और इंद्र को रोकने के

उद्देश्य से अपने घोड़े को सुनसान गलियों में दौड़ा रहा था। विस्मया के चबूतरे से चले जाने के बाद, सम्राट ने हरिहर की ओर मुड़कर पूछा कि क्या वह अपनी तलवार साथ लाया है। हरिहर को नहीं पता था कि किस बात ने उसे हाँ कहने के लिए प्रेरित किया, लेकिन उसने अनुमान लगाया कि अगर उसने झूठ भी बोला होता, तो भी उसके लिए एक हथियार का इंतजाम कर दिया जाता, और अंत में वह यहीं होता, इंद्र या उसके भयानक हाथी के हाथों अपनी मृत्यु की ओर बढ़ रहा होता, जिसकी रुक-रुक कर आने वाली चिंघाड़ से उसकी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ जाती थी।
विस्मया ने कहा था, "यह इंद्र का हाथी है। कोई भी इसके रास्ते में नहीं आना चाहता।" और यहाँ विक्रमादित्य उसे सीधे खतरे के रास्ते पर धकेलने पर तुला हुआ था।
घोड़ों के खुरों की आवाज़ के बीच भी शहर की खतरे की घंटियाँ सुनाई दे रही थीं, लेकिन उनमें एक तरह की उदासीनता थी, मानो घंटियाँ बजाने वालों को खुद ही पता न हो कि उनका उद्देश्य क्या है। फिर भी, घंटियों ने अपना काम कर दिया था – सुबह का यातायात ठप हो गया था और उज्जैन की सड़कें सुनसान हो गई थीं, नागरिक अपने घरों में छिपे हुए थे, डर और आशंका से दरवाजों और खिड़कियों की दरारों पर निगाहें गड़ाए हुए थे। हरिहारा का मानना था कि हाल ही में हुए हमलों की वजह से लोग खतरे का सामना करने में माहिर हो गए थे।
हरिहर को अब पहले से कहीं अधिक आत्मरक्षा की इस इच्छा का एहसास हो रहा था, लेकिन वह इस पर अमल करने में असमर्थ था, क्योंकि उज्जैन के घुड़सवारों का झुंड उसे इधर-उधर धकेल रहा था, कभी एक गली से दूसरी गली में। उसे यह भी नहीं पता था कि वे कहाँ भाग रहे हैं—ये संकरी गलियाँ उसके लिए बिल्कुल अनजान थीं, और वह बस इतना समझ पाया था कि निर्दोषों की जान बचाने के लिए वे इंद्र के आक्रमण को रोकने के लिए शॉर्टकट ले रहे थे, इससे पहले कि देव उज्जैन के किसी आवासीय क्षेत्र में प्रवेश कर जाए।
जिस गली में वे थे, वह अचानक एक चौड़ी, मुख्य सड़क पर खुल गई। सम्राट को इस बात का ज़रा भी संदेह नहीं था कि किस दिशा में जाना है, और जैसे पक्षियों का झुंड एक साथ उड़ता है, वैसे ही बाकी समूह गली से बाहर निकला और दाईं ओर मुड़ गया, तेज़ी से और सहजता से अपने नेता का अनुसरण करने लगा। हरिहारा ने

अपने घोड़े को बाकी घोड़ों के पीछे चलने दिया, विरोध नहीं किया, आगे जो भी होने वाला था, उसे स्वीकार कर लिया।
कुछ ही क्षणों बाद, उसके लिए जो होने वाला था, वह प्रकट हो गया।
यह मुख्य सड़क को दो भागों में बांटने वाली एक गली से प्रकट हुआ, और पहली नज़र में हरिहारा इसके विशाल आकार को देखकर इतना दंग रह गया कि वह समझ ही नहीं पाया कि आखिर वह क्या देख रहा है। जब वह विशालकाय जीव सवारों की भीड़ की ओर मुड़ा, तब हरिहारा को एहसास हुआ कि वे एक विशाल, सफेद, ऊनी मैमथ की ओर तेज़ी से बढ़ रहे हैं। वह जानवर इतना बड़ा था कि अपने आसपास के वातावरण से कहीं ऊपर था, उसके बड़े-बड़े कान सड़क पर आगे का नज़ारा ढक रहे थे। अगर वह दो तीन मंजिला ऊंची इमारतों के पीछे छिपा न होता, तो वे उसे पहले ही देख लेते।
किसी रहस्यमय, आदिम प्रवृत्ति के चलते, घोड़े अचानक रुक गए, उछल पड़े और पीड़ा से हिनहिनाने लगे, उनके अगले पैर लात मार रहे थे, नथुने फूले हुए थे, आँखें भय से लाल थीं। हर कोई अपने घोड़ों को काबू में करने की कोशिश कर रहा था, साथ ही सड़क के बीचोंबीच खड़े उस विशालकाय जानवर पर भी नज़र रखे हुए था, जिसके विशाल पैर फैले हुए थे और वह हमला करने के लिए तैयार था, उसका सिर और सूंड धमकी भरे अंदाज़ में हिल रहे थे, एक ऐसी लय में जिसे केवल वही सुन सकता था। विशालकाय जानवर के ऊपरी जबड़े से पेड़ के तनों जितने बड़े छह विशाल दांत निकले हुए थे, प्रत्येक लोहे से जड़ा हुआ और नुकीला, जैसे ही जानवर ने अपना सिर हिलाया, वे खतरनाक ढंग से हवा में मुड़ गए। हरिहारा हैरान रह गया जब जानवर ने अपनी सूंड उठाई और एक भयानक चीख निकाली जिसने सुबह को दहला दिया, जिसकी गूँज से घोंसले में बैठे कबूतर दहशत में उड़ गए।
जैसे ही हाथी ने अपनी सूंड नीचे की, हरिहर ने पहली बार उस विशालकाय व्यक्ति को देखा जो उस पर बैठा था। चौड़े कंधों और मजबूत मांसपेशियों वाले उस व्यक्ति के सुनहरे बाल घने थे और उसकी सुनहरी दाढ़ी छाती तक लटक रही थी। हरिहर लगभग कल्पना कर सकता था कि उस व्यक्ति के चारों ओर अधिकार का प्रकाश एक प्रभामंडल बना रहा है, और उसने सही अनुमान लगाया कि वह इंद्र ही हैं।
विक्रमादित्य का घोड़ा, जो बाकी सभी घोड़ों से आगे था, उस विशालकाय जानवर के आतंक से अछूता नहीं रहा, लेकिन हरिहर ने देखा कि सम्राट घोड़े के कान में

फुसफुसा रहे थे और उसकी गर्दन सहला रहे थे, उसे शांत कर रहे थे और उसे काबू में ला रहे थे। घोड़ा अभी भी हिनहिना रहा था और थोड़ा इधर-उधर उछल रहा था, लेकिन विक्रमादित्य उसे धीरे से आगे बढ़ाने में कामयाब रहे, जिससे उनके और विशालकाय जानवर के बीच की दूरी धीरे-धीरे कम होती गई। हरिहर ने सम्राट को अपनी भुजाएँ मोड़कर कमर पर लटकी तलवारें निकालते हुए देखकर अपनी साँस रोक ली, तलवारें म्यान से बाहर निकलीं और धातु के धातु से रगड़ने की सरसराहट सुनाई दी।

क्षपणक और शंकु ने तुरंत अपने घोड़ों को राजा के पीछे दौड़ाया और दोनों ओर से उन्हें घेर लिया। शंकु के हाथ में चक्र था और वह उसे फेंकने के लिए तैयार थी, वहीं क्षपणक ने धनुष तान रखा था और बाण तैयार था, किसी भी खतरे के आभास पर वह उसे चलाने के लिए तत्पर थी। महल के रक्षकों और नगर रक्षकों के कुछ घुड़सवार भी उत्साहित होकर आगे बढ़े, उनके हथियार तैयार थे। हरिहर अपनी जगह पर स्थिर रहे, उनकी निगाहें विक्रमादित्य के हाथों में मौजूद तलवारों पर टिकी थीं, जो चिलचिलाती धूप में मानो लाल हो उठी थीं। कुछ ही क्षणों में, तलवारों की धार और सतहों पर नीले-हरे रंग की छोटी-छोटी लपटें घुमावदार पैटर्न में नाचने लगीं।

हवा थम गई और गली में सन्नाटा छा गया, मानो समय किसी भयानक प्रतीक्षा में ठहर गया हो। उज्जैन की घंटियाँ दूर से उदास स्वर में बज रही थीं, और विक्रमादित्य विशालकाय जानवर के करीब आते जा रहे थे, यहाँ तक कि वे उसकी छाया में आ गए। वह विशालकाय जानवर उनके ऊपर मंडरा रहा था, उसकी घुमावदार सूंड मुड़ रही थी और उसके कान फड़फड़ा रहे थे, मानो वह उन्हें ध्यान से देख रहा हो। सम्राट और इंद्र एक-दूसरे को घूर रहे थे, और हरिहर को एहसास हुआ कि वह डर से कांप रहा है, उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था, मानो वह अपने शरीर से बाहर निकलकर वहाँ से भाग जाना चाहता हो।

इंद्र हाथी की पीठ पर सवार हुए और एक पैर हाथी के सिर पर रख दिया। बाहें कमर पर रखकर, चौड़ी छाती तानकर, सिर को अभिमानपूर्वक पीछे की ओर झुकाकर, उन्होंने सम्राट को होठों के कोनों पर हल्की सी मुस्कान के साथ देखा।

"आखिरकार हमारी मुलाकात हो ही गई," उसने कहा। उसकी निगाह विक्रमादित्य के हाथों में मौजूद तलवारों पर पड़ी। "नरक की अग्नियों को धारण करने वाला।

बहुत प्रभावशाली!"
सम्राट ने पत्थर की तरह स्थिर चेहरे वाले भगवान की ओर देखा।
"वापस लौट जाओ, देव। मेरे राज्य में तुम्हारा स्वागत नहीं है।"
विक्रमादित्य की सूक्ष्मता की कमी देखकर हरिहर सहम गया, और जब विशालकाय हाथी ने अपनी सूंड ऊपर की ओर मोड़कर सम्राट के सिर के ऊपर कर ली, तो हरिहर डर से कांप उठा और एक गहरी सांस ली, उसे सबसे बुरे की आशंका थी। सलाहकार और सैनिक भी तनाव में आ गए, अपने राजा की रक्षा के लिए तैयार थे, लेकिन सम्राट अपनी काठी पर दृढ़ता से बैठे रहे, और सतर्क रहे जब इंद्र आगे बढ़े और कुशलतापूर्वक उठी हुई सूंड पर संतुलन बनाते हुए हाथी ने उन्हें सम्राट के सामने सड़क पर उतार दिया।
"मैंने कहा था कि तुम्हारा यहाँ स्वागत नहीं है," सम्राट ने ठंडे स्वर में दोहराया।
"पर मैं यहाँ शांति से हूँ।" इंद्र की मुस्कान और भी सौम्य हो गई, और उन्होंने अपने हाथ फैलाकर एक पूरा चक्कर लगाया। "देखा, मेरे पास कोई हथियार नहीं है? और न ही कोई सेना कहीं छिपी हुई है, हमले के संकेत का इंतज़ार कर रही हो। मैं आपको वचन देता हूँ। हम यहाँ शांति से हैं।"
सैनिकों के बीच हल्की फुसफुसाहट हुई, और यद्यपि आश्चर्य और राहत से उनके कंधे तन गए थे और मांसपेशियां शिथिल हो गई थीं, फिर भी किसी ने अपनी सतर्कता नहीं छोड़ी। विक्रमादित्य ने इंद्र और हाथी के चारों ओर देखने के लिए अपना सिर झुकाया, और हरिहर ने भी ऐसा ही किया ताकि विशालकाय हाथी के पीछे आंशिक रूप से छिपे हुए रथ को देख सकें। रथ को दो सफेद घोड़े खींच रहे थे, और हरिहर समझ गए कि यह उत्कृष्ट कारीगरी का नमूना था, जो मजबूत लकड़ी से बना था और नक्काशी से खूबसूरती से सजाया गया था। इसके चंदोवे से पतले फीते के पर्दे गिर रहे थे, जिससे रथ का डिब्बा ढका हुआ था, इसलिए अंदर बैठे धुंधले व्यक्ति के बारे में कुछ भी पता लगाना मुश्किल था। रथ के बगल में एक शानदार घोड़ा खड़ा था, लेकिन सवार का चेहरा उसके सिर पर ढीले ढंग से लिपटे सूती शॉल से ढका हुआ था।
"तुम्हारा यहाँ अभी भी स्वागत नहीं है," विक्रमादित्य ने अपनी शत्रुता को काबू में रखते हुए कहा। नरक की ज्वालाएँ तेज़ थीं, पुराने लोहे पर आग की लंबी लपटें लग रही थीं। "तुमने मेरे लोगों पर बिना किसी गलती के मृत्यु और विनाश बरसाया। तुमने

अपने सेवकों को मुझे अपनी इच्छा के आगे झुकने के लिए मजबूर करने भेजा। उन्होंने मेरे लोगों पर जो कष्ट पहुँचाया, वह तुम्हारी ओर से था, इसलिए मैं तुम्हें इसके लिए ज़िम्मेदार मानता हूँ। फिर तुमने यक्ष को मेरी प्रिय पत्नी पर हमला करने और मुझे कुचलने के लिए भेजा...”

“मुझे जो हुआ उसका खेद है, लेकिन मैंने यक्ष को आपकी पत्नी के पीछे नहीं भेजा था,” इंद्र ने पूरी गंभीरता से बीच में दखल देते हुए कहा। “विश्वास कीजिए, मैंने यक्षों को केवल वही चीज़ ले जाने के लिए कहा था जो आपको सबसे प्रिय थी, जिसकी आप अपनी अंतिम सांस तक रक्षा करते। मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि आपकी पत्नी आपके लिए कितनी अनमोल थी। अगर मुझे पता होता...”

"वहीं रुक जाओ।"

विक्रमादित्य को समझाने की उत्सुकता में इंद्र कुछ कदम आगे बढ़ गए थे, लेकिन सम्राट ने देव की ओर तलवार तानकर उन्हें रोक दिया। "रुको।"

हरिहर ने इंद्र को झुंझलाहट से भौंहें चढ़ाते देखा, और जैसे ही विक्रमादित्य घोड़े से उतरे, एक पल के लिए सौम्यता का मुखौटा उतर गया, और हरिहर ने इंद्र की आँखों में संशयपूर्ण क्रूरता देखी। अगले ही पल वह गायब हो गई, और जैसे ही सम्राट दोनों हाथों में जलती हुई तलवारें लिए उनके पास पहुँचे, देवता मुस्कुराए, और संभावित हमले से खुद को बचाने के लिए मुश्किल से ही हिले। इंद्र के पीछे, विशालकाय जानवर अपनी छोटी, गुलाबी, आदिम आँखों से इस मुकाबले को देख रहा था। अब उनके बीच लगभग कोई दूरी नहीं बची थी, हरिहर ने देखा कि देवता सम्राट से थोड़ा लंबा था, जो स्वयं भी कोई छोटा-मोटा आदमी नहीं था।

“तुम्हें परवाह करने का नाटक करने की हिम्मत कैसे हुई?” विक्रमादित्य पास आकर देव के दाढ़ीदार चेहरे को घूरने लगे, उनकी आवाज़ इतनी कर्कश थी कि हरिहारा और सैनिकों के घेरे तक मुश्किल से ही पहुँच पाई। “अगर तुम्हें पता होता कि यक्ष विशाखा के पीछे आएगा, तो क्या कोई फर्क पड़ता? नहीं। क्योंकि मेरी पत्नी तुम्हारे लिए कुछ भी मायने नहीं रखती। बिलकुल भी नहीं। अपने झूठ अपने पास रखो, देव —खासकर वे जो मेरी पत्नी से संबंधित हैं। मैं नहीं चाहता कि तुम्हारी कोई भी कुटिलता मेरी विशाखा को कलंकित करे। क्या मेरी बात समझ में आ गई?”

हरिहर इस पर कभी शर्त नहीं लगाता, लेकिन उसने कल्पना की कि उसने इंद्र को सम्राट से पीछे हटते हुए देखा, मानो वह मौन रूप से अपनी सत्ता को स्वीकार कर

रहा हो। हालाँकि, विक्रमादित्य का काम अभी खत्म नहीं हुआ था।
"तुम्हें पता है कि मुझे रोकने वाली एकमात्र चीज़ यह शहर है, जो युद्ध के कारण पहले ही बहुत कष्ट झेल चुका है," उसने कहा। "लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि तुम मेरे धैर्य की अनंत परीक्षा लो।" खुद को काबू में रखते हुए गहरी सांस लेते हुए, उसने कर्कश और घुटती हुई आवाज़ में कहा, "अभी मेरे शहर से चले जाओ। मैं तुमसे दोबारा नहीं पूछूंगा।"
वातावरण में व्याप्त तनाव को भांपते हुए हाथी ने अपना सिर हिलाया और चिंघाड़ते हुए आगे-पीछे झूलने लगा, मानो अपने स्वामी के आदेश की प्रतीक्षा कर रहा हो। हरिहरा ने देखा कि उज्जैन के नागरिक सड़क के किनारे खड़े थे, आधे छिपे हुए, एक ही समय में उत्सुक और भयभीत, यह जानने के लिए उत्सुक कि क्या हो रहा है, फिर भी खतरे के जरा से भी आभास पर भागने को तैयार।
"आप समझते नहीं हैं। मैं यहाँ गलतियों को सुधारने, सभी गलतियों को सुधारने आया हूँ।"
सम्राट ने तिरछी निगाहों से इंद्र को देखा। "क्षमा? तुम?" देवता को सिर हिलाते देख राजा ने एक भौंह ऊपर उठाई। "कैसे?"
"तुम्हें अपना रक्त साथी मानकर और तुम्हें अपने ही एक सदस्य के रूप में स्वीकार करके।"
देवताओं के स्वामी की आवाज़ इतनी तेज़ थी कि सबने सुन लिया, और लोगों को कही गई बात का महत्व समझने में पल भर का समय लगा। उसके बाद जो विस्मय भरी आहें निकलीं, वे ऐसी लग रही थीं मानो धरती ही कोई दबी हुई कराह निकाल रही हो, और फिर रात से भी गहरी, मृत्यु से भी गहरी खामोशी छा गई। लोग झुककर और धीरे-धीरे पास आने लगे, चुप रहने की पूरी कोशिश करते हुए, ताकि आगे जो होने वाला है उसे वे न चूकें।
"देव, तुम्हारा क्या मतलब है?" विक्रमादित्य ने धीमी आवाज़ में कहा, उसकी आँखें इंद्र की आँखों में गड़ी हुई थीं। "यह कौन सी नई चाल है?"
"कोई छल नहीं, बिलकुल भी नहीं।" सम्राट के कंधे पर हाथ रखते हुए इंद्र ने अपना सिर झुकाया और गंभीर स्वर में बोले, "यह परम सत्य है। आपकी रगों में देव रक्त बहता है। विक्रमादित्य, आप जन्म से ही देव हैं।"

सम्राट ने इंद्र का हाथ अपने कंधे से झटक दिया और एक कदम पीछे हट गया। "मैं कोई देवता नहीं हूँ," उसने गरजते हुए कहा। "मैं मनुष्य हूँ और मनुष्य होने पर मुझे गर्व है।"

इंद्र ने आह भरी और अपना सिर तिरस्कारपूर्ण ढंग से हिलाया। "सिर्फ अपनी इच्छा से तुम देव होने से इनकार नहीं कर सकते," उन्होंने कहा। "तुम्हारी ये तलवारें, ये नरक की अग्नियाँ... तुम्हें क्या लगता है कि इन्हें चलाने की शक्ति तुम्हें कहाँ से मिलती है? मनुष्यों के हाथों में तो ये बिल्कुल बेअसर हैं। लेकिन तुम्हें देखो। तुम देववंशी हो, और ये नरक की अग्नियाँ यह जानती हैं। ये नरक की अग्नियाँ दिखाती हैं कि तुम वास्तव में कौन हो – मेरे पुत्र के पुत्र। मेरे पोते।"

चारों ओर से सांसें रुकने की आवाज सुनाई दी, जो पहले से कहीं अधिक तीव्र और तेज थी।

"अपने बेटे का बेटा? क्या आप कह रहे हैं...पिताजी एक देवता थे?" सम्राट ने इंद्र को हैरानी से देखा।

"था नहीं, है। तुम्हारे पिता एक देव हैं।" इंद्र ने मुड़कर इशारा किया, और हरिहर की निगाह रथ की ओर गई जहाँ वह मंद-मंद आकृति प्रतीक्षा कर रही थी।

विक्रमादित्य ने भी रथ की ओर देखा, फिर उनकी नज़र इंद्र पर टिक गई। देवता के इशारे को समझते हुए उन्होंने सिर हिलाया। "मेरे पिता अब इस दुनिया में नहीं हैं। वे शकों के साथ युद्ध में शहीद हो गए..."

"नहीं, नहीं," देवराज ने दृढ़ता से सिर हिलाया। "महेंद्रदित्य भले ही एक वीर राजा रहे हों, लेकिन वे कभी तुम्हारे पिता नहीं थे। वही तुम्हारे पिता हैं।"

वहाँ मौजूद हर व्यक्ति रथ की ओर गर्दन उठाकर देख रहा था, जहाँ हवा से लहराते हुए जालीदार पर्दे हल्के से हिल रहे थे। एक सवार के कंधे के ऊपर से बेहतर दृश्य देखने के लिए हरिहर भी रथ को देख रहा था, अंदर बैठे व्यक्ति के उतरने का इंतज़ार कर रहा था। लेकिन तभी सवार ने पहल की और अपने घोड़े को आगे बढ़ाया, जिसके खुर पत्थर की पक्की सड़क पर ज़ोर से खनक रहे थे। हवा से उसकी शॉल उड़ रही थी, लेकिन उसका चेहरा तब तक छिपा रहा जब तक वह लगभग इंद्र के पास नहीं पहुँच गया। काठी पर पैर रखते हुए वह नीचे उतरा और हरिहर ने देखा कि वह रहस्यमय सवार लंबा और आकर्षक था। जैसे ही सवार इंद्र और विक्रमादित्य के पास पहुँचने के लिए अंतिम कुछ कदम बढ़ा रहा था, उसने

ऊपर हाथ बढ़ाकर अपने सिर से शॉल उतार दी। हरिहर उसकी तीखी, सुंदर विशेषताओं और शहद जैसे रंग की भावपूर्ण आँखों से तुरंत मोहित हो गया।
जैसे ही नवागंतुक उनके पास आकर रुका, इंद्र ने उसके कंधों पर हाथ रखकर उसे अपने और विक्रमादित्य के थोड़ा और करीब खींच लिया। देवराज के चेहरे पर मुस्कान खिल उठी, लेकिन खुशी से कहीं अधिक, उनकी आँखों में विजय, गर्व और प्रतिशोध की एक सूक्ष्म झलक दिखाई दी। इस बीच, सम्राट ने नवागंतुक को ध्यान से देखा, उनकी आँखों में संदेह, अविश्वास और सदमे के भाव स्पष्ट थे। उन्होंने दृढ़ता से अपना सिर हिलाना शुरू कर दिया, लेकिन इंद्र, जो आने वाली घटना को भांप गए थे, ने सहमति में सिर हिलाया।
"यह मेरा पुत्र गंधर्वसेना है, और यही तुम्हारा पिता है।"
"नहीं। नहीं। ये सब तुम्हारे झूठ हैं। झूठ। मेरे पिता महेंद्रदित्य हैं। मैं किसी और को अपना पिता नहीं मानता। बस करो, देव। बस करो।" सम्राट के हाथों में नरक की आग धधक रही थी, लपटें उंगलियों की तरह जल रही थीं, मानो जलाने के लिए चीजों को खोज रही हों। "आखिरी बार, मेरे शहर को छोड़ दो इससे पहले कि मैं..."
"अगर आपको मुझ पर विश्वास नहीं है, तो ठीक है," राजा की आवाज़ के ऊपर अपनी बात सुनाने के लिए इंद्र लगभग दहाड़ते हुए बोले। विक्रमादित्य कुछ देर रुके, और जब इंद्र ने देखा कि सम्राट का ध्यान उनकी ओर है, तो उन्होंने कहा, "मैं समझ सकता हूँ कि आपको मुझ पर विश्वास क्यों नहीं है। लेकिन एक पुत्र अपनी माँ पर विश्वास करेगा, है ना? बताइए, आप करेंगे या नहीं?"
विक्रमादित्य इंद्र की ओर गुस्से से घूरते हुए खड़े थे, उनके बगल में नरक की अग्नियां शिथिल लटक रही थीं क्योंकि अंततः उन्हें उस वास्तविकता का सामना करना पड़ा जो देवता कह रहे थे।
"आइए हम दोनों इस बात पर सहमत हों कि आपकी माता का वचन ही अंतिम होगा," इंद्र ने गली के सन्नाटे में गूंजती आवाज़ में कहा। "आइए हम महारानी उपश्रुति से पूछें कि आपके पिता कौन हैं — उनके मृत पति राजा महेंद्रदित्य, जैसा कि आप दावा करते हैं, या मेरे पुत्र गंधर्वसेना, जैसा कि मैं ज़ोर देता हूँ।"

*

जब वे अवंती से निकले थे, तब गाइड समेत चौदह लोग थे। अब वे घटकर सात रह गए थे। वेतला भट्टा को पता था कि जल्द ही छह भी रह जाएँगे, जब बूढ़ा सिपाही—जो समूह में सबसे उम्रदराज था, लगभग आचार्य के बराबर उम्र का—कमजोरी और उस बुखार के आगे हार मान लेगा जो उसकी त्वचा से निकलकर उसे अंदर से जला रहा था। वेतला भट्टा ने अपने पीछे बचे हुए लोगों की बिखरी हुई कतार को देखते हुए सोचा, "भूतिया दलदल हमारे साथ खेल रहा है।" वे सभी अभी भी एक लता से एक-दूसरे से बंधे हुए थे, और उस अनुभवी सिपाही को दो अन्य लोग सहारा दे रहे थे जो खुद भी थकावट से भरे हुए थे। "दलदल एक शिकारी की तरह हमारा पीछा कर रहा है, एक-एक करके सबसे कमजोर को चुन रहा है..."

रुको। मुझे इसे रोकना होगा। मुझे सावधान रहना होगा। मुझे सकारात्मक विचार रखने होंगे। अपने भले के लिए। और उनके भले के लिए। मैं पुरुषों को वह नहीं दिखा सकती जिससे मैं डरती हूँ...

जब यह बात पूरी तरह से साबित हो गई कि दल दलदल में खो गया है और बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं सूझ रहा, तो माहौल निराशाजनक हो गया। पहले तो अपनी दयनीय स्थिति और भोजन की कमी को लेकर, फिर छोटी-छोटी बातों पर मनमुटाव और शिकायतें शुरू हो गईं। भूख, डर और थकान उन्हें जकड़ने लगीं, छोटी-छोटी बातों पर भी गुस्सा भड़क उठा और बार-बार बहसें होने लगीं। राजगुरु को हमेशा बीच-बचाव करना पड़ता था, और वे दलदल में भटकते हुए बाहर निकलने का रास्ता खोजते रहे।

फिर रोशनी दिखाई देने लगी।

पहली चीज़ ने उन सबको चौंका दिया था - एक धुंधली, छोटी, पीले-सफेद रंग की गोलाकार आकृति, जो एक आदमी की मुट्ठी के आकार की थी, दलदल के ठीक ऊपर और कोहरे के किनारे पर तैर रही थी। वे उसकी जाँच करने गए, लेकिन पास आते ही वह दूर चली गई। फिर, उनमें से कुछ को लगा कि रोशनी गायब हो गई है, जबकि अन्य का तर्क था कि वह अभी भी वहीं है, उन्हें आगे बढ़ने का रास्ता दिखा रही है, शायद उन्हें बाहर निकलने का रास्ता भी बता रही है। वे इस बात पर अड़े रहे जब तक कि रोशनी किसी तरह सबकी नज़रों से ओझल नहीं हो गई, जिससे वे सब एक-दूसरे से नाराज़ और चिड़चिड़े हो गए। लेकिन वह दिन भर रुक-रुक कर दिखाई देती रही, कुछ को दिखाई देती रही लेकिन दूसरों को नहीं, फिर उन लोगों

को दिखाई देती रही जिन्होंने उसे पहली बार नहीं देखा था, जबकि उन लोगों से छिपी रही जिन्होंने उसे देखा था। एक बार, तीन सैनिकों ने ज़ोर देकर कहा कि रोशनी उनके दाहिनी ओर दलदल के ऊपर चमक रही थी, दो अन्य का कहना था कि वह सीधे उनके रास्ते पर थी, जबकि बाकी सभी, आचार्य सहित, को कहीं कुछ भी दिखाई नहीं दिया। रोशनी तेजी से आंखों के सामने आने और गायब होने लगी, जिससे हर कोई अलग-अलग दिशाओं में खिंचने लगा, और धीरे-धीरे पार्टी की समझदारी और उसकी एकता बिखरने लगी।

आचार्य को यह एहसास हो गया था कि उन रोशनी में कुछ मायावी सा है—और शायद समूह को बांटने के तरीके से कुछ और भी भयावह ताना-बाना बुना जा रहा है—इसलिए उन्होंने यह नियम बना दिया कि जब तक समूह का हर सदस्य एक ही जगह पर एक ही रोशनी न देख ले, तब तक कोई भी उन रोशनी का पीछा नहीं करेगा। इससे कुछ हद तक व्यवस्था और सामान्य स्थिति बहाल हो गई, लेकिन राजगुरु को यह आभास हो गया कि लोग अजीब और अनियंत्रित तरीके से उन रोशनी की ओर खिंचे चले जा रहे हैं; यहां तक कि जब भी कोई रोशनी उनकी दृष्टि में चमकती, तो उन्हें भी खुद को सम्मोहित होने से रोकना पड़ता था। जल्द ही लोग लगातार उन रोशनी से परेशान रहने लगे, उनकी आंखें धुंध और दलदल में उन रोशनी की एक झलक पाने के लिए टटोलती रहती थीं, और देखते ही देखते, वे सिर्फ उन रोशनी के बारे में ही बात करने लगे, उनके प्रति आसक्त हो गए, पूरी तरह से उनके वश में आ गए।

पहले सिपाही की मौत में रोशनी की भूमिका थी या नहीं, यह बताना नामुमकिन था, क्योंकि किसी को ठीक से पता नहीं था कि उसके साथ क्या हुआ था। पहरा लगाने की कोई खास ज़रूरत नहीं थी, इसलिए सब सो गए थे। जागने पर उन्होंने देखा कि उनमें से एक ने बेल से खुद को अलग कर लिया था और रात के अंधेरे में चला गया था। फिर से इकट्ठा होने के बाद, वे दलदल में अपनी व्यर्थ की भटकन पर निकल पड़े, तभी अचानक दो सिपाहियों के बीच भयंकर लड़ाई छिड़ गई। किसी के दखल देने से पहले ही, एक ने दूसरे की छाती पर चाकू से बार-बार वार किया और उसे मौके पर ही मार डाला। कातिल को बड़ी मुश्किल से काबू किया गया और पूछताछ करने पर वह बड़बड़ाता रहा कि जिस आदमी को उसने मारा था, उसने कल रोशनी

देखने से इनकार कर दिया था, और इसी बात ने उसे क्रोधित कर दिया था। वेताला भट्टा के आदेश पर, सबकी सुरक्षा के लिए उसे बेलों से बांध दिया गया।
उस रात, हत्यारा भी गायब हो गया, ठीक उसी तरह जैसे पिछली रात सैनिक गायब हो गया था।
आचार्य को दूसरे सिपाही का गायब होना अजीब लगा, क्योंकि उस रात पहरा इसी तरह की घटना को रोकने के लिए लगाया गया था। पहरा दे रहे दोनों सिपाही ने जो हुआ उसके लिए माफी मांगते हुए कहा कि वे दोनों नींद से बेहाल हो गए थे और सो गए थे, क्योंकि दोनों को लगा कि दूसरा जाग रहा है। हालांकि उनकी बात विश्वसनीय लग रही थी, फिर भी राजगुरु को शक था। इसलिए, उस दोपहर, जब वे मामूली भोजन के बाद आराम कर रहे थे, तो उन्होंने चुपके से अपने अंगरक्षकों के मन की बात जानने की कोशिश की - महल के स्नानघर के पास सुबह जब उन्होंने वैद्य की किताब पढ़ी थी, उसके बाद यह पहली बार था जब उन्होंने ऐसा करने का प्रयास किया था।
जो कुछ उसने देखा, उससे वह स्तब्ध रह गया। पिछले दिन किसी समय, उन सभी लोगों ने हत्यारे के खिलाफ साजिश रची थी, और रात होने पर, जब आचार्य सो गए थे, तो उन्होंने उस आदमी के बंधन खोल दिए और उसे घने कोहरे में अंधेरे में धकेल दिया, जिससे वह एकांत और भयानक मौत का शिकार हो गया। वेताला भट्टा समझ गया कि क्रूर न्याय की आवश्यकता ने शायद इस सजा को बढ़ावा दिया हो, लेकिन उन लोगों ने खुद को एक ऐसे पागल से बचाने के लिए भी ऐसा किया था जो उन्हें नुकसान पहुंचा सकता था।
वेताला भट्ट ने उन लोगों के मन में घोर भय और निराशा देखी। भयानक आनूपा का भय और दलदल में उनकी मृत्यु की बढ़ती हुई निश्चितता से उत्पन्न निराशा। एक घंटे बाद, बुखार से तड़प रहे उस बूढ़े सिपाही ने आत्महत्या करने और भुखमरी से होने वाली दर्दनाक और लंबी मौत से बचने के इरादे से दलदल में छलांग लगा दी। उसे बचा लिया गया, लेकिन शाम होते-होते बुखार बढ़ गया, और उसे कांपते और पसीना बहाते देख राजगुरु को लगा कि क्या उसे डूबने देना ही बेहतर होता।
पुरुषों की गहरी निराशा और कमजोर मनोबल को भांपते हुए, वेताला भट्टा ने उनके विचारों को प्रभावित करने का निश्चय किया। बिना किसी को दखल दिए, उन्होंने पुरुषों के मन में प्रवेश किया, जहां निराशा पनप रही थी वहां आशा का संचार

किया, गहरे भय को दृढ़ संकल्प से ढक दिया और जहां भी संभव हो सकारात्मकता का संचार किया। उन्हें पता नहीं था कि यह कारगर होगा या नहीं, लेकिन जैसे-जैसे दिन बीतता गया, उन्होंने पुरुषों को अधिक प्रसन्न पाया और आशावाद की स्पष्ट झलक देखी। तब से, वह लगभग निरंतर उनके मन पर काम कर रहे थे, उनमें यह विश्वास जगा रहे थे कि वे भूत दलदल से जीवित निकल सकते हैं - साथ ही उनका ध्यान उन रोशनी से हटा रहे थे जो हर जगह उनका पीछा कर रही थीं, उन्हें विचलित करने और लुभाने की कोशिश कर रही थीं।

"महामहिम, मुझे पूरा यकीन है कि हम पूर्व दिशा की ओर बढ़ रहे हैं," अंगरक्षक दल के कप्तान केदारा आचार्य के पास आकर बोले। उनके कदमों में हल्का उत्साह था और उन्होंने राजगुरु को देखकर मुस्कुराया। उन्हें यह नहीं पता था कि उनका यह आशावाद और जो विचार उन्होंने अभी-अभी व्यक्त किए थे, वे उस व्यक्ति के देन थे जिसे वे रानी अभिरामी के दरबार में ले जा रहे थे। "अगर हम इसी दिशा में चलते रहे, तो अंततः हम ओड्रा में प्रवेश कर जाएँगे।"

"मैं सहमत हूँ," वेताला भट्टा ने धीरे से अपना भाला छिपाते हुए कहा, ताकि कप्तान को भाले की नोक के पास चमकती लाल खोपड़ियाँ दिखाई न दें। "मैं सहमत हूँ," उसने थकावट से अपना हाथ चेहरे पर फेरते हुए दोहराया।

वह और भी बहुत कुछ कहना चाहता था, केदारा को आश्वस्त करना चाहता था कि उसकी सोच सही है और वह सैनिकों का नेतृत्व बखूबी कर रहा है, लेकिन बोलने की ऊर्जा न जुटा पाने के कारण शब्द उसके मुंह में ही अटक गए। यह सबके हित में था कि वह सैनिकों के विचारों को नियंत्रित कर रहा था, उनके गिरते मनोबल को बढ़ा रहा था, उन्हें केंद्रित और उत्साहित रख रहा था, लेकिन यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य था, जो उसकी सारी शक्ति को समाप्त कर रहा था। उसे अपने आसपास के लोगों के मन पर लगातार नजर रखनी पड़ती थी, उनमें पनप रहे अवसाद के संकेतों को पहचानना होता था और अगले व्यक्ति की ओर बढ़ने से पहले तुरंत उसका मुकाबला करना होता था। इसके अलावा, उसे अपनी वास्तविकता की भावना - और उससे उत्पन्न होने वाली उदासी - को भी नियंत्रण में रखना पड़ता था, ताकि वह अनजाने में उन लोगों के मन को प्रभावित न कर दे जिन पर वह प्रभाव डाल रहा था। यह सारा अभ्यास इतना थका देने वाला था कि राजगुरु के पैरों में कमजोरी

महसूस होने लगी थी और उसकी दृष्टि कभी-कभी चक्कर खाकर घूमने लगती थी, मानो अचानक किसी स्वतंत्र धुरी पर घूम रही हो।
"क्या आपको कोई बात परेशान कर रही है, राजगुरु?" केदारा ने अचानक घबराकर पूछा।
"नहीं, बिलकुल नहीं।" आचार्य ने इतनी ज़ोर से सिर हिलाया कि दलदल एक पल के लिए हिल गया। "बिल्कुल ठीक है," उन्होंने कहा और अपने बाईं ओर दिखाई देने वाले प्रकाश के गोले से बचते रहे। उन्होंने अपने आस-पास के लोगों से पूछा कि और किसने उस प्रकाश को देखा है। उनमें से केवल एक ने देखा था, लेकिन उसने जो देखा था उसे अपने तक ही सीमित रखा।
"हमें नाश्ते के लिए कब रुकना चाहिए?" केदारा ने पूछा। "ये आदमी भूखे नहीं लग रहे हैं।"
वेताला भट्टा द्वारा विचारों को मन में बिठाने का एक और सफल प्रयास - उसने सैनिकों को यह विश्वास दिला दिया था कि वे उतने भूखे नहीं हैं जितने वे वास्तव में थे, इसलिए वे भोजन के बारे में कम सोचते थे और घटते हुए राशन का और भी कम उपभोग करते थे।
"मुझे लगता है, हम एक घंटे में थोड़ा आराम कर सकते हैं। नाश्ता और दोपहर का खाना साथ में खा लेंगे।" आदत के चलते वेतला भट्टा ने आसमान की ओर देखा, और साथ ही उन्हें एहसास हुआ कि उन्हें सूरज दिखाई नहीं देगा, जो हमेशा की तरह घने पीले-भूरे बादलों के ऊपर कहीं छिपा हुआ था।
"क्या बात है, राजगुरु?" कप्तान की आवाज में घबराहट झलक रही थी। "आप ठीक हैं?"
आचार्य की दृष्टि अचानक तेज़ी से घूमने लगी जब उन्होंने अपना सिर नीचे किया। ऐसा लगा मानो बादल उनकी नज़र के साथ नीचे उतर रहे हों, और किसी कारणवश, दलदल अचानक एक तरफ़ झुक गया, फिर हलचल मचाते हुए बादलों से मिल गया। उन्होंने देखा कि उनका अंगरक्षक उनकी ओर दौड़ रहा है, तभी उनके घुटनों में अचानक तेज़ दर्द हुआ, मानो वे किसी कठोर चीज़ से टकरा गए हों।
"राज-गुरु! पुरुषों, जल्दी आओ! राज-गुरु को उठाने में मेरी मदद करो।"

वेताला भट्टा को महसूस हुआ कि किसी ने उनके कंधों को पकड़कर उन्हें सहारा दिया है, लेकिन उनका सिर फिर भी लुढ़क रहा था। आदमी भाग रहे थे, और उनके पीछे घना और गहरा कोहरा छा रहा था। कोहरे के साथ कुछ प्रकाश के गोले उठे और नाचने लगे, और फिर पहली बार आचार्य ने कोहरे के बीच से अपनी और अपने आदमियों की ओर आती हुई कुछ धुंधली आकृतियों को देखा।
कफ़न में लिपटी आकृतियाँ। लंबी, पतली और बेजान। कंकालों जैसी। चारों ओर से उनके चारों ओर मंडराती हुई। धुंध के साथ आती हुई। मौत के सेवकों जैसी।
राजगुरु ने अपनी आँखें बंद कर लीं। वे अब और लड़ने के लिए बहुत थक चुके थे। अंधकार को जीत लेने देना ही आसान था।

*

एक विशालकाय व्यक्ति, घनी काली दाढ़ी, एक ऐसी हंसी जो दिल की गहराई से फूट पड़ती थी, और एक लंबा, शक्तिशाली कदम जो विक्रमादित्य को अपने छोटे, मोटे पैरों पर साथ चलने के लिए दौड़ने पर मजबूर कर देता था। सम्राट को महेंद्रादित्य के बारे में सबसे अधिक यही बातें याद थीं।
उनके बचपन की कुछ और खास यादें भी थीं। महेंद्रदित्य उन्हें अपने घोड़े की काठी पर बिठाते थे और वे दोनों उज्जैन के ग्रामीण इलाकों में धीरे-धीरे सवारी करते थे, महेंद्रदित्य उन्हें चित्तीदार हिरण, तीतर और प्रवासी सारस दिखाते थे, जब दोपहर ढलती धूप पत्तों से छनकर आती थी। और वे रातें जब वे किसी जंगल या खुले मैदान में डेरा डालते थे, महेंद्रदित्य उन्हें नक्षत्र और आकाशगंगा दिखाते थे, जबकि विक्रमदित्य को बस आग के पास बैठकर भूत-प्रेत की कहानी सुनने में ही रुचि थी, जिसमें एक दयालु बूढ़े व्यक्ति को उसकी ही परछाई निगल जाती है।
एक बार महेंद्रदित्य ने विक्रमदित्य को एक सुंदर नक्काशीदार लकड़ी की तलवार भेंट की थी, और विक्रमदित्य को अच्छी तरह याद था कि वह उसे गर्व से सबको दिखा रहे थे, जब तक कि उन्हें पता नहीं चला कि महेंद्रदित्य ने वररुचि को असली लोहे की तलवार दी थी, जो वास्तव में चीजों को काट सकती थी। इस खुले धोखे से विक्रमदित्य इतने दुखी हुए कि महेंद्रदित्य उन्हें अगले दिन भट्टी में ले गए और राजमहल को निर्देश दिया कि विक्रमदित्य के लिए लोहे की तलवार बनाएँ, लेकिन गोल किनारों वाली। कुछ वर्षों बाद, एक रात, गंभीर रूप से घायल महेंद्रदित्य ने

दोनों भाइयों को अपने पास बुलाया और अपनी दोनों तलवारें उनके हाथों में थमा दीं, एक-एक, और कहा कि अब ये तलवारें उनकी हैं, और अवंती और उसके लोगों की रक्षा करना उनका कर्तव्य है। विक्रमदित्य को याद आया कि वह महेंद्रदित्य की चिता के पास खड़े थे, वरारुचि उनके बगल में थे, उनकी नई तलवार का लोहे का मूठ उनकी हथेली पर चिकना था, उनकी आँखें धुएँ से जल रही थीं - और भाग्य के क्रोध से भी, जिसने उनके पिता को उनसे छीन लिया था।

"तो क्या आप महारानी माँ को हमारे साथ शामिल होने के लिए संदेश भेज रहे हैं, या हमें उनके पास जाना होगा?"

विक्रमादित्य ने पलकें झपकाईं और इंद्र और गंधर्वसेना पर अपनी दृष्टि फिर से केंद्रित की। सम्राट ने इंद्र के होठों पर एक मनोरंजक मुस्कान देखी, जिसमें थोड़ी सी घमंडी मुस्कराहट भी थी, मानो वे किसी कठिन संघर्ष के बाद मिली जीत का आनंद ले रहे हों। उन्होंने महसूस किया कि शहर की घंटियाँ बजना बंद हो गई थीं, हालाँकि उनकी गूँज अभी भी मंडराते खतरे की एक बासी याद दिलाती हुई प्रतीत हो रही थी। लगाम की छिटपुट झंकार और एक बेचैन घोड़े की हिनहिनाहट के अलावा, उनके आसपास की सड़क एकदम शांत थी। विक्रमादित्य को इस बात का पूर्ण अहसास हुआ कि उनके लोग देख रहे हैं कि वे देवताओं के इस चौंकाने वाले खुलासे पर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं।

"नहीं।"

“नहीं? नहीं का क्या मतलब है?” इंद्र ने अचंभित होकर पूछा। “जब तक तुम मेरी बात पर यकीन नहीं करोगे, तब तक हम सच्चाई का पता कैसे लगाएंगे, जब तक तुम्हारी माँ खुद न बता दे...”

“नहीं,” सम्राट ने अपने कंधे सीधे करते हुए और इंद्र की आँखों में देखते हुए दोहराया। “मैं किसी को भी महारानी माँ को परेशान नहीं करने दूँगा।”

इंद्र की भौहें हल्की सी उठीं, और जब उन्होंने बोलना शुरू किया तो उनके शब्दों में एक धूर्तता झलक रही थी। "क्या ऐसा हो सकता है कि आप अपने असली पिता के बारे में सच्चाई जानने से डरते हों?"

गली में हर परछाई स्थिर थी, हर आत्मा इस तनावपूर्ण दृश्य के केंद्र में बोले जा रहे हर शब्द पर टकटकी लगाए हुए थी।

"देव, मैं सत्य का सामना करने से नहीं डरता," विक्रमादित्य ने तीक्ष्ण, स्पष्ट और दृढ़ स्वर में उत्तर दिया, ताकि वहाँ उपस्थित सभी लोग समझ सकें। "लेकिन मैं अपनी माता का अपमान नहीं करूँगा, केवल इसलिए कि कोई आकर मेरे पितृत्व पर प्रश्न उठाता है। मैं तुम्हें अपनी माता को उनके लोगों के सामने अपमानित नहीं करने दूँगा। मुझे नहीं पता कि तुम देवलोक में अपनी स्त्रियों के साथ कैसा व्यवहार करते हो, लेकिन अवंती में हमारी स्त्रियों का सम्मान और गरिमा सर्वोपरि है। नहीं, देव," सम्राट ने इंद्र से गंधर्वसेन की ओर क्रोधित दृष्टि से देखा, "मेरी माता तुम दोनों के प्रति उत्तरदायी नहीं हैं।"

इंद्र ने अपनी ठंडी नीली आँखों से विक्रमादित्य को देखा, और सम्राट ने उनकी गहराई में अनिश्चितता को उमड़ते हुए देखा। देवता ने स्पष्ट रूप से इतने हठपूर्ण प्रतिरोध की उम्मीद नहीं की थी। "महारानी को शामिल करना है या नहीं, यह आपका निर्णय है, लेकिन आप इस तथ्य से मुंह नहीं मोड़ सकते कि आप एक देवता हैं," उन्होंने कहा। "क्या आप समझते हैं कि एक देवता होने का क्या अर्थ है? इसमें बहुत कुछ है..."

विक्रमादित्य के बाईं ओर अचानक हलचल और गुनगुनाहट सुनाई दी, जिससे इंद्र का ध्यान भंग हो गया। यह शोरगुल गलियों में से एक गली से आ रहा था, और सम्राट ने देखा कि उस गली में जमा लोग किसी के लिए रास्ता बना रहे थे। भीड़ का व्यवहार श्रद्धा और सम्मान से भरा था, और जैसे-जैसे और लोग जगह बनाते गए और उनके दृश्य को अवरुद्ध करने वाले सिर हटते गए, विक्रमादित्य ने भीड़ के बीच से एक परिचित चेहरा आते हुए देखा।

Pralupi.

अपनी बहन के अचानक प्रकट होने पर विक्रमदित्य की आंखें आश्चर्य से अभी चौड़ी ही हुई थीं कि भीड़ में कुछ और लोगों ने सिर घुमाकर उन्हें प्रलूपी के पीछे आ रहे व्यक्ति की एक झलक दिखाई।

रानी उपश्रुति।

जैसे ही सम्राट को गहरा सदमा लगा और उनके मन में भय की आग भड़क उठी, उन्हें याद आया कि उनकी बहन और माता उज्जैन के इस भाग में क्यों थीं। पिछली शाम, भोजन के दौरान, उन्होंने उन्हें शहर के पश्चिमी द्वार के पास स्थित काली मंदिर जाने की योजना बनाते हुए सुना था। इंद्र का सामना करने की जल्दी में, वे उनकी

योजनाबद्ध यात्रा के बारे में सब कुछ भूल गए थे, और अब वे दोनों महल की ओर वापस जा रही थीं, उनका रास्ता ठीक उसी जगह से होकर गुजर रहा था जहाँ उन्होंने इंद्र को रुकने के लिए मजबूर किया था।

"माँ," उसने हैरानी से कहा, यह सोचते हुए कि जब शहर की घंटियाँ बज रही थीं तो वे बाहर क्यों थे, और महल के रक्षकों की सुरक्षा में वे क्यों नहीं थे।

प्रलूपी और उपश्रुति भीड़ को पीछे धकेलते हुए सबके सामने आ गईं। सम्राट ने उनके द्वारा ले जाई जा रही टोकरियाँ देखीं, जो मंदिर से लाए गए फूलों, नारियलों और अन्य भेंटों से भरी थीं। सबसे आगे चल रही प्रलूपी ने सम्राट को देखा, लेकिन फिर अपना ध्यान हाथी पर केंद्रित कर लिया; उस विशालकाय हाथी को देखकर उसका मुँह खुला रह गया। उपश्रुति ने भी एक बार विस्मय से उस विशाल हाथी को देखा, लेकिन फिर उनकी निगाहें विक्रमादित्य पर टिक गईं।

"रक्षकों!" सम्राट ने चारों ओर बेतहाशा घूरते हुए चिल्लाकर कहा। "तुम्हारी महारानी माँ असुरक्षित हैं। जल्दी से उनके पास पहुँचो। उन्हें और राजकुमारी प्रलूपी को यहाँ से ले जाओ। जाओ, जाओ!"

विक्रमादित्य के बाईं ओर खड़ी शंकु ने सहज ही अपने घोड़े को उन दोनों महिलाओं की ओर दौड़ा दिया। राजा के आदेश से महल के रक्षक और नगर रक्षक दल सतर्क हो गए, और उपश्रुति और प्रलूपी की रक्षा के लिए दौड़ते हुए घोड़ों के खुरों की आवाज गूंज उठी। रानी विक्रमादित्य को हैरानी से देखती रही, उसकी आँखें विस्मय से चौड़ी हो गईं, और सम्राट ने हाथ हिलाकर उसे पीछे हटने का इशारा किया।

लेकिन उपश्रुति ने या तो उसे देखा नहीं या उसके इशारे को समझ नहीं पाई। इसके बजाय, उसकी निगाहें सामने के दृश्य पर घूमती रहीं, उत्सुकता से विक्रमादित्य से वापस उस विशाल हाथी पर, और वहाँ से इंद्र पर—

सम्राट अपनी माता की ओर देख रहे थे, तभी उन्होंने देखा कि उनकी निगाह इंद्र के बगल में खड़े देवता पर पड़ी। विक्रमादित्य ने देखा कि उपश्रुति की आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं, उनका चेहरा पीला पड़ गया और फिर अचरज और भय से जम गया, क्योंकि उनकी निगाहें देवता पर टिकी हुई थीं। अचानक सांस लेने में कठिनाई महसूस करते हुए, विक्रमादित्य ने अपना सिर गंधर्वसेन की ओर घुमाया, जो उपश्रुति को घूर रहे थे, उनकी गहरी, भावपूर्ण आँखें पहचान की स्पष्ट चमक से दमक रही थीं।

विक्रमदित्य के कानों में घोड़ों के खुरों की तेज़ आवाज़ गूंज रही थी; उनके हाथ सुन्न पड़ गए थे, नरक की आग उनके हाथों में भारी लग रही थी; उन्हें अपनी माँ की ओर देखने के लिए सिर उठाने में कठिनाई हो रही थी। जब तक उनकी नज़र उस जगह पड़ी जहाँ वह खड़ी थीं, महल के रक्षकों ने उनके और प्रलूपी के चारों ओर घेरा बना लिया था, जिससे वे दिखाई नहीं दे रहे थे, और शंकु भीड़ के बीच से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ रहा था, दर्शकों को पीछे धकेलकर रास्ता साफ़ कर रहा था, ताकि रक्षक उनकी माँ और उनकी बेटी को तेज़ी से खतरे से दूर ले जा सकें। विक्रमदित्य अपनी माँ की एक झलक पाने के लिए पंजों पर खड़े हो गए, और जैसे ही उन्होंने उन्हें जाते हुए देखा, वह एक बार मुड़ीं, अपने कंधे के ऊपर से एक नज़र डाली, उनकी भयभीत आँखें उस चेहरे को खोज रही थीं जिससे उनका सामना अचानक हुआ था।

रानी और राजकुमारी के सुरक्षित चले जाने के बाद, गली का शोरगुल जितनी जल्दी शुरू हुआ था उतनी ही जल्दी शांत हो गया, और इंद्र और सम्राट एक बार फिर सबका ध्यान आकर्षित करने लगे। देव स्वामी समझ गए थे कि विक्रमादित्य उपश्रुति और गंधर्वसेन के आमने-सामने आने की शर्मिंदगी से बाल-बाल बच गए थे, लेकिन सम्राट की बेचैनी देखकर उनके चेहरे पर एक श्रेष्ठ मुस्कान फैल गई और उन्होंने गंधर्वसेन को संतुष्टि का संकेत दिया। हालांकि, युवा देवता विचलित थे और उनकी निगाहें बार-बार उस जगह पर जा रही थीं जहाँ महल के रक्षक उपश्रुति को ले गए थे।

"मैं क्या कह रहा था?" इंद्र ने सम्राट की ओर एक पल के लिए देखा। "हाँ... एक देव होने के नाते..."

"आपने कहा था कि मुझे अपने असली पिता के बारे में सच्चाई जानने से डर लगता है," विक्रमादित्य ने बीच में ही टोकते हुए कहा। उन्होंने अपने भावों पर पूरा नियंत्रण पा लिया था और इंद्र और गंधर्वसेना को देखते हुए उनकी आँखें शांत लेकिन ठंडी थीं। "सच कहूँ तो, मेरे लिए इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मेरे असली पिता कौन हैं। मैंने हमेशा खुद को महेंद्रादित्य का पुत्र माना है और इससे मुझे कोई परवाह नहीं कि वह मेरे पिता हैं या नहीं। मैं अब भी उनका पुत्र हूँ।"

गंधर्वसेना ने सम्राट की ओर मुड़कर एक कदम आगे बढ़ाया। "पुत्र, मेरी यही कामना है कि..."

"बस करो," विक्रमादित्य ने तीखे स्वर में कहा, उनकी आवाज़ आग की तरह भड़क उठी। "मुझे उस नाम से मत पुकारो। यह अधिकार केवल राजा महेंद्रादित्य को था, जिन्होंने मुझ पर प्रेम और स्नेह बरसाया और मुझे वह सब कुछ सिखाया जो मैं जानता हूँ। उनसे मैंने मित्र का महत्व, वचन का मूल्य और वफादारी की कीमत सीखी। उन्होंने मुझे तलवार दी ताकि मैं अपनी शक्ति और साहस का सदुपयोग कर सकूँ; उन्होंने मुझे ज्ञान दिया ताकि मैं जान सकूँ कि तलवार को म्यान में कब रखना है। उन्होंने मुझे युद्ध की कहानियाँ सुनाईं और करुणा के गीत भी सुनाए। वे एक पुत्र के लिए पिता के सभी आदर्श थे। तुम—भले ही तुम्हारी बात सच हो—तुम यहाँ मायने नहीं रखते। पिता तो राजा महेंद्रादित्य हैं। कोई और नहीं।"

गंधर्वसेन सम्राट के शब्दों के प्रभाव से स्तब्ध होकर पीछे हट गए। उन्होंने संकट में इंद्र की ओर रुख किया और मार्गदर्शन मांगा। विक्रमादित्य ने देखा कि देवता इंद्र के हाथों की कठपुतली मात्र थे, जो अपने लिए सोचने-समझने और कार्य करने में असमर्थ थे। इंद्र भी दुविधा में थे, वे घटनाक्रम से पूरी तरह प्रसन्न नहीं थे, लेकिन पूरी तरह दुखी भी नहीं थे।

"पिता के आलिंगन से तुम्हें मुँह मोड़ते देखकर मुझे बहुत दुख हो रहा है।" इंद्र ने उदास होकर सिर हिलाया। उनके शब्दों के बावजूद, सम्राट को ऐसा लगा जैसे देवता घटनाओं के घटित होने के तरीके से संतुष्ट थे, जो चिंताजनक था। "तुम्हारे दादा के रूप में, मैं तुम्हें एक देवता के योग्य सब कुछ देना चाहता था," इंद्र ने आगे कहा। "क्यों, मैं इस शहर और इसके लोगों को हाल ही में झेलनी पड़ी सभी परेशानियों को दूर करना चाहता था, लेकिन..."

"तुमने मेरे नगर और उसके लोगों पर जो मुसीबतें लाई हैं।" इंद्र की आँखों में दिख रहे क्रोध को अनदेखा करते हुए सम्राट ने आगे कहा, "और तुम जो कुछ भी मुझे देने का दावा करते हो, उसके बावजूद मुझे ऐसा क्यों लगता है कि जब मैं किसी भी तथाकथित देव वंश को स्वीकार करने से इनकार करता हूँ तो तुम्हें ही अधिक हानि होती है? रुको... मुझे अंदाज़ा लगाने दो। क्या तुम यह उम्मीद कर रहे थे कि मैं खुशी से रोऊँगा और वैषद का खंजर तुम्हें सौंप दूँगा?" विक्रमादित्य का लहजा व्यंग्यपूर्ण हो गया।

"विक्रमादित्य, आप एक देवता हैं। देवलोक के प्रति आपकी निष्ठा है और देवताओं की महिमा को बनाए रखना आपका कर्तव्य है।" उन्हें मनाने के अंतिम प्रयास में, इंद्र

सम्राट के करीब गए और उनके कंधे पकड़ लिए। "वैषाढ़ का खंजर यह सुनिश्चित करेगा कि असुर कभी भी हम पर विजय प्राप्त न कर सकें। विक्रमादित्य, इसे मुझे दे दीजिए। आपके रक्त में बहने वाले रक्त की रक्षा के लिए।"

सम्राट ने अपने कंधों पर टिकी दो विशाल हथेलियों को देखा, फिर इंद्र की नीली आँखों में देखा, जो ठंडी और हिसाब-किताब वाली थीं, लेकिन आशा और अपेक्षा से भी भरी हुई थीं। इंद्र पर अपनी निगाहें टिकाए हुए विक्रमादित्य ने बड़ी सावधानी से अपनी तलवारें म्यान में डाल लीं। फिर, इंद्र की कलाइयों से उनके हाथों को एक-एक करके अपने कंधों से उठाया और नीचे गिरा दिया, जिससे वे देवता की पकड़ से मुक्त हो गए। पीछे हटने के बजाय, राजा ने इंद्र से अपनी दूरी एक इंच और कम कर ली, और जब उन्होंने बात की, तो उनकी ठंडी आवाज़ में एक भारी निर्णायकता थी।

"आपकी तारीफ करनी होगी, आपके इरादे हमेशा अटल और स्पष्ट रहे हैं," उन्होंने कहा। "शायद आपको इसका एहसास न हो, लेकिन हम दोनों एक जैसे हैं, देव। मैंने हलाहल की रक्षा करने का वादा किया है। आप चाहे कुछ भी करें या कहें, मैं चाहे जो भी हूँ या मेरे पिता चाहे जो भी हों, आपको मुझसे वीशादा का खंजर कभी नहीं मिलेगा। मेरा सुझाव है कि आप मेरे शहर को शांति से छोड़ दें।"

इंद्र ने सम्राट को घृणा से भरी निगाहों से घूरते हुए गहरी सांस ली और अपने होठों पर एक ऐसी मुस्कान बिखेरी जो मानो गुर्राहट जैसी लग रही थी। बिना कुछ कहे, उन्होंने एक बार सिर हिलाया और सड़क पर खड़े विशालकाय हाथी की ओर मुड़ गए। जब वे हाथी पर बैठ गए और गंधर्वसेन अपनी पीठ पर वापस आ गए, तभी देवताओं के स्वामी ने कुछ कहा।

"विक्रमादित्य, तुम खुद को बहुत बहादुर समझते हो," उसकी आवाज़ दूर से आती गरजती बिजली जैसी थी। "यह जानते हुए कि तुम्हारी रगों में मेरा ही खून दौड़ रहा है, शायद तुम समझते भी होगे। लेकिन तुम एक गलती कर रहे हो। तुम केवल आधे देवता हो। तुम्हारा दूसरा आधा हिस्सा मनुष्य है, जो तुम्हें कमज़ोर और असुरक्षित बनाता है। अगली बार जब मैं लौटूँगा, तो मैं उसी हिस्से को कुचल दूँगा।" उसने नीचे उज्जैन के नागरिकों के चेहरों की ओर देखा, जो घबराकर उसकी ओर देख रहे थे। उसके शब्द सम्राट के साथ-साथ उन नागरिकों को भी संबोधित थे, उनकी चिंता को बढ़ाते हुए, उन्हें धीरे-धीरे घोर भय के कगार की ओर धकेल रहे थे। "वादा हो या न

हो, पोता हो या न हो, हलाहल लेने से मुझे कोई नहीं रोक सकता। मैं जल्द ही लौटूँगा। यही मेरा तुमसे वादा है—यही मेरी चेतावनी भी है।”

वादा

“हे,” वह चिल्लाया। फिर और जोर से बोला, “हे तुम... क्या तुम मुझे सुन सकते हो?” जब वह अपनी कोठरी की खुरदरी पत्थर की दीवार से पीठ सटाकर स्थिर बैठा था, तो उसके सिर में लगभग कोई दर्द नहीं था। हिलने-डुलने पर, उसके सिर में एक हल्का, लगातार दर्द उठता था जिसे उसने किसी तरह नज़रअंदाज़ करना सीख लिया था। लेकिन चिल्लाने की कोशिश से दर्द का एक विस्फोट होता था, दर्द की एक बौछार जो उसकी गर्दन में चुभती थी और उसकी दुनिया को अस्थिर कर देती थी। फिर भी वह चिल्लाता रहा, बाहर मौजूद किसी का भी ध्यान आकर्षित करने के लिए वह हर संभव कोशिश करता रहा।

“अरे, मुझे पता है तुम मुझे सुन सकते हो, बेवकूफों। मुझे छोड़ दो।” उसने अपनी हथकड़ी लगी मुट्ठियों को गुस्से से हिलाया, कुछ तो निराशा में, और कुछ इस सोच में कि दीवार से बंधी भारी जंजीर और ब्रैकेट इतनी ज़ोर से हिलें कि उनकी आवाज़ बाहर तक सुनाई दे। धातु की कड़ियाँ आपस में धीमी आवाज़ में टकराईं, और जंजीर खड़खड़ाती हुई ठंडे पत्थर के फर्श पर अचानक टूट गई। “हेय!”

कमरे के चक्करदार घुमाव और गर्दन व कंधों से नीचे उतरने वाले दर्द की लहर से जूझते हुए, वह रुक गया, चौड़े लकड़ी के दरवाजे की ओर कान लगाए, आने वाले कदमों की आहट सुनने का इंतजार कर रहा था।

कुछ नहीं।
उसने अपना ध्यान दीवार में बनी एक छोटी सी खिड़की की ओर मोड़ा, जहाँ खड़े होने के लिए कुछ भी न होने के कारण पहुँचना असंभव था, और लोहे की मोटी जाली से ढके होने के कारण उसे तोड़ना भी नामुमकिन था। बाहर, अनाज कूटने वाला कोई भी व्यक्ति चुप हो गया था, और एक पल के लिए ऐसा लगा जैसे उसकी पुकार का जवाब मिलने वाला है। लेकिन अगले ही पल, ओखली और लकड़ी के मूसल की लयबद्ध आवाज फिर से शुरू हो गई, और उसके मुँह में निराशा का कड़वा घूंट भर आया।
"हे!" वह आधे चिल्लाते हुए, आधे गुर्राते हुए बोला, दर्द से उसकी पलकों के नीचे चिंगारियों का इंद्रधनुष सा फूट पड़ा था। "मुझे यहाँ से बाहर निकालो, तुम... तुम मंदबुद्धि हो। तुम नहीं जानते कि मैं कौन हूँ। मैं सम्राट विक्रमादित्य का भतीजा, घातकपरपरा हूँ। मुझे अभी छोड़ दो और मैं सुनिश्चित करूँगा कि तुम्हारे साथ दया का व्यवहार किया जाए। मुझे छोड़ दो। हे।"
राजकुमार को न तो पता था कि वह कहाँ है और उस शाम से कितने दिन बीत चुके हैं जब वह छोटी सी नदी के किनारे रुका था। वह धीरे-धीरे होश में आया था—ऐसा लग रहा था जैसे नदी से ऊपर आ रहा हो, फिर डूब रहा हो, फिर साँस लेने के लिए ऊपर आ रहा हो, डूब रहा हो, फिर ऊपर आ रहा हो—और वह निश्चित रूप से नहीं कह सकता था कि वह कितनी देर तक होश में आता-जाता रहा। उसे धुंधला सा याद था कि कुछ लोग उसे बेंत की पालकी में ले जा रहे थे, और उसके सिर के ऊपर से नीले आसमान की एक पट्टी गुजर रही थी जिसके दोनों ओर ऊँची, ऊबड़-खाबड़ पर्वत श्रृंखलाएँ थीं। एक बार फिर, वह सख्त ज़मीन पर लेटा था, पास में आग जल रही थी जबकि ऊपर आसमान तारों से भरा था, और उसे किसी के ढोल बजाने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। शायद ये सब सपने थे, हालाँकि जितना वह इनके बारे में सोचता, उतना ही उसे यकीन होता कि ये सपने नहीं थे।
क्योंकि हमेशा, हमेशा, उसके सिर में असहनीय दर्द होता था। उसके सिर के अंदर। घटाकरपारा ने धीरे से अपने सिर के पिछले हिस्से को छुआ और उस जगह को टटोला जहाँ उसे लाठी से चोट लगी थी। वहाँ बंधे हुए कपड़े के टुकड़े को टटोलते हुए, उसकी उंगलियों को उस कच्चे से पट्टी के नीचे कुछ नरम और उभरा हुआ सा महसूस हुआ - उसने अनुमान लगाया कि यह घाव पर पट्टी बांधने के लिए था। उसने

अपना हाथ पीछे खींच लिया और अपनी उंगलियों को सूंघा; हल्दी और किसी अन्य जड़ी-बूटी की मिली-जुली मनमोहक सुगंध उसकी नाक में भर गई।
उसी सुबह उन्हें पूरी तरह से होश आया था—कम से कम कोठरी में आ रही रोशनी की गुणवत्ता से उन्हें यही लगा था कि सुबह हो गई है—और उन्होंने देखा कि उनके लिए आग में पकी रोटियाँ और दही परोसा गया है। घोर भूख से बेहाल होकर उन्होंने झटपट खाना खाया और साथ में गुनगुना पानी का एक छोटा घड़ा भी पी लिया। भूख कुछ हद तक शांत होने पर, घटाकरपारा ने अपनी स्थिति का जायजा लिया और निष्कर्ष निकाला कि यद्यपि वे अपने अपहरणकर्ताओं की दया पर थे—जिन्होंने आम चोरों की तरह उनसे उनके सलाहकार का स्वर्ण पदक तुरंत छीन लिया था—उन्होंने उनकी चोट का इलाज किया था और उन्हें भोजन कराया था, जिसका अर्थ था कि उनसे उनके जीवन को तत्काल कोई खतरा नहीं था। हालाँकि, इससे उनकी पहचान या उन्हें बंधक बनाने के पीछे उनके इरादों के बारे में कुछ पता नहीं चलता था, और यह बात राजकुमार को बहुत परेशान कर रही थी।
मिट्टी के बर्तनों और सोते समय ओढ़े गए बकरी के बालों के मोटे कंबलों के अलावा, कोठरी बिल्कुल खाली थी और उसमें संस्कृति या भूगोल का कोई संकेत नहीं था। यह पता लगाने में असफल कि वह कहाँ है, घटाकरपारा को नींद आने ही वाली थी कि पास ही अनाज कूटने की ओखली की आवाज़ ने उसका ध्यान खींचा। तब से वह चिल्ला रहा था, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ, और अब उस चिल्लाहट से उसका गला बैठ गया था और उसमें खराश हो गई थी।
"अरे, कृपया मुझे थोड़ा पानी चाहिए।"
धड़कनें लगातार जारी रहीं। राजकुमार सोचने लगा कि क्या वे उसे सुन भी पा रहे हैं, और अगर सुन पा रहे हैं, तो क्या उनकी अनदेखी करना उसे तोड़ने के लिए की गई किसी यातना का हिस्सा है। उसके भीतर का एक और हिस्सा—जिसकी राय वह सुनना नहीं चाहता था—उसे बता रहा था कि ये धड़कनें केवल उसकी कल्पना में ही हो रही हैं।
“कृपया...” इस बार उनकी आवाज कर्कश हो गई, “थोड़ा पानी दे दीजिए।”
धड़कना बंद हो गया।
घटाकरपारा ने अपनी सांस रोक ली, यह देखने के लिए कि क्या सब कुछ पहले की तरह फिर से शुरू हो पाएगा। क्षण बीत गए और कोठरी के अंदर और बाहर की

खालीपन को भरने के लिए कुछ भी नहीं था। खिड़की से आती हुई रोशनी का चौकोर धब्बा फर्श पर धीरे-धीरे फैल रहा था, मानो सूरज का पूरा भार अपने नाजुक कंधों पर ढो रहा हो।

दरवाजे के बाहर कदमों की आहट।

चक्कर आने से गिरने से बचने के लिए दीवार का सहारा लेते हुए राजकुमार खड़ा हुआ। उसने लड़खड़ाते हुए एक, फिर दो, फिर तीन कदम दरवाजे की ओर बढ़ाए, यह देखने के लिए कि क्या वह अंदर आने वाले व्यक्ति पर झपट्टा मार सकता है, लेकिन चौथे कदम के बाद, उसकी कलाई में बंधी जंजीर ने उसे पीछे खींच लिया। दीवार के ब्रैकेट से लटकती हुई तनी हुई जंजीर को देखकर, घटाकरपारा को एहसास हुआ कि वह अभी दरवाजे तक आधा रास्ता भी तय नहीं कर पाया है और उसने निराशा की एक आह भरी।

ताले में चाबी खड़क उठी और दरवाजा खुल गया, जिससे शॉल से लिपटी एक आकृति अंदर आई।

घटाकरपारा ने उस आकृति को आश्चर्य से देखा। उसे एक पुरुष रक्षक की उम्मीद थी, कोई बड़ा, बदतमीज़ या युद्ध में घायल सा दिखने वाला क्रूर व्यक्ति, कोई ऐसा व्यक्ति जो आम धारणा के अनुसार रखवाले की तरह हो। लेकिन, कोठरी में प्रवेश करने वाली एक महिला थी, जिसकी उम्र का अंदाज़ा लगाना मुश्किल था; उसके सिर पर लगे वस्त्र से निकले भूरे बालों की लटों से उसने अनुमान लगाया कि वह चालीस या पचास वर्ष की होगी। उसकी आँखें गंभीर भूरी थीं, जिन्हें उसने अब उस पर टिका दिया, उसके होंठों के कोने नापसंदगी भरी भौंहों में नीचे की ओर मुड़े हुए थे। उसके हाथ में एक और मिट्टी का घड़ा था, जो उस घड़े से बड़ा था जिसमें उसे पानी दिया गया था।

जब वह उसे घूरता हुआ खड़ा था, तभी उस स्त्री ने घड़ा ज़मीन पर पटक दिया। फिर, बिना कुछ कहे, वह तेज़ी से मुड़ी और दरवाज़े की ओर चल पड़ी। जैसे ही वह दहलीज पार करके दरवाज़ा बंद कर रही थी, तभी घटाकरपारा ने आखिरकार अपनी आवाज़ निकाली।

मैं कहाँ हूँ?

एक पल के लिए उस स्त्री ने अपनी तीखी निगाहों से राजकुमार को देखा। फिर भारी दरवाज़े को कब्ज़ों से उखाड़कर उसने उसे ज़ोर से बंद कर दिया और कुंडी लगा

दी। राजकुमार ने ताले की आवाज़ सुनी और स्त्री के कदमों की आहट धीमी हो गई। एक मिनट बाद, ओखली की आवाज़ फिर से तेज़ हो गई।

घटाकरपारा ने गहरी निराशा से आह भरी। चाहे उसे बंदी बनाने वाले कोई भी हों, उन्होंने उसे एक बूढ़ी औरत के हवाले कर जेलर बना दिया था। एक औरत। वह योद्धा भी नहीं थी। बस एक साधारण औरत जो अनाज कूटने जैसे रोज़मर्रा के काम करती थी, जिसके लिए अपने कैदी की प्यास बुझाने से ज़्यादा ज़रूरी अनाज कूटना था। इससे पता चलता था कि उसके बंदी बनाने वाले उसे कितना कमज़ोर समझते थे, उनकी योजनाओं में उसकी अहमियत कितनी कम थी।

पानी का घड़ा बिना छुए, घटाकरपारा दीवार के सहारे लौट आया। दीवार से टेक लगाकर, वह थका हुआ और उदास होकर ज़मीन पर बैठ गया और अपने घुटनों को गले लगाकर बैठ गया। उसके मन में अपारूपा के ख्याल उमड़ रहे थे, जिससे बाकी सब कुछ धुल गया था।

*

सभा की मेज पर विक्रमादित्य के आसन के दाहिनी ओर दीवार पर तलवार टंगी थी। एक तरफ सिंधुवर्त का एक प्राचीन नक्शा था—फीके लाल रेशम पर सुनहरे धागे की कढ़ाई, जो प्रारंभिक आदित्यों के शासनकाल का था—और दूसरी तरफ वह भाला था जिसका उपयोग महेंद्रादित्य के पिता धर्मादित्य ने उन दो आदमखोर बाघों को मारने के लिए किया था जिन्होंने भोजपुरी इलाके में आतंक मचा रखा था, जब भोजपुरी एक छोटा सा शांत गाँव मात्र था। तलवार लंबी थी, पुराने स्टील से बनी एक बड़ी घुमावदार धारदार ब्लेड थी, जिसका वजन इतना अधिक था कि युद्ध में हर किसी के लिए इसे संभालना आसान नहीं था। यह तलवार—और इसकी जुड़वां तलवार, क्योंकि वे एक जोड़ी थीं—महेंद्रादित्य के भारी-भरकम शरीर को ध्यान में रखकर बनाई गई थीं, और अपने पूरे युद्ध जीवन में राजा ने केवल इन्हीं दो तलवारों का उपयोग किया था। लंबे समय तक उपयोग के कारण इसकी चमड़े की मूठ घिस गई थी, और वर्षों के संघर्ष में अनगिनत अन्य तलवारों और कुल्हाड़ियों से टकराने के कारण इसके पोर पर जगह-जगह खरोंचें और निशान थे।

यह एक मजबूत तलवार है और यह तुम्हारी रक्षा करेगी। लेकिन याद रखना, बेटे, तलवार की ताकत उसे चलाने वाले के साहस पर निर्भर करती है।

तलवार को घूरते हुए, महेंद्रदित्य के विचार उनके मन में गूंज की तरह दौड़ रहे थे। सम्राट को वह पहला मौका याद आया जब उन्होंने तलवार को युद्ध में इस्तेमाल किया था - वह रात जब उन्होंने श्मशान घाट से बेताल को कैद से मुक्त कराया था। उस युद्ध का क्रोध और आतंक अभी भी उनके मन में ताजा था - उन्हें याद था कि कैसे वे आग और धुएं के बीच से दौड़ते हुए, हूणों की रक्षा पंक्ति को चीरते-काटते उस बरगद के पेड़ तक पहुंचे थे जहाँ बेताल कैद था। उस रात तलवार ने दर्जनों बर्बरों को घायल कर दिया था; यह उनके लिए नया था, लेकिन तलवार के लिए तो यह एक आम बात थी। वर्षों से, जहाँ भी वे गए, तलवार ने खून से लथपथ रास्ता बनाया, पीछे हटते हुए बर्बरों के खिलाफ अपनी सेना का नेतृत्व किया। उन्होंने तलवार का इस्तेमाल तब तक किया जब तक कि आखिरी हूण और शक वापस महान रेगिस्तान में नहीं चले गए, और विक्रमादित्य को एहसास हुआ कि अगर नरक की आग न होती, तो शायद वे अभी भी इसका इस्तेमाल कर रहे होते। उन्होंने सोचा कि इसकी जुड़वां तलवार - जो वरारुचि को दी गई थी - कहाँ है; वररुची उस तलवार से तब तक लड़ता रहा जब तक कि दक्षिणी राज्यों के उसके अभियान ने उसे उरुमी और कटारी से परिचित नहीं करा दिया, जो तब से उसके पसंदीदा हथियार बन गए थे।

"वरारुचि कहाँ है?" सम्राट ने भौंहें चढ़ाकर तलवार से ध्यान हटाकर परिषद की मेज के चारों ओर बैठे लोगों की ओर देखा।

प्रश्न की अचानकता ने कम सदस्यों वाली सभा को आश्चर्यचकित कर दिया, और पाँचों आँखें थोड़ी हैरानी से विक्रमादित्य की ओर देखने लगीं। क्षपणक, वराहमिहिर और शंकु उनके दाहिनी ओर बैठे थे, जबकि धनवंतरी उनके बाईं ओर राजा हरिहर के साथ थे। हरिहर, शाही अतिथि होने के नाते, सभा कक्ष में सभी के साथ शामिल होने के लिए आमंत्रित थे, लेकिन परामर्श सुनते समय वे पूरी तरह असमंजस में थे।

"क्या हमें पता है कि वह अभी तक वापस क्यों नहीं आया?" विक्रमादित्य की निगाहें परिषद के सदस्यों पर घूमीं और अंत में शंकु पर टिक गईं। "कल आपने एक दूत भेजा था, जैसा मैंने कहा था..."

"मैंने किया। हमारी बातचीत के ठीक बाद..." लड़की ने खुद को रोकते हुए कहा। "सेतयांता करने वाले को आपका संदेश पहुंचा देना चाहिए था; अगर किसी कारण

से वह चूक गया होता, तो वह ज़रूर लौटकर मुझे बता देता। फिर भी, मैं उससे एक बार फिर पूछ लूँगी, ताकि मुझे पक्का पता चल जाए।"
"मुझे पूरा यकीन है कि घुड़सवार ने अपना काम कर दिया होगा," सम्राट ने सिर हिलाया, लेकिन उनके चेहरे से शिकन नहीं हटी। "लेकिन वरारुचि का महल में न लौटना अजीब है—खासकर घटकर्परा के साथ जो हुआ है उसे सुनने के बाद। यह उनके स्वभाव के बिल्कुल विपरीत है। आशा है बड़ी-मां ठीक होंगी..."
"अगर ऐसा होता तो वरारुचि धनवंतरी या कुंजला को बुलवा लेते," वराहमिहिर ने बताया।
"मैं घुड़सवार से बात करूंगी, सम्राट," शंकु ने अपने राजा को आश्वस्त करने की कोशिश करते हुए कहा।
"क्यों न हम उषांथा के घर एक और घुड़सवार भेज दें?" धनवंतरी ने सुझाव दिया।
इसके जवाब में वराहमिहिर ने कहा, "घबराइए मत। किसी बात ने उन्हें रोक रखा होगा, लेकिन यह कोई गंभीर बात नहीं हो सकती, वरना वे हमें बता देते। वे रास्ते में ही होंगे—क्या पता, काम खत्म होने से पहले या दिन में बाद में वे उसी दरवाजे से अंदर आ जाएं।"
"मैं सहमत हूँ," सम्राट ने कहा। "उसे आज रात तक का समय देते हैं। अगर कल सुबह तक उससे कोई खबर नहीं मिली, तो हम दूसरा दूत भेज देंगे।"
यह सब तय होते ही, उस छोटे से समूह में क्षण भर के लिए सन्नाटा छा गया। "इससे पहले हम किस बारे में बात कर रहे थे?" विक्रमादित्य ने पूछा। "मुझे खेद है कि मेरा ध्यान थोड़ा भटक गया था। हम बात कर रहे थे..."
मैं पूछ रहा था कि हमें उज्जैनी को इंद्र द्वारा दी गई धमकी को कैसे लेना चाहिए।
"बिल्कुल गंभीरता से," क्षपणक ने बीच में कहा। "उसका इरादा स्पष्ट था। वह लोगों के दिलों में भय पैदा करना चाहता था, उन्हें डराना चाहता था, उन्हें ऐसी स्थिति में डालना चाहता था जहाँ उन्हें लगे कि देवताओं के साथ हमारे युद्ध का कोई अच्छा परिणाम नहीं निकलेगा। मेरा मानना है कि इंद्र का छोटा सा भाषण महल के खिलाफ जनमत को भड़काने के उद्देश्य से दिया गया था।"
जब कक्ष में असहज सन्नाटा छा गया, तो विक्रमादित्य ने अपने सलाहकारों की ओर देखा और पूछा, "इन दिनों उज्जैन में आम राय क्या है?"

“खैर,” वराहमिहिर अपनी सीट पर थोड़ा हिले, “पहले की तरह ही स्थिति लगभग बंटी हुई है। कुछ लोग देवताओं और असुरों के खिलाफ हमारे रुख का समर्थन करते हैं, और कुछ लोग नाखुश हैं, जिनमें ज्यादातर वे लोग हैं जिन्होंने बहुत कष्ट झेला है। लेकिन हां, आज के बाद...” सलाहकार ने गहरी सांस ली और कंधे उचका दिए।

“आज का क्या?” सम्राट ने बुजुर्ग पार्षद को ध्यान से देखा।

वराहमिहिर ने तुरंत जवाब नहीं दिया। आज बहुत कुछ घटित हो चुका था। उन्होंने राजा की ओर टकटकी लगाकर देखा, यह देखने के लिए कि क्या विक्रमादित्य प्रश्न को स्पष्ट करेंगे, ताकि वे उसी के अनुसार अपना उत्तर दे सकें। हालांकि, सम्राट भी उतने ही अडिग थे, उन्होंने अपने प्रश्न को विस्तार से नहीं बताया, और यह गतिरोध कुछ असहज क्षणों तक खिंचता रहा।

“देखिए, लोगों ने इंद्र को देख लिया है,” सलाहकार ने अंत में कहा। “उन्होंने देवताओं के स्वामी को देखा है। उन्होंने उनके हाथी को देखा है। उन्होंने उनकी धमकियाँ सुनी हैं। वे जानते हैं कि उन्हें किससे मुकाबला करना है। राय बदल सकती है।”

कुछ देर रुकने के बाद, अपने पार्षदों का जायजा लेते हुए विक्रमादित्य ने कहा, "शायद हमें शहर खाली करा देना चाहिए। जो लोग शहर छोड़ सकते हैं—जिनके पास जाने के लिए दूसरी जगहें हैं—उन्हें जाने के लिए कह दें। और जिनके पास कहीं और जाने की जगह नहीं है, उनके लिए सुरक्षित और संरक्षित स्थान ढूंढें। इस तरह हम जोखिम को थोड़ा कम कर सकते हैं।"

"क्या अश्विनों के हम पर हमले के बाद से चल रहे इस पलायन को औपचारिक रूप दिया जाए?" धनवंतरी ने संदेह भरी नज़र से देखा।

सम्राट को सिर हिलाते देख, मेज के चारों ओर बैठे लोगों ने इस विचार पर चिंतन करने के लिए अपने सिर झुका लिए।

“ऐ सम्राट, ऐसे फरमान का सिंहासन की शक्ति पर क्या प्रभाव पड़ेगा?” वराहमिहिर ने पलटवार किया। “क्या इससे पहले से ही भयभीत लोगों को गलत संदेश नहीं जाएगा कि महल उनकी सुरक्षा सुनिश्चित नहीं कर सकता, इसलिए वह उन्हें महल छोड़ने के लिए कह रहा है? क्या महल अपने ही लोगों की रक्षा करने में असमर्थ है?”

"वराहमिहिर सही कह रहे हैं," हरिहर ने अंततः बातचीत में हस्तक्षेप करते हुए कहा। "राजा के रूप में आपकी छवि को गंभीर झटका लग सकता है। सिंधुवर्त के सम्राट के रूप में भी आपकी छवि को नुकसान पहुंचेगा।"

"आपकी बात सही है," विक्रमादित्य ने हरिहर और वराहमिहिर से कहा। "लेकिन मैं यहाँ अपनी छवि बचाने नहीं आया हूँ। मैं यहाँ अपनी प्रजा को हानि से बचाने आया हूँ, और यदि इसके लिए मुझे उनकी नज़र में गिरना पड़े, तो यह बलिदान मैं हर दिन, हर समय देने को तैयार हूँ। यदि मैं कुछ कर सकूँ, तो उज्जैन की प्रजा को कोई कष्ट नहीं होगा।"

"मैं समझता हूँ, सम्राट," वराहमिहिर ने गर्व भरी हल्की मुस्कान के साथ कहा। "यह एक ऐसा बलिदान है जो हम सभी आपके पार्षदों के रूप में करेंगे।"

सम्राट ने सिर हिलाया। "केवल अपने नागरिकों की सुरक्षा का डर ही मुझे निकासी का सुझाव देने के लिए प्रेरित नहीं कर रहा है; इसके पीछे कुछ ऐसे कारण भी हैं जो भावनात्मक नहीं हैं। जब लड़ाई शुरू होगी, मैं चाहता हूँ कि शाही सेना, सीमा रक्षक, नगर सुरक्षा बल और मिलिशिया लड़ाई पर ध्यान केंद्रित करें। मैं नहीं चाहता कि हमारे सैनिक निर्दोष नागरिकों की रक्षा में इधर-उधर भागते रहें। मैं यह भी नहीं चाहता कि शहर के संसाधनों पर बोझ पड़े—जब लड़ाई छिड़े, तो उज्जैन के पास जो कुछ भी उपलब्ध है, वह हमारे सैनिकों के लिए होना चाहिए। इस शहर में जितने अधिक नागरिक होंगे, हमारे सैनिकों पर उतना ही अधिक दबाव पड़ेगा। अब समय आ गया है कि उनके हथियार मुक्त कर दिए जाएँ ताकि वे अपने धनुषों को और पीछे खींच सकें, अपनी तलवारों को ऊँचा और तेज़ी से चला सकें।"

"मैं समझ गया," वराहमिहिर ने कहा, और मेज के चारों ओर बैठे सभी लोगों ने सहमति में सिर हिलाया।

क्षपनाका ने पूछा, "हम निकासी कब शुरू करेंगे?"

"वरारुचि के लौटने तक हम इस निर्णय को स्थगित रखते हैं," सम्राट ने उत्तर दिया। "मैं उनके विचार भी सुनना चाहूंगा।"

"बहुत अच्छा," वराहमिहिर ने कहा। "इस बीच, आइए उज्जैन में उपलब्ध सैनिकों का जायजा लें। यदि देवता अचानक हमला कर दें तो..."

पार्षद के अपने विचार को पूरा करने से पहले ही, परिषद कक्ष का दरवाजा खुला और एक राजमहल का कर्मचारी अंदर आ गया।

“माननीय महोदय, दखल देने के लिए क्षमा चाहता हूँ,” उन्होंने झुकते हुए कहा। “लेकिन महारानी माँ मुझसे मिलना चाहती हैं।”
उपश्रुति को जल्दबाजी में ले जाते हुए, लेकिन मुड़कर भीड़ के ऊपर से एक चकित निगाह डालते हुए देखने की छवि सम्राट की आंखों के सामने कौंध गई।
"मेरे साथ?"
"जी हां, माननीय।"
“वह बाहर है?” विक्रमादित्य की आवाज आश्चर्य से ऊंची हो गई।
"नहीं, माननीय न्यायाधीश। वह आपसे अपने कक्ष में मिलना चाहती हैं।"
विक्रमादित्य ने अपने सलाहकारों और हेहेय से आए अतिथि के उनसे नज़रें न मिलाने के तरीके से एक अजीब सी बेचैनी महसूस की। सभी अपनी-अपनी कुर्सियों पर बेसुध और सतर्क बैठे थे, मानो पहले से ही नाजुक स्थिति को बिगाड़ने वाली कोई बात कहने या करने से डर रहे हों। सम्राट को एहसास हुआ कि इंद्र ने एक ऐसा द्वार खोल दिया है जिसे फिर से बंद करना असंभव साबित हो सकता है।
"उसे बता देना कि मैं परिषद के साथ हूं। काम खत्म होने के बाद मैं उससे मिलूंगा।"
सम्राट ने वराहमिहिर की ओर मुड़कर देखा, लेकिन उनकी नज़र के कोने से यह बात सामने आई कि महल का कर्मचारी अपनी जगह से हिला तक नहीं था। वह व्यक्ति द्वार के पास खड़ा था, हिल-डुल रहा था। जब विक्रमादित्य ने उसकी ओर देखा, तो उनका चेहरा पीला पड़ गया, लेकिन वे वहीं डटे रहे।
“क्या आप मुझे कुछ और बताना चाहते हैं?” सम्राट ने पूछा।
"नहीं, महाराज। बस महारानी माँ ने मुझे आपको यह बताने का निर्देश दिया है कि वह आपसे मिलना चाहती हैं।"
“आप क्यों न मेरे साथ महारानी से मिलने चलें?” धनवंतरी ने हाथ के शब्दों का सही अर्थ समझते हुए सम्राट से कहा। दूसरों की ओर देखते हुए उसने आगे कहा, “हम यहीं रुकेंगे और देखेंगे कि आगे क्या करना है।”
अन्य तीनों सलाहकारों को सहमति में सिर हिलाते देख विक्रमादित्य ने अपनी कुर्सी पीछे धकेली और उठते हुए हरिहर से कहा, “क्षमा कीजिए, लेकिन मैंने आपके साथ बहुत कम समय बिताया है।” जब बड़े राजा ने क्षमा को टालना शुरू किया, तब भी सम्राट ने आगे कहा, “हो सकता है मैं आपके साथ दोपहर का भोजन न कर पाऊं, लेकिन मुझे लगता है कि आप हमारे साथ रात बिताएंगे?”

“मुझे लगता है ऐसा ही है,” हरिहारा ने अनिश्चितता से कहा।
“बहुत बढ़िया। मुझे आपसे रात के खाने पर मिलने का इंतज़ार रहेगा। अब, अगर आप मुझे जाने की अनुमति दें तो।”
अपने अतिथि और सलाहकारों को सिर हिलाकर अभिवादन करते हुए विक्रमादित्य सभा कक्ष से बाहर निकल गए और धीरे से दरवाजा बंद कर दिया। महारानी के कक्ष तक का रास्ता ज़्यादा लंबा नहीं था, फिर भी सम्राट को लगा जैसे उनके पैर घिसट रहे हों, उनके कंधों और सीने पर एक बोझ सा महसूस हो रहा था, जैसे-जैसे वे उनके दरवाजे की ओर मुड़ने वाले मोड़ के करीब पहुँच रहे थे। जब वे कक्ष की दहलीज पर खड़े थे, दरवाजा आधा खुला हुआ था मानो उन्हें आमंत्रित कर रहा हो और आधा बंद, मानो उन्हें चुपके से निकल जाने का एक आखिरी मौका दे रहा हो, तब भी वे सोच रहे थे कि इस मुलाकात से क्या लाभ होगा।
उपश्रुति एक छोटी सी चौकी पर बैठी थी, हाथ गोद में रखे, खिड़की से बाहर खाली निगाहों से देख रही थी। जैसे ही दरवाजा खुला, वह मुड़ी और विक्रमादित्य की ओर देखा। उसकी निगाहें विक्रमादित्य की आँखों में थीं, उसके चेहरे पर कोई ऐसा संकेत ढूँढ़ रही थीं जिससे उसे पता चल सके कि बेटे की नज़र में उसका क्या स्थान है।
“तुम मुझसे मिलना चाहते थे?”
"अंदर आओ, विक्रमा।"
उपश्रुति उठी नहीं, बल्कि अपने बेटे को पास आते देख अपनी निगाहों से उसका पीछा करती रही। सम्राट उससे काफी दूर रुक गया और संकोच से एक तरफ खड़ा हो गया, नज़रें मिलाने से बचता रहा। दोनों में से किसी ने कुछ नहीं कहा, दोनों एक-दूसरे के पहल करने का इंतज़ार कर रहे थे।
“तुम मुझसे मिलना चाहते थे।” इस बार, चतुराई से, शब्दों को प्रश्न के रूप में नहीं कहा गया था।
“क्या तुम सच जानना नहीं चाहते?” उपश्रुति ने अपने बेटे के चेहरे की ओर देखते हुए पूछा।
विक्रमादित्य ने नज़रें फेर लीं और जवाब देने से पहले खुद को तैयार किया। "मुझे लगता है कि मैं पहले से ही सच जानता हूँ।"
महारानी माँ उठीं और सम्राट की ओर एक कदम बढ़ाया। जब सम्राट उनकी ओर मुड़े, तो उन्होंने कहा, "क्या तुम अपनी माँ के मुख से सच सुनना नहीं चाहते?"

*

जैसे-जैसे छोटा काफिला मुन्ह बस्ती के पास पहुँचा, सड़क के किनारे खड़े चेहरों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ती गई। जिज्ञासु चेहरे, संदेह से भरे चेहरे, कुछ खुले तौर पर शत्रुतापूर्ण। थके-हारे चेहरे, आसपास की कठोर भूमि से झुलसे हुए चेहरे। पुरुषों के चेहरे, महिलाओं के चेहरे, यहाँ तक कि बच्चों के चेहरे भी, एक-दो शरमाते हुए मुस्कुरा रहे थे। सभी की निगाहें ऊपर की ओर थीं, सभी कालिदास को देख रहे थे, उनकी आँखें उनका पीछा करती रहीं जब तक कि जाते हुए घोड़ों द्वारा उड़ाई गई धूल में सवार ओझल नहीं हो गए।

पहले दर्शक एक दिन पहले ही जमा हो गए थे, जब हुना गश्ती दल कालिदास को उन साधारण खेतों के पास से ले जा रहा था, जहाँ पानी की जगह सुबह की ओस से सिंचाई की जाती थी। कठोर, बंजर ज़मीन पर किसी तरह गुज़ारा करने वाले गरीब किसान और दुबली-पतली बकरियों और भेड़ों की देखभाल करने वाले चरवाहे, जो लगभग कुछ भी नहीं चरते थे, जुलूस को देखने के लिए रुक गए थे, क्योंकि झो एरामी के बेटे के आगमन की खबर रेगिस्तान में बिखरे हुए विरल हुना गांवों में फैल गई थी। बाद में, जब वे अपनी भेड़ की खाल की बोतलों में पानी भरने के लिए एक उथले कुएँ पर रुके, तो पानी भरने आई महिलाओं ने आपस में फुसफुसाते हुए और खिलखिलाते हुए, उस विशालकाय को खुलेआम घूरते हुए, लेकिन साथ ही शरमाते और छिपते हुए, गश्ती दल के नेता को कालिदास पर एक कामुक मुस्कान देने के लिए मजबूर कर दिया।

"मुझे शर्मीले लोगों के बारे में तो नहीं पता, लेकिन महिलाएं आपका स्वागत करने में बेहद खुश लग रही हैं," उसने हंसते हुए और आंख मारते हुए कहा था।

यात्रा के दौरान कालिदास के प्रति उनके साथ चल रहे सभी लोगों का रवैया नरम पड़ गया था। कालिदास द्वारा दी गई मार को वे निश्चित रूप से भूले नहीं थे, बल्कि उसे शालीनता से स्वीकार कर लिया था। वे अभी पूरी तरह से मित्रवत तो नहीं थे, लेकिन उन्हें पर्याप्त सम्मान देते थे, क्योंकि वे समझ गए थे कि वे प्रतिभा, योग्यता और अधिकार में अपने से कहीं अधिक श्रेष्ठ व्यक्ति से निपट रहे हैं।

अब उत्तरी क्षितिज पर मुन्ह एक गहरे और बढ़ते हुए धब्बे की तरह दिख रहा था, और उस ओर जाने वाली सड़क उन लोगों से भरी हुई थी जो केवल उस अजनबी

को देखने के लिए वहाँ आए थे जो खुद को झो एरामी का बेटा बता रहा था। गश्ती दल शांत और औपचारिक हो गया था, क्योंकि वे जानते थे कि उस अजनबी से मेलजोल करने से वे श्योर के साथ मुसीबत में पड़ सकते हैं। कालिदास ने इस शांति का स्वागत किया, क्योंकि इससे उन्हें शहर के मुखिया से मिलने से पहले शहर और उसके लोगों का जायजा लेने का सही मौका मिल गया था।

अपने अंगरक्षकों की बातचीत से कालिदास समझ गए थे कि मुन्ह, विशाल रेगिस्तान में स्थित चार महत्वपूर्ण हूण बस्तियों में से एक थी, जो आकार में केवल अपनी पड़ोसी बस्ती सेशी से ही छोटी थी, जो पश्चिम में काली नदी के किनारे स्थित थी। चूंकि आसपास कोई व्यापार मार्ग नहीं थे, इसलिए यह स्पष्ट नहीं था कि मुन्ह उस स्थान पर क्यों बसा था, हालांकि कालिदास को संदेह था कि जिस छोटी पहाड़ी पर यह शहर बसा था, उसने इसके प्रारंभिक निर्माण में भूमिका निभाई होगी, संभवतः एक रक्षात्मक गढ़ के रूप में। यह शहर चमड़े के तंबुओं और मिट्टी की ईंटों से बनी झोपड़ियों का एक बेमेल समूह था, जो पहाड़ी की चोटी पर बनी एक बड़ी पत्थर की संरचना से सटा हुआ था, जो कालिदास को अपने बच्चों को दूध पिलाती हुई एक मोटी सूअरनी की याद दिलाता था। पत्थर की इमारत के बीच से एक झंडा निकला हुआ था, जो एक प्रकाशस्तंभ की तरह लहरा रहा था, सैनिकों और यात्रियों दोनों को शहर के स्थान की सूचना दे रहा था, और जैसे ही वे करीब आए, कालिदास ने उस पर खुदे हुए रेगिस्तानी बिच्छू के धुंधले चिह्न को देखा। वहाँ मौजूद हुना योद्धाओं की संख्या को देखते हुए - जिनमें से कई अब घूरने में शामिल हो गए थे - उसने अनुमान लगाया कि मुन'ह एक गैरीसन कमांड के रूप में कार्य करता था, और पत्थर की इमारत किलेबंद गैरीसन और हुना श्योर का निवास स्थान थी।

गश्त दल अभी मुन्ह से कुछ दूरी पर ही था कि पूरी तरह से हथियारों से लैस बारह घुड़सवारों का एक दल कस्बे से उनका सामना करने के लिए निकला। दल का नेतृत्व एक उच्च पदस्थ हूण कर रहा था, और उसने कालिदास को अपने अधीन ले लिया। उसने गश्त दल को विदा करते हुए कालिदास को आदरपूर्वक लेकिन दृढ़ता से इशारा किया कि वह अपने साथियों के साथ वापस मुन्ह चलें। अपनी सवारी फिर से शुरू करते हुए, कालिदास ने एक बार पीछे मुड़कर उस गश्त दल के नेता को देखा जिसने उन्हें रोका था और फिर उन्हें यहाँ तक लाया था। उनकी नज़रें मिलीं, और हूण ने अपना सिर झुकाया और अपनी तर्जनी उंगली से अपने माथे पर स्थित

हरिज़ को हल्के से छुआ - जो हूणों के बीच सम्मान और मित्रता का प्रतीक है। कालिदास ने सिर हिलाया और मुन्ह की ओर मुड़ गए।
वे नीले, पीले और लाल झंडों से सजे लकड़ी के मेहराब से होकर कस्बे में दाखिल हुए, और ये सजावट कस्बे की एकमात्र मुख्य, पक्की सड़क पर भी जारी थी। सड़क के दोनों ओर दुकानें थीं - एक लोहार की दुकान, एक बेकरी जहाँ पुरुष गोबर की आग पर उल्टे रखे धातु के गुंबद पर आटे की लोइयाँ पका रहे थे, एक महिला मक्खन बना रही थी, एक टोकरी बुनने वाली - और यहाँ भी लोग कालिदास की एक झलक पाने के लिए एक-दूसरे को धक्का दे रहे थे। उनका नेतृत्व कर रहे हूण को कस्बेवासियों को सड़क से पीछे हटाने के लिए अपने पास रखी छड़ी को बार-बार घुमाना पड़ता था।
जब वे छोटे पत्थर के किले पर पहुँचे और उसके खुले प्रांगण में उतरे, तब तक सूर्य पश्चिम की ओर ढल चुका था। हूण अधिकारी ने कालिदास को इशारा किया और दोनों किले में प्रवेश कर गए। किला सादा और सैन्य साजो-सामान से युक्त था और उसमें उन सुख-सुविधाओं का अभाव था जो आमतौर पर प्रभावशाली लोगों के आवासों में पाई जाती हैं। कालिदास को एक मध्यम आकार के हॉल में ले जाया गया, जहाँ से रेगिस्तान का एक हिस्सा दिखाई देता था, और उन्हें प्रतीक्षा करने के लिए कहा गया। एक बार फिर, कालिदास से यह उम्मीद करते हुए कि वे जल्दबाजी नहीं करेंगे, वे एक खिड़की के पास बैठ गए और समय बिताने लगे। तभी उन्हें दरवाजे पर कदमों की आहट सुनाई दी और एक अधिकारपूर्ण और आज्ञाकारी आवाज ने उन्हें संबोधित किया।
"ज़ुह तेई दुज़ुर ज़ो एरामी?"
कालिदास ने मुड़कर देखा तो दरवाजे के अंदर दो आदमी खड़े थे। बोलने वाला आगे खड़ा था, जिसकी लंबाई और कद औसत था और उसने मोटे सूती और ऊनी वस्त्र पहने थे। वह आसानी से एक साधारण हूण किसान जैसा लग सकता था, लेकिन उसकी आँखों में झलकने वाले कुलीन और आकर्षक व्यक्तित्व के कारण ऐसा नहीं था। उस आदमी के कंधों की बनावट और ठुड्डी के दृढ़ उभार को देखकर कालिदास समझ गए कि वे श्योर से मिल रहे हैं।
“मा’आ,” उसने एक बार सिर हिलाया। फिर, हूना को ऊपर से नीचे तक देखते हुए, उसने कहा, “ज़ुह ते’ई बर्र श्योर?”

हुना ने हल्की सी मुस्कान दी जो पूरी तरह सौहार्दपूर्ण नहीं थी और कंधे उचका दिए। जब उसने जवाब दिया, तो वह धीमी गति से, लेकिन व्याकरणिक रूप से सही अवंती भाषा में था। "तुम पूछते हो कि क्या मैं सबसे बड़ा सरदार हूँ। पहले यह सुनिश्चित कर लें कि तुम वही हो जो तुम कहते हो, ठीक है? मुझे सवाल पूछने दो, ठीक है?"

कालिदास ने पीछे खड़े हूण को आगे बढ़ते हुए देखा। वह विशालकाय था, लगभग कालिदास के बराबर लंबा और कालिदास से दुगुना मोटा। किसी अनभिज्ञ व्यक्ति को वह मोटा लग सकता था, लेकिन कालिदास जानते थे कि चर्बी की परतों के नीचे मजबूत मांसपेशियां छिपी हुई हैं। कालिदास ने छोटे कद के हूण को सिर हिलाकर अभिवादन किया।

“तुम कहते हो कि तुम झो एरामी के पुत्र हो। मैं तुम पर विश्वास क्यों करूं?”

“मैं आपको ठीक-ठीक बता सकता हूँ कि जिस दिन पिताजी की हत्या हुई थी, उस दिन क्या हुआ था... पूरी टुकड़ी मारी गई थी।”

“मुझे पता है, मुझे पता है। गश्ती दल द्वारा भेजे गए घुड़सवार ने कहा कि आपको झो की मौत की पूरी कहानी पता है, कि आप उस दिन जीवित बचे एकमात्र व्यक्ति थे, कि आपने पूरी घटना देखी थी। मेरा सवाल यह है कि मैं यह कैसे मान लूँ कि उस दिन ऐसा ही हुआ था? क्या कोई और जीवित है जो आपकी बात का खंडन कर सके, घटनाओं का कोई अलग विवरण दे सके?”

"तुम मेरे पिता के बारे में जो चाहो पूछ सकते हो," कालिदास ने रूखेपन से कहा।

“मैं कर सकता हूँ।” हूण व्यक्ति खिड़कियों से छनकर आती रोशनी में और करीब आया, और पहली बार कालिदास ने उस आदमी के गालों पर बने बड़े-बड़े निशान देखे, जो एक दूसरे को काटते हुए जा रहे थे। दाहिना निशान गाल की हड्डी से सीधे जबड़े तक जा रहा था, जबकि बायां निशान कनपटी के ठीक नीचे से ऊपरी होंठ तक घुमावदार था। उस आदमी की त्वचा काली, सख्त और गहरी झुर्रियों वाली थी; निशानों और माथे पर खुदे हुए काले निशान के साथ, उसका चेहरा मानो निरंतर अपने आप से ही युद्ध कर रहा हो।

“मैं कर सकता हूँ,” उसने कालिदास की ओर ध्यानपूर्वक देखते हुए फिर कहा। “लेकिन झो एरामी की कहानियाँ किंवदंतियों का हिस्सा हैं। झो के बारे में तो कोई भी

जान सकता है। और जो तुम नहीं जानते, उसे भूल जाने का बहाना बना सकते हो। आख़िरकार, जब झो की हत्या हुई थी, तब तुम तो बस एक बच्चे ही थे, है ना?”
क्या कहें, यह न जानते हुए कालिदास ने हूण को चुनौती भरी निगाहों से देखा। हूण ने भी बिना विचलित हुए उन्हें घूरकर देखा।
"क्या आपका मतलब यह है कि आप मेरी बात नहीं मानेंगे?"
“मैं ऐसा क्यों करूँ? तुम मेरे पास ज़ो के बेटे होने का दावा लेकर आए हो। इसे साबित करने की ज़िम्मेदारी तुम्हारी है।” उसने बेपरवाही से कंधे उचकाए। “हमें क्या पता, तुम अवंती के जासूस भी हो सकते हो। तुम तो हरिज़ भी नहीं पहनते, और मुझसे उम्मीद करते हो कि मैं पहनूँ...”
"मेरे पास हिम्मत नहीं है क्योंकि इससे पहले सभी लोग मारे जा चुके थे।"
“मैंने यह सुना है,” हूना ने अपना हाथ और आवाज़ उठाई। उसे बीच में टोकने की आदत नहीं थी।
जब कालिदास ने उस व्यक्ति को देखा, तो उनकी भौंहें निराशा से तन गईं। हूण सरदार ने अपने हाथ पीठ पीछे बांध लिए और एक खिड़की के पास जाकर रेगिस्तान की ओर देखने लगे, जहाँ किले की छाया धीरे-धीरे पूर्व की ओर बढ़ रही थी। अंत में, वह कालिदास की ओर मुड़े।
"बताइए, जब झो की हत्या हुई थी तब उसके साथ और कौन-कौन था? मेरा मतलब है, उसके परिवार के बाकी सदस्य कौन थे?"
कालिदास ने पलकें झपकाईं और अपना सिर पीछे की ओर झटका, क्योंकि उनके मन में हथकड़ियों में जकड़े चार लोगों को अनाज भंडार में धकेलते और धकेलते हुए ले जाने का दृश्य उभर आया था। ऐसा लगा जैसे वह छवि तीखे, चुभने वाले किनारों से घिरी हो, फिर भी उन्होंने खुद को उसे देखने के लिए विवश किया, धुएँ से भरी घाटी, विलाप करती तीन स्त्रियों और अभिमानी, अडिग पुरुष के उस दृश्य को फिर से जी लिया।
और उसके करीब, घोड़े पर सवार एक व्यक्ति, अनाज भंडार की ओर मुंह करके, सैनिकों को संकेत दे रहा था कि वे उसे और उसमें रखे कैदियों को आग लगा दें...
"पिताजी के अलावा, उस दिन मैंने अपनी बड़ी बहन एही, चाची नेई और उनकी बेटी प्लीइसा को भी खो दिया," कालिदास ने अपने मन में उस दृश्य को भुलाने की कोशिश करते हुए बुदबुदाया।

यह जवाब हूण को संतुष्ट करता प्रतीत हुआ, लेकिन उसने कालिदास को तीखी निगाहों से देखा। "तो फिर तुम्हारी माता का क्या हुआ? क्या वह उस दिन वहाँ नहीं थीं?"

"मेरी माता का निधन मुझे जन्म देते समय हो गया था," कालिदास ने उत्तर दिया। "इसीलिए मेरे पिता ने मेरा नाम गौर थ्राखा रखा। मृत्यु मेरी माता को अपने साथ ले गई, पर उसने मुझे पिता के लिए उपहार के रूप में छोड़ दिया। गौर थ्राखा – मृत्यु का उपहार।"

सिर हिलाकर हूण ने कालिदास की ओर मुड़कर कहा, "मैं मानता हूँ कि आपको ऐसी बातें पता हैं जो बहुत कम लोगों को पता होती हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि आप सच कह रहे हैं। लेकिन मुझे पूरी तरह से आश्वस्त होना है, इसलिए हमें थोड़ा इंतजार करना होगा।"

"किस लिए?"

"हमारे द्रोइबा के लिए। उसके द्वारा किए गए जादू से यह साबित हो जाएगा कि तुम झो के पुत्र हो या नहीं।"

द्रोइबा। कालिदास ने मन ही मन इस शब्द को दोहराया, और याद किया कि उन्होंने इसे आखिरी बार कब सुना था। कई साल पहले की बात है, उस रात जब उन्होंने और विक्रमादित्य ने उज्जैन के श्मशान घाट पर स्थित हूणों के शिविर पर धावा बोला था। वह अमावस्या की रात थी, और उनका काम बेताल को ढूंढना और छुड़ाना था, जिसे हूणों के द्रोइबा ने बंदी बना लिया था...

"हमें द्रोइबा का इंतजार क्यों करना पड़ता है?" कालिदास ने पूछा।

"क्योंकि वह यहाँ नहीं है। वह याहब्रे के साथ रेगिस्तान में है।" हूणों ने इस पर और कुछ नहीं कहा, इसलिए कालिदास ने यह समझने की कोशिश की कि इसका क्या अर्थ हो सकता है। याहब्रे। धूल-आत्माएँ। इससे भी कोई मदद नहीं मिली।

"आप जानना चाहते थे कि क्या मैं सबसे बड़ा सरदार हूँ," हूण ने अपने मेहमान की ओर देखते हुए कहा। "मैं श्योर खशी दुर हूँ, हूणों के ब'वो वंश का सरदार। हमारा विवाह के माध्यम से ख'सा हूणों से संबंध है, जिससे मैं ज़ो एरामी का दूर का रिश्तेदार हूँ। मुझे उनसे कुछ बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वे एक असाधारण व्यक्ति और योद्धा थे। अब, आपके प्रश्न का उत्तर यह है कि हाँ, मैं इस

विशाल रेगिस्तान में मिलने वाले सबसे बड़े श्योरों में से एक हूँ। मेरी कमान में ही महान हूण सेना पहाड़ों को पार करके सिंधुवर्त पर विजय प्राप्त करेगी।”

*

वह महल में लगभग एक सप्ताह से अतिथि के रूप में रह रहा था, तभी एक शाम संयोगवश उसकी मुलाकात उससे हो गई। वह महल की झील के किनारे टहल रही थी, तभी उसने उसे आमलिका के पेड़ के नीचे बैठे हुए देखा, वह महल का चित्र बना रहा था और सारसों का एक झुंड गहरे पानी के ऊपर से उड़ रहा था। बाद में अपनी दासियों से उसे पता चला कि वह ऋक्ष पर्वत की तलहटी से आया एक प्रतिभाशाली कलाकार और संगीतकार था, और स्वयं राजा महेंद्रदित्य ने उसका स्वागत किया था, जो उसकी कलम और वंशी वादन की कुशलता से बहुत प्रभावित थे।

उज्जैनी की अपनी पहली यात्रा के दौरान उपश्रुति और गंधर्वसेना का आमना-सामना केवल एक बार हुआ। एक शाम, उपश्रुति और महेंद्रदित्य के सम्मान में दरबार में एक संगीत कार्यक्रम आयोजित किया गया, जहाँ उपश्रुति को राजा के अतिथि दो अन्य यात्रा करने वाले गायकों के साथ मंच साझा करना पड़ा। लेकिन उनकी प्रतिभा ऐसी थी कि उन्होंने सहजता से अन्य दोनों संगीतकारों को पीछे छोड़ दिया। उनके प्रदर्शन से महेंद्रदित्य इतने प्रभावित हुए कि राजा ने उन्हें दान देने का निर्णय लिया और उन्हें अपने और अपनी रानी के साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित किया। इस प्रकार उपश्रुति और गंधर्वसेना की पहली औपचारिक मुलाकात हुई।

उसी शाम, भोजन करते समय, महेंद्रदित्य ने गंधर्वसेना को यह विशेष सौभाग्य प्रदान किया कि जब भी वे उज्जैन से गुजरें, तो वे महल में उनके अतिथि के रूप में ठहरें। कलाकार ने कृतज्ञतापूर्वक यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया, लेकिन अगली ही सुबह राजा और रानी से विदा ले ली। एक वर्ष से अधिक समय तक उनका कोई पता नहीं चला और महल उन्हें लगभग भूल ही चुका था। तभी एक बरसात की शाम, जब महेंद्रदित्य दूर निषाद गए हुए थे, एक पहरेदार ने सूचना दी कि कलाकार महल के द्वार पर रात बिताने के लिए आश्रय मांग रहे हैं। अपने पति के आतिथ्य के वादे से अवगत उपश्रुति ने गंधर्वसेना का स्वागत किया और महल के कर्मचारियों द्वारा उनकी देखभाल सुनिश्चित की।

अगली सुबह बारिश और तेज़ हो गई, और दोपहर तक क्षिप्रा नदी उफान पर थी और उज्जैन की सड़कें जलमग्न हो गईं, जिससे यात्रा करना असंभव हो गया। उपश्रुति ने गंधर्वसेन को बाहर न निकलने के लिए कहा और उन्हें आश्वासन दिया कि जब तक जलस्तर कम नहीं हो जाता, वे महल में ही रह सकते हैं; इसके बदले में, कलाकार ने उनका चित्र बनाने की पेशकश की। चित्र में उपश्रुति की सुंदरता का अद्भुत चित्रण था, जिसने उन्हें चकित कर दिया। जैसे-जैसे दिन ढलता गया, गंधर्वसेन ने एक के बाद एक मधुर राग बजाकर उपश्रुति का मनोरंजन किया। और इन मधुर रागों के बीच, उपश्रुति - जो महेंद्रादित्य के सिंधुवर्त पर्वतमाला में आक्रमणकारियों के विरुद्ध गठबंधन जुटाने के लिए यात्रा करने के कारण महल में और अधिक अकेली होती जा रही थीं - गंधर्वसेन की सम्मोहक दृष्टि के वश में आ गईं। उस रात, जैसे ही चंद्रमा बादलों से निकला और दुनिया उसकी कोमल, निर्मल रोशनी में भीगी हुई चमक उठी, उपश्रुति ने कलाकार के कंधों पर अपनी बाहें लपेट लीं और उसे अपनी छाती से लगा लिया, प्रेम से कांपते और हांफते हुए।

"मैंने..." उसने विक्रमादित्य के बीच की चुप्पी तोड़ी, लेकिन फिर रुक गई। उसने खिड़की से बाहर खाली निगाहों से देखा, मानो बाहर की दुनिया को देखने के बजाय अपने भीतर देख रही हो। "मैंने... तुम्हारे पिता को... राजा को... बताने के बारे में सोचा था..." उसने जल्दी से अपनी बात सुधारी। "मैं उन्हें सब कुछ बताना चाहती थी। लेकिन उन दिनों उनके मन में इतनी बातें चल रही थीं कि मैं उन्हें और बोझ नहीं देना चाहती थी। इसके अलावा," उसकी नज़रें चिंता में बुरी तरह से कुतरे हुए नाखूनों पर टिक गईं, "मैं कभी हिम्मत नहीं जुटा पाई। मैं कैसे जुटा पाती? वे बहुत प्यार करने वाले थे। वे..." पुरानी यादें ताज़ा होते ही उसकी आवाज़ भर्रा गई, "...वे मुझसे बहुत प्यार करते थे।"

उसे यकीन नहीं था कि विक्रमादित्य उसकी बातों से चौंके थे या नहीं, लेकिन उन्होंने कुछ नहीं कहा।

वह केवल एक रात का उल्लंघन था। बारिश रुकने पर, कलाकार अगली सुबह बिना किसी औपचारिकता या शिष्टाचार के महल से चला गया; उपश्रुति को उसके जाने की सूचना महल के कर्मचारियों से ही मिली, और उसने उसे फिर कभी नहीं देखा - उस सुबह तक, उज्जैन की गलियों के ठीक बीचोंबीच।

महल में रहने के दौरान उन्होंने कभी भी देव होने का कोई संकेत नहीं दिया था। क्या वे सचमुच देव थे, उपश्रुति ने सोचा, क्या वे सचमुच इंद्र के पुत्र थे? देवों के स्वामी अपने हाथी के साथ वहाँ थे, तो शायद वे सच में देव ही हों। इतने वर्षों बाद उन्हें इतने सुंदर और बलवान देखकर उपश्रुति को जो आश्चर्य हुआ था, वह फिर से ताजा हो गया। उनकी उम्र बिल्कुल भी नहीं बढ़ी थी। वे बिल्कुल वैसे ही दिख रहे थे जैसे उस दिन दिख रहे थे, जब उज्जैन पर बारिश हो रही थी और वे वंशी बजा रहे थे। वे निश्चित रूप से देव ही होंगे।

"मैंने सोचा था कि समय के साथ मैं धीरे-धीरे आपके... राजा को यह बात बता पाऊँगी," उसने कहा। वह अपने सामने चुपचाप, भावहीन खड़े विक्रमादित्य की ओर मुड़ी। "लेकिन आपके जन्म के बाद वे आपको इतना प्यार करते थे कि..." उपश्रुति की आवाज़ पछतावे से काँप उठी और उसने अपने हल्के शॉल के लटकनों को ज़ोर से मरोड़कर गाँठ बाँध दी। "फिर... एक दिन वे हमें छोड़कर चले गए।"

"मैंने कोई जवाब नहीं मांगा, तो अब यह सब क्यों स्वीकार करूं?" विक्रमादित्य का स्वर सपाट था।

"क्योंकि मैं हमेशा से यही चाहती थी," ये शब्द लगभग विलाप करते हुए निकले। "तुम्हें अंदाज़ा भी नहीं है कि सीने में अपराधबोध का बोझ ढोना कैसा होता है। ये बोझ तुम्हें कुचल सकता है।"

"लेकिन इतने सालों में तुमने एक शब्द भी नहीं कहा। इंद्र को ही इसे सबके सामने लाना पड़ा।"

विक्रमादित्य का स्वर शांत था, लेकिन उसकी गहराई में छिपी हुई आरोपों की तीखी धार उपश्रुति को महसूस हुई। उसने अपने बेटे को दोष नहीं दिया; वह जानती थी कि वह सही कह रहा है। महेंद्रादित्य की मृत्यु के बाद भी अपराधबोध बना रहा, लेकिन उसे उम्मीद थी कि समय सब कुछ ठीक कर देगा। और ऐसा हुआ भी था। अब तक। अब, वह सब कुछ जिसका उसे कभी डर था, फिर से सामने आ जाएगा। सारी शर्म, सारा आक्रोश, सारा अपमान। सब कुछ।

मुझे उम्मीद थी कि आप बिना बुलाए ही यहां आ जाएंगे।

सम्राट ने कोई जवाब नहीं दिया।

मुझे लगा था कि आपको स्पष्टीकरण चाहिए होगा।

“माँ, मुझे स्पष्टीकरण मांगने का कोई अधिकार नहीं है। मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है। लेकिन आप ऐसा क्या स्पष्टीकरण दे सकती हैं जिससे सब कुछ वैसा ही हो जाए जैसा आज सुबह आपके लिए था?”

विक्रमादित्य के धैर्यवान और पीड़ा से भरे चेहरे को देखते हुए, उपश्रुति को यह जानकर गहरा सदमा लगा कि उनके पुत्र के शब्द उनके अपने विचारों से मेल खा रहे थे। असल में, ज़रूरतें तो उनकी थीं - पश्चाताप की ज़रूरत, क्षमा पाने की ज़रूरत, और मुक्ति की ज़रूरत।

क्या तुम मुझसे नाराज़ हो? क्या तुम्हें मुझ पर शर्म आती है? तुम्हें शर्मिंदा होने का पूरा अधिकार है।

विक्रमादित्य ने कुछ देर सोचा और फिर सिर हिलाया। “मैं तुमसे नाराज़ नहीं हूँ। क्यों नाराज़ होऊँ? तुम वही हो, वही राज़ लिए जो आज सुबह इंद्र के आने से पहले थे। तुम अब भी मेरी माँ हो। मुझे किसी बात पर शर्म भी नहीं है। मेरे पिता महेंद्रादित्य हैं, वही एकमात्र पिता हैं जिन्हें मैं अपना पिता मानता हूँ। यह बात बदली नहीं जा सकती। मुझे थोड़ा दुख तो है कि इतने सालों तक मुझसे झूठ बोला गया, लेकिन मुझे लगता है कि सिर्फ़ पिता को ही इस तरह महसूस करने का अधिकार है, और वो अब हमारे साथ नहीं हैं।”

"तो क्या तुम मुझे माफ कर दोगे?"

“माँ, मैं तुम्हें किसी भी बात के लिए माफ नहीं कर सकती। गलती पिताजी की थी, मेरी नहीं। मैं बस यही स्वीकार कर सकती हूँ...”

“क्या तुम्हें एहसास नहीं है कि अब लोग बातें करेंगे, सवाल पूछेंगे ही?” उपश्रुति ने चिंता से बीच में ही टोकते हुए कहा। “तुम्हें कानाफूसी सुननी होगी, गपशप का सामना करना होगा, विक्रम। तुम्हारे लोग तुम्हारे पिता और माता के बारे में बातें करेंगे, तुम्हारी पितृत्व पर सवाल उठाएंगे, मेरे चरित्र पर संदेह करेंगे। क्या तुम्हें नहीं दिखता कि मैंने तुम्हारे साथ कितना अन्याय किया है?”

सम्राट ने पहली बार अपनी मां की निगाहों से आंखें मिलाईं।

“मैंने सुना कि आपने इंद्र को सबके सामने मुझसे सवाल करने का मौका देने से कैसे इनकार कर दिया।” महारानी माँ की आँखें अचानक नम हो गईं और उनकी आवाज़ काँपने लगी। “आप खड़ी हो गईं... आपने मुझे अपमान से बचा लिया। लेकिन अब, आपको यह बार-बार करना होगा...”

“लोग क्या सवाल उठाएंगे? मेरे पिता कौन हैं?” सम्राट ने अपना मुंह फुलाते हुए कहा, “मैंने स्पष्ट कर दिया है कि मैं केवल एक ही पिता को मानता हूँ – राजा महेंद्रदित्य। लोगों के मन में इससे आगे कोई संदेह हो, मुझे इसकी परवाह नहीं है।”
"और क्या आप मेरी रक्षा उनसे उसी प्रकार करेंगे जैसे आपने इंद्र की की थी?"
विक्रमादित्य ने अपने विचारों को एकत्रित करने के लिए कुछ क्षण लिए।
“मैं आपकी रक्षा करूँगा, माँ,” उसने सिर हिलाते हुए कहा। “क्योंकि आप मेरी माँ हैं और यह कभी नहीं बदल सकता। और इसलिए भी क्योंकि पिताजी भी यही चाहते थे। यह वादा मैंने उनसे तब किया था जब उन्होंने मुझे अपनी तलवार दी थी—कि मैं अपनी आखिरी साँस तक आपकी गरिमा बनाए रखूँगा। आप सही कह रही हैं। वह आपसे बहुत प्यार करते थे, माँ। मैं उनसे किया अपना वादा नहीं तोड़ूँगा।”

बुनकरों

ढलते सूरज की रोशनी से वररुचि का चेहरा जगमगा उठा, उनके चेहरे की रंगत सुनहरी हो गई और माथे पर लगा लाल तिलक और भी चमक उठा। इसके विपरीत, उनकी आँखें गंभीर और निर्मल थीं, वे दूर कहीं टकटकी लगाए देख रहे थे, जब मुसिली की चौकी के सेनापति शरमण इंद्र और विक्रमादित्य के बीच हुए संघर्ष का वर्णन कर रहे थे। इंद्र के सनसनीखेज दावे के कारण इस टकराव की खबरें हर जगह फैल गई थीं, लेकिन शरमण और उनके सहायक पुल्यमा को तथ्यों और कल्पनाओं को अलग करने और पूरी कहानी को एक सुसंगत रूप देने में दोपहर का अधिकांश समय लग गया था। सलाहकार बिना किसी रुकावट के सुनते रहे,

और जब शरमण का वर्णन समाप्त हुआ, तो वे कुछ देर तक चिंतन में डूबे रहे। अंत में, उन्होंने खिड़की से मुँह फेरकर सेनापति और पुल्यमा की ओर देखा, जो कमरे के गहरे अंधेरे में खड़े थे।
"क्या सम्राट ने इंद्र के दावों का खंडन करने के लिए महारानी माँ को बुलाने से इनकार कर दिया?" सूर्य के पीछे छिप जाने के कारण वरारुचि का चेहरा छाया में था, जिससे शरमणा के लिए उनके भावों को समझना मुश्किल हो रहा था। उनकी आवाज़ में कोई स्वर-लहर नहीं थी, इसलिए वह भाव-भंगिमा को समझ से परे थी।
"जी हां," शरमाना ने कहा। "उन्होंने महारानी मां को किसी भी तरह से इसमें शामिल करने से साफ इनकार कर दिया।"
लेकिन महारानी माँ संयोगवश ही वहाँ आ गई थीं। सही कहा ना?
"जी हां, माननीय।"
"और...?" पार्षद थोड़ी देर रुका, फिर बोला, "क्या इंद्र ने इस अवसर का लाभ नहीं उठाया?"
"हमारी जानकारी के अनुसार, चारों ओर बहुत अफरा-तफरी मची हुई थी," पुल्यामा ने उत्तर दिया। "हर जगह भीड़ थी, साथ ही महल के सैनिक और नगर रक्षक भी मौजूद थे। सम्राट ने तुरंत महारानी माँ और राजकुमारी प्रलूपी को वहाँ से ले जाने का आदेश दिया। ऐसा लगता है कि सलाहकार शंकुबल ने स्वयं उन्हें सुरक्षित स्थान तक पहुँचाया। हमें नहीं लगता कि इंद्र को ज़रा भी मौका मिला होगा।"
"दिलचस्प।"
वररुची ने एक बार फिर खिड़की से बाहर देखा, जहाँ सूरज ढल रहा था और क्षितिज के बैंगनी रंग की ओर तेज़ी से डूब रहा था। तभी, एक नए विचार ने उन्हें झकझोर दिया और वे उन दो आदमियों की ओर मुड़ गए, जिन पर पिछले कुछ दिनों में उनका भरोसा बढ़ता ही जा रहा था।
"इंद्र के साथ आने वाला यह देव... वह कैसा दिखता था?"
"ऐसी अफवाह है कि वह बहुत ही सुंदर थे, माननीय न्यायाधीश।"
"अरे नहीं... मेरा मतलब वो नहीं था।" वरारुचि हिचकिचाए, मानो उन्हें अपने मन की बात पर शर्म आ रही हो। "मेरा मतलब... क्या किसी को लगा कि वो सम्राट जैसे दिखते थे... क्या किसी ने सम्राट से उनकी शक्ल मिलती-जुलती होने का ज़िक्र किया था?"

अंधेरा होने के कारण कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, फिर भी शरमाना और पुल्यामा ने एक-दूसरे को ध्यान से देखा। दोनों ने सिर हिलाया।
"हमारी जानकारी में तो नहीं।"
"महारानी माँ के बारे में क्या?"
"मुझे समझ नहीं आ रहा," शरमाना ने उलझन में कहा।
"जो कुछ हुआ उसके बाद, क्या उसने इंद्र के आरोपों का खंडन करते हुए कोई आधिकारिक घोषणा की है?"
"हमें नहीं पता, माननीय न्यायाधीश।"
“और वो और ये देव... क्या वे कभी आमने-सामने आए?”
“महामहिम... आपको नहीं लगता कि इंद्र के दावे सच हैं?” कमांडर ने सलाहकार की ओर देखा, उनके स्वर में संदेह और आशंका का मिश्रण था। “ऐसा हो ही नहीं सकता...”
“मैं बस यह पता लगाने की कोशिश कर रहा हूँ कि वे हैं या नहीं, बस इतना ही,” वरारुची ने झल्लाकर कहा। तुरंत ही अपने लहजे पर पछतावा करते हुए, उन्होंने मुस्कुराते हुए अपनी आवाज़ नरम की। “आप दोनों ने अच्छा किया। धन्यवाद।”
एक बार फिर उन दोनों आदमियों से मुंह मोड़कर, उसने सूरज को डूबते हुए देखा, जो अपने पीछे गुलाबी-लाल रंग की एक लकीर छोड़ गया था। पक्षियों का एक झुंड, जो इतनी दूर था कि पहचानना मुश्किल था, इस प्रकाश और रंग के छींटे के ऊपर से उड़ रहा था, जबकि नीचे, छावनी के आंगन में, सैनिकों के लिए राशन से भरी दो बैलगाड़ियाँ फाटक से अंदर आ रही थीं। पिछली रात उपश्रुति के साथ अपने संक्षिप्त लेकिन कड़वे टकराव के बाद, वरारुचि महल से बाहर निकल गया था, अपनी सौतेली माँ से दूरी बनाने पर तुला हुआ था। अपनी माँ के महल में लौटने के बजाय, वह सीधे मुसिली वापस चला गया, जहाँ शरमाना, पुल्यमा और शाही सेना के उसके पुराने, वफादार दोस्तों के एक समूह ने उसका स्वागत किया। उसने रात शराब के घड़े पीते हुए और धुंधले सपनों के बीच बिताई, और दोपहर के आसपास नींद से जागने पर, सुस्त और धुंधली आँखों से, उसने उदयपुरी जाने और घातकपरपारा की खोज में अमर सिंह से मिलने का निश्चय कर लिया था। उसने दोपहर के भोजन के तुरंत बाद निकलने का फैसला किया था, लेकिन जब वह स्नान करके लौटा, तो

उज्जैनी में हुई घटनाओं की पहली अफवाहें फैल चुकी थीं, जिससे उसकी योजनाओं में बदलाव करना पड़ा।

Gandharvasena.

नाम को ज़बान पर घुमाते हुए, वररुचि अपने छह या सात साल के बचपन के दिनों को याद करने लगे और उस नाम के किसी परिचित व्यक्ति को याद करने की कोशिश करने लगे। ज़ाहिर है, वे असफल रहे—बचपन की इतनी पुरानी बातें याद रखना लगभग नामुमकिन था। उस समय, उन्होंने अपना ज़्यादातर समय अपनी माँ के महल में एकांत में बिताया था, महल में नहीं, जहाँ वे केवल महेंद्रादित्य के आने पर ही जाते थे। बाद में, ज़ाहिर है, वे आचार्य के अधीन प्रशिक्षण लेने के लिए महल में रहने लगे थे, लेकिन यह विक्रमादित्य के जन्म के लगभग एक साल बाद की बात थी।

Gandharvasena.

उसे महल में रहना कितना बुरा लगता था, उषांथा के स्नेह से वंचित रहना और महेंद्रदित्य का आसपास न के बराबर होना, जो उसे उपश्रुति के ताने-बाने से बचा सके, जो दिन-प्रतिदिन और भी कठोर होते जा रहे थे। उसे याद आया कि एक बार कोने से मुड़ते समय वह उससे टकरा गया था। उपश्रुति ने उसका हाथ बड़ी मजबूती से पकड़ लिया था।

"तुम खुद को क्या समझते हो, मूर्ख लड़के?" उसने उसे हिलाते हुए और उसके चेहरे पर गुस्से भरी निगाहों से देखते हुए पूछा। "तुम कभी अवंती के राजा नहीं बनोगे, इसलिए इस महल को अपना समझो और एक सैनिक से अपेक्षित गरिमा के साथ व्यवहार करना सीखो। अगर तुम ऐसा नहीं कर सकते, तो वापस उसी गटर में चले जाओ जहाँ से तुम आए हो।"

डरा हुआ, दोषी और बिल्कुल अकेला, वह महारानी माँ के इशारे को तुरंत समझ नहीं पाया था, लेकिन वर्षों बीतने के साथ, उसने उपश्रुति की क्रूरता के अनूठे अंदाज़ को पहचानना सीख लिया था; उपश्रुति ने उसे सीखने का भरपूर मौका दिया, और उसे इशारों में अपमानित करने का कोई अवसर नहीं छोड़ा। जब कोई आसपास नहीं होता था, तब वह उसे अपशब्द कहती थी; जब उसे उसकी ओर से फैसला करना होता था, तब वह उसके प्रति पक्षपातपूर्ण रवैया अपनाती थी; वह अकेले में उससे अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करती थी, लेकिन कभी भी दुनिया के सामने ज़ाहिर

नहीं होने देती थी। महल में बिताए शुरुआती कुछ वर्षों में वह स्त्री नरक से निकली किसी प्राणी जैसी थी, और उसी की वजह से उसने प्रशिक्षण मैदान में ज़्यादा से ज़्यादा समय बिताना शुरू कर दिया, जिसने अंततः उसे एक उत्कृष्ट योद्धा बनाया। यह उसका एहसान था, उसने एक दयनीय सी मुस्कान के साथ सोचा।

आपके भतीजे का हूणों ने अपहरण कर लिया है, अमारा सिंह सीमा की ओर आधे रास्ते में है और आप अचानक आकर कहते हैं कि मैं महल के लिए हमेशा उपलब्ध हूँ। ठीक है, मैं आपकी बात मान लेता हूँ।

उनके पुत्र, सम्राट ने उन्हें घटकरपारा के अपहरण के बारे में बताना ज़रूरी नहीं समझा था, लेकिन उपश्रुति ने इसे इस तरह पेश किया जैसे सारा दोष उन्हीं का हो। जैसे उस समय जब छह वर्षीय विक्रमादित्य भूलभुलैया में घुस गया था और बाहर निकलने का रास्ता नहीं ढूंढ पा रहा था, और महल के पहरेदारों की एक पूरी टुकड़ी को उसे ढूंढकर वापस लाने में लग गई थी। रोता-बिलखता और डरा हुआ विक्रमादित्य भूलभुलैया में क्यों गया था, यह पूछे जाने पर उसने कहा था कि उसने वरारुचि को उस जगह का ज़िक्र करते सुना था, इसलिए उसने वहाँ घूमने का फैसला किया। उपश्रुति ने वरारुचि को बुलाया और उन्हें डांटते हुए इस घटना के लिए पूरी तरह से उन्हें ही दोषी ठहराया।

तुम एक बच्चे से भूलभुलैया के बारे में क्यों बात कर रहे हो? उसने पूछा। तुम्हें पता है कि वह लड़का वहाँ डर से मर सकता था। क्या यही तुम्हारा इरादा था, ताकि तुम उसे रास्ते से हटा सको, तुम धूर्त छोटे धोखेबाज?

उसने उसे धूर्त और धोखेबाज कहा था।

Gandharvasena.

अब जो दिख रहा था, उससे लगता था कि महल में किसी और ने भी कुछ गड़बड़ की थी। किसी और को भी गरिमापूर्ण व्यवहार करना नहीं आता था। कोई और भी गटर से निकलकर महल में आया था।

उस व्यक्ति को उसकी औकात दिखाने का समय आ गया था। सभी अपमानों का बदला लेने का समय आ गया था।

वररुचि ने पीछे मुड़कर देखा कि क्या शरमाना और पुल्यामा अभी भी वहीं हैं। बढ़ते अंधेरे में दो काली परछाइयाँ।

उन्होंने कहा, "मैं चाहता हूँ कि मेरा घोड़ा भोर होते ही तैयार रहे। मेरा इरादा सुबह होते ही महल के लिए रवाना होने का है।"

*

"दादी, क्या आप सो गई हैं?" शंकु ने बूढ़ी औरत के दरवाजे से अपना सिर अंदर करते हुए धीरे से पूछा।

पुआल की चटाई पर देवी एक तरफ लेटी हुई थीं, गतिहीन, धीमी जलती हुई दीपक की रोशनी में एक धुंधली आकृति जैसी। यह कहना असंभव था कि वह जाग रही थीं या नहीं, लेकिन अपनी पोती की आवाज सुनकर देवी हिलीं और उन्होंने अपना सिर दरवाजे की ओर उठाया।

"बच्चे, मेरे पास तुम्हारे लिए रेगिस्तान से कुछ भी नहीं है," उसने थकी-हारी आवाज़ में कहा। "न बादलों, न पक्षियों, न हवा के पास कहने के लिए कुछ खास है। अपने राजा से कह देना कि मुझे खेद है।"

"कोई बात नहीं, दादी माँ," शंकु ने कमरे में कदम रखते हुए कहा। अगर देवी को अकेला छोड़ दिया जाना था, तो ऐसा नहीं होने वाला था।

देवी के पास पहुँचकर, लड़की घुटनों के बल बैठ गई, बूढ़ी औरत का हाथ पकड़ा और उसे प्यार से थपथपाते हुए तसल्ली दी। "राजा ने मुझे यहाँ नहीं भेजा – मैं अपनी मर्जी से आई हूँ। मैं दिन में भी आ सकती थी, या कम से कम शाम को जल्दी आ जाती, लेकिन इतने सारे काम थे कि..."

"चुप रहो, बच्चे। तुम कितना बोलते हो," देवी शंकु मुस्कुराईं और उनका हाथ हल्के से दबाया। उनकी मुस्कान से शंकु के मुरझाए चेहरे की थकान कुछ हद तक कम हो गई, लेकिन नींद की कमी से बने काले घेरे, जो इस धुंधली रोशनी में भी साफ दिखाई दे रहे थे, जिद्दी भूतों की तरह उनकी आंखों के सामने मंडरा रहे थे।

"नहीं, मुझे पता है कि मुझे आपसे नियमित रूप से, अक्सर मिलने आना चाहिए," लड़की ने नाराज़गी से कहा। "आप यहाँ अकेले हैं, महल इतना बड़ा है, और कोई नहीं आता..."

"चुप रहो।" भविष्यवक्ता ने लड़की का हाथ फिर से दबाया। "जब समय मिले तब आना, बच्ची। मैं समझती हूँ। मुझे पता है तुम व्यस्त हो।" महिला का चेहरा गंभीर हो

गया। "मैंने आज सुबह के बारे में सुना... देव के आने के बारे में, और राजा और उसके बीच जो कुछ हुआ उसके बारे में।"
शंकु ने अपनी दादी की ओर देखा और सिर हिलाया। इस बारे में कहने के लिए कुछ नहीं था।
"बैठो," बूढ़ी औरत ने चटाई पर थपथपाते हुए और जगह बनाने के लिए एक तरफ खिसकते हुए कहा।
शंकु के सहज महसूस करने के बाद, उसने फिर से देवी का हाथ थाम लिया। दोनों महिलाओं ने एक-दूसरे को प्यार भरी मुस्कान दी और देर रात की शांत खामोशी में डूबते हुए अपने बंधन को और मजबूत किया। शंकु के मन में दिन भर की घटनाओं का ख्याल आया और वह यह सोचे बिना नहीं रह सकी कि सम्राट अचानक कितनी मुश्किलों में घिर गए थे, चारों तरफ से उन पर लगातार दबाव डाला जा रहा था, चुनौतियां दी जा रही थीं और उन्हें सताया जा रहा था। कुछ भी उनके पक्ष में नहीं जा रहा था और वह दिल से उम्मीद कर रही थी कि किसी न किसी रूप में जल्द ही उनकी मदद होगी।
"मैं पिताजी से मिली थी," उसने अचानक और संकोच से कहा। "दो दिन पहले। उन्होंने मिलने पर जोर दिया था।"
भविष्यवक्ता ने कोहनी के बल सहारा लेकर अपनी पोती को गौर से देखा। "मुझे लगा था कि तुमने समझ लिया होगा, लेकिन आजकल संकेतों को समझना मुश्किल होता जा रहा है। फिर भी मुझे खुशी है कि तुमने समझ लिया।" थोड़ी देर रुकने के बाद, "वह कैसा है?"
"बूढ़ा।" शंकु खिलखिलाकर हंस पड़ी। हंसी ने उसके अंदर के हठ और डर को पिघला दिया, उसे इस तरह आज़ाद कर दिया कि उसकी आंखें उस भविष्यवक्ता को देखकर मुस्कुरा उठीं। "मेरा मतलब है, वह बूढ़ा हो गया है। बाकी सब ठीक है।"
आपने उसे क्षमा कर दिया है।
ये शब्द प्रश्न के रूप में नहीं कहे गए थे। देवी को सब पता था, और अगर पता भी नहीं होता तो भी उन्हें अंदाज़ा तो था ही। लड़की ने फिर भी सिर हिलाया। देवी फिर लेट गईं।

उनके चारों ओर एक सुकून भरी खामोशी छा गई। ऐसा लग रहा था मानो दोनों में से किसी को भी कुछ और कहने की ज़रूरत नहीं थी। भविष्यवक्ता अजीब तरह से शांत और संतुष्ट दिख रही थी, उसके होठों पर हल्की सी मुस्कान थी।
“मुझे खुशी है कि आपने ऐसा किया,” उसने दोहराया। “आप दोनों के लिए खुशी है।”
इस बार शंकु ने अपनी दादी का हाथ थामते हुए मुस्कुराया। “माफी में राहत है,” उसने थोड़ी भर्राई आवाज़ में कहा। “उससे मिलने के बाद ही मुझे एहसास हुआ कि मैं भी इतने सालों से उस कालकोठरी की कैदी थी। मैं कैदी इसलिए थी क्योंकि मैंने उसे वहाँ कैद कर रखा था। वह बाहर नहीं निकल सकता था, और न ही मैं। हम दोनों के लिए कोई रास्ता नहीं था। लेकिन अब... अब मुझे लगता है कि हम दोनों आज़ाद हैं।”
मदर ओरेकल ने सिर हिलाया। कुछ देर बाद उसने पूछा, "आगे क्या होगा? मेरा मतलब है, क्या राजा उसे क्षमा कर देगा?"
“मुझे नहीं पता। उन्हें माफ़ी मिलने की कोई इच्छा नहीं थी — मेरा मतलब पिताजी से है। जब तक मैं उनसे कभी-कभार मिलने जाता रहूँ, उन्हें कालकोठरी में रहना अच्छा लगता था। उन्हें तो अपने लिए इनाम के तौर पर दिए जा रहे सोने के सिक्के भी नहीं चाहिए थे। उन्होंने कहा कि वो पैसा अस्तबल के रखवाले को देना चाहते हैं ताकि वो और घोड़े खरीद सकें। मुझे लगता है कि उन्हें अपने किए पर सच में पछतावा है। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं तुम्हें बता दूँ कि उन्हें माँ के साथ जो हुआ उसके लिए अफ़सोस है।”
भविष्यवाणी करने वाली महिला कुछ देर तक चुप रही, मानो अतीत में खोई हुई हो। अंत में, एक आह भरकर और सिर हिलाते हुए उसने कहा, "जब तुम उससे मिलो, तो उसे बताना कि मैंने उसे क्षमा कर दिया है, और उसे भी स्वयं को क्षमा करना होगा।"
"मैं करूँगा।"
"यह कौन सा इनाम था जो वह नहीं चाहता था?"
“ओह, ये तो आपका ही विचार है।” अपनी दादी की भौंहें आश्चर्य से ऊपर उठते देख शंकु ने कहा, “इनाम की बात नहीं, बल्कि उन लोगों को ढूंढने की बात है जो हमें जनस्थान जाने का रास्ता दिखा सकें।”

"अहा, निर्वासितों के जंगल से भाग निकले लोगों की तलाश।"
"राजमहल ऐसे किसी भी व्यक्ति को सौ सोने के सिक्के देने की पेशकश कर रहा है जो यह साबित कर सके कि वह दंडका से भागकर वापस लौटा है या जो ऐसे किसी भगोड़े को जानता हो।"
“तुम्हारे पिता ने सौ सोने के सिक्के लेने से मना कर दिया?” देवी ओरेकल ने लड़की को हैरानी से देखा। “वह बदल गए हैं। और क्या वह किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो दंडक से भाग गया था?”
“वह ऐसा कहता है।”
"कौन?"
“ग्रीष्मा नाम का एक लुटेरा, जो लावा के उत्तर से आता है। उसे ढूंढने और संभव हो तो उज्जैन लाने के लिए सैनिक भेजे जा चुके हैं।”
“एक लुटेरा...” भविष्यवक्ता के चेहरे पर निराशा के भाव थे। “देखो तुम्हारे पिता किस तरह के लोगों के साथ रहते थे।”
"मुझे लगा था कि तुमने उसे माफ कर दिया है," शंकु ने सख्ती से कहा, लेकिन उसकी आँखों में चंचलता थी।
“मैंने देखा है,” उसकी दादी ने कहा। “मैं बस ऐसे ही कह रही थी...”
“मुझे पता है,” शंकु हँसी। “मैं मज़ाक कर रही थी।” फिर, एक नए विचार के साथ, उसने बूढ़ी औरत की ओर देखा। “कुछ देर पहले आपने कहा था कि आजकल आपको संकेतों को समझने में मुश्किल हो रही है। ऐसा क्यों है?”
मदर ओरेकल के चेहरे से हंसी गायब हो गई और वह मुरझा गई। उनके चेहरे पर तनाव आ गया और आंखों के नीचे के काले घेरे और चौड़े होते चले गए। उन्होंने कहा, "मैं क्या कहूँ, बच्चे? यहाँ... यहाँ इतने सारे उलझन भरे संकेत हैं कि उन्हें समझना मुश्किल है।"
"कहाँ?"
“यहाँ, महल में। यहाँ ऐसी परछाइयाँ हैं जो यहाँ नहीं होनी चाहिए, ऐसे कदमों की आहट है जो कहीं से आती है और कहीं नहीं जाती... यहाँ तक कि गलियारों और दरवाजों से बहने वाली हवा भी दूषित है और झूठ फुसफुसाती है।” भविष्यवक्ता रुकी, फिर उसने लड़की का हाथ और कसकर पकड़ लिया। उसकी आँखें बेचैन थीं और उसकी आवाज़ में घबराहट झलक रही थी। “बच्ची, इस महल के अंदर

कुछ बुरा है। हर जगह अपशकुन हैं, लेकिन मैं उन्हें पढ़ नहीं सकती। और मुझे लग रहा है कि कुछ भयानक होने वाला है। अब तक जो कुछ हुआ है, उससे कहीं ज़्यादा बुरा। मैं डरी हुई हूँ, बच्ची—मैं तुम्हारे राजा के लिए डरी हुई हूँ।"

*

कालिदास जाग चुके थे और उन्हें आने वाले कदमों की आहट का एहसास तब हो गया था जब उनके पास आने वाले लोग उस सादे कमरे के बाहर सीढ़ियों पर कदम भी नहीं रख पाए थे, जिसमें उन्हें सोने के लिए दिया गया था। अंधेरे में पलकें झपकाते हुए और लोगों की संख्या का अंदाज़ा लगाते हुए—पैरों की आहट से उन्हें लगा कि तीन लोग हैं—उन्होंने ध्यान दिया कि अभी भी रात थी। उनका हाथ सहज रूप से उनकी कमर की ओर बढ़ा, जहाँ वे हमेशा अपनी तलवार रखते थे। लेकिन वे रुक गए, यह महसूस करते हुए कि तलवार वहाँ नहीं होगी; उन्हें खाशी दुर के साथ भोजन करने से पहले तलवार सौंपने के लिए कहा गया था। श्योर ने कहा था कि तलवार सौंपना इस बात का प्रमाण होगा कि कालिदास अपने मेज़बानों पर कितना भरोसा करते हैं, और उस भरोसे का जवाब भरोसे से दिया जाएगा। खाशी दुर झूठ नहीं बोल रहे थे; उनके दरवाजे के बाहर कोई पहरेदार तैनात नहीं था, और दरवाजा भी खुला हुआ था।

लेकिन आधी रात को अपने दरवाजे पर आदमियों का आना अशुभ संकेत था, इसलिए कालिदास ने भेड़ की खाल का कंबल फेंक दिया और घुटनों के बल बैठ गए। उन्हें ठीक से पता नहीं था कि क्या होने वाला है, इसलिए उन्हें यह भी नहीं पता था कि क्या करना है। उन्होंने फैसला किया कि प्रतिक्रिया देने से पहले स्थिति का आकलन करना ही बेहतर होगा। उन्होंने कदमों की गिनती की - निश्चित रूप से तीन आदमी थे - जब तक कि वे उनके दरवाजे के बाहर आकर नहीं रुक गए। दरवाजे और फर्श के बीच की जगह से मशाल की रोशनी अंदर आते देख उन्होंने राहत की सांस ली; मशाल की रोशनी बता रही थी कि वे अंधेरे में उन पर हमला करके उन्हें तुरंत मार डालने नहीं आए थे। वे उन्हें ले जाने आए थे।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि वे उसे जहां भी ले जाएंगे, उसे मारने की कोशिश नहीं करेंगे।

दरवाजा जोर से चरमराते हुए खुला और खड़खड़ाहट की आवाज आई, जिससे कालिदास का उन आदमियों के इरादे के बारे में अनुमान और पुख्ता हो गया — उन्होंने आवाजों को छिपाने की कोई कोशिश नहीं की थी। मशाल लिए हुए आदमी के कमरे में प्रवेश करते ही रोशनी फैल गई, उसके पीछे बाकी दो लोग भी आ गए। तीनों ने भेड़ों की खालों के बीच दुबके हुए कालिदास को आश्चर्य से देखा; उन्हें उम्मीद थी कि वह सो रहे होंगे। तीनों के पास भाले थे, लेकिन कालिदास ने देखा कि उनका हावभाव धमकी भरा नहीं था।

"ग्ये," मशाल लिए हुए व्यक्ति ने हाथ से इशारा करते हुए कहा और कालिदास को अपने साथ आने के लिए कहा।

"कोहोर?" कालिदास ने पूछा। 'कहाँ?'

"अ गी," उस आदमी ने थोड़ी अधीरता से कहा। उसने अपना भाला दरवाजे की ओर झटका और फिर हाथ से इशारा किया।

पुरुषों से बहस करने का कोई फायदा न समझते हुए, कालिदास उठे और उनके साथ बाहर चले गए। उन्होंने देखा कि उनमें से कोई भी उनके कंधों तक भी नहीं पहुँचता था और वे उन्हें धक्का देने की कोशिश भी नहीं कर रहे थे, बल्कि उन्हें आराम से उनके साथ चलने दे रहे थे।

पूर्व दिशा की ओर खुलने वाले एक खुले बरामदे को पार करते ही कालिदास को एहसास हुआ कि रात उतनी नहीं हुई थी जितना उन्होंने सोचा था। क्षितिज एक स्पष्ट रेखा की तरह दिख रहा था, और ऊपर का आकाश हल्के काले रंग का था, जिससे संकेत मिल रहा था कि भोर होने में ज़्यादा देर नहीं है। इससे उन्हें आश्चर्य हुआ - इतनी सुबह उन्हें क्यों बुलाया जा रहा था? उनका मन हुआ कि वे अपने अंगरक्षकों से पूछ लें, लेकिन यह सोचकर कि उन्हें कोई उपयोगी जवाब नहीं मिलेगा, वे चुप रहे।

उन्हें किले के भूतल पर स्थित एक हॉल में ले जाया गया, जहाँ पहले से ही बड़ी संख्या में हूण योद्धा एकत्रित थे। उनकी निगाहें उनका पीछा करती रहीं - ठीक वैसे ही जैसे दिन भर, मुन्ह में उनके आगमन के बाद से - और खाशी दुर के समक्ष पेश किए जाने के दौरान भी उन पर टिकी रहीं।

"थ्राखा, मेरे मित्र," श्योर ने संक्षिप्त नाम से उसे संबोधित करते हुए कहा—और एक बार फिर हूना भाषा के बजाय अवंती भाषा को चुना। "आशा है तुमने अच्छी नींद ली

होगी।”
“मैं अभी चैन से सो ही रहा था कि मेरी नींद खुल गई,” कालिदास ने उत्तर दिया।
“आह,” खशी दुर ने मुंह बनाया और कंधे उचकाए, मानो वह बेबस होना चाहता हो।
“यह सब क्या है?” कालिदास ने पूछा। उन्होंने चारों ओर नजर घुमाई और पाया कि वहां एकत्रित सभी योद्धा हथियारबंद थे।
कोई आपसे मिलना चाहता है।
"कौन?"
“ड्रॉइबा।”
“ठीक इसी समय?” कालिदास अविश्वास से देखने लगे। “क्या वे किसी और सभ्य समय का इंतजार नहीं कर सकते थे?”
“ड्रॉइबा को आपके आगमन की खबर मिली और उसने तुरंत वापस आने का फैसला किया। वह आपसे मिलने के लिए उत्सुक है, इसलिए वह पूरी रात यात्रा करता रहा।”
“सम्मानित तो हुआ, लेकिन यह सब कुछ इंतजार भी कर सकता था। ऐसा तो था नहीं कि मैं भाग रहा था।”
शर्मीले व्यक्ति ने इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।
“वह कहाँ है?” कालिदास ने चारों ओर देखते हुए पूछा।
"वह रास्ते में है।"
“हम यहीं खड़े होकर उसका इंतजार करेंगे?” कालिदास की भौंहें तन गईं।
उन्होंने आपको तैयार रहने का संदेश भेजा था।
पहली बार खशी दुर ने भौंहें चढ़ाईं। कालिदास को लगा कि श्यूर उनकी अधीरता से नाखुश है और यह नहीं समझ पा रहा है कि कालिदास को यह पूरी स्थिति बेतुकी क्यों लग रही है।
“ठीक है,” उसने कंधे उचकाते हुए कहा।
उसने यह याद करने की कोशिश की कि हूणों के लिए द्रोइबा इतना महत्वपूर्ण क्यों था, लेकिन अपने बचपन की यादों से उसे कुछ खास याद नहीं आया। हूण लोग ह्वीज़ या पौराणिक रेगिस्तानी बिच्छू की पूजा करते थे, हालाँकि उनकी प्रार्थना की अवधारणा सिंधुवर्त के लोगों से बिल्कुल अलग थी। जहाँ तक उसे याद था, द्रोइबा एक ही व्यक्ति में भविष्यवक्ता और जादूगर दोनों था, एक दुर्लभ व्यक्ति जिसे महान

शक्तियाँ प्राप्त थीं। उसने अपने पिता को एक वा'आ द्रोइबा का जिक्र करते सुना था, जो कथित तौर पर पहला द्रोइबा था जिसने रेगिस्तानी बिच्छू को दुनिया बनाने में मदद की थी। इसके अलावा उसे कुछ नहीं पता था और—

हॉल में अचानक आई फुसफुसाहट में सन्नाटा छा जाने पर कालिदास को थोड़ा समय लगा। जैसे ही शब्द और फुसफुसाहट शांत होकर खामोशी में तब्दील हो गईं, उन्होंने देखा कि सभी लोग सिर झुकाए खड़े थे, और यहाँ तक कि खशी दुर ने भी अपना सिर दरवाजे की ओर झुका लिया था। कालिदास ने मुड़कर देखा तो हॉल के ठीक अंदर एक आकृति खड़ी थी, जो पैनी निगाहों से उन्हें परख रही थी।

उस आदमी को देखते ही उसे पता चल गया कि वह ड्रोइबा ही है। वह बिल्कुल उसी ड्रोइबा का जुड़वां भाई लग रहा था जिसे उसने कई साल पहले उस रात मारा था। थोड़ा छोटा, थोड़ा लंबा...

कालिदास पर निगाहें गड़ाए, वह तांत्रिक अजीबोगरीब चाल से हॉल में दाखिल हुआ, जिसे देखकर कालिदास को धान के खेत में बैठे बगुले याद आ गए। उस आदमी ने पंखों से बना एक मुकुट पहन रखा था—उसे याद आया कि वह गिद्धों के पंख थे—और उसका चेहरा नीले रंग से रंगा हुआ था; होंठ कोयले से काले किए हुए थे, और पूरा रूप डरावना लग रहा था। इतने रंग के नीचे उसकी उम्र का अंदाज़ा लगाना मुश्किल था, लेकिन उसकी त्वचा चिकनी थी, इसलिए कालिदास ने सोचा कि वह ज़्यादा बूढ़ा नहीं होगा। उस तांत्रिक के हाथ में एक छड़ी थी जो बिच्छू की कांटेदार पूंछ जैसी दिखती थी।

"I'da duz'ur Zho E'rami?" उसने अपनी गहरी, भारी आवाज़ में पूछा, जो उसके व्यक्तित्व से बिल्कुल मेल नहीं खाती थी।

खशी दुर ने सम्मानजनक सिर हिलाया। "गौर थर'अखा।"

तांत्रिक कालिदास के पास पहुंचा। जब वे एक-दूसरे से एक हाथ की दूरी पर थे, तो वह रुक गया और कालिदास के चेहरे की ओर ध्यान से देखने लगा।

"Zuh te'i ge ba'dor," he said. "Zuh'i bor h'yet."

'तुममें शिष्टाचार नहीं है। अपना सिर झुकाओ।'

"सेह?" कालिदास ने शांत भाव से उस चेहरे को देखा जो मुश्किल से उसकी छाती तक ही पहुँच पाया था। "मा'आ कुनु ए'रिम। मा उद ड्रोइबा थ्रा'आख।"

'क्यों? मुझे डर नहीं है। मैंने एक ड्रोइबा को मार डाला है।'

जैसे ही शमन भय से आँखें खोलकर पीछे हटा, कमरे में चारों ओर से सिसकियों की एक सामूहिक आवाज़ गूंज उठी। कालिदास ने अपनी दृष्टि के किनारे से हूण योद्धाओं को तलवारें और कटारें निकालते हुए देखा, और यद्यपि उनका मन हुआ कि वे ऊपर देखकर स्थिति का जायजा लें, कालिदास ने अपनी निगाहें द्रॉइबा पर टिकाए रखीं, उन्हें निर्मम निगाहों से देखते हुए।

"तुम क्या कह रहे हो?" खशी दुर ने खुद को कालिदास और तांत्रिक के बीच धकेल दिया, उसकी आवाज कर्कश थी और उसकी छुरी कालिदास के गले पर थी।

कालिदास ने अपनी निगाहें श्योर की ओर घुमाईं, और भले ही उन्होंने महसूस किया कि चाकू की धार उनकी त्वचा को छू रही है - और आधा दर्जन अन्य तलवारें उनकी पीठ में धंस रही हैं - उन्होंने अपनी आवाज को शांत और तर्कसंगत बनाए रखा।

"मैं यहाँ एक मित्र बनकर आया हूँ, लेकिन मेरे साथ शत्रु जैसा व्यवहार किया जा रहा है। मैंने अपनी तलवार सौंपी, लेकिन मेरी गर्दन पर चाकू रख दिए गए। क्या यही मेरे भरोसे का बदला है? क्या हूणों का यही हाल हो गया है? न सम्मान, न गरिमा?"

"तुम हमारे द्रोइबा का अपमान करते हो," खाशी दुर ने धीमी आवाज़ में कहा। "यह हूण तरीका नहीं है। हर हूण यह जानता है, फिर भी तुम खुद को हूण कहते हो। क्या तुम्हारे पिता ने तुम्हें कुछ नहीं सिखाया?"

"ज़ो एरामी के बारे में और उन्होंने मुझे क्या सिखाया और क्या नहीं सिखाया, इस बारे में बात मत करो।" उस दैत्य की आवाज़ में तीखापन था, और वह अपने शरीर में धंसी तलवारों से बेखबर लग रहा था। "ज़ो एरामी ने मुझे सिखाया कि एक आदमी की तरह कैसे लड़ते हैं, कायर की तरह नहीं, बल्कि हथियारों से लैस योद्धाओं से भरे कमरे में निहत्थे दुश्मन के खिलाफ कैसे लड़ते हैं।"

खशी दुर ने कालिदास को घूरकर देखा, और वह क्षण किसी झील की सतह की तरह झिलमिला रहा था, मानो कभी भी फूटकर उबलने को तैयार हो। दिन निकल आया था, और सूर्य की पहली किरणें हॉल में प्रवेश कर गईं, जिससे खशी दुर और कालिदास खून से सने सुनहरे रंग में जगमगा उठे।

"एबा।" तांत्रिक ने धीरे से हाथ बढ़ाकर खाशी दुर के कंधे को छुआ। "एबा," उसने दोहराया। 'रुको।'

श्योर ने एक पल के लिए अपने कंधे के ऊपर से देखा, फिर ड्रॉइबा की ओर सिर झुकाया और चाकू पर दबाव कम किया। वह पीछे हट गया, और लगभग एक साथ ही, कालिदास को पीछे से चुभ रही तलवारें वापस खींच ली गईं।
सांस छोड़ते हुए कालिदास ने उस जगह पर उंगली रखी जहां चाकू उनके गले में धंसा था। उन्हें हल्का सा दर्द हुआ और जब उन्होंने उंगली हटाई तो उंगली के सिरे पर खून का एक छोटा सा धब्बा दिखाई दिया। उन्हें शक हुआ कि उनकी पीठ पर भी ऐसे ही घाव हैं।
द्रोइबा खाशी दुर के कान में कुछ फुसफुसा रहा था। श्योर ने एक पल सुना, फिर सिर हिलाया और कालिदास की ओर देखा।
"तुम कहते हो कि तुमने एक द्रोइबा (पापा) को मार डाला है। हमारे द्रोइबा पता लगाएंगे कि तुम्हारी बात सच है या नहीं, और क्या तुम वाकई ज़ो एरामी के पुत्र हो, जैसा कि तुम दावा करते हो। अगर द्रोइबा को लगता है कि तुम सच कह रहे हो, तो तुम जीवित रहोगे। अन्यथा, तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी।"

*

सुबह की खामोशी में घोड़ों के खुरों की आहट छत तक सुनाई दे रही थी, जहाँ विक्रमादित्य एक भारी लकड़ी के हथौड़े को सिर के ऊपर घुमाते हुए व्यायाम कर रहे थे। सम्राट रुके और हथौड़े को नीचे रखकर झील के दूर किनारे की ओर देखा, जहाँ एक घोड़ा पूरी रफ्तार से दौड़ रहा था। किनारे के उस हिस्से में पेड़ घने और पास-पास थे और सुबह की रोशनी अभी भी अपर्याप्त थी, इसलिए राजा घुड़सवार को तब तक नहीं देख पाए जब तक कि वह महल के रास्ते की ओर मुड़ नहीं गया। घुड़सवार को पहचानते ही विक्रमादित्य की आँखें चमक उठीं और उनके चेहरे पर राहत की एक हल्की लहर दौड़ गई।
हथौड़े को ज़मीन पर रखते हुए, जो असंतुलित होकर खड़खड़ाहट के साथ गिर गया, सम्राट एक चौड़े पत्थर के कुंड की ओर बढ़े, जिसके बीचोंबीच एक छोटा सा फव्वारा बह रहा था, जिससे बुलबुलों की नाव कुंड के किनारे तक उछल रही थी। उन्होंने जल्दी से अपने चेहरे, गर्दन और बाहों पर पानी छिड़का, पसीना पोंछा और फिर अपने गीले हाथों से अपने बालों को सहलाया। पलकें झपकाते हुए और कुंड पर पानी टपकाते हुए, उन्होंने सेवा में खड़े लड़के की ओर हाथ बढ़ाया।

"तौलिया," उसने थोड़ी अधीरता से उंगलियां चटकाते हुए कहा।
जब वह अपनी दाढ़ी पोंछते हुए केंद्रीय गलियारे की सीढ़ियों से नीचे उतरे, तो उनका पैर आखिरी सीढ़ी पर ही पड़ा कि प्रवेश द्वार पर एक परछाई पड़ी। ऊपर देखते हुए विक्रमादित्य ने घुड़सवार को महल में प्रवेश करते देखा और मुस्कुरा उठे।
“भाई,” उसने कहा। “तुम्हें देखकर बहुत अच्छा लगा।”
वररुचि ने संक्षिप्त रूप से सिर हिलाया, उनकी निगाहें ऊपरी मंजिलों की दीर्घाओं और गलियारों पर टिकी थीं। सम्राट ने अपने सौतेले भाई की आँखों में गंभीरता देखी और उनका अपना चेहरा भी गंभीर हो गया।
“इतनी देर क्यों लगी? बड़ी मां ठीक हैं ना?” उसने पूछा।
“हाँ,” वरारुची ने कुछ अनमने ढंग से उत्तर दिया। वह रुक गया था और अभी भी हॉल और गैलरी में खोजबीन कर रहा था।
“पिछले कुछ दिनों में बहुत कुछ घटित हुआ है,” सम्राट ने वरारुचि की चुप्पी को हाल की घटनाओं की श्रृंखला की प्रतिक्रिया मानते हुए कहा। वह अपने भाई की ओर बढ़े और उनके बीच की दूरी कम करते हुए बोले, “तुमने यह सब तो सुना ही होगा...”
“मैंने सुना है,” वरारुचि ने थोड़ी कठोरता से बात काटते हुए कहा, और जब विक्रमादित्य ने आश्चर्य से उनकी ओर देखा, तो उन्होंने आगे कहा, “महारानी माँ का क्या कहना है?”
"क्या?"
सम्राट रुक गया और असमंजस में अपने भाई की ओर देखने लगा।
“मैंने कहा, महारानी माँ को अपने बचाव में क्या कहना है?” वरारुचि ने सम्राट की आँखों में देखते हुए दोहराया।
“रानी...” फिर, आखिरकार बात समझकर, “भाई, माँ की बातों से क्या फर्क पड़ता है?” वह कुछ कदम आगे बढ़ा। “मैं पिता को अपना...”
“कौन से पिता— वो जो कल आए थे या वो जिनकी अस्थियां हमने पवित्र क्षिप्रा में बिखेरी थीं?” वरारुचि ने विक्रमादित्य की ओर आक्रामक लहजे में देखा। “कौन से?”
“भाई,” सम्राट ने हांफते हुए कहा और वहीं जम गया, उसका चेहरा पीड़ा से विकृत हो गया।

“और महारानी माँ की बात क्यों मायने नहीं रखती?” वरारुचि ने आगे कहा। “कोई अजनबी आकर दावा करता है कि वह उनके बेटे का वैध पिता है, जो अवंती का शासक है क्योंकि वह उनके दिवंगत पति का वैध पुत्र है। क्या महारानी माँ का यह कर्तव्य नहीं है कि वह इस मामले को सुलझाएं और सभी संदेह दूर करें?”
“भाई, तुम ऐसा क्यों कर रहे हो...” सम्राट ने कहना शुरू किया, लेकिन वरारुचि अभी रुके नहीं थे।
“क्या महारानी माँ को सार्वजनिक बयान जारी नहीं करना चाहिए था? उनके बेटे का वैध पिता कौन है? वह कुछ क्यों नहीं कह रही हैं? वह चुप्पी की दीवार के पीछे क्यों छिपी हैं? वह ऐसा क्यों नहीं कर सकतीं...”
"भाई," विक्रमादित्य ने अचानक क्रोध में आकर चिल्लाया, उसकी आवाज हॉल के दूसरे छोर तक गूंजी और वरारुचि को चुप करा दिया।
महल के कुछ सेवक जो अपने काम में व्यस्त थे, अचानक रुक गए और हॉल के बीच में खड़े दोनों भाइयों को देखने लगे। सम्राट को अपनी और वरारुचि की ओर टिकी निगाहों का एहसास हुआ और उन्होंने खुद को संभालने की कोशिश की। अपनी आवाज़ धीमी करते हुए, उन्होंने धीरे-धीरे और संयमित ढंग से बोलना शुरू किया।
“भाई, मेरे लिए पिता समान केवल एक ही व्यक्ति हो सकता है, और वह हैं हमारे पिता, राजा महेंद्रदित्य। आप जानते हैं कि वे मुझसे प्रेम करते थे और मैं उनसे प्रेम करता था, और यही सबसे महत्वपूर्ण है। पिता, पिता ही रहेंगे, सदा और सदा के लिए।”
वररुचि ने कुछ क्षण सम्राट को घूर कर देखा। “विक्रम, यह सवाल नहीं है कि तुम्हारा पिता कौन हो सकता है। सवाल यह है कि तुम्हारा पिता कौन है। यह भावनाओं का सवाल नहीं है, बल्कि तथ्यों का सवाल है। एक समय महारानी माँ...”
“राजा महेंद्रदित्य मेरे पिता हैं,” विक्रमादित्य ने भारी स्वर में कहा, उनके लहजे से स्पष्ट था कि वे बहस करना समाप्त कर चुके हैं। वरारुचि ने उनके लहजे को पहचान लिया और सिर हिलाया।
“मैं आपकी बात पर विश्वास करता हूँ।” उनका लहजा सख्त और अटल था। “लेकिन मैं महारानी माँ से भी यही सुनना चाहता हूँ।”
“वह ऐसा नहीं करेगी,” विक्रमादित्य ने स्पष्ट स्वर में कहा।

“ऐसा क्यों?” वरारुची ने संदेह से अपनी आँखें सिकोड़ लीं।
“क्योंकि मैं उसे ऐसा करने नहीं दूँगा। और क्योंकि वह आपके प्रति जवाबदेह भी नहीं है।”
वररुचि की निगाहें उदास और कटु थीं, जब उन्होंने अपने सौतेले भाई का आकलन किया। "तुम उसकी रक्षा कर रहे हो, विक्रम।"
सम्राट ने कंधे उचकाते हुए सिर झुकाया। "मैंने वचन दिया है कि मैं ऐसा करूंगा।"
“और मुझे लगा था कि तुमने कहा था कि तुम पिता से प्यार करते हो,” वरारुची ने आरोप लगाते हुए कहा, उसके होंठ तिरछी मुस्कान से मुड़ गए। “वही आदमी जिसके साथ महारानी माँ ने अन्याय किया है।”
"मैं अब भी पिताजी से प्यार करता हूँ, पहले से कहीं ज्यादा।"
दोनों भाई एक अखाड़े में आमने-सामने थे, एक-दूसरे के चारों ओर चक्कर लगा रहे थे, सतर्क थे, उनके बीच बढ़ती दुश्मनी उनके आसपास के वातावरण को दूषित कर रही थी, जो गर्म और घुटन भरा था। अंत में, वरारुची ने सिर हिलाया।
“क्या यह आपका अंतिम निर्णय है?” उसने पूछा।
"हाँ।"
वररुची ने फिर से सिर हिलाया और ऊपर और चारों ओर एक नजर डाली, उन दीर्घाओं को देखा जो उनके सिर के ठीक ऊपर स्थित ऊंचे गुंबद तक लड़खड़ाती हुई ऊपर जाती थीं।
“बहुत अच्छा,” उसने कहा। बिना कुछ और कहे, वह मुड़ा और दरवाजे की ओर चल पड़ा।
“भाई, रुको। मेरी बात सुनो...” सम्राट ने वरारुचि को रोकने के लिए हाथ उठाया, उनकी आवाज़ में दर्द और विनती थी, लेकिन यह देखकर कि उनका भाई उनकी बात सुनने के मूड में नहीं है, राजा ने खुद को रोका और हाथ नीचे कर लिया। उनका चेहरा उथल-पुथल से भरा था, मानो उनके अंदर सब कुछ बिखर रहा हो। लेकिन वरारुचि ने यह सब नहीं देखा और महल से बाहर निकल गए, विक्रमादित्य को खाली दरवाजे को घूरते हुए छोड़कर।
एक गहरी आह भरते हुए सम्राट अपने कदम पीछे हटाते हुए सीढ़ियों पर भारी कदमों से चलने लगे, अंतहीन चिंताओं और बोझ के असहनीय भार से उनके कंधे झुके हुए थे। सूरज की किरणें एक ऊँची खिड़की से छनकर राजा पर पड़ीं, उनकी

परछाईं उनके पीछे-पीछे सीढ़ियों पर लंबी और टूटी हुई सी खिंचती चली गई, मानो कोई अपंग शोक मना रहा हो।
विक्रमादित्य के एक गलियारे में ओझल हो जाने के बाद—जब महल के सेवक जा चुके थे और हॉल फिर से सुनसान हो गया था—तभी खिड़कियों पर लगे फर्श तक लंबे पर्दों की छाया से वह आकृति प्रकट हुई। वह आकृति पर्दों के पीछे से निकली नहीं, बल्कि मानो उनके बीच से फिसलती हुई आई, मानो कोई परछाई आकार ले रही हो, धीरे-धीरे अस्तित्व में आ रही हो। उस आकृति ने चारों ओर देखा ताकि उसे यकीन हो जाए कि वह अकेला है, फिर उस जगह की ओर देखा जहाँ सम्राट गए थे। फिर, धीरे-धीरे, उसने मुख्य द्वार की ओर देखा, जिस रास्ते से वररुचि गए थे।
मानव राजा और उसके सौतेले भाई के बीच एक बड़ा मतभेद हो गया था और वे अलग हो गए थे, शायद कट्टर दुश्मन बनकर। यह एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम था। उसे पूरा यकीन था कि उसका स्वामी भी इसके बारे में जानना चाहेगा।
अभी-अभी देखे गए टकराव की रिपोर्ट करने का मन में निश्चय करते हुए, वह व्यक्ति छाया में गायब हो गया... और तुरंत ही फिर से बाहर आ गया, इस बार महल के रक्षकों के एक सैनिक के वेश में, महल के चारों ओर घूम रहे अन्य रक्षकों से उसे अलग पहचानना मुश्किल था।

ड्रोइबा

रात भर—या शायद दिन भर?—परछाइयाँ आती-जाती रहीं, आपस में धीमी आवाज़ में कुछ बुदबुदाती रहीं, ऐसी भाषा में जो वेताला भट्टा को समझ नहीं आई। वे उसके

पास आईं और झुककर धीरे से पीछे हट गईं। उसे वे नाखुश लग रही थीं।
एक बार, उसने कल्पना की कि कोई अवंती की बोली में बोल रहा है। शाही शिक्षक को ठीक से याद नहीं था कि क्या कहा गया था, लेकिन उन शब्दों की स्मृति—परिचित ध्वनियाँ, अक्षर और स्वर—उसे सर्दियों की शामों में जलती हुई हल्की आग की गर्माहट की तरह सुकून दे रही थी।
"जाग जाओ, राजगुरु।"
हां, उसने सोचा। उसने यही शब्द सुने थे।
“राजगुरु जी, जाग जाइए।”
परछाइयाँ लौट आईं, चारों ओर से उस पर मंडराती हुई, नीचे झाँकती हुई।
“राज-गुरु, आप जाग गए हैं,” एक परछाई ने कहा। आचार्य को लगा कि यह आवाज़ उन्होंने पहले भी सुनी है। परछाई देखने में भी किसी परिचित जैसी लग रही थी।
अन्य परछाइयाँ अपनी उस विचित्र भाषा में चहचहाने लगीं, लेकिन एक नई परछाई उस घेरे को भेदकर आगे बढ़ी।
“राजगुरु, आप हमारे साथ वापस आ गए हैं,” उसने स्पष्ट राहत के साथ कहा। धीरे-धीरे, अवंती से अपने दल का नेतृत्व कर रहे कप्तान केदारा का चेहरा स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा।
“वापस?” आचार्य के मुँह से यह शब्द लड़खड़ाते हुए, भारी और बेजान सा निकला। उनकी जीभ मुँह के पिछले हिस्से में खुरदरी, भारी और बोझिल सी लग रही थी।
“कहाँ से?”
“राजगुरु, हमने उम्मीद छोड़ दी थी,” कप्तान ने कहा। “हमने सोचा... हमने सबसे बुरे की कल्पना कर ली थी, और किसी तरह...”
केदारा एक बार फिर छाया में विलीन हो गया, और आचार्य नींद की नरम गद्दी पर वापस लेट गए। लगभग एक घंटा बीतने के बाद वे अगली बार जागे, और इस बार धुंधली छायाओं और हल्की रोशनी के बजाय, सब कुछ स्पष्ट रेखाओं, तीक्ष्ण कोणों और निर्मल प्रकाश से भरा था। वे कुछ क्षण लेटे रहे, अपने आस-पास का निरीक्षण करते रहे, आकाश से उन्हें आश्रय देने वाली सरकंडों से बुनी हुई छत, दीवारों को बनाने वाले मिट्टी से लेपे हुए बांस के खंभों और खुली खिड़की के ठीक बाहर शाखाओं के पत्तों से छनकर आती तेज धूप का अध्ययन करते रहे। पत्ते और

शाखाएँ इतनी पास थीं कि वेताल भट्टा एक पल में समझ गए कि वे एक वृक्षगृह के अंदर हैं।
“केदारा,” उसने कर्कश आवाज में पुकारा। “कैप्टन, क्या आप वहाँ हैं?”
लगभग आधा घंटा बीतने के बाद, एस्कॉर्ट के पांच जीवित सदस्य आचार्य के बिस्तर के चारों ओर बैठ गए और उन्हें पिछली सुबह उनके बेहोश होने के बाद घटी सभी घटनाओं के बारे में जानकारी दी।
“राजगुरु, कल शाम को दुर्रा का निधन हो गया। सूर्यास्त के ठीक बाद,” केदारा ने उस बूढ़े सिपाही का जिक्र करते हुए कहा, जिसने दलदल में कूदकर आत्महत्या करने की कोशिश की थी। “बुखार ने आखिरकार उसकी जान ले ली।”
“यह दुर्भाग्यपूर्ण है, लेकिन ऐसा होना तय था,” वेताला भट्टा ने बुखार से कांपते उस आदमी को याद करते हुए दुख से सिर हिलाया। एक छोटी महिला आई और उसने उनके हाथों में गरमागरम सूप से भरा एक लौकी थमा दिया, जिसे उन्होंने कृतज्ञतापूर्वक सिर हिलाकर स्वीकार कर लिया। “उसे मेरा धन्यवाद कहना,” उन्होंने दुभाषिए से कहा, इस बात से खुश कि वे उसे आनूपा के हाथों खो नहीं पाए।
जब दुभाषिया महिला से कुछ बुदबुदा रहा था, आचार्य ने शोरबे का एक छोटा सा घूंट लिया और उसके तीखेपन से चौंक गए। उन्होंने पूछा, "क्या हम अभी भी आनूपा में हैं?"
जी हां, राजगुरु जी। लेकिन सौभाग्य से हम दलदल के पूर्वी किनारे पर हैं, ओड्रा से ज्यादा दूर नहीं।
“ये लोग कौन हैं?” वेतला भट्टा ने पीछे हटती हुई महिला की ओर इशारा करते हुए पूछा।
“राजगुरु, वे दलदली जनजातियों की एक शाखा हैं,” दुभाषिए ने उत्तर दिया। “वे दलदलों और उसके आसपास के जंगलों में फलते-फूलते हैं।”
"खो जाने के पूरे समय में हमें एक भी नहीं दिखा।"
मुझे समझ आता है कि वे अकेले रहना पसंद करते हैं।
“ये लोग आनूपा में कैसे जीवित रहते हैं? ये क्या खाते हैं? हमें कुछ नहीं मिला।”
“उसमें,” दुभाषिए ने आचार्य जिस लौकी से पानी पी रहे थे उसकी ओर इशारा करते हुए कहा। “मछली।”
"मछली," वेताला भट्टा रुकी और संदेह भरी निगाहों से कटोरे में देखने लगी।

“यह स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है, और दलदली इलाकों के कुछ तालाबों में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है,” दुभाषिए ने समझाया। “दलदली इलाकों में रहने वाली जनजातियाँ जानती हैं कि इन्हें कहाँ ढूँढना है।”
पार्षद ने सिर हिलाया और सूप की एक घूंट ली। उसे मानना पड़ा कि सूप स्वादिष्ट था। "उन्होंने हमें कैसे ढूंढा?"
“उनका कहना है कि उन्होंने हमारे पैरों के निशान हर जगह देखे और उन्हें एहसास हुआ कि हम खो गए हैं। उन्होंने हमारे पदचिह्नों का पीछा करते हुए हमें ढूंढ लिया।”
आचार्य ने पूछा, "अगर हमारे पदचिह्न हर जगह जा रहे थे, तो उन्हें कैसे पता चला कि किस पदचिह्न का अनुसरण करना है?"
वे गंध पहचानने के लिए अपनी सूंघने की क्षमता का भी उपयोग करते हैं।
"जानवरों की तरह?" वेतला भट्टा ने प्रभावित होकर पूछा।
"हाँ।"
और क्या वे शांतिप्रिय हैं?
"उन्हें लगा कि हम बहुत थके हुए हैं और मौत के इतने करीब हैं कि कोई खतरा पैदा नहीं कर सकते।"
“वे हमारी मदद क्यों कर रहे हैं? मेरा मतलब है, क्या वे सच में हमारी मदद कर रहे हैं?”
जी हां, राजगुरु जी। जैसे ही उन्हें पता चला कि हम सम्राट विक्रमादित्य के दरबार से हैं, वे हमारी मदद करने के लिए तैयार हो गए।
“क्या इन्हें हमारे सम्राट के बारे में पता है?” आचार्य अविश्वास से देखने लगे। “अद्भुत!”
"उन्होंने स्वेच्छा से हमें दलदल से बाहर निकालने और ओड्रा की सीमा तक ले जाने की पेशकश की है।"
“यह उनकी बहुत अच्छी पहल है। मुझे यह देखकर बहुत खुशी हुई कि अवंती का प्रभाव आनूपा की गहराई तक फैला हुआ है।”
"मुझे नहीं लगता कि उनका इरादा मदद करने का है, बल्कि हमसे छुटकारा पाने का है, राजगुरु।"
"अपनी बात स्पष्ट करो, सिपाही," वेताला भट्टा ने सख्त लहजे में कहा।

दुभाषिया ने सबके पास जाने से पहले यह सुनिश्चित किया कि वे अकेले तो नहीं हैं। "मैंने कल रात उनमें से कुछ को बात करते सुना। मुझे उनकी भाषा ठीक से समझ नहीं आती, लेकिन जितना मैंने समझा, एक दूसरे से कह रहा था कि उन्हें हमसे छुटकारा पाना होगा, इससे पहले कि जो बुराई हमें दूषित कर रही है, वह उन्हें भी दूषित कर दे।"

"वह बुराई जो हमें कलंकित करती है?" आचार्य ने दोहराया। "वे किस बुराई की बात कर रहे थे?"

"मुझे नहीं पता, लेकिन उस आदमी को ऐसा लग रहा था कि अवंती के ऊपर ग्रहण लगा हुआ है। उसने कहा कि इसकी छाया से छूने वाली कोई भी चीज बुराई को अपने अंदर समा लेती है और बाकी सब चीजों को दूषित कर सकती है।"

"क्या उन्होंने ग्रहण की बात की?" वेताल भट्ट ने पूछा, उनका मन उस सुबह की ओर चला गया जब सर्वज्ञ भगवान विक्रमादित्य से मिलने आए थे और उन्हें हलाहल सुरक्षित रखने के लिए सौंप दिया था। वे सभी सभा कक्ष में अपनी योजनाओं पर चर्चा कर रहे थे, तभी शंकु ने कहा था कि देवी ओरेकल ने उन्हें एक चेतावनी दी है।

शंकु ने कहा था, "उसने मुझसे कहा था कि मैं तुम्हें चेतावनी दूं कि सूर्य घट रहा है, और एक बड़ा ग्रहण सूर्य को निगलने वाला है।"

मेरी दादी जिस सूर्य का जिक्र कर रही थीं, वह आदित्य वंश का शाही प्रतीक है, जो कुलीन सलाहकारों का वंश है। अवंती का सूर्य-शिखर...

"मेरा भाला कहाँ है?" आचार्य ने कमरे में नज़र घुमाते हुए पूछा। "हमें अभी ओड्रा के लिए निकलना होगा।" अपने पैरों को ढके हल्के शॉल को हटाते हुए उन्होंने कहा, "इन लोगों से कह दो कि अगर वे हमें यहाँ से निकालना चाहते हैं, तो हम अभी चले जाएँगे, बशर्ते वे हमें रास्ता दिखाने के लिए एक मार्गदर्शक दे दें।"

उसने अपने पैर उस साधारण पलंग से नीचे लटकाए, लेकिन केदारा ने उसे रोक लिया। "राज-गुरु जी, कृपया... आप कमजोर हैं। आपको आराम करना चाहिए और अपनी शक्ति वापस पानी चाहिए। हम यहाँ कुछ दिन रुक सकते हैं..."

"नहीं," पार्षद ने दृढ़ता से कहा। "अवंती बहुत संकट में है, कप्तान। उसे हमारी ज़रूरत है। आइए हम अपना काम पूरा करें और जितनी जल्दी हो सके उज्जैन लौट चलें।"

*

धनवंतरी सीढ़ियों पर चढ़ने-उतरने के नीरस काम और इंद्र द्वारा कल दी गई धमकियों के संभावित परिणाम के बारे में सोचने में इतना मशगूल था कि उसने हरिहर को तब तक नहीं देखा जब तक कि वह लगभग उसके सामने नहीं आ गया। राजा महल की ऊपरी गैलरी से नीचे आ रहा था और वे आधे रास्ते में मिले। इस पर वैद्य ने आश्चर्य से हल्की सी 'उह' की आवाज निकाली और टक्कर से बचने के लिए अचानक रुक गया।

“हमारे प्रिय धनवंतरी, आप कैसे हैं?”

बनावटी प्रसन्नता के पीछे हरिहारा का लहजा घमंडी था, जिससे वैद्य धनवंतरी चिढ़ गया। वह अभी तक उज्जैन की इस अचानक यात्रा के पीछे का असली मकसद नहीं समझ पाया था, लेकिन राजा का बिना पर्याप्त कारण के अपना प्रवास बढ़ाना किसी छिपे हुए इरादे की ओर इशारा करता था। धनवंतरी को संदेह था कि हरिहारा सम्राट और इंद्र के बीच हुए संघर्ष के आलोक में अवंती की स्थिति का जायजा लेने के लिए वहाँ रुका हुआ है।

“मैं ठीक हूँ, महाराज,” सलाहकार ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। “आशा है आपने अच्छी नींद ली होगी?”

“ओह हाँ, हाँ...” हरिहारा ने चारों ओर देखा, मानो किसी बात को लेकर दुविधा में फंसा हो। “उम... क्या वरारुची वापस आ गया है?” उसने अचानक पूछा।

“मुझे नहीं पता,” धनवंतरी ने थोड़ा आश्चर्यचकित होकर उत्तर दिया। “अगर वह ऐसा कर रहा है, तो मुझे इसकी जानकारी नहीं है।”

“ओह, मैं समझ गया।” एक बार फिर, थोड़ी सी दुविधा का भाव। “दरअसल... मैंने महल के कुछ कर्मचारियों को यह कहते हुए सुना कि वह आज सुबह जल्दी लौट आया था...”

"तो फिर यह सच ही होगा।"

“हाँ, लेकिन... उन्होंने वरारुचि और सम्राट के बीच मतभेद के बारे में भी कुछ कहा।” हरिहारा ने लालची सफाईकर्मी जैसी नज़र से पार्षद को देखा, जिसे धनवंतरी को घृणास्पद लगा। “उन्होंने ऐसा दिखाया जैसे ज़ोरदार बहस हो रही हो...”

“महाराज, मुझे इस सब के बारे में कुछ भी पता नहीं है,” चिकित्सक ने अपने चेहरे पर कोई भाव नहीं आने दिया, जबकि उसका दिमाग उन बातों के कारणों और परिणामों की सूची बनाने में लगा हुआ था जो उसने अभी-अभी सुनी थीं। महल के नौकर राजा और उसके भाई के बारे में गपशप कर रहे थे... “बिल्कुल भी पता नहीं।”

“मैं समझ गया।” हरिहारा ने इस जवाब की उम्मीद नहीं की थी, इसलिए उसे समझ नहीं आया कि कैसे प्रतिक्रिया दे।

इस थोड़े से सन्नाटे का फायदा उठाते हुए, धनवंतरी ने ऊपर की मंजिलों की ओर हाथ हिलाया और एक सीढ़ी चढ़ गया। “अब अगर आप मुझे अनुमति दें, तो मुझे रानी से मिलना है। अगर आप झील के किनारे टहलने जा रहे हैं, तो आज सुबह झील के किनारे टहलने के लिए बहुत सुहाना मौसम है।”

“जी हां, जी हां। जरूर।” हरिहारा जल्दी से एक तरफ हट गया और डॉक्टर के भारी-भरकम शरीर को रास्ता देने के लिए रेलिंग पर झुक गया। “जी हां, मैं वहीं जा रहा हूं।”

सलाहकार ने पीछे मुड़े बिना ही बाकी सीढ़ियाँ चढ़ लीं, कहीं हरिहारा उससे दोबारा बातचीत शुरू न कर दे। एक मोड़ मुड़ने के बाद ही उसने राहत की साँस ली और राजा की कही बातों पर विचार करने के लिए रुका।

वररुचि और विक्रमादित्य के बीच मतभेद होना—ऐसा अक्सर नहीं होता था, लेकिन कभी-कभार होता था। दोनों ही दृढ़ विचारों वाले व्यक्ति थे और जरूरत पड़ने पर अड़ियल भी हो सकते थे। लेकिन महल के सेवकों के सामने दोनों का ज़ोरदार झगड़ा करना? ऐसा कभी नहीं होता था। दोनों भाइयों में इतना प्रेम और सम्मान था कि वे कभी भी क्षणिक आवेश को अपने ऊपर हावी नहीं होने देते थे। वे शिष्टाचार को भी समझते थे, जो सम्राट और उनके सलाहकारों के बीच संबंधों की नींव थी। फिर भी, महल के सेवक झूठ क्यों बोलते, और हरिहर ने सुनी हुई बातों के बारे में झूठ क्यों बोला?

एक मोड़ मुड़ते ही धनवंतरी लगभग महल के रक्षकों के मुखिया से टकरा गए, जो विशाखा के कक्षों की दिशा से आ रहे थे। बूढ़ा सिपाही चिंतित सा लग रहा था और वैद्य को देखकर स्पष्ट रूप से अचंभित हो गया।

“प्रणाम, विस्मया,” धन्वंतरि ने कहा।

"सांसद महोदय, नमस्कार।"
कुछ क्षणों के लिए असहज सन्नाटा छा गया क्योंकि दोनों में से किसी के पास कहने के लिए कुछ और नहीं था। विस्मया के कंधे की ओर इशारा करते हुए चिकित्सक ने पूछा, "क्या सम्राट वहाँ हैं?"
यह एक अनावश्यक प्रश्न था, जिसे मूर्खतापूर्ण, आत्म-सचेत चुप्पी को निरर्थक शब्दों से भरने के लिए पूछा गया था। सम्राट हर सुबह विशाखा के बिस्तर के पास होते थे, और यह बात सभी जानते थे। सम्राट अपनी प्रियतम को देखे बिना अपना दिन शुरू नहीं करते थे...
“नहीं, वह नहीं हैं,” विस्मया ने कहा। धनवंतरी के चेहरे पर हैरानी देखकर उन्होंने दो मंजिल ऊपर स्थित एक गैलरी की ओर इशारा किया। “पार्षद महोदय, मैंने सम्राट को कुछ देर पहले उस तरफ जाते देखा था।”
वह गैलरी और सीढ़ियाँ परिषद कक्ष की ओर जाती थीं। धनवंतरी रुक गया, यह तय नहीं कर पा रहा था कि आगे किस तरफ जाए - योजना के अनुसार सीधे विशाखा से मिलने जाए या दो मंजिल ऊपर परिषद कक्ष की ओर।
“क्या आपको यकीन है?” उसने मुखिया से पूछा।
"बिल्कुल, पार्षद जी।"
यह असामान्य था। बहुत ही असामान्य। धनवंतरी मुड़ा और अगली मंजिल पर जाने के लिए सीढ़ियों पर चढ़ गया, फिर उसके ऊपर वाली मंजिल पर।
जब धनवंतरी ने कक्ष के भारी दरवाज़े को धकेलकर अंदर प्रवेश किया, तो उसे एक अंधकारमय वातावरण का सामना करना पड़ा, जिसका कारण वह पहले समझ नहीं पाया। उसे यह समझने में कुछ क्षण लगे कि सुबह की धूप को रोकने के लिए कुछ भारी पर्दे गिरा दिए गए थे। हालाँकि, दूर की खिड़कियाँ खुली थीं, और यहाँ धनवंतरी ने सम्राट को देखा, जो दरवाज़े की ओर पीठ करके, हाथ पीछे करके, महल की झील को ध्यान से निहार रहे थे।
“विक्रम,” वैद्य ने राजा के पास पहुँचते हुए कहा। “आप यहाँ क्या कर रहे हैं?”
सम्राट ने पीछे मुड़कर धनवंतरी को हल्के से सिर हिलाकर अभिवादन किया, लेकिन बिना कुछ कहे खिड़की की ओर मुड़ गए। सलाहकार आकर अपने राजा के बगल में खड़ा हो गया, और कुछ देर तक दोनों शहर में दिन के ढलने और फैलने का नजारा देखते रहे।

"मैंने सुना है कि वरारुचि आज सुबह लौट आए हैं," धनवंतरी ने एक छोटा सा संकेत भेजा।
विक्रमादित्य ने गहरी सांस ली और चुप रहते हुए सिर हिलाया।
“अभी-अभी मेरी मुलाकात राजा हरिहर से हुई। उन्होंने बताया कि महल के कुछ सेवक किसी तरह के मतभेद के बारे में बात कर रहे थे...” सलाहकार ने सम्राट की ओर मुड़कर पूछा, “विक्रमा, क्या आप मुझे बता सकते हैं कि क्या हुआ है?”
कुछ क्षण बीतने के बाद सम्राट ने धनवंतरी की ओर रुख किया। “मैं भी समझ नहीं पा रहा हूँ कि क्या हुआ है। मुझे नहीं पता क्यों...” सही शब्द ढूँढ़ते हुए वे रुक गए, “...अचानक वह इतना ज़िद्दी, इतना हठी क्यों हो गया है।”
“किस बात पर अड़ियल?”
विक्रमादित्य एक बार फिर मौन हो गए, मानो आंतरिक संघर्ष से जूझ रहे हों। वहीं, वैद्य अपनी जगह पर डटे रहे, अपनी मोटी भुजाओं को मोड़े, और धैर्यपूर्वक अपने राजा के बोलने की प्रतीक्षा करते रहे।
“वह चाहता है कि महारानी माँ सार्वजनिक रूप से यह घोषणा करें कि इंद्र ने उन आरोपों का खंडन किया है,” सम्राट ने अंत में कहा। “मैंने उसे बताया कि मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण यह है कि मैं किसे पिता मानता हूँ, और महेंद्रदित्य मेरे लिए पिता थे, हैं और हमेशा रहेंगे। लेकिन वह चाहता है कि माँ यह बात कहें।”
“और वह ऐसा नहीं करेगी?”
विक्रमादित्य ने धनवंतरी पर तीखी निगाह डाली, और वैद्य ने तुरंत सिर हिलाकर दूसरी ओर देखना शुरू कर दिया।
मैंने वचन दिया है कि मैं मां को इस तरह के अपमान का सामना नहीं करने दूंगा।
दोनों व्यक्तियों ने उस क्षण को यूं ही बीतने दिया, जब झील के पार से एक हल्की हवा बह रही थी, जिससे राजा के बाल और चिकित्सक का सूती अंगवस्त्रम लहरा रहा था।
“आपको यह एहसास तो है ही कि वररुचि ने आज जो मांग रखी है, वह बहुत से लोगों की जुबान पर है—और अगर नहीं भी है, तो जल्द ही होगी?” धनवंतरी ने सम्राट के कंधे पर धीरे से हाथ रखा। “लोग सवाल करेंगे, और पूछेंगे कि महारानी माँ इंद्र द्वारा उठाए गए संदेह को दूर क्यों नहीं कर रही हैं। और जब वह ऐसा नहीं

करेंगी, तो लोग अटकलें लगाएंगे। विक्रम, आपकी अपनी प्रजा, अवंती की प्रजा। और जब वे सवाल पूछेंगे, तो आप उन्हें क्या कहेंगे?"
"मैं उन्हें बताऊँगा कि मैं राजा महेंद्रदित्य का पुत्र हूँ," सम्राट ने हठपूर्वक उत्तर दिया। "बस यही मायने रखता है।"
और उन्हें आप पर विश्वास करना ही होगा?
"क्यों नहीं? अगर महारानी माँ कोई घोषणा करतीं, तो वे उनकी बात मानने को तैयार होते। तो फिर मेरी बात क्यों न मानें?"
धनवंतरी ने आह भरी और दूसरी ओर देखने लगा। जब विक्रमादित्य ने अगली बार बोलना शुरू किया, तो उसकी आवाज़ नरम थी, उसमें आक्रामकता कम थी।
"मुझे पता है कि मैं अड़ियल लग रहा हूँ," उसने कहा। "लेकिन मेरे पास और क्या विकल्प है, मेरे दोस्त? मैंने माँ से वादा किया है कि मैं उनकी रक्षा करूँगा। मैंने पिता से उनकी मृत्युशय्या पर वादा किया था कि मैं उन्हें कभी कोई हानि नहीं होने दूँगा। चाहे कुछ भी हो जाए, मैं अपना वचन नहीं तोड़ सकता।"
Dhanavantri gave an understanding nod. "Where is Vararuchi?"
"मुझे नहीं पता। वह महल छोड़कर चला गया। मैंने उससे बात करने की कोशिश की, लेकिन..."
मैं किसी को उसकी तलाश करने के लिए भेजूंगा।
"नहीं, ऐसा मत करो," विक्रमादित्य ने कहा। पार्षद के चेहरे पर हैरानी देखकर उन्होंने आगे कहा, "मुझे लगता है कि यह उनके लिए भी उतना ही बड़ा झटका है जितना मेरे लिए। उन्हें इसे स्वीकार करने में समय लगेगा। स्वीकार करना ही उपचार है, और उपचार में समय लग सकता है। आइए उन्हें वह समय दें। मैं जानता हूँ भाई। मुझे विश्वास है कि वे स्वयं ही वापस लौट आएंगे।"
चिकित्सक को इस बात का पूरा यकीन नहीं था, लेकिन इससे पहले कि वह अपनी बात रख पाता, कमरे का दरवाजा खुल गया। राजा और सलाहकार ने मुड़कर देखा तो प्रालूपी कमरे में जबरदस्ती घुस आया।
"मैं तुम्हें पूरे महल में ढूंढती रही, और आखिरकार तुम यहाँ आ ही गए," उसने गुस्से से कहा, मानो किसी ऐसे बच्चे से बात कर रही हो जिसने आदेश न माना हो। एक पल के लिए धनवंतरी को समझ नहीं आया कि वह किससे बात कर रही है। जैसे ही

वह करीब आई, उसने देखा कि उसकी निगाहें सम्राट पर टिकी हुई हैं और उसने राहत की सांस ली।
"जी बहन?" विक्रमादित्य ने सौम्य स्वर में पूछा। "मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?"
पार्षद को आश्चर्य हुआ कि क्या इन शब्दों के पीछे तीखा व्यंग्य छिपा था, लेकिन राजा के चेहरे के भाव से यह बताना असंभव था।
"सबसे पहले तो आप मुझे बता दीजिए कि मेरे बेटे को बचाने के मामले में क्या प्रगति हुई है?" प्रालुपी ने चिढ़कर कहा। "क्या कोई प्रगति हुई है, और क्या हम उसे ढूंढने के दो दिन पहले की तुलना में अब भी उसके करीब हैं?"
"जैसा कि आपने खुद कहा है, बहन, अमरा सिंह और अंगामित्र को यहाँ से गए हुए केवल दो दिन ही हुए हैं। वे अभी तक उदयपुरी भी नहीं पहुँचे होंगे, सीमा तक पहुँचना तो दूर की बात है। उन्हें वहाँ पहुँचने के लिए थोड़ा समय दीजिए।"
"जो लोग पहले से ही सीमा पर हैं, उनका क्या? मेरी जानकारी के अनुसार, शाही सेना और सीमा रक्षक बल के सैनिक, हमारे अधीन राज्यों के सैनिकों के साथ, पूरी सीमा पर जमा हैं। कोई उनकी मदद क्यों नहीं कर सकता—"
"वे हमारे अधीन राज्य नहीं हैं..." सम्राट ने स्पष्ट करने का प्रयास किया, लेकिन प्रलूपी बुखार से व्याकुल घोड़ों द्वारा खींचे गए गरजते रथ की तरह आगे बढ़ती रही।
"— कोई सैनिकों को लेकर विशाल रेगिस्तान में घटकरपारा की खोज क्यों नहीं कर सकता? इतने सारे सैनिकों को बचाव कार्य में लगाया गया है, तो वे उसे आसानी से ढूंढ लेंगे। किसी को भी अमरा सिंह का इंतज़ार करने की ज़रूरत नहीं है।" वह रुकी और अपने भाई को संदेह भरी नज़रों से देखा। "क्या तुम्हें मुझे यह बताने की ज़रूरत है कि क्या करना है?"
"बहन, हम यूँ ही सैनिकों को रक्षात्मक स्थिति से हटाकर रेगिस्तान में किसी को ढूँढ़ने के लिए नहीं भेज सकते," विक्रमादित्य ने शांत स्वर में कहा, जिसे सुनकर धनवंतरी, प्रलूपी से निपटने में विक्रमादित्य के धैर्य को देखकर आश्चर्यचकित रह गए। "सिंधुवर्त की सेना में से कोई भी इस विशाल रेगिस्तान से परिचित नहीं है—न तो इसकी भौगोलिक स्थिति से, न ही इसकी जलवायु से। संभावना है कि वे सभी प्यास और थकावट से मर जाएँगे। दूसरी बात, अगर हम अपने सैनिकों को किसी एक जगह से हटा लेते हैं, तो हम हूणों को सिंधुवर्त में प्रवेश करने का खुला रास्ता दे

देंगे, शायद यही वे चाहते थे जब उन्होंने घटकरपारा का अपहरण किया था। इसे करने का एकमात्र तरीका अत्यंत सावधानी और कौशल है, जो अमर सिंह और अंगामित्र के पास प्रचुर मात्रा में है। उन्हें अपना काम करने दो। उन पर भरोसा रखो, बहन।"

मुझे लगता है कि आपको भी जाना चाहिए था। आखिर वह आपका भतीजा है।

"बहन, मैंने तुमसे कहा था कि उज्जैन और वहां के लोगों को मेरी जरूरत है..."

"ठीक है, मान लिया।" प्रलूपी ने हाथ बांध लिए और झुंझलाहट से दूसरी तरफ देखने लगी। फिर, सम्राट की ओर मुड़कर, एक कड़वी लेकिन विजयी मुस्कान के साथ बोली, "कम से कम अब तो आप मानेंगे कि मेरे बेटे को सीमा पर न भेजने के लिए आपको कहना सही था। आपने कहा था कि ठीक है; मैं आपको बार-बार चेतावनी देती रही, लेकिन आपने मेरी बात नहीं सुनी। अब कौन सही था?"

उसकी आँखें विक्रमादित्य को चुनौती दे रही थीं, मानो खुलेआम उसे अपनी इच्छा न मानने के लिए फटकार रही हों, लेकिन राजा ने कुछ नहीं कहा। धनवंतरी ने विक्रमादित्य के लिए दुख जताते हुए सोचा कि आखिर वो क्या कह सकता है। उसने मन ही मन तय किया कि शत्रुओं को भी प्रलूपी जैसी बहन का श्राप नहीं मिलना चाहिए।

"अब जबकि हम जानते हैं कि इन बातों के बारे में मैं सही हूं, तो आप उस दूसरे मुद्दे के बारे में क्या करने जा रहे हैं जिसके बारे में हमने बात की थी?"

राजकुमारी के लहजे में कुछ ऐसा था, और सम्राट के थोड़े सख्त हो जाने के तरीके ने सलाहकार को सचेत कर दिया। उसने राजा से प्रालूपी की ओर तेज़ी से देखा, उसे समझ नहीं आ रहा था कि जो कुछ होने वाला है उसे देखने के लिए उसे यहाँ होना भी चाहिए या नहीं। उसने विक्रमादित्य की ओर देखा, उनसे कोई संकेत पाने की उम्मीद में, शायद उन्हें जाने के लिए कहने की, लेकिन राजा अविचलित दिखे, अपनी बहन को सीधे देखते रहे।

"इसमें क्या है, बहन?"

"अच्छा, जब घटाकरपारा को बचाकर वापस लाया जाएगा, तो क्या आप उसे वत्स का राजा बनाएंगे?" प्रलूपी ने चिढ़कर पूछा।

धनवंतरी इस मांग की निर्भीकता देखकर दंग रह गया, लेकिन प्रलूपी को इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि वह आसपास मौजूद है और उसकी इतनी कठोर और

निर्मम बातें सुन रहा है। शिष्टाचार कभी भी उसकी खासियत नहीं थी, लेकिन यह तो चिकित्सक की कल्पना से भी परे था कि प्रलूपी ऐसा कर सकती है। ऐसा लग रहा था कि उसने धनवंतरी की उपस्थिति को पूरी तरह से अनदेखा कर दिया और अपनी ज़िद जारी रखी। "मैंने आपको अपनी राय बता दी है, और चूंकि मैं पहले ही एक बार सही साबित हो चुकी हूं, इसलिए आपको मेरी बात सुननी चाहिए।"

“बहन, मैंने भी तुम्हें अपनी राय बता दी है,” सम्राट ने दृढ़ और संयमित स्वर में उत्तर दिया। “तुम इसे कितनी भी बार उठाओ, मैं इस चर्चा में नहीं पड़ने वाला, इसलिए जितनी जल्दी तुम इस पूरे मामले को भूल जाओ, उतना ही अच्छा है।”

"मुझे समझ नहीं आता कि आप अपने भतीजे के लिए ऐसा क्यों नहीं करेंगे," राजकुमारी ने लगभग अपने गुस्से को काबू में रखते हुए विलाप किया। “तुम मेरे लिए ऐसा क्यों नहीं करोगे? मैंने अवंती के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया, और बदले में मुझे क्या मिला? कुछ नहीं। मैं रानी बन सकती थी। मुझे रानी बनना चाहिए था। लेकिन नहीं,” उसकी आवाज़ में कड़वाहट भर आई, “चंद्रवर्धन ने मुझे इसलिए नहीं अपनाया क्योंकि वह पहले से विवाहित था, लेकिन उसने पिता को अपने मूर्ख छोटे भाई को विकल्प के रूप में पेश किया। और क्या यह मूर्ख छोटा भाई कभी राजा बन सकता था? नहीं। लेकिन चंद्रवर्धन को इसकी कोई परवाह नहीं थी, और हिमवर्धन को मेरी पत्नी बनाकर, चंद्रवर्धन ने मेरे रानी बनने की सारी संभावनाओं को खत्म कर दिया। वह मुझे अपनी दूसरी पत्नी के रूप में स्वीकार कर सकता था; उसके लिए हाँ कहना आसान था। अगर उसने ऐसा किया होता, तो मैं आज वत्स की रानी होती, लेकिन नहीं। नहीं, नहीं, नहीं। मैं रानी इसलिए नहीं हूँ क्योंकि उसने मना कर दिया, और मेरा बेटा राजा इसलिए नहीं बनेगा क्योंकि तुमने मना कर दिया। यह कैसे उचित है, विक्रम, कैसे? अवंती, वत्स और सिंधुवर्त के लिए इतना बलिदान देने के बदले में मुझे जो मिलना चाहिए, वह कहाँ है?”

धनवंतरी राजा की बहन को घूरता रहा, उसके क्रोध की तीव्रता देखकर वह दंग रह गया। उसके भीतर छिपी हुई कड़वी निराशाओं और हताशाओं ने उसे झकझोर दिया था, जो वर्षों से उसके अंदर दबी हुई थीं, उसके संयम और धैर्य को कुतरती जा रही थीं, और आज गुस्से की प्रचंड बाढ़ बनकर फूट पड़ी थीं। अचानक उसने उसे एक अलग नजरिए से देखा, और उसे एहसास हुआ कि अवंती ने प्रलूपी के प्रति अपना आभार प्रकट करना भूल गई थी।

विक्रमादित्य ने प्रलूपी की ओर दो कदम बढ़ाए। "हम तुम्हें कभी समझ ही नहीं पाए, बहन..."

"बस करो।" राजकुमारी ने हथेली उठाई। "अगर तुम सहानुभूति जता रहे हो, तो मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है। मेरी मांग सीधी-सादी है। मैं चाहती हूं कि घटकरपारा वत्स का अगला राजा बने। चंद्रवर्धन इस बात पर मान जाएगा क्योंकि वह अवंती का ऋणी है। इस बार वह हां कहेगा। बस अवंती के राजा को उसे बताना होगा कि क्या करना है। विक्रम, तुम जानते हो कि यह सच है, तो बस उसे बता दो।"

धनवंतरी ने अपनी सांस रोक ली और सम्राट पर तिरछी नज़र डाली। उसने देखा कि राजा अपनी बहन को एक सपाट लेकिन गंभीर निगाहों से देख रहे हैं, और फिर सीधे खड़े हो गए, उनके कंधे सीधे थे और दाढ़ी वाली ठुड्डी दृढ़ संकल्प से उभरी हुई थी। जब विक्रमादित्य बोले, तो उनके शब्द तर्कसंगत थे, लेकिन उनका स्वर पत्थर की तरह कठोर और खुरदुरा था।

"यदि अवंती के राजा को ही राजा चंद्रवर्धन को निर्देश देना पड़े, तो बहन, मैं अंतिम बार स्पष्ट कर देना चाहता हूँ। जब तक मैं अवंती का राजा हूँ, मैं राजा चंद्रवर्धन को उनके सिंहासन और मुकुट के संबंध में कोई निर्देश नहीं दूँगा। वे जो चाहें करने के लिए स्वतंत्र हैं।"

अगर नज़रें जान ले सकतीं, तो धनवंतरी को पूरा यकीन था कि प्रलूपी की घूरती निगाहें विक्रमादित्य को राख कर देतीं। भाई-बहन आमने-सामने आ गए, प्रलूपी के होंठों पर ठंडी, तिरस्कार भरी मुस्कान थी। घूमकर वह दरवाजे की ओर बढ़ी, लेकिन बीच में ही रुककर सम्राट की ओर मुड़ गई।

"भाई, मैं भी अपनी बात स्पष्ट कर देना चाहती हूँ," उसने कहा। "तुम्हारी मदद के बिना भी, घटाकरपारा वत्स का राजा बनेगा। मैं इसे साकार करने का कोई न कोई रास्ता निकाल लूँगी।"

*

अमर सिंह और वराहमिहिर अभी अंधेरे से निकलकर आग की रोशनी में आए ही थे कि वे चिल्लाते हुए और अपने हथियार लहराते हुए उन बर्बरों पर झपट पड़े, तभी वह अपने पैरों पर उछल पड़ा और उस झाड़ी से बाहर निकल आया जहां वह और विक्रमादित्य छिपे हुए थे।

"चलो, विक्रमा," उसने श्मशान घाट की ओर दौड़ते हुए पुकारा, जो अब हूण तंबुओं से भरा हुआ था और किलेबंदी से सुसज्जित था।
उसने पीछे मुड़कर देखा और पाया कि उसका मित्र घने जंगल से बाहर आ रहा है, उसके हाथ में राजा महेंद्रदित्य की पुरानी तलवार मजबूती से पकड़ी हुई है। घने जंगल से अवंती के दर्जनों सैनिक निकले और वे फुसफुसाते भूतों की तरह उसके पीछे-पीछे चल पड़े, जब उसने मुड़कर ज़मीन की ओर देखा, जहाँ हूण और अमर सिंह और वराहमिहिर के नेतृत्व में हमलावर पहले से ही युद्ध में उलझे हुए थे।
उसने गिद्धों के पंखों से बना मुकुट पहन रखा है। विक्रमादित्य ने ड्रॉइब के बारे में यही कहा था, जिसे उन्हें ढूंढकर मारना था। और उसका चेहरा नीले रंग से रंगा हुआ है।
अपने लंबे हैंडल वाली कुल्हाड़ी पर अपनी पकड़ मजबूत करते हुए, कालिदास ने यह कल्पना करने की कोशिश की कि हूण जादूगर कैसा दिखता होगा। अजीब तरह से, उनके मन में एक नीले चेहरे वाले गिद्ध की हास्यास्पद छवि उभर आई, जो एक चट्टान पर झुका हुआ और मूर्ख सा बैठा था। उस छवि को हँसते हुए अपने दिमाग से निकालते हुए, कालिदास ने आगे आने वाली चुनौती पर ध्यान केंद्रित किया - सैकड़ों की संख्या में युद्ध में माहिर हूण योद्धा अपने ड्रोइबा की रक्षा कर रहे थे, जिन्होंने बॉर्डरवर्ल्ड पर नियंत्रण पाने के उद्देश्य से घोलमास्टर को बंदी बना लिया था।
विक्रमादित्य उनके पास पहुँच गए और वे श्मशान घाट के किनारे की ओर बढ़े। आग की रोशनी के घेरे के करीब आते हुए वे झुकते गए, लेकिन अपनी गति धीमी नहीं की, ताकि किसी पहरेदार के उन्हें देख लेने और शोर मचाने से पहले वे यथासंभव करीब पहुँच सकें। सौभाग्य से, अमर सिंह ने दूर के किनारे से इतना ज़ोरदार हमला किया था कि बर्बर लोग उससे बचाव करने में इतने व्यस्त थे कि उन्होंने कालिदास और विक्रमादित्य को पीछे से आते हुए नहीं देखा, और वे बिना किसी घटना के मैदान की परिधि तक पहुँच गए। यहाँ उन्हें अलग होना पड़ा, एक दल तांत्रिक के पीछे गया, दूसरा बेताल को बचाने का प्रयास करने लगा। एक त्वरित इशारे से, विक्रमादित्य मुड़े और दाईं ओर चले गए, कालिदास को बाईं ओर मुड़कर श्मशान घाट के प्राकृतिक वक्र का अनुसरण करने के लिए छोड़ दिया।
अपने विशाल शरीर के बावजूद, कालिदास फुर्तीले और तेज़ कदमों वाले थे, और वे बड़ी आसानी से चुपचाप एक छाया से दूसरी छाया में छिपते हुए, अपने दाहिनी ओर

स्थित हूणों के शिविर पर लगातार नज़र रखते थे। उनके पीछे चल रहे सभी सैनिक उनका साथ देने के लिए संघर्ष कर रहे थे, सिवाय एक सैनिक के - एक लंबा और बलवान युवक, जो लगभग कालिदास की ही उम्र का था, जिसकी घुमावदार मूंछें और नुकीली दाढ़ी थी। वह सैनिक लगभग उनकी गति के बराबर था और परछाई की तरह उनके पीछे-पीछे चल रहा था, उसकी तलवार उसके हाथों में बँधी हुई थी। कालिदास शिविर का चक्कर लगा रहे थे, उन्हें ठीक से पता नहीं था कि वे क्या खोज रहे हैं। पेड़ों के बीच एक खाली जगह देखकर, जहाँ से वे हूणों के करीब पहुँच सकते थे, वे उस खाली जगह में मुड़ गए, और वह बड़ा सैनिक भी उनके पीछे-पीछे चला गया। कुछ ही क्षण बाद, उस खाली जगह से अवंती के बाकी योद्धा भी अंदर आ गए।

छिपते हुए, हमलावर पेड़ों और तंबुओं के पीछे छिपते हुए आगे बढ़े, और तांत्रिक के ठिकाने का पता लगाने के लिए आगे बढ़ते रहे। मैदान के दूसरी ओर, लड़ाई अपने चरम पर थी। क्षिप्रा से बहने वाली रात की हवा के कारण खून की गंध हवा में फैल चुकी थी।

जैसे ही कालिदास की नज़र घने तंबुओं के समूह के चारों ओर तैनात लगभग तीस हूण योद्धाओं पर पड़ी, वे समझ गए कि उन्हें अपना लक्ष्य मिल गया है। जहाँ वे खड़े थे, वहाँ से आधे मील से भी कम दूरी पर एक भयंकर युद्ध चल रहा था, लेकिन हूणों के इस समूह ने उस लड़ाई में शामिल होने का कोई इरादा नहीं दिखाया - जिसका अर्थ था कि उन्हें वहीं रहने का आदेश दिया गया था।

और ऐसा सिर्फ इसलिए हो सकता था क्योंकि वे किसी चीज़ की रक्षा कर रहे थे। या किसी व्यक्ति की। कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति, जो उन तंबुओं में से एक के अंदर था। ड्रोइबा।

समय बहुत कम बचा था—विक्रमादित्य जादूगर के प्रभाव में रहते हुए पिशाच सरदार को मुक्त नहीं कर सकते थे, और अमावस्या भी किसी का इंतजार नहीं करती—कालिदास को हूण रक्षकों से निपटने का केवल एक ही उपाय सूझा। वह पेड़ों से चीखते हुए बाहर निकले, और उनके सैनिक भी चीखते-चिल्लाते उनके पीछे दौड़े। जब वे हूण योद्धाओं की दीवार से टकराए, तो हवा चीखों और धातु के टकराने की आवाज़ से गूंज उठी।

कालिदास ने अपने पहले ही हमले में चार हूण योद्धाओं को मार गिराया, और उनके आक्रमण का प्रभाव इतना ज़बरदस्त था कि हमलावर दीवार को भेदने में कामयाब हो गए, जिससे हूण योद्धा पीछे हट गए। कालिदास ने अपनी कुल्हाड़ी चलाते हुए ज़ोरदार हमला किया, घेराबंदी को चीरते हुए आगे बढ़े, और एक पल के लिए ऐसा लगा मानो उनकी निरंतर प्रहार से रक्षापंक्ति ध्वस्त हो जाएगी। लेकिन तंबुओं के पीछे से बर्बरों का एक नया समूह निकला, और इससे पहले कि कालिदास कुछ समझ पाते, पासा पलट गया और वे चारों ओर से घिर गए। उनकी पीठ पर नुकीली गदा का तिरछा प्रहार हुआ, जबकि एक तलवार ने उनकी कोहनी से कलाई तक उनकी बांह के बाहरी हिस्से को चीर दिया, जिससे गर्म खून उनकी उंगलियों से बहने लगा और कुल्हाड़ी पर उनकी पकड़ फिसलने लगी।

उसने अपने हमलावरों को कोसते हुए उन पर वार किए और उन्हें पीछे धकेल दिया, लेकिन वे संख्या में बहुत अधिक थे और उस पर हमला करते रहे। उसके मन में यह ख्याल आया कि वह अपने साथ ढाल ला सकता था, लेकिन फिर, उसे अपनी कुल्हाड़ी चलाने और अधिकतम क्षति पहुँचाने के लिए दोनों हाथों की आवश्यकता थी। हालांकि, कुल्हाड़ी अपने वादे पर खरी उतरी और एक के बाद एक हूण उसके तीखे वारों की बौछार से ढेर हो गए, जिससे खोपड़ी और पसलियां टूट गईं। एक और तलवार कालिदास के बचाव को भेदते हुए उसके पेट में जा लगी, और उसे यह एहसास हुआ कि यह लड़ाई उसकी अपेक्षा से कहीं अधिक कठिन और लंबी चल सकती है।

उसके सारे संदेह उमड़ पड़े—शायद वो अमावस्या के उदय से पहले द्रोइबा तक न पहुँच पाए; आखिरकार घोलमास्टर की बलि दी जाएगी; बॉर्डरवर्ल्ड हूणों के वश में आ जाएगा; शायद वो यहीं लड़ते-लड़ते मर जाए। संदेहों ने उसके विवेक को धुंधला कर दिया, और उसकी एकाग्रता में आई इस चूक का फायदा उठाते हुए, हूण आगे बढ़े, उनकी तलवारें हर वार के साथ और करीब आती गईं...

उसके बाईं ओर से कहीं से एक भयंकर हमला हुआ, और उसके चारों ओर मौजूद बर्बरों पर एक ऐसे व्यक्ति ने आक्रमण कर दिया जो भूख और उत्साह दोनों से लड़ रहा था। हूणों को इस नए हमले का सामना करने के लिए विवश होना पड़ा, और कालिदास के चारों ओर जमा भीड़ ढीली पड़ गई - बस यही उसे अपने हाथ मुक्त करने का मौका देने के लिए काफी था, उसने अपनी कुल्हाड़ी को ऊँचा और चौड़ा

घुमाते हुए ज़ोर से नीचे मारा। उसके और उसकी मदद के लिए आए सैनिक के बीच, हूणों की रक्षा पंक्ति पूरी तरह से नष्ट हो गई। जब केवल पाँच बर्बर ही खड़े रह गए, तो कालिदास ने देखा कि उसका रक्षक घुमावदार मूंछों वाला लंबा-चौड़ा आदमी था।

जब अवंती के सैनिकों ने बचे हुए अंतिम हूण रक्षकों को खदेड़ दिया, तो कालिदास की नज़र उस विशालकाय योद्धा पर पड़ी। उसने कहा, "तुम बहुत अच्छा लड़ते हो। तुम्हारा नाम क्या है?"

"उदयसांग," उस व्यक्ति ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, और अपनी खून से सनी तलवार पर झुकते हुए गहरी सांस ली।

कालिदास ने कहा, "हमें और अधिक बार मिलकर लड़ना चाहिए।"

सैनिक के जवाब देने से पहले ही, अंधेरे से हूण सेना की एक टुकड़ी प्रकट हो गई।

“पुरुषों!” उदयसांगा ने चिल्लाकर अवंती की सेना का ध्यान नए खतरे की ओर आकर्षित किया। “अभी अपनी दाहिनी ओर मुड़ो!”

आने वाले बर्बरों की ओर मुड़ते हुए, उस विशालकाय सैनिक ने कालिदास की ओर एक नज़र डाली। तंबुओं की ओर सिर झुकाते हुए उसने कहा, “तुम आगे बढ़ो। हम इन लोगों का ख्याल रखेंगे।”

उदयसांगा अपने मजबूत हाथों में चट्टान की तरह मजबूत अपनी विशाल तलवार लिए हुए, हूण योद्धाओं के आक्रमण का सामना करने के लिए आगे बढ़ गया।

कालिदास दूसरी ओर मुड़े और तम्बुओं की ओर बढ़े, लेकिन हूण रक्षकों के एक जोड़े ने उन्हें चुनौती दी। वे अपने भाले लिए उन पर टूट पड़े, एक का निशाना उनकी कमर पर था, दूसरे का उनके चेहरे पर। कालिदास ने लात मारी और गिरी हुई ढाल को हवा में उछाल दिया, जिसे उन्होंने कुशलता से समय रहते पकड़कर नीचे वाले भाले को रोक दिया। दूसरे भाले से बचते हुए, वे अपनी एड़ी पर पूरा चक्कर लगाकर, प्राप्त गति का लाभ उठाते हुए, कुल्हाड़ी को पहले रक्षक के पेट में इतनी ज़ोर से मारा कि वह लगभग दो टुकड़ों में कट गया। उसी फुर्तीले अंदाज़ में, कालिदास ने ढाल के किनारे को दूसरे रक्षक के चेहरे पर मारा, जिससे उसकी गाल की हड्डी, नाक और सामने के दांत चकनाचूर हो गए। कुल्हाड़ी और ढाल दोनों को छोड़कर, उन्होंने गिरे हुए भालों को उठाया और दोनों को अपनी जांघ पर तोड़ दिया। दोनों हाथों में छोटे भाले लिए, वे पहले तंबू की ओर चल पड़े।

जैसे-जैसे वह एक तंबू से दूसरे तंबू की ओर बढ़ता गया, और भी पहरेदार उससे मिलते गए, लेकिन वह रुकने वाला नहीं था। वह लात मारता, वार करता और घूंसे मारता हुआ आगे बढ़ता गया, मानो वह तांत्रिक की तलाश में था। उसके शरीर से पसीना बह रहा था और उसके घावों से निकले खून में मिल रहा था। आग की रोशनी में वह एक सुनहरे प्रतिशोधी देवदूत की तरह चमक रहा था। उसके सारे संदेह और आशंकाएं शांत हो चुकी थीं, उसके दिमाग में भरी खून की प्यास ने उन्हें धो डाला था; वह जानता था कि क्या करना है, कहाँ जाना है, और ड्रोइबा को कैसे खोजना है। खून की गंध ने उसके अंदर एक शिकारी प्रवृत्ति जगा दी थी, और अब वह अपने शिकार को खोजने के लिए अपनी सहज प्रवृत्ति पर भरोसा कर रहा था।
द्रोइबा ठीक पीछे वाले तंबू में था। जब कालिदास ने दोनों पहरेदारों के शवों को पार करते हुए तंबू का पर्दा हटाया, तो सबसे पहले उन्होंने धुएं में लिपटे हुए उस जादूगर को देखा, जो किसी अनसुनी धुन पर झूम रहा था। वह अपनी रेगिस्तानी भाषा में मंत्र बुदबुदा रहा था, आँखें बंद थीं और कान युद्ध की आवाज़ों से बेखबर थे। उसका चेहरा नीले रंग से सना हुआ था, जो पसीने से बहकर उसकी गर्दन पर अजीब नीली धारियों की तरह बह रहा था। कालिदास दोनों हाथों में खून से सने भाले लिए धुएं के बीच से आगे बढ़े, लेकिन जादूगर ने मानो ध्यान ही नहीं दिया, उसे कोई परवाह ही नहीं थी। जब वह लगभग उनके पास पहुँच गए, तो द्रोइबा ने अपनी आँखें खोलीं और सीधे उनकी आँखों में देखा... और कालिदास ने वहाँ भय को छिपा हुआ देखा। फिर भी, द्रोइबा झूमता रहा और अपना जादू करता रहा, भागने की इच्छा को दबाता रहा, शायद यह जानते हुए कि भागना व्यर्थ था। उसने कालिदास की ओर अपना दुबला-पतला हाथ उठाया, मानो उसे रोकना चाहता हो या कोई भयानक श्राप देना चाहता हो, लेकिन कालिदास उस हाथ को छूते हुए आगे बढ़ गया...
धीमी आंच पर झुके हुए ड्रॉइबा ने छोटी, संदेह भरी आँखों से कालिदास को देखा, जिससे उन्हें दूसरे ड्रॉइबा की याद आ गई - जिसे उन्होंने मार डाला था। इस ड्रॉइबा की आँखों में भी आशंका थी, लेकिन आश्चर्य भी था, शायद किसी बात को लेकर जो वह जानने की कोशिश कर रहे थे। आग का धुआँ तांत्रिक के दुबले-पतले शरीर के चारों ओर लिपट रहा था, साँप की तरह और अजीब तरह से कामुक, उसे घेरे हुए था, और कालिदास उस व्यक्ति की धुएँ को अपनी इच्छानुसार नियंत्रित करने की क्षमता पर चकित थे। उनके चारों ओर, मुन के बाकी योद्धा और पुरुष सम्मानपूर्वक

मौन खड़े थे, जबकि एक ऊँचे चबूतरे पर, खाशी दुर हूण सरदार की पारंपरिक कुर्सी पर बैठे थे, जो बकरियों की खाल से बनी एक नीची चौकी थी और घोड़ों के बालों के मोतियों और लटकनों से सजी थी। वे मुन के टाउन हॉल कहे जाने वाले एक विशाल और हवादार कक्ष में थे, जो किले के परिसर के भीतर स्थित था। समय-समय पर, शर्मीले या दब्बू स्वभाव वाले सभी लोग उसे नापसंदगी भरी नजरों से देखते थे।

द्रोइबा ने आग को हवा दी, और जलती हुई टहनियों से धुएँ का एक हल्का सा गुबार निकला, जिसे तांत्रिक ने अपनी उंगलियों में पकड़कर गेंद की तरह गोल कर दिया और फिर लापरवाही से कालिदास की ओर फेंक दिया। गेंद कालिदास के चेहरे पर फटते ही वह चौंक गए, अपनी झुंझलाहट को छुपाने की कोशिश भी नहीं की, लेकिन द्रोइबा ने अपनी आँखें बंद कर लीं और एक और मंत्रोच्चार में लीन हो गए। चारों ओर से आ रही ठंडी निगाहों को अनदेखा करते हुए, कालिदास का मन बेताल के बचाव की रात की यादों में खो गया।

उसने उदयसांग के बारे में सोचा, जो उसकी सहायता के लिए आया था, और बाद में उसका मित्र बन गया था और संसप्तकों में सबसे अच्छे और बहादुर योद्धाओं में से एक के रूप में शामिल हो गया था। उदयसांग अब मर चुका था, उन्हीं लोगों के खिलाफ युद्ध में मारा गया था जिनके साथ वह बैठा था। पिछले जन्म में उसने अपने मित्र की मृत्यु का बदला लेने की कसम खाई थी, लेकिन अब पुराने दुश्मन नए दोस्त बन गए थे। उसने सोचा कि जब दुश्मन दोस्त बन जाते हैं तो पुराने वादे कहाँ चले जाते हैं।

अचानक हलचल महसूस करते हुए, कालिदास अपने विचारों से बाहर निकले तो देखा कि द्रॉइबा खड़ा हो गया है। कुछ तीखी निगाहों से प्रोत्साहित होकर, कालिदास भी खड़े हो गए, जो कमरे में सबसे लंबे व्यक्ति थे। उन्होंने देखा कि जादूगर खाशी दुर के पास गया और उसके कान में कुछ फुसफुसाया। श्योर बीच-बीच में उनकी ओर देखता रहा, और अंत में, वह उठा और कालिदास को आगे आने का इशारा किया। जैसे ही कालिदास ने चबूतरे की ओर एक कदम बढ़ाया, खाशी दुर और द्रॉइबा उनसे मिलने के लिए नीचे उतर आए। आमने-सामने खड़े होकर, सरदार मुस्कुराया और कालिदास को अपनी बाहों में भर लिया।

“द्रोइबा इस बात से संतुष्ट है कि तुम वही हो जो तुम होने का दावा करते हो, थ्रा’आखा,” उसने विशालकाय की ओर देखते हुए कहा। “द्रोइबा कहता है कि तुम झूठ नहीं बोलते। दुर के घर में तुम्हारा स्वागत है। अपने हुना परिवार में तुम्हारा फिर से स्वागत है।”
कालिदास ने राहत भरी सांस लेते हुए सिर हिलाया, अचानक उनके पास कहने के लिए शब्द नहीं थे।
हॉल में हल्की फुसफुसाहट फैल गई। हालाँकि श्योर ने अवंती भाषा में बात की थी, कालिदास के आसपास के लोग अब उन पर और एक-दूसरे पर मुस्कुरा रहे थे; सरदार का आलिंगन समझ लिया गया था। किसी ने मज़ाक भी किया, और ठहाके गूंज उठे। संदेह का बोझ लोगों के कंधों से उतर गया था।
द्रोइबा कालिदास के पास आया, और इस बार कालिदास ने अपना सिर झुकाया—फिर भी, वह जादूगर से कद में काफी लंबा था। द्रोइबा ने कालिदास के कंधे पर हाथ रखकर मुस्कुराते हुए उसकी ओर देखा।
“मुझे नहीं पता,” उसने कहा। “अब तुम्हें बाल लगाने ही होंगे।”
“मा ले’आ,” कालिदास ने एक और प्रणाम करते हुए धीरे से कहा। ‘मैं करूँगा।’
अपना हाथ अभी भी उस विशालकाय व्यक्ति के कंधे पर रखे हुए, शमन आगे बढ़ा और सभा की ओर मुड़ा। "घार," उसने गरजते हुए कहा और सबका ध्यान आकर्षित करने के लिए अपनी छड़ी को पत्थर के फर्श पर पटका। जैसे ही सम्मान में आवाजें धीमी होकर सन्नाटे में बदल गईं, वह कालिदास की ओर मुड़ा। "बाईखी ज़ुह सी तेईशा," उसने कहा, उसकी आवाज हॉल के दूसरे छोर तक सुनाई दी।
उन्हें बताओ कि तुम वापस क्यों आए हो।
हॉल में सन्नाटा छाया हुआ था, जो कान फाड़ देने वाला और दबाव पैदा करने वाला था। कालिदास ने आशा और अपेक्षा से उनकी ओर मुड़े चेहरों को देखकर अपना चेहरा सख्त कर लिया। गला साफ करते हुए वे आगे बढ़े।
“चलो सिंधुवार्ता से बन ज़ुह बनाते हैं,” उसने धीरे-धीरे कहा ताकि सब लोग सुन सकें। “तुम लोग चीख रहे हो।”
मैं आपको सिंधुवर्त, समृद्धि की भूमि में ले जाने के लिए यहाँ हूँ।

चूड़ी

आआई... आआआ... आआ...”

“अभी नहीं, द्विजा।” अपना सिर अनमने ढंग से हिलाते हुए, अपारूपा ने उस आदमी की पकड़ में फंसी उंगलियों से अपना हाथ छुड़ा लिया, बिना उसकी ओर देखे। “हम बाद में चलेंगे।”

“उउउ... ओह... ओह... आआ।” द्विज ने अपनी जिद जारी रखी, अब अपरूपा को कंधे से पकड़कर हिलाया, जिससे वह हल्की निराशा में डूब गई। “आआई... उउउउ...”

लड़की ने उसे अनसुना कर दिया, और अपने लापता सैनिक के बारे में सोचना बंद करने के लिए, वह जिस छोटे मिट्टी के बर्तन को रंग रही थी, उस पर ध्यान केंद्रित करने की पूरी कोशिश कर रही थी।

उसे देखे छह दिन बीत चुके थे — और उसने आखिरी बार पत्र लिखे पांच दिन — और छावनी के कई चक्कर लगाने और उदयपुरी की गलियों में भटकने के बावजूद, उसे उसका कोई सुराग नहीं मिला था। उम्मीद धीरे-धीरे खत्म हो रही थी, और वह इस बात को स्वीकार कर रही थी कि वह उसे फिर कभी नहीं देख पाएगी। इस विचार से उसे राहत मिलने के बजाय, उसके आंसू और भी तेज़ी से बहने लगे, और उसके सीने में दुख का बोझ उसे डुबोने की धमकी दे रहा था। पिछली रात, उसने फैसला किया था कि वह अब छावनी नहीं जाएगी, और अब तक, पूरी सुबह, वह घर पर ही रही, रंगों को बार-बार मिलाती रही और हर बार रंग गलत हो रहे थे। वह

जानती थी कि वह रंग और बर्तन एक तरफ रखकर उठकर जाने ही वाली थी। उसे इस बेबुनियाद विश्वास ने लुभाया कि वह वहाँ पहरे पर होगा, मुस्कुराता हुआ और माफी मांगता हुआ; उसे इस बात का डर था कि वह उसे नहीं पाएगी और टूटे दिल से निराश होकर घर लौटेगी।

"ऊऊऊऊ... आआऊ... आआऊ... ऐ..." द्विज उसे और भी ज़ोर से हिलाती रही, और अचानक अपारूपा के अंदर की सारी उथल-पुथल गुस्से की एक तीव्र धारा के रूप में फूट पड़ी।

"नहीं," उसने द्विज पर गुस्से से देखते हुए कहा। "नहीं मतलब नहीं, समझ नहीं आ रहा? मैंने बाद में जाने को कहा था, और मैं अभी नहीं जाऊंगी। दोपहर तक रुको।" अचानक भड़क उठे इस क्रोध से घबराकर वह व्यक्ति पीछे हट गया, उसकी आँखें भय से चौड़ी हो गईं। उसने अपारूपा को घूरा, जिसने एक पल के लिए उसे चुनौती भरी निगाहों से देखा, फिर आधी रंगी हुई मटके की ओर मुड़ गई। जब उसने देखा कि अपारूपा अब उसे नहीं देख रही है, तो द्विज धीरे से उठा और चुपचाप लड़खड़ाते कदमों से कमरे से बाहर निकल गया।

लगभग तुरंत ही अपारूपा को उस आदमी पर चिल्लाने का पछतावा हुआ, लेकिन वह जानती थी कि वह कुछ कर भी नहीं सकती थी। जब द्विज के दिमाग में कोई बात बैठ जाती थी, तो वह धैर्य का मतलब ही नहीं समझ पाता था। पिछली शाम, जब वे उदयपुरी में घूम रहे थे, तो कस्बे के बाहरी इलाके में पुराने ईंट भट्ठे के पास उसकी मुलाकात एक आवारा कुत्ते से हुई और उससे दोस्ती हो गई। द्विज और कुत्ते को एक-दूसरे से तुरंत लगाव हो गया, और अपारूपा को द्विज को अपने साथ घर वापस लाने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। आज सुबह उठते ही, वह उसे वापस भट्ठे पर ले जाने के लिए ज़िद करने लगा, और दिन में बाद में ले जाने के उसके वादों को सुनने को तैयार नहीं था।

कभी-कभी, द्विज बहुत मुश्किल हो सकती है।

"आआआआ।"

और डांट पड़ने के ठीक एक मिनट बाद ही वह वापस आ गया। उसकी आवाज़ पहले से कहीं ज़्यादा तेज़ और ज़िद्दी थी, वह समझौता करने या सुनने को तैयार नहीं था, बच्चों की तरह नखरे दिखा रहा था... अपारूपा, जिसका धैर्य टूट रहा था, ने बर्तन ज़ोर से नीचे रख दिया और गुस्से से लाल आँखों और होंठों को सिकोड़कर

उसकी ओर झपटी, मानो उस पर टूट पड़ने को तैयार थी। लेकिन वह अचानक रुक गई, और द्विज के फैले हुए हाथ में जो कुछ था उसे देखकर अचंभित रह गई। वह बाँस की चूड़ी जो घटाराजा ने उसे उपहार में दी थी। कल गुस्से में आकर उसने उसे उतारकर अपनी अलमारी में रख दिया था और फिर कभी उसे देखना नहीं चाहती थी। पता नहीं क्यों, द्विजा ने जाकर उसकी अलमारी खंगाली और उसे वापस ले आई।

"ऊऊऊ..." उसने चूड़ी को चारों ओर घुमाते हुए कहा, ताकि उसे पता चले कि यह सब क्या है।

"क्या बात है, द्विज?" अपारूपा ने चूड़ी लेने के लिए हाथ बढ़ाते हुए पूछा। उसने चूड़ी पकड़ ली, लेकिन द्विज ने तुरंत अपनी पकड़ नहीं छोड़ी और बांस की उस अंगूठी को दो उंगलियों और अंगूठे के बीच बड़ी नज़ाकत से थामे रखा।

"आआ... आआ...ऐ..." उसने अपने खाली हाथ से चूड़ी की ओर इशारा करते हुए कहा, फिर अपने कंधे के ऊपर इशारा किया।

"कौन है?" अपारूपा ने द्विज के पीछे देखते हुए पूछा, यह समझने की कोशिश करते हुए कि उसके मन में क्या चल रहा है। "क्या कोई... बाहर है?"

"ऊऊऊ..." द्विज ने आखिरकार अपनी बात समझे जाने पर राहत महसूस करते हुए ज़ोर से सिर हिलाया।

अपरूपा को पता भी नहीं चला और उसका मन प्रसन्न हो उठा, क्योंकि उसके मन में यह ख्याल आया कि सिपाही उसे ढूंढते हुए आया होगा। शायद वह बाहर गली में उसका इंतज़ार कर रहा हो, और यही बात द्विज उसे अब तक समझाने की कोशिश कर रही थी... उसने तुरंत खुद को संभाला और द्विज की तरफ देखा।

"कौन है?" उसने उत्साह को काबू में रखने की कोशिश करते हुए पूछा।

"आआ... उउउउ..." शायद उसने उसकी उत्सुकता को भांप लिया और समझ गया, शायद नहीं, लेकिन उसके चेहरे के भाव से लड़की समझ गई कि उसे लगा था कि वह घटराजा है। द्विज के चेहरे पर पीड़ा थी, उसकी आवाज़ में तनाव था जो उसे बता रहा था कि कुछ गड़बड़ है।

"आआआआ..." उसने चूड़ी छोड़ते हुए कहा और खड़ा हो गया। उसने हाथ से इशारा करते हुए उसे अपने साथ आने के लिए कहा।

लड़की ने ब्रश को बर्तन के पास रख दिया, उठी और द्विज के पीछे कमरे से बाहर चली गई। वह आदमी उसे कमरों और गलियारों से होते हुए सीढ़ियों से नीचे ले गया और बड़े घर के पिछले आंगन में पहुंचा दिया। पिछले दरवाजे पर रुककर उसने बाहर किसी चीज़ की ओर अस्पष्ट रूप से इशारा किया।
"उउउउ... आआ... औ..." उसने अपरूपा से धीमे स्वर में कहा।
लड़की उसे धक्का देकर बाहर निकल गई। घर में काम करने वाली अंशकालिक नौकरानियों में से एक को छोड़कर, आंगन पूरी तरह खाली था, और पीछे के गेट तक का पूरा रास्ता खाली था, जो उसकी माँ की अनाज की खेती से लगभग छिपा हुआ था। नौकरानी अपारूपा और द्विजा की ओर पीठ करके एक पत्थर पर जौ फटकने में व्यस्त थी।
"क्या बात है?" अपारूपा ने उस आदमी की ओर देखते हुए पूछा।
"ऊऊऊऊ... आआआ... आआआ..." द्विज ने पहले अपारूपा के हाथ में मौजूद चूड़ी की ओर इशारा किया, फिर आंगन में खड़ी नौकरानी की ओर। इसके बाद उसने अपने अंगूठे और मध्यमा उंगली को कलाई के चारों ओर घुमाया और 'चूड़ी' का संकेत देने के लिए अपनी कलाई को आगे-पीछे घुमाया।
"चूड़ी का क्या हुआ?" अपारूपा ने पूछा।
"आआआ..."
झुंझलाहट भरी आह भरते हुए, द्विज ने अपारूपा का हाथ पकड़ा और उसे आंगन के उस पार घसीटते हुए नौकरानी के पास ले आई। नौकरानी ने ऊपर उनकी ओर देखा और मुस्कुराई; धूप में चमकते उसके सफेद दांत अचानक आकर्षक लग रहे थे, जिससे उसका पतला, थका हुआ चेहरा और भी सुंदर हो गया।
"Greetings," the maid said, offering a pranaam.
"नमस्कार," अपारूपा ने उत्तर दिया, फिर उसने द्विज की ओर आशा भरी निगाहों से देखा।
कुछ पल के लिए तीनों असहज स्थिति में एक-दूसरे को देखते हुए वहीं खड़े रहे। अंत में, शायद यह महसूस करते हुए कि अपारूपा को कभी समझ नहीं आएगा, द्विज ने आगे बढ़कर नौकरानी के हाथ की ओर इशारा किया।
अंततः अपारूपा ने इसे देख लिया।

नौकरानी की दाहिनी कलाई पर दो लिपटे हुए साँपों के आकार का एक सुंदर कंगन था, जिसमें प्रत्येक साँप दूसरे की पूंछ को निगल रहा था। बाँस से बना यह हल्का कंगन, सैनिक द्वारा उसे उपहार में दिए गए कंगन की हूबहू प्रतिकृति था।
अपारूपा की आंखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं और उसने झट से अपने हाथ में पकड़ी चूड़ी को पीछे छुपा लिया। फिर उसने नौकरानी की ओर देखा।
"तुमने जो चूड़ी पहनी है, वह कितनी सुंदर है," उसने अपनी चौड़ी आँखों में प्रशंसा का भाव लाते हुए कहा। "यह बहुत ही दुर्लभ है।"
"है ना?" नौकरानी ने अपने ऊपर मिल रहे ध्यान का आनंद लेते हुए पूछा। उसने अपना हाथ ऊपर उठाया और उसे इधर-उधर घुमाया ताकि अपारूपा चूड़ी को बेहतर ढंग से देख सके। लड़की ने इस अवसर का लाभ उठाकर उसे ध्यान से देखा; यह निस्संदेह नकली थी।
"तुमने इसे कहाँ से खरीदा?" अपारूपा ने पूछा।
"मैंने नहीं खरीदा। मेरे पति ने मुझे उपहार में दिया था।"
"आपके पति?" अपारूपा ने थोड़ी झिझक के साथ पूछा। "ये कौन हैं, और इन्होंने आपके लिए इतना खूबसूरत तोहफा कहाँ से खरीदा?"
"वह बाजार में आपके पिताजी की एक दुकान पर काम करता है," नौकरानी ने जवाब दिया।
"ओह। और उसने इसे कहाँ से खरीदा?"
"मुझे नहीं पता। वह चार रात पहले घर लौटा था — नहीं, पाँच रात पहले — और मेरे लिए यह लाया था। वह शराब के नशे में चूर था, और उसने कहा कि यह उसकी रानी के लिए एक उपयुक्त उपहार है," वह उस याद को याद करके थोड़ी झिझकते हुए हँसी।
"बहुत सुंदर!" अपारूपा ने दासी की ओर मुस्कुराते हुए कहा। "सचमुच, यह उसकी रानी के योग्य है। हर किसी की नज़र इतनी सुंदरता पर नहीं पड़ती, इसलिए तुम दुगनी भाग्यशाली हो कि तुम्हें ऐसा पति मिला है... उसका नाम क्या है?"
"कुब्जा," नौकरानी ने शर्माते हुए उत्तर दिया।
"कुब्जा," अपारूपा ने नाम याद कर लिया। "तुम्हें कुब्जा जैसा पति पाकर बहुत सौभाग्यशाली होना चाहिए।"

*

"कमांडर, एक लड़की आपसे मिलने आई है।"

“एक लड़की? मुझसे मिलने?” विस्मया ने संदेश लाने वाले रक्षक को घूर कर देखा। रक्षकों का मुखिया महल के उत्तरी भाग में स्थित एक छोटे, ऊँचे चबूतरे पर खड़ा था, जहाँ सूर्ययंत्र स्थापित था। वह अपने दो आदमियों को मशीन के गियर और लीवर में तेल डालते हुए देख रहा था। “वह कौन है?”

“मुझे नहीं पता, कमांडर,” गार्ड ने जवाब दिया। “लेकिन वह कहती है कि आप उसके रिश्तेदार हैं।”

“क्या मेरा उससे कोई रिश्ता है?” गार्डों का मुखिया पूरी तरह से हैरान दिख रहा था। उसने संदेह भरी नज़रों से सिर हिलाते हुए पूछा, “वह कहाँ है?”

"शाही रसोई के प्रवेश द्वार पर, कमांडर। महल के द्वार पर उसे इंतजार कराना उचित नहीं होता।"

“बिल्कुल नहीं। बढ़िया सोच,” विस्मया ने सिर हिलाया। वह सूर्ययंत्र की मरम्मत कर रहे लोगों की ओर मुड़ा। “मुझे जाना है, लेकिन यह सुनिश्चित कर लेना कि हर पुर्जा ठीक से काम कर रहा हो। मैं नहीं चाहता कि राज अभियंता विभाग का कोई अधिकारी निरीक्षण के लिए आए और कहे कि हम सूर्ययंत्र की ठीक से देखभाल नहीं कर रहे हैं।”

उन आदमियों ने सिर हिलाया। विस्मया ने संदेशवाहक की ओर मुड़कर देखा और छत से बाहर जाने वाले दरवाजे की ओर इशारा किया। "देखते हैं इस लड़की को क्या चाहिए।"

विस्मया जब रसोई के प्रवेश द्वार पर पहुँचा, तो उसने आँगन के एक कोने में एक छोटे नींबू के पेड़ की छाया में एक युवती को देखा। वह युवती शालीनता से एक तरफ खड़ी थी, ध्यान आकर्षित करने से बचने की कोशिश कर रही थी, लेकिन उसकी लंबी कद-काठी और बेहद आकर्षक सुंदरता ने उसका काम आसान नहीं बनाया था। विस्मया ने देखा कि कुछ पहरेदार इधर-उधर घूम रहे थे, ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे और उस युवती का ध्यान अपनी ओर खींचने की कोशिश कर रहे थे, जबकि कुछ पुरुष नौकर रसोई में व्यस्त दिखाई दे रहे थे। इसके विपरीत,

आसपास मौजूद दोनों नौकरानियाँ उस युवती को ईर्ष्या और द्वेष से भरी निगाहों से देख रही थीं।
क्या वो वही है?
संदेशवाहक को सिर हिलाते देख, पहरेदारों का मुखिया पेड़ की ओर बढ़ा। "मुझे पता चला है कि आप मुझे ढूंढ रहे थे। आपको क्या चाहिए?"
महिला उसकी ओर मुड़ी, और विस्मया उस सांवले चेहरे की सुंदरता को देखकर पलकें झपका गया, जिसमें चमकती काली आँखें और मुलायम भूरे बाल थे जो उसके सिर पर शालीनता से ओढ़े शॉल से शरारती ढंग से बाहर निकल रहे थे। उसने अनुमान लगाया कि वह बीस वर्ष से अधिक की नहीं होगी। उसने उसके पैरों के पास बंधी हुई गांठ भी देखी, जिससे उसे पता चला कि महल आने से पहले वह सड़क पर थी।
"बोलिए, लड़की," विस्मया ने अपनी आवाज़ में कहा। आंगन में सन्नाटा छा गया था, और वह जानता था कि आस-पास मौजूद सभी लोग—पहरेदार, नौकरानियां, महल के कर्मचारी, रसोइये, डिलीवरी बॉय—उस बातचीत को सुन रहे होंगे।
"विस्मया... मामा?" महिला की बड़ी-बड़ी आँखों ने आश्चर्य और विस्मय से उसे देखा। "क्या सचमुच आप ही हैं?"
"जी हां, मैं विस्मया हूं," गार्डों के मुखिया ने जवाब दिया, उसे इस बात का एहसास था कि विस्मया ने उसे किस शब्द से संबोधित किया था। मामा — अवंती भाषा में चाचा के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द। "आप कौन हैं?"
"क्या आपको मैं याद नहीं हूँ, माँ?" महिला उसकी ओर एक कदम बढ़ी, उसके होठों पर हल्की सी मुस्कान थी। "मिथ्यामयी?"
मिथ्यामयी। विस्मया को नाम याद करने में कठिनाई हुई और अंत में उसने अपना सिर हिला दिया।
"मिथ्यामयी..." महिला ने सिर हिलाते हुए कहा, "आपकी भतीजी?"
"मेरी भतीजी?" विस्मया ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। "नहीं, तुम गलत समझ रही हो। मेरा कोई भाई या बहन नहीं है।"
महिला का चेहरा थोड़ा उतर गया, लेकिन उसने हिचकिचाते हुए एक और कदम आगे बढ़ाया। "तुम्हारी चचेरी बहन करुणा... तुम्हें याद है ना?" उसने विस्मया की ओर चिंता और बेचैनी से देखा। "करुणा... तुम दोनों साथ पली-बढ़ी हो..."

“विश्वपुरी की करुण्या?” विस्मया का चेहरा खुशी से चमक उठा। “उसकी शादी हो गई और वह वहीं चली गई।”
“हां,” महिला के चेहरे पर राहत की चमक आ गई।
“और आप वही हैं...?” गार्डों के मुखिया ने महिला को गौर से देखा। “रुको... कहीं तुम मीठी तो नहीं हो, उसकी बेटी?”
“मिथ्यामयी। मीठी,” महिला ने सिर हिलाया। उसकी आँखों में खुशी के आँसू थे। “मुझे डर था कि आप मुझे भूल जाएँगी, माँ,” उसने कहा।
अब विस्मया की बारी थी कि वह उस महिला की ओर दो कदम बढ़ाए। उसने हाथ बढ़ाकर उसे बांहों से पकड़ लिया। "कितनी बड़ी हो गई हो बच्ची," उसने ऊपर उसके चेहरे की ओर देखते हुए कहा। "जब मैंने तुम्हें आखिरी बार देखा था, तब तुम बहुत छोटी थीं। कई साल पहले की बात है, जब मैं विश्वपुरी गया था। तुम चलना सीख गई थीं, लेकिन फिर भी मेरी गोद में बैठने की जिद करती थीं।"
“माँ, जब भी हम आपके बारे में बात करते थे, तो माँ हमेशा यही कहती थीं,” मिथ्यामयी मुस्कुराई।
“करुण्य कैसी है? वह तो बहुत...” विस्मया मिथ्यामयी को अपने होंठ काटते और उसकी आँखों में उदासी देखकर रुक गई।
“मां का निधन हो गया है,” उसने कहा। “उनकी मृत्यु पिछले महीने हुई थी। इसीलिए मैं यहां आई हूं।”
“ओह।” विस्मया को समझ नहीं आ रहा था कि इस पर क्या प्रतिक्रिया दे, उसने चारों ओर देखा और पाया कि पहरेदार अभी भी देख और सुन रहे थे। “क्या तुम्हारे पास करने के लिए कोई काम नहीं है?” उसने आँगन में दूर तक गूंजती आवाज़ में पूछा। “अगर रसोई में आलस करने के अलावा तुम्हारे पास और कोई काम नहीं है, तो मैं तुम सबको व्यस्त रखने के लिए कुछ न कुछ काम ढूंढ सकता हूँ।”
पहरेदार तुरंत तितर-बितर हो गए, और जब विस्मया ने मिथ्यामयी की ओर मुड़कर देखा, तो उसने पाया कि वह मुस्कुरा रही थी। “मेरी माँ एक शक्तिशाली महिला हैं जिनकी बात सैनिक भी मानते हैं,” उसने गर्व से कहा। “वह जहाँ भी हों, माँ को यह जानकर बहुत खुशी होगी।”
“तुम्हारी माँ तो बस एक सिपाही है,” विस्मया मुस्कुराई। फिर गंभीर होते हुए बोली, “करुण्य ने ये कैसे किया...?”

“पिछले कुछ वर्षों से माँ की तबीयत ठीक नहीं थी। पिताजी के निधन के बाद, वे...”
“ओह, तुम्हारे पिता अब नहीं रहे?”
मिथ्यामयी ने सिर हिलाया। “पिताजी की मृत्यु के बाद, उन्होंने मुझे और माँ को घर से निकाल दिया। पिताजी के परिवार ने। उन्होंने माँ को उनकी मृत्यु का दोषी ठहराया, कहा कि माँ परिवार पर बदकिस्मती लेकर आई हैं। हम गाँव-गाँव भटकते रहे, कभी यहाँ काम करते, कभी वहाँ काम करते...”
“करुण्य उज्जैन क्यों नहीं लौटी?”
मिथ्यामयी ने कंधे उचकाते हुए कहा, "शायद वह नहीं चाहती थी कि हम आप पर बोझ बनें। आप जानती हैं ना कि हमारे अलावा कोई और है ही नहीं, माँ? कोई और रिश्तेदार नहीं, कहीं और जाने की जगह नहीं।"
विस्मया ने सिर हिलाया। लड़की सही कह रही थी। वहाँ कोई और नहीं था।
खैर, जब यह स्पष्ट हो गया कि उनका अंत निकट है, तो माँ ने मुझे उनके जाने के बाद आपके पास आने को कहा। उन्होंने कहा कि आप नगर सुरक्षा बल में हैं, और मुझे आपसे मिलना है। उन्होंने कहा कि आप जानते होंगे कि मेरे साथ क्या करना है। इसलिए, मैं यहाँ हूँ। "आपके पास जाने के लिए और कोई जगह नहीं है।" यह एक सरल कथन था, लेकिन इसमें कई प्रश्न और अनिश्चितताएँ छिपी हुई थीं।
एक कोमल, ममतामयी महिला विस्मया के पास छाछ का गिलास लिए हुए प्रकट हुई। "लो बच्ची, इसे पी लो," उसने मुस्कुराते हुए गिलास मिथ्यामयी को दिया।
“मेरी भतीजी,” गार्डों के मुखिया ने कहा, जब मिथ्यामयी ने छाछ स्वीकार की।
“मुझे पता है। मैंने सुना है,” नौकरानी ने जवाब दिया। “बेचारी। न माँ है, न रहने की जगह। वो कहाँ रहेगी?”
चाचा और भतीजी ने एक-दूसरे की ओर देखा।
“वह महल में मेरे साथ नहीं रह सकती,” विस्मया ने संदेह से अपनी सफेद दाढ़ी खुजाते हुए कहा। “और शहर में मेरा कोई दूसरा घर भी नहीं है। मुझे नहीं पता...”
“क्या मैं आपके साथ यहां नहीं रह सकती, मां?” मिथ्यामयी ने पूछा।
"यहां केवल वही लोग रह सकते हैं जो महल में काम करते हैं।"
"तो क्या आप मुझे महल में कोई काम नहीं दिला सकते?" उसकी खूबसूरत शक्ल में उसकी आंखें चमकते हुए तालाबों की तरह थीं, जो दिलों को पिघला देने के लिए बनी थीं।

“इसे ढूंढना इतना आसान नहीं है...” विस्मया ने कहना शुरू किया, लेकिन बूढ़ी नौकरानी ने उसे बीच में ही रोक दिया।
“ओह, इसे देखो, कितनी प्यारी और बेबस है। बेचारी कहाँ जाएगी?” वह मिथ्यामयी के पास गई और उसके हाथ पर दिलासा भरा हाथ रखा। “हम कुछ करेंगे, चिंता मत करो।”
विस्मया की ओर मुड़ते हुए उसने कहा, “कमांडर, उसके लिए यहाँ कोई न कोई काम तो जरूर होगा। आप महल के रक्षकों के प्रमुख हैं। आपको बस सही लोगों से पूछना है। आप जानते हैं कि आप यह कर सकते हैं, कमांडर।”

*

“मैं इसे आपको संदेश के ज़रिए भेज सकता था, लेकिन मुझे नहीं पता कि यहाँ मैं किस पर भरोसा कर सकता हूँ, इसलिए मैंने सोचा कि आपसे व्यक्तिगत रूप से मिलना ही बेहतर होगा। मैं कल नहीं आ सका क्योंकि दो चौकियों का निरीक्षण था जिसे मैं टाल नहीं सकता था। फिर पूरे सप्ताह के लिए गश्ती ड्यूटी भी आवंटित करनी थी। जब तक यह सब खत्म हुआ, तब तक लगभग रात हो चुकी थी, इसलिए मैं सुबह होने तक इंतज़ार करता रहा और फिर निकल पड़ा।”
“मैं समझ गया,” कमांडर अतुल्यातेजा ने उदयपुरी किले में स्थित अपने कार्यालय में सामने बैठे दत्ताका से कहा। “और ये तीनों... कबूलनामे करने वाले?”
"तीनों को गिरफ्तार कर लिया गया है और भारी सुरक्षा में रखा गया है, कमांडर।"
"क्या आपको उनकी सुरक्षा करने वाले लोगों पर भरोसा है?"
“हाँ,” दत्ताका ने उत्तर दिया।
"कमांड सेंटर के बाकी लोगों को उनकी गिरफ्तारी के बारे में क्या बताया गया है?"
"उन पर शराबखाने से शराब चुराने के आरोप में जांच चल रही है।"
“शराब चुराना,” अतुल्यातेजा हँसते हुए बोले। “इससे वे पुरुषों के बीच लोकप्रिय नहीं होंगी। अच्छा विचार है।”
"धन्यवाद, कमांडर।"
अतुल्यातेजा ने दत्ताका पर विचार किया और उसकी सूझबूझ की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सके। उनके पास केवल संदेह का ही सहारा था, लेकिन तीनों सैनिकों के भय और असुरक्षा का चतुराई से फायदा उठाकर उन्होंने उन सभी से एक ही बात

कबूल करवा ली थी - कि राज्यपाल के सहायक चिरायु ने उन्हें पांच-पांच चांदी के सिक्के दिए थे और वादा किया था कि अगर वे उन्हें बंदी बनाए गए हूण जासूस की कोठरी में जाने देंगे तो वह उन सभी को पदोन्नति देगा।

“चिरायु,” अतुल्यातेजा ने कमरे में मौजूद तीसरे व्यक्ति को संबोधित करते हुए दोहराया। “मुझे लगता है, कप्तान, आप उसे अच्छी तरह जानते हैं।”

“काश मैं ऐसा न करता, कमांडर,” उस आदमी ने गुस्से से मुंह बनाते हुए जवाब दिया। वह चौकी का दूसरा कप्तान सुभा था। “वह राज्यपाल के पदभार संभालने के दिन से ही यहाँ है, और वह ऐसे व्यवहार करता है जैसे राज्यपाल का सारा अधिकार उसी के कंधों पर हो। बड़ा धूर्त है। वह हमेशा इधर-उधर मंडराता रहता है, हर चीज़ पर नज़र रखता है और अपने मालिक को रिपोर्ट करता है। मुझे उससे नफ़रत है।”

"ऐसे में तो आपको उसे गिरफ्तार करने में खुशी होनी चाहिए।"

“क्या हम उसे गिरफ्तार कर रहे हैं?” दूसरे कप्तान ने दत्ताका से अतुल्यातेजा की ओर देखा, संभावना को लेकर उनका गुलाबी चेहरा लाल हो गया था, और उनकी बड़ी, भूरी मूंछें प्रत्याशा में कांप रही थीं।

अतुल्यातेजा ने पूछा, “क्यों नहीं? उसे अपने विश्वासघात की कीमत चुकानी ही पड़ेगी। लेकिन हम उसे तुरंत गिरफ्तार नहीं करेंगे। पहले हमें यह पता लगाना होगा कि चिरायु किसके आदेश पर काम कर रहा था, और क्या उसकी गिरफ्तारी से उसके असली सहयोगी को कोई आगाह हो जाएगा। चिरायु तो कठपुतली है। हमें यह जानना होगा कि कौन उसे नचा रहा है।”

“मैं सहमत हूँ,” दत्ताका ने कहा। “शायद हम उस पर नज़र रख सकते हैं ताकि...”

नीचे से अचानक शोरगुल की आवाज से उनकी बातचीत बाधित हो गई। कुछ सैनिकों के चिल्लाने की आवाज आई, लकड़ी की सीढ़ियों पर कदमों की आहट सुनाई दी, और जब तीनों अधिकारियों ने एक-दूसरे को हैरानी भरी नजरों से देखा, तभी गलियारे के अंत से एक महिला की आवाज सुनाई दी।

“मैं उससे मिले बिना नहीं जाऊंगी,” उसने जोर से, दृढ़ता से और चुनौती भरे लहजे में कहा।

“तुम वहां नहीं जा सकते...” एक सैनिक की आवाज ने विनती की, लेकिन उसकी बात अधूरी रह गई।

मुझे रोकने की कोशिश करो।
अगले ही पल, एक महिला अतुल्यतेजा के कमरे के आधे खुले दरवाजे से अंदर घुस गई। चौकीदार ने उसे एक झलक देखा, और उसी समय उसने दरवाजे के छेद से झाँककर उसे देखा। और फिर, वह गायब हो गई।
अतुल्यतेज, दत्तक और सुभा अभी भी एक-दूसरे को हैरानी से देख ही रहे थे कि तभी दरवाजा ज़ोर से खुल गया। अतुल्यतेज ने मुड़कर देखा तो दरवाजे पर एक लड़की खड़ी थी, जो कमरे में घबराई हुई नज़रों से देख रही थी। उसके पीछे एक सिपाही दिखाई दिया, जो व्याकुल लग रहा था।
"क्या यहीं उनकी बैठक हो रही है?" वह पूछ रही थी। इससे पहले कि कोई कुछ कह पाता, उसकी नज़र सुभा पर पड़ी और वह चिल्ला उठी, "आप यहाँ हैं... महोदय। मैं आपको हर जगह ढूंढ रही थी।"
लड़की कमरे में दाखिल हुई, उसकी निगाहें अभी भी दूसरे कप्तान पर टिकी हुई थीं। अतुल्यातेजा कुर्सी से उठ खड़े हुए, सामने हो रहे इस नाटकीय घटनाक्रम से वे व्याकुल थे।
"वहीं रुक जाओ," उसने इतनी भारी आवाज़ में कहा कि लड़की जम सी गई और बड़ी-बड़ी आँखों से उसकी ओर मुड़ी। उसने देखा कि वह बहुत जवान, सुडौल और गठीली थी। उसने सोने की नथ पहनी हुई थी और उसके बाल लंबी चोटी में बंधे हुए थे।
"यहाँ क्या हो रहा है?" अतुल्यातेजा ने पूछा। "तुम लोग क्या कर रहे हो?"
"मैं अपारूपा हूँ, व्यापारी आत्रेय की पुत्री," लड़की ने कहा। सुभा की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, "मैं उसे ढूँढ़ने आई हूँ..."
"तुम चाहे जो भी हो, लेकिन तुम छावनी में ऐसे नहीं घूम सकते जैसे ये तुम्हारे बाप की दुकान हो, समझे?" अतुल्यातेजा ने तीखे स्वर में कहा। दूसरे कप्तान पर सख्त निगाह डालते हुए उन्होंने कहा, "जिन महिलाओं से तुम मिल रहे हो, उन्हें बता दो कि छावनी में आना मना है। वे यूं ही अंदर नहीं आ सकतीं..."
"नहीं, कमांडर, नहीं," सुभा ने गुस्से से सिर हिलाया। "मैं उसे जानता भी नहीं..."
"बेशक, तुमने देखा होगा," लड़की ने गुस्से से बीच में टोकते हुए कहा। "तुमने मुझे उस दोपहर देखा था..."

“बस करो।” अतुल्यातेजा ने अपनी उंगलियों से मेज पर ज़ोर से थपथपाया। “तुम दोनों जाओ और इस मामले को हमेशा के लिए सुलझा लो। और अब से, कप्तान, अपने झगड़े और मतभेद छावनी में मत लाना। अब इसे लेकर जाओ।”
“कमांडर, वह मेरे लिए कुछ भी नहीं है,” दूसरे कप्तान ने विनती की। “उसे देखिए। वह तो बस एक बच्ची है। मैं कैसे... मैं उसे जानता ही नहीं। मुझे बस इतना पता है कि कुछ दिन पहले वह चौकी के द्वार पर किसी सैनिक को ढूंढ रही थी। बस इतना ही, कमांडर। मैं कसम खाता हूँ कि मुझे नहीं पता कि वह अब यहाँ क्यों है।”
क्योंकि आपने कहा था...
अतुल्यातेजा ने हाथ उठाते हुए कहा, "रुको। रुको।"
जब उसे यकीन हो गया कि लड़की चुप हो गई है, तो उसने कहा, "तुम एक सैनिक की तलाश कर रही थी, और अभी भी कर रही हो।" जैसे ही लड़की बोलने के लिए मुंह खोलने लगी, उसने आगे कहा, "हां या ना में जवाब दो।"
"हाँ।"
और वह सैनिक यहाँ का दूसरा कप्तान नहीं है।
"नहीं।"
और जिस सैनिक की आप तलाश कर रहे हैं, वह... कहीं नहीं मिल रहा है।
"हाँ।"
"तो फिर आप अब दूसरे कप्तान को ढूंढने यहां क्यों आए हैं?"
“क्योंकि मुझे नहीं पता कि मैं और किसके पास जाऊं।” अचानक, लड़की की आवाज़ कांप उठी, मानो वह रोने ही वाली हो। “मुझे लगा था कि सेकंड कैप्टन मदद कर सकते हैं। उन्होंने मुझसे सैनिक का नाम पूछा, यह भी पूछा कि क्या वह सीमा सुरक्षा बल में था... मैं... चाहती हूं...” उसकी गाल पर एक आंसू लुढ़का, फिर दूसरा।
अतुल्यातेजा ने एक गहरी आह भरी और दत्ताका के बगल वाली खाली कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा, "बैठ जाओ।" उन्होंने हाथ के एक छोटे से इशारे से उन तीन सैनिकों को जाने का संकेत दिया जो लड़की के पीछे आए थे और अब दरवाजे के बाहर खड़े थे।
“क्या आप दरवाजा बंद कर देंगी?” उसने सुभा से पूछा।
जब कमरे में सिर्फ चार लोग रह गए, तो चौकीदार बैठ गया और अपारूपा की ओर देखा। “क्या तुम्हें पानी चाहिए?” जब लड़की ने सिर हिलाकर मना किया, तो उसने

कहा, “ठीक है, मुझे पता है कि यह सिपाही तुम्हारे लिए महत्वपूर्ण है। उसका नाम क्या है?”
“Ghataraja.”
“दिलचस्प नाम है,” अतुल्यातेजा की भौंहें तन गईं। “वह कब से गायब है... कब से लापता है?”
"पांच या छह दिन।"
"आप यह समझते हैं कि यह एक सैन्य छावनी मुख्यालय है, जहां सिंधुवार्ता के सभी हिस्सों से बहुत सारे सैनिक आते-जाते रहते हैं।"
“सेकंड कैप्टन ने उस दिन ऐसा ही कहा था,” लड़की ने सिसकते हुए कहा।
“उनका तबादला यहाँ हो सकता था...”
“नहीं, उसके साथ कुछ हुआ है। कुछ बुरा। क्योंकि...” उसने अपने हाथ में पकड़े छोटे कपड़े के थैले में हाथ डाला और उसमें से एक गोल वस्तु निकाली। “क्योंकि मैंने एक महिला को ठीक इसी तरह की चूड़ी पहने देखा था, और उस महिला ने बताया कि उसके पति ने उसे पाँच दिन पहले यह चूड़ी दी थी। लगभग उसी समय मेरी आखिरी बार घटराजा से बात हुई थी। उसने यह चूड़ी मेरे लिए बनाई थी, और उसने मुझे बताया था कि वह मेरे लिए इसकी जोड़ी भी बना रहा है। दोनों चूड़ियाँ बिल्कुल एक जैसी हैं।”
दत्ताका ने चूड़ी उठाई और उसे प्रकाश में देखा। उसके चेहरे पर संदेह का भाव था, लेकिन अतुल्यातेजा चूड़ी को ध्यान से देख रहा था। ऐसा लग रहा था मानो गैरीसन कमांडर ने सांस लेना बंद कर दिया हो।
“क्या यह बांस से बना है?” अतुल्यातेजा ने धीरे से पूछा।
“जी हां, कमांडर,” दत्ताका ने चूड़ी देते हुए कहा। “दो सांप एक-दूसरे की पूंछ निगल रहे हैं। बेहतरीन कारीगरी है। मैंने इससे पहले कभी इस तरह का डिज़ाइन नहीं देखा।”
क्षिप्रा नदी के किनारे बने शराबखानों के पास अपनी दुकान लगाने वाले उस बूढ़े लकड़ी के कारीगर का चेहरा अतुल्यतेज की स्मृति में उभर आया। वह आदमी न जाने कहाँ से उज्जैन आया था, और अतुल्यतेज और घटाकरपारा ने घंटों उसकी वस्तुओं का निरीक्षण किया था, वहाँ बिकने वाली विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को देखकर वे अचंभित थे - मोर की पूंछ जैसे दिखने वाले तह करने वाले पंखे, बांस

और सीप से बनी पवन घंटियाँ, नाव के आकार के दीपक जो वास्तव में पानी पर तैरते थे, जानवरों के सिर जैसे दिखने वाले मूठ वाले खंजर... अंततः वे उस आदमी के मित्र बन गए, जिसने उन्हें लकड़ी की नक्काशी सिखाना शुरू कर दिया। अतुल्यतेज को इसमें कुछ खास महारत हासिल नहीं थी, जबकि घटाकरपारा में लकड़ी के काम की स्वाभाविक प्रतिभा थी, और थोड़े ही समय में राजकुमार ने इस कला में महारत हासिल कर ली।

एक दिन, कारीगर ने घटाकरपारा को एक सांप के आकार की चूड़ी बनाने की चुनौती दी, जो सबसे जटिल और इसलिए दुर्लभ डिज़ाइनों में से एक थी। राजकुमार को तकनीक सीखने में एक महीना लग गया, लेकिन जब उसने आखिरकार चूड़ी अपने गुरु को दिखाई, तो बूढ़े ने आह भरी और गर्व से उसकी पीठ थपथपाई। बूढ़े ने कहा कि आजकल बहुत कम लोग सांप के आकार की चूड़ी बनाते हैं। और जिन्होंने बनाई भी, उनमें से कोई भी घटाकरपारा से बेहतर नहीं बना सकता था, उसने ज़ोर देकर कहा। एक सप्ताह बाद, वह अपने दुकान में मृत पाया गया, उसके चेहरे पर एक खुश मुस्कान थी।

Ghataraja.

गैरीसन कमांडर ने अपने अंगूठे और तर्जनी उंगली के बीच चूड़ी को घुमाते हुए उस नाम पर मन ही मन विचार किया।

घटा-राज. घटा-करपरा.

"तुम्हारा यह सिपाही कैसा दिखता है?"

“वह जवान है... और बहुत सुंदर है,” लड़की शरमा गई। “काली आँखें, दाढ़ी नहीं। वह देखने और व्यवहार में ऐसा लगता है जैसे कोई बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति हो, शायद कोई द्वितीय कप्तान या ऐसा ही कुछ।”

“क्या तुमने उसे ऐसा कुछ पहने देखा है?” अतुल्यातेजा ने अपने कुर्ते के नीचे से अपना औपचारिक सूर्य-चिह्न वाला पदक निकाला और उसे उसकी चेन से पकड़कर ऊपर उठाया। “यह तो चांदी का है, लेकिन उसका सोने का होगा।”

वह दत्ताका और सुभा की घूरती निगाहों से अवगत था, लेकिन उसने उन्हें नजरअंदाज कर दिया और लड़की की ओर देखा।

“नहीं,” लड़की ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। “वैसे भी, वह सोना नहीं खरीद सकता। उसके पिता बुनकर हैं।”

"हम्म, क्या उसके लंबे बाल हैं जो उसकी आंखों पर गिरते रहते हैं, जिन्हें वह इस तरह से हटाता रहता है?" छावनी कमांडर ने घटाकरपारा की नकल करते हुए अपने बालों को आंखों से हटाने का काम किया, जैसा कि उसे लगा।
“हाँ, वो ऐसा करते हुए कितना प्यारा लगता है।” लड़की की आवाज़ राहत से भर आई और वो अपनी कुर्सी पर आगे झुक गई, आँसुओं के बीच कमांडर को देखकर उत्साहित होकर पलकें झपकाईं। “आप उसे जानते हैं ना? वो कहाँ है?”
अतुल्यातेज की निगाहें कठोर और तीक्ष्ण थीं, जो दत्ताका से द्वितीय सेनापति की ओर घूमीं। उन्होंने उन्हें एक छोटा, संक्षिप्त इशारा किया, जिसे दोनों ने सही ढंग से समझा। जैसे ही वे सख़्त हुए, अतुल्यातेज ने फिर से अपारूपा को संबोधित किया।
“जिस महिला के पास दूसरी चूड़ी है... वह कौन है? क्या आप उसे या उसके पति को जानते हैं?”
“वह महिला कभी-कभी हमारे घर पर काम करती है। और उसने मुझे बताया कि उसका पति मेरे पिता की दुकानों में से एक में काम करता है।”
“उदयपुरी में?” लड़की को सिर हिलाते देख उसने पूछा, “क्या इस पति का कोई नाम है?”
“कुब्जा।”
चौकी के कमांडर ने दूसरे कप्तान की ओर देखा। "इस आदमी को पकड़ो और यहाँ लाओ।"
कप्तान दरवाजे की ओर दो लंबे कदम बढ़ा ही रहा था कि अतुल्यातेजा ने उसे आवाज दी। “पत्नी को भी अंदर ले आओ। और किसी को एक शब्द भी मत बताना कि उन्हें यहाँ क्यों लाया जा रहा है।”
सुभा के चले जाने के बाद अतुल्यातेज और दत्तक ने एक-दूसरे की ओर देखा।
“तुम घटराज को कब से जानती हो?” अतुल्यातेज ने लड़की से पूछा।
“ज़्यादा देर नहीं हुई। हम सीमा पर, मेरे दादा-दादी के घर के पास मिले थे।” वह रुकी और एक कमांडर से दूसरे कमांडर की ओर देखा। “आप उसे ढूंढ लेंगे, है ना? मुझे पता है कि वह सिर्फ़ एक सैनिक है, लेकिन आप उसे ढूंढना नहीं छोड़ेंगे, है ना?”
"हम उसकी तलाश करना नहीं छोड़ेंगे," अतुल्यातेजा ने लड़की के भोलेपन पर आश्चर्यचकित होते हुए उत्तर दिया - और इस विडंबना पर भी कि घटाकरपारा की

तलाश में अब तक उन्हें जो एकमात्र सुराग मिला था, वह उस लड़की से मिला था जो दरवाजे से अंदर आई थी, और उसे इस बात का अंदाजा नहीं था कि वह अपने साथ क्या लाई है।

*

शूरासेना ने अदला-बदली के लिए जिस जगह को चुना था, वह यमुना की कई छोटी सहायक नदियों में से एक की संकरी, खड़ी ढलान वाली घाटी थी। यह घाटी मगध क्षेत्र के काफी अंदर, कोसल सीमा से कुछ मील दूर, लेकिन दोनों राज्यों के बीच मुख्य राजमार्गों और द्वितीयक व्यापार मार्गों से दूर, कम आबादी वाले क्षेत्र में स्थित थी। आसपास का इलाका पथरीला और खाइयों से भरा हुआ था, मिट्टी खेती के लिए अनुपयुक्त थी, इसलिए बकरियों के कुछ छिटपुट झुंडों को छोड़कर, लोग शायद ही कभी उस क्षेत्र में जाते थे।

इसीलिए, शूरासेना के दृष्टिकोण से, यह उद्देश्य के लिए आदर्श रूप से उपयुक्त था। मगध के नए राजा ने घाटी की पूरी लंबाई पर टकटकी लगाई, उनकी निगाहें दूर, आधा मील की दूरी पर इकट्ठे हुए बीस घुड़सवारों के समूह पर टिकी थीं। घुड़सवार तनावग्रस्त दिख रहे थे—जो उस समय स्वाभाविक था—वे शूरसेना और सेनापति दैपायन के आसपास जमा हुए घुड़सवारों के समूह से संकेत की प्रतीक्षा कर रहे थे। कोसल के घुड़सवारों के बीच एक व्यक्ति घोड़े पर बैठा था, उसके हाथ सामने की ओर कसकर बंधे हुए थे और उसका मुंह मोटे कपड़े से कुशलतापूर्वक बंद किया गया था। वह व्यक्ति बीच-बीच में छटपटा रहा था और उसे शांत रखने के लिए दो सैनिकों को तलवारें खींचनी पड़ रही थीं।

“ये रहा हमारा आदमी, संगीतकार,” दैपायाना ने कहा। पान के दाग वाले दांतों से मुस्कुराते हुए उन्होंने आगे कहा, “उसे ज्यादा बोलने से रोकने के लिए उन्होंने वाकई बहुत मेहनत की है।”

शूरासेना ने उस मजाक का जिक्र करते हुए कहा, "मुझे आश्चर्य है कि ऐसा क्यों है।"

“अगर उन्होंने ऐसा न किया होता, तो अब तक वह आसमान को चीरते-चीखते फटाफट गिरा देता, महाराज,” मगध के सेनापति ने उत्तर दिया। “वह जानता है कि सत्ता परिवर्तन के बाद उसका क्या अंजाम होगा।”

शूरासेना ने सिर हिलाया, फिर पीछे की ओर झुककर गर्दन उठाकर पल्लवन को देखा। सलाहकार भी रस्सियों से जकड़ा हुआ था, लेकिन उसके पीले, रक्तहीन होठों पर कोई पट्टी नहीं थी। वह दुबला-पतला था, उसकी गाल की हड्डियाँ पीले, धँसे हुए गालों पर उभरी हुई थीं, उसका चेहरा मुरझाया हुआ और थका हुआ था। उसकी दाहिनी आँख का हल्का रंग बदलना ही गिरिव्रज की कालकोठरियों में मिली शुरुआती मार का एकमात्र सबूत था।

"तुम्हें यह देखकर राहत मिली होगी कि भूमिपाला के प्रति तुम्हारी वर्षों की वफादारी पूरी तरह व्यर्थ नहीं गई," शूरासेना ने मुस्कुराते हुए कहा। जब दैपायन और अन्य मगध अधिकारी इस ताने पर हँसे, तो राजा ने कोसल के सैनिकों की ओर इशारा करते हुए कहा, "मैं तो भूमिपाला से बहुत निराश होता अगर उसने परिषद के एक विश्वसनीय मंत्री से पहले एक साधारण संगीतकार को चुना होता। है ना?"

पल्लवन चुपचाप अपनी काठी पर बैठा रहा। शूरसेना पर एक तिरछी नज़र डालने के अलावा, उसने अपना चेहरा दूसरी ओर कर लिया और उसे वापस लाने के लिए भेजे गए दल को घूरता रहा।

"बातचीत के मूड में तो नहीं हो?" शूरासेना ने कहा। "वे जादुई शब्द कहाँ गए जिनसे तुमने मगध के गद्दारों को मोहित करके मेरे खिलाफ साजिश रचने पर मजबूर किया था? तुम्हारी वह वाक्पटुता कहाँ गई जिसके कारण पिताजी चाहते थे कि तुम्हारे जैसा कुशल राजनयिक हमारी राजसभा में शामिल हो?"

पास में मौजूद एक अधिकारी द्वारा पसलियों में बेरहमी से धक्का दिए जाने के बावजूद पार्षद ने कुछ नहीं कहा।

"ऐसा लगता है कि आदरणीय राजनयिक ने अपनी वाक्पटुता खो दी है," जनरल ने मुस्कुराते हुए कहा।

"सम्मानित राजनयिक के मन में केवल एक ही बात है—" शूरासेना ने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ अपनी निगाहें दैपायाना की ओर घुमाईं, "—कि सीमा को सुरक्षित रूप से कैसे पार किया जाए।"

इस बार चारों ओर से ज़ोरदार हंसी की आवाज़ आई। उनकी आवाज़ें दूर तक गूंज उठीं, क्योंकि कोसला के घुड़सवार अपनी काठी पर बेचैनी से हिलने-डुलने लगे, यह सोचकर कि आखिर हो क्या रहा है।

शूरासेना ने हंसी के थमने का इंतजार किया और फिर हाथ उठाया। "ठीक है," उन्होंने उंगलियों से हल्का इशारा करते हुए कहा। "चलिए इसे यहीं खत्म करते हैं।"
पल्लवन की रखवाली कर रहे चारों सैनिकों ने अपने घोड़ों को आगे बढ़ाया। उनमें से एक ने राजनयिक के घोड़े की लगाम पकड़ी और सभी पाँचों घोड़े पथरीले नदी किनारे की ओर एक साथ चलने लगे, पल्लवन के दोनों ओर दो-दो सैनिक थे। उसी समय, घाटी के दूसरे छोर से पाँच घोड़े निकले, जिनमें चार सैनिक उस बेबस, छटपटाते संगीतकार को साथ लेकर चल रहे थे।
दूसरी तरफ से आ रहा दल घाटी के एक तिहाई हिस्से तक पहुँच चुका था, तभी शूरासेना ने अपने बाईं ओर, थोड़ा पीछे, घोड़े पर बैठे एक व्यक्ति की ओर देखा। वह व्यक्ति बूढ़ा और झुका हुआ था और ऐसा लग रहा था मानो वह दासता का जीवन जी चुका हो। शूरासेना ने उस व्यक्ति की ओर भौंहें उठाईं, जिस पर उसने तुरंत झुककर पास आते घोड़ों को देखा। अंत में, उसने अपना सिर झुकाया।
“क्या आपको यकीन है?” शूरासेना ने पूछा।
उस व्यक्ति ने दोबारा गौर से देखा और फिर अनिश्चित भाव से सिर हिलाया। "लगभग, महाराज।"
“हाँ या ना?” राजा की आवाज तीखी हो गई।
“जी हां, माननीय न्यायाधीश,” जल्दबाजी में जवाब आया।
शूरासेना ने मुड़कर घुड़सवारों की ओर देखा। घाटी के दोनों छोरों पर खड़े लोग सांस रोककर उस दृश्य को देखने लगे, मानो सब कुछ थम गया हो। हवा से सूखी धूल घाटी के किनारों से नीचे बह रही थी और उथली नदी पत्थरों पर कलकल कर बह रही थी। कहीं कौआ बोल रहा था और पत्थरों पर घोड़ों की नालों की खनक शूरासेना तक सुनाई दी।
दोनों घुड़सवारों के समूह आधे रास्ते पर आकर मिले। एक पल के लिए मगध और कोसल के चार-चार सैनिक बीस गज की दूरी से एक-दूसरे को घूरते रहे। उनकी कठोर मुद्रा और कंधों की स्थिति से शत्रुता और तनाव स्पष्ट झलक रहा था। तभी, एक अनदेखे इशारे पर, कोसल के एक सैनिक ने संगीतकार के घोड़े के पिछले हिस्से पर एक जोरदार थप्पड़ मारा। घोड़ा तुरंत मगध की ओर बढ़ गया। जवाब में, पल्लवन के घोड़े को ले जा रहे सैनिक ने लगाम छोड़ दी और एक छोटा सा आदेश दिया। घोड़ा दूसरी ओर जाने के लिए आगे बढ़ा।

और देखते ही देखते, अदला-बदली पूरी हो गई। पल्लवन को घाटी से नीचे ले जाया जा रहा था, जबकि मगध के सैनिकों ने बंधे और मुंह पर पट्टी बांधे संगीतकार को अपनी गिरफ्त में ले रखा था, जो छटपटा रहा था।
"इतनी जल्दी किस बात की?" दैपायना ने हैरानी से कहा। "उन्हें जो चाहिए था, वो मिल गया है, सुरक्षित और सही सलामत, जैसा कि हमने वादा किया था।"
शूरासेना ने संगीतकार को ला रहे मगध के सैनिकों की कतार के पार देखा। कोसला से आए घुड़सवारों ने अपने सलाहकार के बंधन खोलने के लिए भी नहीं रुके थे; वे पल्लवन के घोड़े को ऊबड़-खाबड़, कंकड़-पत्थर से भरे नदी किनारे पर इतनी तेज़ी से दौड़ा रहे थे जो उनके घोड़ों के लिए संभावित रूप से खतरनाक थी। घाटी के अंत में, कोसला से आए बाकी अंगरक्षक जाने के लिए तैयार थे, और घुड़सवार पल्लवन और उसके सवारों के आने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे।
एक अधिकारी ने टिप्पणी की, "ऐसा लगता है कि वे बिजली की गति से यहां से भागना चाहते हैं।"
"यह स्वाभाविक है," राजा ने अधिकारी पर तिरछी नज़र डालते हुए कहा। "वे सीमा की सुरक्षा से दो मील दूर हैं। मुझे उम्मीद है कि यदि आप कभी कोसला के दो मील अंदर हों तो आप भी इतनी ही तेज़ी से काम करेंगे।"
शूरासेना संगीतकार के आगमन को देखने के लिए वापस लौटने ही वाले थे कि तभी उनकी नज़र उस बूढ़े व्यक्ति के चेहरे के भावों पर पड़ी— आँखें चौड़ी, जबड़ा ढीला, सदमे से भरा हुआ। एक नज़र में राजा को पता चला कि वह व्यक्ति संगीतकार को देख रहा था।
"क्या बात है?" उसने घबराहट भरी आवाज में पूछा।
"माननीय न्यायाधीश... मैं... यह पूरी तरह से मेरी गलती है..."
"यह क्या है?" शूरासेना दहाड़ते हुए बोला। "क्या यह संगीतकार नहीं है?"
वह आदमी भयभीत होकर अपना सिर हिलाया। "मुझे बहुत खेद है, माननीय न्यायाधीश... मेरी आँखें... मैं बूढ़ा हूँ..."
"अच्छी तरह से देख लो और मुझे बताओ, मूर्ख," शूरासेना गुर्राया।
"यह वह नहीं है, महाराज। यह आदमी छोटा, मोटा और गोरा है। मैं उस संगीतकार को कहीं भी पहचान लूंगा। मैंने उस रात उसकी सेवा की थी जब वह महल में राजा का मनोरंजन कर रहा था। यह वह नहीं है।"

"मूर्ख!" शूरासेना ने बूढ़े आदमी पर यह शब्द थूका और मुड़कर उस कैदी को देखा जो लात मार रहा था और छटपटा रहा था, जबकि उसके सैनिक उसे आगे ले जा रहे थे। कोसला के सैनिकों ने उसका मुंह बंद कर दिया था ताकि वह सच न बोल दे और सबको सतर्क कर दे, उसे क्रोध में आकर यह बात समझ में आई। "खतरा फैलाओ," उसने दैपायन से चिल्लाकर कहा। "हमें धोखे से पल्लवन को सौंप दिया गया है।"

कुछ ही क्षणों में, शंखों की तीखी गूंज घाटी में गूंज उठी, एक तेज गर्जना जो घाटी की खड़ी ढलानों से ऊपर उठकर पास की खाइयों में फैल गई, जहां यह गूंजती हुई, धीमी होती प्रतिध्वनियों में फिर से जीवंत हो उठी। शंखों की आवाज ने कोसला से आए घुड़सवारों को और भी तेज कर दिया - उनकी अंतरात्मा ने उन्हें बता दिया था कि उनका छल उजागर हो गया है। शूरासेना ने पल्लवन और उसके साथियों को घाटी के दूसरे छोर तक पहुंचने की बेताब कोशिश में ढीले पत्थरों पर लड़खड़ाते और फिसलते हुए देखा...

और उसने देखा कि घाटी के किनारों पर स्थित पहाड़ियों और बिलों से तीरंदाज उठ खड़े हुए।

शूरासेना द्वारा पल्लवन के बदले इस स्थान को चुनने का यह दूसरा कारण था। विनिमय की शर्तें - जो उन्होंने स्वयं भूमिपाला का विश्वास जीतने के लिए सद्भावना के प्रतीक के रूप में निर्धारित की थीं - के अनुसार प्रत्येक पक्ष में उपस्थित सैनिकों की संख्या बीस तक सीमित थी। विश्वास कायम करने के लिहाज से तो यह व्यवस्था उत्तम थी, लेकिन इसकी कुछ गंभीर सीमाएँ थीं। इसका अर्थ यह था कि ऐसी आपात स्थिति में तैनाती के लिए उनके पास अधिक सैनिक तैयार नहीं हो सकते थे। हालाँकि, यह समस्या केवल समतल, खुले ग्रामीण इलाकों में ही थी; यहाँ की पहाड़ियों और घाटियों में छिपने के लिए बहुत सी जगहें थीं, जो अतिरिक्त मगध सैनिकों के लिए पर्याप्त छुपने का स्थान प्रदान करती थीं।

शूरासेना की दूरदर्शिता के कारण, ये अतिरिक्त सैनिक अब छिपने की जगह से बाहर निकल आए और कोसला के सैनिकों पर तीरों की वर्षा करने लगे।

यह एक खूनी संघर्ष था। हमला लहरों की तरह हुआ, और कोसाला के योद्धा न तो अपना बचाव कर सके, न ही जवाबी हमला। तीर सिर, गर्दन, कंधे और धड़ में जा लगे, यहाँ तक कि कुछ घोड़े भी घायल हो गए। शरीर आलू की बोरियों की तरह

काठी से नीचे गिर रहे थे, और दर्द भरी चीखें और घोड़ों की हिनहिनाहट हवा में गूँज रही थी। हालात इतने प्रतिकूल थे कि भागना ही एकमात्र रास्ता बचा था, लेकिन फिर भी, सटीक तीरों ने भागते हुए सवारों का पीछा किया और उन्हें एक-एक करके मार गिराया।

घाटी से केवल तीन सैनिक ही जीवित बच निकले। उनमें से केवल दो ही सीमा पार करके वापस कोसला पहुंचे और अपनी कहानी सुनाने के लिए जीवित रहे। तीसरा सैनिक, जिसकी गर्दन में गंभीर चोट लगी थी, मगध के अंदर सौ गज की दूरी पर अपने घोड़े से गिर गया, उसका एक पैर अभी भी रकाब में फंसा हुआ था, जिसके कारण उसका घोड़ा उसके मृत शरीर को सीमा पार घसीटता हुआ ले गया।

घाटी में वापस आकर, शूरसेना और दैपायन धीरे-धीरे गोल, फिसलन भरी चट्टानों पर सवार होकर उस स्थान पर पहुँचे जहाँ पल्लवन के चार अंगरक्षक, पंखों वाले बाणों से सजे हुए, लेटे हुए थे। पहले तो उन्हें राजनयिक कहीं भी दिखाई नहीं दिया। फिर धीरे-धीरे मुड़कर, सेनापति ने पल्लवन को नदी के किनारे औंधे मुँह पड़ा हुआ देखा, बाहें फैली हुई थीं, उसका आधा सिर बहते पानी में डूबा हुआ था, जिससे उसके सुंदर, चाँदी जैसे बाल उसके सिर के चारों ओर एक बेतरतीब, लहरदार प्रभामंडल की तरह फैले हुए थे।

पार्षद की पीठ में दो तीर धंसे हुए थे। एक उनके बाएं कंधे के ठीक नीचे, दूसरा उनकी कमर पर, दोनों ही मांस में गहराई तक धंसे हुए थे।

गिरफ्तारी

क्या मैं आपसे कुछ पल ले सकता हूँ, राजकुमारी?
शाम की प्रार्थना के लिए लाल गुड़हल तोड़ रही प्रलूपी ने कुछ दूरी पर खड़े महल के रक्षकों की वर्दी पहने एक बुजुर्ग सिपाही पर झुंझलाहट भरी नजर डाली, जो उसे प्रणाम कर रहा था। वह सिपाही जाना-पहचाना लग रहा था, लेकिन जब उसने उसके चांदी के पदक पर ध्यान दिया, तब उसे समझ आया कि वह महल के रक्षकों का नया प्रमुख है।
“क्या बात है?” उसने झुंझलाहट भरे स्वर में पूछा। वह नहीं चाहती थी कि महल के कर्मचारियों को यह लगे कि उसके पास उनकी फिजूल की बातों के लिए समय है।
"मुझे क्षमा करें, राजकुमारी, लेकिन मुझे एक अजीब समस्या है जिसका समाधान केवल आप ही कर सकती हैं," उस व्यक्ति ने विनम्रता भरी मुस्कान के साथ कहा।
राजकुमारी ने कुछ नहीं कहा, इस उम्मीद में कि उनकी चुप्पी उसे हतोत्साहित कर देगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। वह आदमी मुड़ा और किसी को इशारा किया। प्रलूपी की नज़र उस आदमी द्वारा देखे जा रहे रोडोडेंड्रोन के पौधों पर पड़ी, और जैसे ही उसने देखा, एक युवती झाड़ियों के पीछे से निकली। वह युवती लंबी और सुडौल थी, लेकिन उसने अपना सिर झुका रखा था, इसलिए प्रलूपी उसका चेहरा ठीक से नहीं देख पाई। फिर भी, राजकुमारी को लगा कि वह आकर्षक है। प्रलूपी को प्रणाम करके वह युवती अंगरक्षकों के मुखिया के पास जाकर खड़ी हो गई।
किसी घोटाले की आशंका जताते हुए, प्रलूपी ने सिपाही की ओर एक भौंह उठाकर देखा। उसके चेहरे पर एक तरफ पूछताछ और दूसरी तरफ आरोप के भाव थे।
“राजकुमारी, यह मेरी भतीजी मिथ्यामयी है, जो हाल ही में विश्वपुरी से उज्जैन आई है।”
"आगे बोलो," प्रलूपी ने उत्सुकता बढ़ाते हुए कहा।
“वह आज सुबह ही यहाँ आई थी,” उस आदमी ने आगे कहा। “उसकी माँ, मेरी चचेरी बहन, अब इस दुनिया में नहीं है, इसलिए वह...”
“अब कहाँ नहीं?” प्रलूपी ने पूछा। “उसकी माँ कहाँ चली गई है?”
“राजकुमारी... वो हमें छोड़कर चली गई।” उस आदमी ने एक पल के लिए आकाश की ओर देखा, अपनी बात स्पष्ट करने के लिए उसने अपनी नज़र के साथ-साथ अपने हाथों को भी धीरे से ऊपर उठाया।
"ओह।"

"जी हां, राजकुमारी। मिथ्यामयी के पास कहीं और जाने की जगह नहीं है, इसलिए वह मेरे पास आई है। उसकी मां की यही इच्छा थी।"
"ठीक है, लेकिन आप मुझसे क्या चाहते हैं?" प्रलूपी ने मुड़कर दोबारा फूल तोड़ने का काम शुरू करते हुए पूछा। सैनिक और उसकी भतीजी में उसकी रुचि कम होती जा रही थी।
"राजकुमारी, एक समस्या है। मेरा कमरा महल में ही है, बाकी महल के रक्षकों के कमरों के साथ। ज़ाहिर है, मिथ्यामयी मेरे साथ नहीं रह सकती। और शहर में मेरे पास ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ मैं उसे ठहरा सकूँ।"
"तो?" प्रलूपी ने सैनिक की ओर मुड़कर देखा। अपनी भतीजी पर एक नजर डालते हुए उसने कहा, "मैं इसके बारे में क्या कर सकती हूँ?"
"अगर आप महल में उसके लिए कोई काम ढूंढ सकें, तो वह यहाँ दूसरी दासियों और नौकरानियों के साथ रह सकती है। महल में कहीं भी चलेगा—शाही रसोई, महल के बगीचे, पानी लाना, कपड़े धोना—कोई भी काम चलेगा।"
"मैं महल के घरेलू कामकाज नहीं संभालती," प्रलूपी ने अस्पष्ट रूप से इधर-उधर देखते हुए उत्तर दिया। "आपको माँ से बात करनी चाहिए... महारानी माँ से।"
"राजकुमारी, मैं ऐसा अवश्य करूँगा," उस व्यक्ति ने झुकते हुए कहा। "बहुत अच्छा सुझाव है। लेकिन अभी-अभी मुझे याद आया कि महल में आपकी अपनी कोई दासी नहीं है। क्या आप इस समस्या का समाधान करवाना चाहेंगी?"
प्रलूपी ने सैनिक को बर्फीली निगाहों से घूरा। कुछ देर बाद, उसने अपनी नज़र उस महिला पर डाली, जिसने तुरंत अपनी नज़रें ज़मीन पर झुका लीं। राजकुमारी ने फिर उस आदमी की ओर देखा, और जब उसने बात की, तो उसकी आवाज़ ठंडी और संयमित थी।
"तुम्हारा नाम क्या है, सिपाही?"
"विस्मया, राजकुमारी। और यदि मैंने किसी भी तरह से आपको ठेस पहुंचाई है, तो मैं अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता/करती हूँ..."
आपकी भतीजी क्या कर सकती है?
अंगरक्षकों के मुखिया ने राहत और आशा के मिले-जुले भाव से राजकुमारी की ओर देखा। "मैं... वह..." वह रुक गया, असमंजस में पड़ गया। "मुझे लगता है... वह गा सकती है, राजकुमारी।"

“गाना?” प्रलूपी के होंठ व्यंग्य से मुड़ गए। “मुझे इसकी कोई खास ज़रूरत नहीं है। क्या वह कोई काम कर सकती है...?”
“माननीय महोदय, मैं आपकी हर इच्छा पूरी करूंगी,” महिला ने पहली बार बोलते हुए कहा, उसकी नज़रें अभी भी झुकी हुई थीं। “अगर मैं नहीं कर पाई, तो मैं सीख लूंगी। मैं वादा करती हूं।”
माननीय न्यायाधीश महोदय। प्रलूपी को यह अच्छा लगा। उसे यह सचमुच बहुत अच्छा लगा।
“इधर आओ,” उसने उस महिला से कहा। “तुमने अपना नाम क्या बताया था?”
"मिथ्यामयी, आपका सम्मान।"

*

राज्यपाल के महल में प्रवेश करते ही अतुल्यतेज को उस स्थान पर अपनी पिछली यात्रा याद आ गई, वह रात जब सत्यवेद ने उन्हें और घटाकरपारा को रात्रिभोज पर आमंत्रित किया था। उस रात को याद करते हुए, गैरीसन कमांडर ने एक बार फिर आत्म-निंदा की कि उन्होंने उन सभी संकेतों को कैसे अनदेखा कर दिया था जो उन्हें राज्यपाल की मंशा के बारे में बता रहे थे। सत्यवेद का चापलूसी भरा व्यवहार, राजकुमार को लुभाने और उसका विश्वास जीतने के प्रयास, अतुल्यतेज को घटाकरपारा से अलग करने की सूक्ष्म लेकिन सुनियोजित चाल, जिसके तहत उन्हें मध्यमिका और गोश्रृंग में युद्ध की तैयारियों की देखरेख के लिए भेजा गया था - ये सब घटाकरपारा को अलग-थलग करने के लिए सावधानीपूर्वक किया गया था, ताकि उसे पके फल की तरह तोड़कर बर्बरों को सौंप दिया जा सके।
अगर उन्होंने खाने की मेज पर हो रही बातों पर थोड़ा और ध्यान दिया होता, तो इनमें से कुछ भी नहीं होता...
"इसका क्या मतलब है, कमांडर? क्या आपके सैनिक पागल हो गए हैं?"
अतुल्यतेज ने मुड़कर सत्यवेद को हॉल में आते देखा। राज्यपाल ने आधिकारिक वस्त्र पहने हुए थे, लेकिन बैठने के कारण वे पिचके हुए थे। ऐसा लग रहा था कि उन्होंने अपनी पगड़ी भी कहीं रख दी है, जिससे उनके सिर पर गंजापन उन्हें और भी दुबला-पतला और गिद्ध जैसा दिखा रहा था। वह अपनी नाक से निकलने वाली

आवाज़ में द्वार से अतुल्यतेज तक बड़बड़ाते रहे, उनके चेहरे पर आक्रोश साफ झलक रहा था, जो उनकी आँखों में छिपे डर को लगभग छुपा रहा था।
“मुझे नज़रबंद करने की उनकी हिम्मत कैसे हुई? मुझे, मलावा के गवर्नर को! किसके बेवकूफी भरे आदेशों पर ये लोग काम कर रहे हैं? मैं बाहर निकलना चाहता था, लेकिन आपके आदमियों ने तलवार दिखाकर मुझे वापस अंदर धकेल दिया। क्या आप समझ रहे हैं मैं क्या कह रहा हूँ? मुझे गवर्नर के रूप में अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने से रोका गया, समझ रहे हैं आप? यह राजशाही के प्रतिनिधि के खिलाफ राजद्रोह का कृत्य है। मैं इसकी रिपोर्ट करवाऊँगा, और आप मुझसे यह जान लीजिए कि इसके लिए जिम्मेदार लोगों को भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।” अचानक तीसरे व्यक्ति में बदलते हुए, उन्होंने गंभीर स्वर में कहा, “जो लोग गवर्नर सत्यवेदा से खिलवाड़ करेंगे, उन्हें मैं ऐसा सबक सिखाऊँगा जिसे वे आसानी से नहीं भूलेंगे।”
“क्या आपका काम हो गया? क्या मैं अब कुछ बोल सकता हूँ?”
अतुल्यतेज ने किसी भी औपचारिक संबोधन का प्रयोग नहीं किया, और उनका लहजा शांत लेकिन तटस्थ था। यदि सत्यवेद ने इसे महसूस किया भी, तो उन्होंने इसका कोई संकेत नहीं दिया। उन्होंने कहा, "यदि आपको इस घृणित व्यवहार के लिए क्षमा मांगनी हो, तो आप बोल सकते हैं," उन्होंने अपने स्वर में एक ऐसी कठोरता लाने का प्रयास किया जो कमांडर को जरा भी धोखा नहीं दे सकी।
“माफी मांगने की कोई जरूरत नहीं है। वे लोग मेरे आदेश पर काम कर रहे थे।”
“क्या...? क्यों? क्या तुम अपना आपा खो बैठे हो...” राज्यपाल रुक गए जब अतुल्यातेजा ने चुप रहने का आदेश देते हुए हाथ उठाया।
"आपको घर में नजरबंद इसलिए किया गया था क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि आप हमें चिरायु से पूछताछ करने से रोकें।"
चौकी के कमांडर ने आखिरी क्षण में चतुराई से 'प्रश्न-प्रश्न' को अधिक भयभीत करने वाले 'पूछताछ' में बदल दिया था, और सत्यवेदा को थोड़ा पीला पड़ते देखकर वह खुश था।
“चिरा— चिरायु को क्यों गिरफ्तार किया गया है, और इससे मेरा क्या लेना-देना है?”
"चिरायु आपका सहायक है, है ना?"
"इसलिए?"

"चिरायु जैसे सहायकों के पास कई रोचक कहानियां हैं। मैंने तुम्हें घर में नजरबंद भी कर दिया है ताकि जब तक मैं व्यापारी आत्रेय और उसके आदमियों से पूछताछ पूरी न कर लूं, जिनमें कुब्जा नाम का एक मूर्ख भी शामिल है, तब तक तुम चौकी से बाहर न निकल सको।"
"ये लोग कौन हैं... ये लोग कौन हैं?" सत्यवेद ने धूर्तता और धमकियों से कहा। "क्या तुम पूरी तरह पागल हो गए हो? मुझे ये सब क्यों बता रहे हो...?"
"आत्रेय वह व्यापारी है जिसके साथ तुम उदयपुरी के उत्तरी सीमावर्ती इलाकों में अवैध रूप से होने वाली मुर्गा लड़ाइयों पर घंटों दांव लगाते हो। आत्रेय वही व्यक्ति है जिसकी पुत्री से राजकुमार घटाकरपारा को प्रेम हो गया था, और तुम्हें इस बात का पता चल गया था जिसका फायदा उठाकर तुमने राजकुमार का अपहरण करवाकर उसे शकों के हवाले कर दिया। नहीं, नहीं... इसे नकारने में अपनी ऊर्जा बर्बाद मत करो। आत्रेय ने हमें यह सब बताया है, और भी बहुत सी बातें बताई हैं। चिरायु ने भी अपने इकबालिया बयान में यही कहा था। और कुब्जा राजकुमार के अपहरणकर्ताओं में से एक है, एक बिलकुल मूर्ख जिसने घटाकरपारा की कोई चीज चुराकर उसकी पत्नी को उपहार में दे दी - और इसी वजह से इस मामले में शामिल सभी लोग आखिरकार पकड़े गए हैं। और इसमें तुम भी शामिल हो, समझे?"
राज्यपाल का चेहरा पीला पड़ गया था, लेकिन उनमें अभी भी लड़ने की हिम्मत बाकी थी। "झूठ, ये सब झूठ है। मेरा कोई दुश्मन मुझे फंसाने की कोशिश कर रहा है। मेरा इससे कोई लेना-देना नहीं है..."
"चुप रहो!" चौकी का कमांडर सत्यवेदा के करीब आया और गद्दार सहम गया।
"पिछली दोपहर, आपने मुझे घटाकरपारा की खोज शुरू करने की तत्काल अनुमति नहीं दी, क्योंकि आप अपने साथियों को राजकुमार को जहाँ कहीं भी उन्होंने छिपा रखा था, वहाँ से पहाड़ों में और फिर वहाँ से मरुस्थली में ले जाने के लिए समय दे रहे थे। राजकुमार को शीघ्र बचाने में सहायक खोज में मदद करने के बजाय, आपने जानबूझकर बाधा डाली। इससे पहले, आपने चिरायु को श्रीस्थली के पहरेदारों को पदोन्नति का लालच देकर रिश्वत देने के लिए कहा, ताकि जब चिरायु सांप को हूण जासूसों की कोठरी में लाए, तो वे अनदेखा कर दें। सत्यवेद, मलावा के राज्यपाल के रूप में, आपको प्राप्त साधनों और शक्तियों का उपयोग करते हुए, आपने विभिन्न तरीकों से हमारे शत्रुओं की सहायता और समर्थन किया है। आपने अपने पद के

अधिकार का दुरुपयोग किया है, और आपके सभी कार्य अवंती के सिंहासन के विरुद्ध साजिशें और योजनाएँ हैं - ये राजद्रोह के एक प्रतिनिधि द्वारा किए गए राजद्रोह के कृत्य हैं।"

सत्यवेद ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की और सिसकते हुए धीमी आवाज़ में अस्पष्ट रूप से कुछ बुदबुदा रहा था। ऐसा लग रहा था मानो उसके जोड़ टूट रहे हों, झुक रहे हों और बिखर रहे हों, मानो जिस गोंद ने उसे इतने समय तक थामे रखा था, वह ढीला पड़ रहा हो और बिखर रहा हो। उसका चेहरा भय, लज्जा और पीड़ा से विकृत था, लेकिन अतुल्यतेज ने ध्यान से देखा, फिर भी उसे पश्चाताप का कोई संकेत नहीं मिला।

उस व्यक्ति से घृणा करते हुए, चौकीदार ने अपने एक सैनिक की ओर सिर झुकाया, जिसके हाथों में हथकड़ियां थीं। जैसे ही सैनिक ने सत्यवेद के हाथों में जंजीरें ठोंकीं, अतुल्यतेज ने कहा, "मैं तुम्हें मलावा के राज्यपाल पद से हटाता हूँ और राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार करता हूँ। इसके अलावा, मैं उज्जैन के दरबार में याचिका दायर करूँगा कि तुम्हें अवंती राज्य के विरुद्ध षड्यंत्र रचने के आरोप में निर्वासित वन भेज दिया जाए।"

"नहीं, प्लीज़, नहीं!" निर्वासन का नाम सुनते ही सत्यवेद की आँखें गुस्से से लाल हो उठीं। "मुझे पता नहीं था कि मैं क्या कर रहा था। मैं शायद होश में नहीं था... आपको मेरी बात सुननी होगी। नहीं, राजद्रोह नहीं... प्लीज़... मैं आपसे विनती करता हूँ।"

एक क्षण के लिए अतुल्यतेज ने अपने कैदी को तिरस्कार भरी निगाहों से देखा। फिर, वह और करीब आकर सत्यवेद के कान में फुसफुसाया, "मैं किसी बात की गारंटी नहीं दे रहा, क्योंकि कोई भी तुम्हारे प्रति दयालु नहीं होगा। लेकिन शायद, बस शायद, दंडक में न जाने की एक छोटी सी संभावना है — अगर तुम मुझे बता सको कि शकों ने राजकुमार घटकर्परा को रेगिस्तान में ठीक कहाँ ले गए हैं।"

*

"क्या हलाहला बॉर्डरवर्ल्ड में है?"

स्वर्ण त्रिमूर्ति के दरबार में सन्नाटा छा गया था, और केवल मशालों की रोशनी में हल्की-हल्की परछाइयाँ ही इधर-उधर हिल रही थीं। बाहर घाटी से एक ठंडी हवा

उठी और हॉल में घुसते हुए, वहाँ जमा हुए असुर सेनापतियों को धकेलती हुई, बाहर निकलने का रास्ता तलाश रही थी। होलिका, जिसकी साँसें लगभग रुक चुकी थीं, पाताल के काले क्रिस्टल सिंहासन से उतरकर शुक्राचार्य के सामने खड़ी हो गई। उसकी आँखें बर्फीले नीले रंग के तालाबों की तरह थीं, जो लगभग बच्चों जैसी हैरानी से चौड़ी हो गई थीं।

"सचमुच?" उसने फिर से पूछा, प्रधान पुजारी के चेहरे को ध्यान से देखते हुए।

"काश ये हड्डियाँ मुझे काफी समय से यही संकेत दे रही होतीं," शुक्राचार्य ने खेद भरे चेहरे के साथ सिर हिलाया। "दुख की बात है कि मैंने उनके इशारे को गलत समझा।"

"दूसरी बार, महागुरु।"

असंतोष से भरे कठोर शब्द हिरण्याक्ष के गले से गहरे तक गूंज उठे। शुक्राचार्य ने होलिका के कंधे के ऊपर से देखा तो असुर स्वामी अपने सिंहासन पर आगे की ओर झुके हुए थे, एक कोहनी घुटने पर और दूसरी मुट्ठी दूसरी जांघ पर टिकी हुई थी, उनके माथे से ऊपर की ओर मुड़े हुए भारी मेढ़े के सींगों के नीचे भौंहें तन रही थीं।

"दुर्भाग्यवश, हाँ," महायाजक ने कहा, मानो वह अपना जवाब देने से खुद को रोक रहा हो, क्योंकि वह जानता था कि वह जवाब गलत समय पर निकलेगा। उसे यह याद दिलाए जाने से नफरत थी कि पिछली बार उसने हड्डियों को गलत समझा था, जब उन्होंने उसे विशाखा का जीवन लेने आ रहे यक्ष के बारे में चेतावनी दी थी। और अब कटार के छिपने की जगह को लेकर यह भयानक गड़बड़ी। उसे एहसास हुआ कि हिरण्यक्ष का निराश होना जायज़ था।

अपना अहंकार त्यागते हुए शुक्राचार्य ने असुर स्वामी की ओर सिर उठाकर कहा, "मैं अंतहीन चिताओं के मैदान को सीमावर्ती लोक से और बरगद को बेताल के निवास से जोड़ने में चूक गया। मेरे मन में कभी यह ख्याल ही नहीं आया कि मानव राजा की पहुँच स्वयं घूलमास्टर तक हो सकती है।"

"पर कैसे, महागुरु?" होलिका ने शुक्राचार्य की बांह पर शांतिदायक हाथ रखा। "मनुष्य राजा ने बेताल को वीषाद का खंजर रखने के लिए कैसे राजी किया? विक्रमादित्य का पिशाच स्वामी पर क्या प्रभाव है?"

प्रधान पुरोहित ने असुर सेनापतियों की छोटी सी सभा पर ध्यान दिया। काफी रात हो चुकी थी, वरना दरबार उत्सुक और जिज्ञासु असुरों से भरा होता, वह जानता था।

उसके अपने पुत्र चंदासुर और अमरका भी भीड़ में थे। "यह कहानी राजा के बचपन से चली आ रही है।"
एक क्षण के लिए, शुक्राचार्य ने अपने शब्दों को सन्नाटे में रहने दिया, जो दूर से आती पाताल गंगा की गर्जना से गूंज रहा था, जो काले क्रिस्टल महल के पास से एक चिड़चिड़े और निरंतर शाप के चक्र में गोता लगाती और गरजती हुई बह रही थी।
“यह सब विक्रमादित्य को बचपन में हुए एक भयंकर मस्तिष्क ज्वर से शुरू हुआ,” शुक्राचार्य ने असुर भाई-बहनों की ओर मुड़ते हुए वृत्तांत सुनाना शुरू किया। “बुखार बहुत ही प्रचंड था, और महल के वैद्यों के तमाम प्रयासों के बावजूद, एक रात देर से उस लड़के की कुछ समय के लिए मृत्यु हो गई।”
“संक्षेप में?” हिरण्याक्ष ने हैरानी से वही शब्द दोहराया। “तुम्हारा क्या मतलब है?”
“खैर, उसकी मृत्यु हो गई थी, लेकिन वह वापस आ गया। या यूँ कहें कि उसे घोलमास्टर ने वापस जीवित किया। घोलमास्टर ने उस लड़के को बॉर्डरवर्ल्ड में भटकते हुए पकड़ा, लेकिन यह महसूस करते हुए कि उसका समय अभी नहीं आया है, वह उस लड़के को बॉर्डरवर्ल्ड से वापस उज्जैन में उसके घर ले गया।”
शुक्राचार्य कुछ देर रुककर अपने चारों ओर उत्सुकता और रुचि से भरे चेहरों के घेरे को देखने लगे। उन्होंने कहा, "वह अपने आप में एक उल्लेखनीय घटना थी, लेकिन वर्षों बाद जो हुआ, जब घूलमास्टर को बंदी बना लिया गया, उसके मुकाबले कुछ भी नहीं।"
“बेताल, एक कैदी?” एक असुर सेनापति ने हैरानी से पूछा। “यह कैसे हुआ?”
“एक हूण जादूगर के ज़रिए।” अपने आस-पास के लोगों के भावहीन चेहरे देखकर शुक्राचार्य रुक गए। “हूण भी मनुष्य ही हैं, रेगिस्तान में रहने वाले। वे सिंधुवर्त पर कब्ज़ा करना चाहते हैं—कई सालों से यही चाहते आ रहे हैं। दरअसल, रेगिस्तान में खदेड़े जाने से पहले उन्होंने सिंधुवर्त के बड़े हिस्से पर कब्ज़ा कर लिया था।”
“रेगिस्तान में रहने वालों का जादूगर बेताल को बंदी बनाने में सक्षम है, फिर भी उन्हें सिंधुवर्त से खदेड़ दिया गया?” होलिका ने अविश्वास से सिर हिलाया। “कैसे?”
विक्रमादित्य और उनकी नौ सदस्यीय परिषद ने हूणों को खदेड़ दिया।
फिर से, कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया क्योंकि असुरों ने कही गई बातों के महत्व पर विचार किया।
“पिताजी, घोलमास्टर हूना जादूगर के चंगुल से कैसे मुक्त हुआ?” अमरका ने पूछा।

जब हूणों ने सिंधुवर्त के बड़े हिस्से पर आक्रमण करके कब्जा कर लिया, तो स्थानीय राज्य उनका कड़ा प्रतिरोध कर रहे थे। विक्रमादित्य अभी-अभी अवंती के राजा और सिंधुवर्त गठबंधन के नेता बने ही थे कि हूण जादूगर ने बेताल को बंदी बना लिया। जादूगर का उद्देश्य बेताल की बलि देकर सीमावर्ती लोक पर कब्जा करना था, जिससे हूणों को सिंधुवर्त की सेनाओं के विरुद्ध तैनात करने के लिए मरे हुए योद्धाओं की एक तैयार सेना मिल जाती। मरे हुए योद्धाओं को मारना कठिन होता है, और जो लोग उनसे लड़ते हुए मर जाते हैं, वे पुनर्जीवित होकर मरे हुए योद्धाओं की सेना में शामिल हो जाते हैं।

"शानदार चाल," हिरण्यक्ष ने प्रशंसा में गंभीर मुस्कान के साथ कहा। "लगातार बढ़ती हुई सेना, जिसमें आपके अपने सैनिकों में कोई हताहत नहीं हुआ। हर सेनापति का सपना। अगर वे सफल हो जाते, तो रेगिस्तान में रहने वाले वहां से हार ही नहीं सकते थे। उन्हें किसने रोका?"

"बेताल," शुक्राचार्य ने उत्तर दिया। "और विक्रमादित्य।"

"जब हूणों ने घूलमास्टर को बंदी बनाया, तो उन्हें उसकी जीवित रहने की प्रबल इच्छाशक्ति का एहसास नहीं हुआ," प्रधान पुजारी ने आगे कहा। "बेताल जानता था कि उसका समय समाप्त हो रहा है, लेकिन उसने सूझबूझ से उस व्यक्ति से संपर्क किया जिसे उसने बचपन में बचाया था—मानव राजा से। वह विक्रमादित्य के सपनों में तब तक आता रहा जब तक राजा ने ध्यान नहीं दिया और उन्हें अपनी दुर्दशा के साथ-साथ सिंधुवर्त राज्यों के लिए अपनी मृत्यु के अर्थ के बारे में बताया। उसने विक्रमादित्य को यह भी बताया कि इस स्थिति से निकलने का केवल एक ही रास्ता है—विक्रमादित्य को उसे जादूगर के चंगुल से छुड़ाकर सीमावर्ती लोक वापस ले जाना होगा। और यह काम केवल मानव राजा ही कर सकता था..."

"...क्योंकि वही इकलौता जीवित व्यक्ति था जिसे बॉर्डरवर्ल्ड में आने-जाने का रास्ता पता था," होलिका ने विजयी भाव से अपनी बात समाप्त की। "उसने बचपन में यह यात्रा पहले भी की थी।"

"बिल्कुल सही," प्रधान पुरोहित ने कहा। संक्षेप में कहें तो, विक्रमादित्य और उनकी सेना, जिसमें सलाहकार वररुचि, वराहमिहिर, अमर सिंह और कालिदास शामिल थे, ने उन हूणों पर आक्रमण किया जिन्होंने पिशाच स्वामी को बंदी बना रखा था। राजा और उनके सलाहकारों ने अत्यंत साहस से युद्ध किया। कालिदास ने उस

जादूगर को मार डाला, ताकि विक्रमादित्य बेताल को मुक्त कराकर सीमावर्ती लोक की सुरक्षा में वापस ला सकें। हूणों की योजनाएँ और महत्वाकांक्षाएँ चकनाचूर हो गईं, और इस युद्ध ने आक्रमणकारियों का मनोबल पूरी तरह तोड़ दिया। उसके बाद से, युद्ध का रुख सिंधुवर्त के रक्षकों के पक्ष में पूरी तरह से बदल गया।

"और उस समय से ही घूलमास्टर मानव राजा का ऋणी था, इसीलिए वह वीशादा के खंजर को अपने पास रखने के लिए सहमत हो गया," हिरण्याक्ष ने निष्कर्ष निकाला।

"महागुरु, मानव राजा सीमावर्ती लोक में कैसे प्रवेश करता है और कैसे बाहर आता है?" एक असुर ने पूछा।

"अपने बेहद चतुर और प्रतिभाशाली मुख्य सलाहकार आचार्य वेताल भट्ट की मदद से। आचार्य को दिमाग से खेलने का एक खास तरीका आता है। वे अपने राजा के लिए सीमावर्ती लोक में आने-जाने का एक रास्ता बनाते हैं।" शुक्राचार्य कुछ रुके और सभा में अर्थपूर्ण ढंग से चारों ओर देखा। "यही हम भी करेंगे – सीमावर्ती लोक में प्रवेश करने का एक रास्ता बनाएंगे।"

"क्या आप बेताल से हलाहल छीन लेंगे, महागुरु?" डायन रानी की ठंडी आँखों में उत्सुकता जागृत हुई। उत्साह एक असुर से दूसरे असुर तक फैल गया और उनके सिर के ऊपर संभावनाओं का जाल बुनने लगा, जिससे एक बेचैन फुसफुसाहट फूट पड़ी।

"जी हां," महायाजक ने शोरगुल के बीच कहा। "इंद्र अपनी उपलब्धि पर गर्व कर रहे हैं—उन्होंने मानव भाइयों को विभाजित कर दिया है और उन्हें टकराव के लिए तैयार कर दिया है। अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि हम जानते हैं कि कटार उज्जैन में नौ मोतियों की सुरक्षा में नहीं है। लेकिन इंद्र को यह नहीं पता। वह विक्रमादित्य पर नजर रखेंगे और हम पर भी नजर रखेंगे, सिंधुवर्त में हमारे आने की उम्मीद करेंगे। मानव राजा को लगता है कि हलाहल सीमालोक में सुरक्षित है, और वैसे भी, असंतुष्ट वररुचि, प्रतिशोधी कालिदास और हूणों के बीच, उनके पास निपटने के लिए बहुत कुछ है। न तो उन्हें और न ही इंद्र को उम्मीद है कि हम सीमालोक जाएंगे। न ही पिशाच स्वामी को। अगर हम जल्दी करें, तो वीषाद की कटार हमारी मुट्ठी में होगी।"

"तो आइए, हम शीघ्र चलें, महागुरु।" असुर स्वामी की आँखें पिघले हुए सोने की तरह चमक रही थीं और उनमें अग्नि की ज्वाला थी, जब उन्होंने महापुजारी का

आकलन किया। "हमें बताइए कि हम सीमावर्ती लोक में कैसे प्रवेश कर सकते हैं। हम, सजीव प्राणी, मृत्युलोक में कैसे प्रवेश कर सकते हैं?"
"प्रवेश करना तो अपेक्षाकृत आसान है; वापसी में ही मुश्किल आती है," शुक्राचार्य ने कहा। "फिर भी यह संभव है। मानव राजा तो आसानी से कर लेता है, और मैं स्वयं वहाँ जा चुका हूँ।" मुड़कर उन्होंने एकत्रित सेनापतियों पर नज़र डाली। "मुझे यह पता लगाना है कि सौ असुरों की सेना को साथ लेकर सीमावर्ती लोक से उन सभी को सुरक्षित वापस कैसे लाया जाए।"

*

मशालों की रोशनी में अमारा सिंह का चेहरा गहरे लाल रंग का दिख रहा था, हालांकि यह कहना मुश्किल था कि यह मशालों की रोशनी के कारण था या इसलिए कि वह मुश्किल से अपने अंदर दबी हुई क्रोध से कांप रहा था।
"वह धोखेबाज़ साँप," उसने थूकते हुए कहा। "वह धूर्त, कपटी, निकम्मा और नीच है! उसकी हिम्मत कैसे हुई अवंती के खिलाफ साजिश रचने की... यह विचार उसके गंदे दिमाग में आया ही कैसे? एक सलाहकार का अपहरण, राजा के अपने भतीजे का। कितनी गुस्ताखी! उसे यहीं कसकर पकड़ो," उसने अपनी बात पर ज़ोर देने के लिए अतुल्यातेजा की ओर इशारा किया। "मैं उसे उसके किए की सज़ा दूँगा।"
"साउंसलर, सत्यवेद पूरी तरह से जेल में बंद हैं," गैरीसन कमांडर ने आश्वासन देते हुए हंसते हुए कहा, "और जो एकमात्र व्यक्ति उनकी कोठरी में कोबरा छिपाकर उन्हें छुड़ा सकता है, वह भी जेल में है।" थोड़ा रुककर गंभीर होते हुए उन्होंने कहा, "यदि आप उनसे मिलना चाहें, तो मैं उन्हें आपके सामने पेश करवा सकता हूँ।"
"भले ही मेरा मन कर रहा हो कि उस नीच को आँख में आँखें डालकर उसके मुँह पर थूक दूँ, पर अभी समय नहीं है। घटाकरपारा हमारी प्राथमिकता है।" अमर सिंह ने किसी विचार को नकारते हुए सिर हिलाया। "मुझे यह भी डर है कि अगर सत्यवेद मेरे सामने आ गया, तो मैं उसका सिर धड़ से अलग करने से खुद को रोक नहीं पाऊँगा। राजकुमार मेरे लिए बेटे के समान है। अगर घटाकरपारा को कुछ हुआ, तो मैं उसकी खाल उधेड़ दूँगा, कसम खाता हूँ।"
"राजकुमार सुरक्षित रहेंगे, परामर्शदाता," गैरीसन कमांडर ने अमरा सिंह का आकलन किया, जो अभी तक अपने घोड़े से नहीं उतरे थे। परामर्शदाता के पीछे

अंगामित्र के नेतृत्व में संसप्तकों की टुकड़ी खड़ी थी, सभी कठोर और धूल से सने हुए सैनिक अंधेरे में वापस जाने के आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे। और उनके बीच, हालांकि अतुल्यतेज को अभी तक इसका पता नहीं था, हूण जासूस और दुभाषिया भी थे जो इस अभियान में साथ आए थे। "हम उन्हें ढूंढ लेंगे। लेकिन अंदर आ जाइए। आप पूरी रात बाहर नहीं रह सकते। क्या आप सबने भोजन कर लिया है?"

"हमें घटाकरपारा की खोज शुरू करनी होगी," अमारा सिंह ने अतुल्यतेजा के निमंत्रण का जवाब दिए बिना, बिना हिले-डुले उत्तर दिया। उन्होंने अपनी घनी, लाल भौहों के नीचे से छावनी के आंगन के अंधेरे में झाँका। "समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं है।"

पार्षद और समसप्तक बहुत कम ठहरावों के साथ आगे बढ़े थे, और आधी रात को उनके आगमन ने छावनी को चौंका दिया था। अमर सिंह को पहले ही छावनी नगर में हो रही घटनाओं की कुछ भनक लग चुकी थी, और जब अतुल्यतेज ने उन्हें पूर्व राज्यपाल के विश्वासघात के बारे में बताया, तो वे अपनी काठी से हिले भी नहीं। अतुल्यतेज ने उन सभी घटनाओं का सारांश प्रस्तुत किया जिनके कारण चिरायु, आत्रेय और घटकर्परा के अपहरण में शामिल सभी लोगों को गिरफ्तार किया गया था।

"उद्घाटन होने तक प्रतीक्षा कीजिए, पार्षद," गैरीसन कमांडर ने अपने सामने खड़े थके हुए चेहरों को देखते हुए सुझाव दिया। "आपने बहुत कठिन सवारी की है, और अभी और सवारी बाकी है। आपके घोड़ों को भी आराम की ज़रूरत है। थोड़ा आराम कीजिए, हो सके तो थोड़ी नींद ले लीजिए। ज़रूर आइए।"

प्रस्ताव लुभावना और तर्कसंगत था, और अतुल्यातेजा ने अपनी बात मनवाने में महारत हासिल कर ली। पंद्रह मिनट बाद, नहा-धोकर नए कपड़े पहनकर, अमर सिंह ने खुद को एक मेज पर गैरीसन कमांडर, अंगामित्र, दत्ताका और शराब के एक घड़े के साथ बैठा पाया। दत्ताका ने चारों प्याले भर दिए, और जब उनकी प्यास थोड़ी बुझ गई, तो बलवान सलाहकार ने मेज के उस पार अतुल्यातेजा को घूरकर देखा।

"Where, according to Satyaveda, have the Sakas taken Ghatakarpara?"

"किबार शहर में स्थित उनके किले की ओर।"

“कीबार,” पार्षद ने दोहराया। उन्होंने अंगामित्रा की ओर सिर हिलाया। “क्या आप स्काउट और दुभाषिए को बुला लाएँगे?”
संसप्तक के चले जाने के बाद, अमर सिंह के पास एक और प्रश्न तैयार था।
"क्या आपको पता है कि सत्यवेद कब से हमें बेवकूफ बना रहा है?"
“पार्षद महोदय, मैंने अभी तक उनसे इतनी विस्तार से पूछताछ नहीं की है,” अतुल्यातेजा ने उत्तर दिया। “मैंने सोचा कि उनसे पूछताछ करने से पहले महल से पूछना उचित होगा। मेरा इरादा सुबह उज्जैन को संदेश भेजने का था, लेकिन अब जब आप यहाँ हैं...”
“राजमहल को उसकी गिरफ्तारी की सूचना दे दो, लेकिन इसके अलावा तुम उससे पूछताछ करने के लिए स्वतंत्र हो,” अमारा सिम्हा ने कहा। “जितना हो सके पता लगाओ—वह कब से हूणों और शकों से वेतन ले रहा है, उसके संपर्क कौन हैं, उसने अब तक किस तरह की जानकारी दी है, क्या सीमा के इस पार कोई अन्य हूण या शक जासूस हैं... हर महत्वपूर्ण जानकारी।”
“मैं अवश्य ही ऐसा करूँगा, लेकिन मेरी समझ के अनुसार, उनका आदिवासियों से कोई सीधा संपर्क नहीं था। सारी जानकारी आत्रेय के माध्यम से दी जाती थी, जो मध्यस्थ था।”
“हम्म...” पार्षद ने अपने कप से एक घूंट लिया। “और क्या यह उसी व्यापारी की बेटी है जिसने हमें अपहरण की सूचना दी?”
“उसने ऐसा किया, हालाँकि उसे इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि वह हमें किस मुसीबत में फँसा रही है। उसे यह भी नहीं पता था कि उसके पिता इस रैकेट में शामिल हैं। बेचारी लड़की... वह तो बस यही चाहती थी कि राजकुमार—मेरा मतलब है, वह सिपाही जिससे उसे प्यार हो गया था—मिल जाए।”
क्या अब उसे अपने प्रिय सैनिक के बारे में सच्चाई पता चल गई है?
अतुल्यातेजा ने सिर हिलाया। “यह उसके लिए एक बड़ा झटका था। उसके लिए सब कुछ एक झटका ही रहा है।”
वे कुछ क्षणों के लिए चुप रहे।
“और घटाकरपारा?” अमारा सिम्हा ने चौकीदार की ओर आश्चर्य से देखा। “क्या वह इस लड़की के बारे में गंभीर था?”

“मुझे नहीं पता, पार्षद जी। लेकिन अगर मैं अपने दोस्त के बारे में कुछ जानता हूँ, तो वो ये है कि वो सतही नहीं है। वो कभी किसी औरत की भावनाओं के साथ खिलवाड़ नहीं करेगा या उसे धोखा नहीं देगा। घटाकरपारा एक ईमानदार आदमी है, और वो अपना वचन आसानी से नहीं तोड़ता। अगर लड़की को लगता है कि वो उससे प्यार करता है, तो ये इसलिए है क्योंकि उसने उसे ऐसा सोचने का कारण दिया है।”
“तो, वो भी उसके प्रति वैसा ही भाव रखता है,” अमारा सिम्हा ने आह भरी। “धिक्कार है, इससे मामला कितना पेचीदा हो गया! क्या उसे इस बात का एहसास भी था कि वो किस मुसीबत में पड़ रहा है? वो आदित्य वंश का वंशज है – वो एक व्यापारी की बेटी... अब एक गद्दार की बेटी के साथ कैसे रह सकता है? ये सब दिल टूटने में ही तो खत्म नहीं होगा?” उसने गुस्से और पीड़ा से भरी आवाज में प्याला मेज पर पटक दिया। “युवा लोग प्यार में पड़ने से पहले क्यों नहीं सोचते? वे उस दर्द को क्यों नहीं देख पाते जो वे खुद पर बुला रहे हैं? प्यार इतना दुख और सजा क्यों चाहता है? प्यार इतना मूर्खतापूर्ण क्यों है?”
अमरा सिंह उदास होकर मेज को घूरते बैठे रहे, जबकि दत्ताका और अतुल्यातेज एक-दूसरे को निशब्दों में देखते रहे। अंत में, सलाहकार हिले और दत्ताका की ओर देखा।
“हुना जासूस की मौत के रहस्य को सुलझाकर तुमने बहुत अच्छा काम किया। अब मैं गर्व से कह सकता हूँ कि मेरे एक रिश्तेदार ने गद्दार सत्यवेद को पकड़ने में मदद की।” उन्होंने युवा कमांडर की ओर मुस्कुराते हुए कहा, “शाबाश! अब तो तुम्हारा प्रमोशन होना ही चाहिए।”
"स्काउट की हत्या का मामला सुलझाने के लिए मुझ पर भरोसा करने के लिए धन्यवाद, पार्षद महोदय," दत्ताका ने गर्व से चमकते हुए उत्तर दिया।
काफी रात हो जाने के कारण अंगमित्रा को हूण जासूस को कमरे में भेजने में सामान्य से थोड़ा अधिक समय लग गया। जासूस को इतनी रात को जगाए जाने और इतनी देर रात तक कमरे में लाए जाने से डर लग रहा था, और जब उसने अमर सिंह को गुस्से से घूरते हुए देखा, तो वह सहम गया और अस्पष्ट रूप से सिसकने लगा। कुछ क्षण बाद दुभाषिया भी पलकें झपकाते और अपनी आँखों से नींद मलते हुए कमरे में आया।

“आपकी नींद में खलल डालने के लिए मुझे क्षमा करें,” अमारा सिम्हा ने दुभाषिए से कहा। “लेकिन आपको इस व्यक्ति से कुछ पूछना है।”
दुभाषिए ने सिर हिलाया।
"उससे पूछो कि क्या वह जानता है कि किबार्र शहर कहाँ है।"
दुभाषिए ने प्रश्न पूछा, और स्काउट ने सिर हिलाकर उत्तर दिया। बिना किसी के कहे, उसने पश्चिम की ओर इशारा किया और कुछ शब्द कहे।
“उस तरफ,” दुभाषिए ने उसी दिशा की ओर इशारा करते हुए कहा।
"उससे पूछो कि वह शहर यहाँ से कितनी दूर है।"
एक बार फिर, दुभाषिया और हूण कैदी के बीच बातचीत हुई।
उनका कहना है कि वहां पहुंचने में हमें तीन दिन लगेंगे।
अमरा सिम्हा ने अपनी शराब पी और मेज से उठ खड़ा हुआ। “उसे बता दो कि उसके पास हमें वहाँ पहुँचाने के लिए बाहर दो दिन का समय है। दो दिन।” उसने अपनी बात पर ज़ोर देने के लिए तर्जनी और मध्यमा उंगलियाँ उठाईं। “अगर हम परसों की शाम तक वहाँ नहीं पहुँचे, तो मैं उसका गला घोंटकर उसे मार डालूँगा। उसे यह बता देना।”
दुभाषिए के बोलते ही हूना का चेहरा पीला पड़ गया, और इतना पीला हो गया कि ऐसा लगा मानो वह बेहोश हो जाएगा। अंत में, उसने पार्षद की ओर मुड़कर कमज़ोरी से सिर हिलाया।
“अच्छा है कि हम एक दूसरे को समझते हैं,” अमारा सिम्हा ने कहा।
कमरे में मौजूद अन्य लोगों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, “मेरा सुझाव है कि हम सब जितनी नींद ले सकें, उतनी ले लें। सूरज उगते ही हम किबार के किले के लिए रवाना हो जाएंगे।”

Yah'bre

पास आते कदमों की आहट और गुस्से में उठती आवाजों को सुनकर, घटाकरपारा ने खुद को तैयार कर लिया।

उसकी कोठरी के दरवाजे से जो कुछ भी अंदर आएगा, वह शायद बदसूरत होगा, लेकिन महत्वपूर्ण बात यह थी कि आखिरकार कोई उस पर ध्यान दे रहा था।

इस तरह से, यह एक सोची-समझी जोखिम भरी रणनीति थी।

ताले में चाबी ठोंकी गई, और अगले ही पल, घोड़े की खाल से बने खुरदुरे जूते पहने एक पैर से धक्का लगने से दरवाजा अपने कब्ज़ों पर बेतहाशा झूलने लगा। चौड़ी होती दरार से एक और टांग अंदर आई, उसके पीछे एक लंबा, दाढ़ी वाला सांवला आदमी था। राजकुमार की सुरक्षा में तैनात बुजुर्ग महिला उसके बाद अंदर आई, उसके साथ दो और आदमी थे, दोनों दाढ़ी वाले और तलवार लिए हुए।

समूह के नेता ने घटाकरपारा को घूरकर देखा, फिर अपनी नज़र दरवाज़े के पास दीवार के किनारे बिखरे मिट्टी के घड़े पर डाली। स्त्री चीख-चीख कर बड़बड़ाने लगी; राजकुमार को यह बात समझ में आई कि कैदी और जेलर के रूप में दो दिन की जान-पहचान के बाद उसने पहली बार उसे कुछ बोलते सुना था। हालाँकि, उसकी बोली उसके लिए बिल्कुल अनजान थी, इसलिए वह उसकी कोई बात समझ नहीं पा रहा था। उसकी चिड़चिड़ी और कर्कश आवाज़ सुनकर राजकुमार ने तुरंत चाहा कि वह चुप हो जाए, लेकिन स्त्री चुप नहीं हुई और बार-बार घटाकरपारा से

लेकर टूटे हुए घड़े और कलाई के पास अपनी बांह पर लगे चोट के निशान की ओर इशारा करती रही।
यह देखकर कि अगर स्त्री को मौका दिया जाए तो वह अनंत काल तक बोलती रहेगी, नेता ने हाथ उठाकर मौन धारण करने का आदेश दिया। हानिकरपारा पर निगाहें गड़ाए हुए, उसने एक छोटी तलवार निकाली और पास आया, फिर तेजी से आगे बढ़ते हुए उसने राजकुमार की जंजीरों से बंधी कलाइयों को पकड़ लिया। साथ ही, उसने तलवार हानिकरपारा के गले पर रख दी और उसे अपनी ओर खींच लिया; तलवार राजकुमार की त्वचा को छूते हुए निकल गई, जिससे खून की एक बूंद बह निकली।
"मार क्यों रहे हो?" उसने गुर्राते हुए अपना चेहरा घटाकरपारा के चेहरे पर टिका दिया। राजकुमार ने देखा कि उस आदमी की दाढ़ी में जगह-जगह भूरे बाल थे और उसका एक दांत टूटा हुआ था, इसलिए सांस लेते समय उस खाली जगह से हवा सीटी की तरह निकलती थी।
"क्या चाहिए, उह?" उस आदमी ने अवंती भाषा में शब्दों को जोड़ने की कोशिश करते हुए कहा। उसने महिला और टूटे हुए घड़े की ओर सिर हिलाकर अपनी बात समझाने की कोशिश की। "उह?"
घटाकरपारा ने अपनी अंगरक्षक पर एक नज़र डाली, जो अपनी कलाई सहला रही थी और नाराज़ निगाहों से उसे देख रही थी। नेता के साथ आए दोनों आदमी उसके बगल में खड़े होकर इंतज़ार कर रहे थे और देख रहे थे। घटाकरपारा ने उस महिला को एक कड़वी, प्रतिशोधी मुस्कान दी।
"अगर आप पूछ रहे हैं कि मैंने उस पर घड़ा क्यों फेंका," उसने नेता की ओर मुड़ते हुए, मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "तो यह देखने के लिए था कि क्या वह मेरे लिए खाना और पानी लाने के अलावा कुछ और कर सकती है। जिस तेज़ी से उसने आप सबको बुलाया, उसे देखकर मुझे एहसास हुआ कि वह कर सकती है।"
"तुम्हें मज़ाक समझ आ रहा है?" नेता ने राजकुमार पर झपटते हुए गुस्से से कहा। "तुम्हें हम पर मज़ाक समझ आ रहा है? तुम... या तो मर जाओ या मर जाओ।" अवंती भाषा में सही शब्द न मिलने पर उसने अपनी अजीब भाषा के शब्दों का इस्तेमाल किया, लेकिन जिस तरह उसने तलवार राजकुमार के गले पर चलाई और काटने का इशारा किया, उसे अनुवाद की ज़रूरत नहीं थी।

"मुझे नहीं लगता कि तुम पर हंसी आती है," घटाकरपारा ने थोड़ा घमंडी लहजे में कहा, यह जानते हुए कि वह जोखिम उठा रहा है, लेकिन उन्हें यह दिखाना चाहता था कि वह आसानी से घबराने वाला नहीं है। "इसके विपरीत, मैं तुम्हारी सुरक्षा और भलाई के बारे में तुमसे गंभीरता से बात करना चाहता हूं।"
नेता ने पलकें झपकाईं, कही गई बात को समझने की कोशिश की, लेकिन बुरी तरह असफल रहा। उसने अपने आदमियों पर एक नज़र डाली, जिनके चेहरे भी भावहीन थे। यह आश्वस्त होकर कि वह अभी भी भाषा के मामले में उनसे श्रेष्ठ है, वह घटाकरपारा की ओर मुड़ गया।
“क्या बात कर रहे हो?” उसने सिर हिलाकर यह जताते हुए पूछा कि उसे कुछ समझ नहीं आया।
"तुम्हें मुझे जाने देना चाहिए," घटाकरपारा ने आह भरते हुए कहा और सीधे-सीधे बात करने का फैसला किया। "वरना, तुम सब नष्ट हो जाओगे, मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ।"
“ओह।” इस बार वह आदमी समझ गया और मुस्कुराया। “ओह। मुझे तो बहुत डर लग रहा था।” उसने बनावटी ढंग से कांपते हुए और भी चौड़ी मुस्कान बिखेरी।
“बहुत बढ़िया। मैं उस मुस्कान को देखना चाहूंगा जब अवंती की सेनाओं का भारी दबाव तुम्हारी पीठ पर होगा और तुम डाकुओं के पास भागने की कोई जगह नहीं होगी।”
वह आदमी असमंजस में घूरने लगा। "क्या?"
"जी हां, मुझे यकीन है कि आपने इस संभावना के बारे में सोचा भी नहीं होगा," घटाकरपारा मुस्कुराए। "बेशक, क्यों सोचते? आपको पता ही नहीं कि मैं कौन हूं या मेरे चाचा कौन हैं।"
“हम जानते हैं। तुम घरकापारा। तुम्हारा चाचा अवंती राजा। क्या सोचते हो? क्या हम शक मूर्ख हैं, नहीं जानते?”
“क्या... आपने क्या कहा?” राजकुमार का मुंह खुला रह गया। “आप साकास हैं?”
“हां, सकास।”
उस आदमी ने गंभीर भाव से सिर हिलाया, फिर यह महसूस करते हुए कि उनके कैदी को अब जाकर सच्चाई पता चली है, वह मुस्कुराया। “हम तुम्हें जानते हैं। तुम हमें नहीं जानते। फिर भी हमारे बारे में मज़ाक कर रहे हो, है ना?” इससे ज़्यादा

मुस्कुराना तो मुमकिन नहीं था, लेकिन राजकुमार को लगा कि उसके बंदी बनाने वाले ने अभी-अभी ऐसा ही किया है। "हम पाक'उई से..." फिर एक शब्द बदला। फिर, धीरे-धीरे, सही शब्द ढूंढते हुए, "तुम... हम चाचा को दे देंगे... उस ज़मीन के लिए जो उन्होंने हमें अवंती में दी है। ठीक है?"

घटाकरपारा समझ गए और उनका दिल बैठ गया। जिस क्षण उन्हें होश आया और उन्हें एहसास हुआ कि उन्हें बंधक बनाया गया है, तब से वे यही सोच रहे थे कि उनके अपहरणकर्ता पहाड़ी डाकू हैं और उन्हें गोश्रृंग और मत्स्य राज्य की सीमा पर स्थित उनके किसी ठिकाने में रखा गया है। यह धारणा उन्होंने उस शाम उदयपुरी के बाहर हमलावरों के बीच हुई बातचीत के आधार पर बनाई थी - उनके हमलावरों ने अवंती की बोलियों में बात की थी, जो डाकुओं की मिश्रित भाषा थी। और यह पता चलने के बाद भी कि उन्हें बंदी बनाकर रखा गया है, राजकुमार के मन में कभी यह ख्याल नहीं आया कि उनके अपहरणकर्ताओं को उनकी पहचान पता हो सकती है, या वे अवंती से फिरौती वसूलने के लिए उनका इस्तेमाल करने की योजना बना रहे हों।

अगर वह मर गया तो वे पैसे नहीं देंगे। वे उसे ज़िंदा चाहते हैं। राजकुमार को अचानक याद आया कि जब वह बेहोशी की हालत में लेटा था, तब उसने ये बातें सुनी थीं। अब उसे समझ आया कि उस पर हमला करने वाले लोग उदयपुरी के आसपास के स्थानीय लोग थे, जिन्हें उसका अपहरण करके उसे ज़िंदा शकों को सौंपने के लिए भेजा गया था। घटाकरपारा को यह भी एहसास हुआ कि अगर उसके ऊपर झुके हुए व्यक्ति ने खुद को शक न बताया होता, तो शायद वह कभी अंदाज़ा न लगा पाता कि उसके अपहरणकर्ता मरुस्थली के जंगली लोग थे—क्योंकि उसने सभी जंगली लोगों को माथे पर ह्वीज़ धारण करते हुए देखा था। जबकि, अब उसे याद आया, भले ही हूणों और शकों का धर्म एक ही था, लेकिन हूणों के विपरीत, शकों के लिए ह्वीज़ धारण करना अनिवार्य नहीं था।

"तुम सम्राट विक्रमादित्य को क्या समझते हो?" राजकुमार ने व्यंग्यपूर्वक कहा, हालाँकि अब उसका आत्मविश्वास काफी कम हो गया था। "मेरे चाचा तुम्हारे जैसे गंदे लोगों से व्यापार नहीं करेंगे।"

"नहीं?"

वह घृणास्पद मुस्कान अचानक गायब हो गई, और उसकी जगह एक कठोर, क्रूर तिरस्कार ने ले ली। घटाकरपारा के जंजीरों से बंधे हाथ को उठाकर, उस व्यक्ति ने अपनी तलवार की नोक राजकुमार की तर्जनी उंगली के आधार के पास टिका दी। एक हल्की रेखा खींचते हुए, उसने चारों उंगलियों के आधार पर एक हल्की सी लकीर बना दी, जिससे त्वचा पर बस इतना सा निशान बन गया कि खून की बूँदें टपकने लगीं।

"नहीं? हम एक उंगली भेजते हैं। फिर हम एक उंगली भेजते हैं। फिर एक उंगली। वह व्यापार करता है, है ना? मुझे लगता है वह व्यापार करता है, राजकुमार घराकापारा।"

घटाकरपारा यह तय नहीं कर पा रहा था कि अपने बंदी बनाने वाले को सिर से टक्कर मारे या उसके कमर में घुटना मारे—दोनों ही आकर्षक विकल्प थे और उस परिस्थिति में आसानी से किए जा सकते थे—और उसने समझदारी से यह निष्कर्ष निकाला था कि जब तक वह जंजीरों में जकड़ा हुआ है, तब तक इनमें से किसी का भी कोई खास फायदा नहीं होगा, तभी उस व्यक्ति ने अचानक उसे धक्का देकर दूर कर दिया। राजकुमार आश्चर्य से पीछे हट गया। जैसे ही उसने अपना संतुलन बनाने की कोशिश की, शक ने अपनी तलवार सीधे राजकुमार के चेहरे पर तान दी, उसकी बांह अकड़ी हुई और फैली हुई थी।

"तुम... तमीज़ से पेश आओ।" उसने औरत की तरफ इशारा करते हुए चेतावनी भरे लहजे में सिर हिलाया। "मारना नहीं... तमीज़ से। अगर तुमने मारा, तो चाचा को एक उंगली भी दिखाई तो मैं काट दूंगा।"

एक झटके में मुड़कर और तलवार म्यान में रखते हुए, नेता ने महिला और अपने दो साथियों पर कुछ तीखा प्रहार किया और कोठरी से बाहर निकल गया। एक आदमी बिना देर किए उसके पीछे चला गया, लेकिन दूसरा वहीं खड़ा रहा और घटकरपारा को घमंडी निगाहों से घूरता रहा। राजकुमार समझ गया कि अब से उस पर नज़र रखी जाएगी, और दरवाजे से उस पर नज़र रखने वाले को ही सबसे पहले इस काम का जिम्मा सौंपा जाएगा।

जैसे ही महिला दरवाजे की ओर बढ़ी, घटाकरपारा ने उसे पीछे से पुकारा, "मुझे पानी चाहिए।"

वह स्त्री रुकी, पहरेदार की ओर देखा, फिर आँखों में द्वेष की चमक लिए राजकुमार की ओर मुड़ी। उसने टूटे हुए घड़े को गौर से देखा और पाया कि उसके एक टूटे हुए टुकड़े में चमत्कारिक रूप से थोड़ा सा पानी भरा हुआ था, जो एक इंच गहरा और हथेली जितना चौड़ा था। क्रूरता से उसने उस टूटे हुए टुकड़े को लात मारकर और धक्का देकर घटाकरपारा की ओर फेंका, जिससे उसके अंदर का पानी छलक कर उसके असमान किनारों से बाहर छलकने लगा। जब वह टुकड़ा राजकुमार की पहुँच में आ गया, तो वह स्त्री मुड़ी और कोठरी से बाहर निकल गई। दरवाजा ज़ोर से बंद हुआ, ताला भारी आवाज़ में लगा और कदमों की आहट धीरे-धीरे खामोशी में घुल गई।

घटकरपारा ने टूटे हुए मिट्टी के बर्तन को लड़खड़ाते हुए रुकते देखा, जिसमें इतना कम पानी था कि एक पक्षी की प्यास भी नहीं बुझ सकती थी। हालाँकि, उसका ध्यान पानी पर नहीं, बल्कि उस ज्ञान के परिणामों पर था जो उसने प्राप्त किया था। शक उसे जानते थे; शायद वे हमेशा से जानते थे, इसीलिए उन्होंने उसे अवंती को छुड़ाने के इरादे से अगवा किया था। उसने अनुमान लगाया कि वे जंगली लोग सिंधुवर्त में प्रवेश के लिए सौदेबाजी में उसका इस्तेमाल करेंगे, और साथ ही अवंती और मत्स्य पर कुछ क्षेत्रीय नियंत्रण के लिए भी सौदेबाजी करेंगे। उसकी जान को तत्काल कोई खतरा नहीं था, लेकिन अगर अवंती ने विरोध किया तो शक उसे अपंग करने की अपनी धमकी को अंजाम दे सकते थे। फिर भी, राजकुमार जानता था कि उसके चाचा और परिषद के बाकी सदस्य उसे किसी भी तरह से नुकसान नहीं पहुँचाना चाहते थे - जिसका अर्थ था कि शकों की अधिकांश मांगें पूरी हो जाएँगी।

और उन्होंने फैसला किया कि यह बात अस्वीकार्य थी।

वह सिंधुवर्त में बर्बरों को फिर से पैर जमाने का कारण नहीं बनेगा। वह बर्बरों को इतनी आसानी से जीतने नहीं देगा। काश उसके पास अपनी बेड़ियों की चाबी और दरवाजा होता...

राजकुमार ने पलकें झपकाईं और मिट्टी के उस नुकीले टुकड़े को घूरकर देखा, जो उसके रक्षक द्वारा ठोकर खाकर वहीं पड़ा था। वह टुकड़ा अपने आप कांपने लगा था, और जैसे ही उसने देखा, उसके अंदर मौजूद एक बूंद पानी हवा में ऊपर उठने लगा, गुरुत्वाकर्षण को चुनौती देते हुए गोल-गोल घूमता हुआ अजीबोगरीब अंडाकार आकृतियों में फैलने लगा। उसमें पानी की मात्रा बहुत कम थी, फिर भी वह बूंद

हिलती-डुलती और अपना आकार बदलती रही - और पलक झपकते ही, उसने रहस्यमय तरीके से एक छोटी सी चाबी का रूप ले लिया।
यह ज़मीन से एक फुट ऊपर हवा में लटका हुआ था, हिलता-डुलता और टपकता हुआ, लेकिन किसी जादुई शक्ति से अपना आकार बनाए हुए था। एक खुरदुरा लेकिन विशिष्ट चाबी जैसा आकार, लचीला और डगमगाता हुआ।
मंत्रमुग्ध होकर, घटाकरपारा घुटनों के बल बैठ गया और हथकड़ी लगे हाथों से चाबी की ओर रेंगते हुए आगे बढ़ा। उसने कोमलता से चाबी को छुआ, यह उम्मीद करते हुए कि वह बूंदों की बौछार में बिखरकर ज़मीन पर गिर जाएगी। लेकिन इसके बजाय, पानी हवा में ही गाढ़ा होकर हिलने लगा, मानो किसी चुंबकीय बल से बंधा हो। चाबी का आकार खोकर, पानी की बूंद उसकी उंगलियों के बीच से फिसल गई और भारी होकर उसकी दाहिनी हथेली में जा गिरी, जहाँ वह जमा हो गई, एक बूंद भी ज़मीन पर नहीं गिरी।
घटकरपारा ने कुछ क्षण अपनी हथेली को ध्यान से देखा, फिर पानी को हवा में उछाल दिया। पानी एक चापाकार छपछपाहट के साथ ऊपर उठा और अलग-अलग आकार की कई बूंदों में बिखर गया। राजकुमार जब उन्हें मन से रोकने की कोशिश कर रहे थे, तब भी वे बूंदें ऊपर उठ रही थीं। तुरंत ही, वे बूंदें और पानी की बूंदें रुक गईं और उनके सिर से दो फीट ऊपर हवा में मटकती रहीं। राजकुमार ने एक-एक करके उन बूंदों को गिरने के लिए प्रेरित किया और एक-एक करके वे उनकी हथेली में गिर गईं और शांत होकर फिर से एक तालाब बना लिया।
घटकरपारा काफी देर तक ध्यानपूर्वक अपनी हथेली को घूरते रहे।

***

"मैं हमेशा से उसे थोड़ा मूर्ख समझता था, लेकिन मुझे यह मानना मुश्किल लगता है कि सत्यवेद ने हमारे भरोसे को धोखा दिया और बर्बरों के हाथों अपनी वफादारी बेच दी।"
"मैं नहीं।"
“नहीं?” धनवंतरी ने आश्चर्य से वराहमिहिर की ओर देखा। “ऐसा कैसे?”
“सत्यवेद में हमेशा से ही क्रूरता का भाव था। वह प्रतिशोधी थे, ऐसे व्यक्ति नहीं थे जो किसी से बैर रखना चाहें। आपको याद होगा जब वह यहाँ दरबारी थे और महल

के एक रक्षक ने उनका अभिवादन नहीं किया था...”
“जी हां,” चिकित्सक ने बात समझते हुए सिर हिलाया। “अंधेरा था और बारिश हो रही थी, और गार्ड ने कहा कि उसने सत्यवेद को छाया में खड़े नहीं देखा, लेकिन सत्यवेद ने जोर देकर कहा कि उस व्यक्ति ने जानबूझकर उसकी अनदेखी की थी।”
“जी हां, और देखिए सत्यवेद ने कितना हंगामा खड़ा कर दिया। वह चाहता था कि बेचारे पहरेदार को उसके पद से हटा दिया जाए और सिंहासन का अपमान करने के लिए उसे दंडित किया जाए। उसने हर दरबारी, हर महल के अधिकारी से अपनी मांग का समर्थन करने के लिए विनती की। वह मेरे पास आया और मुझसे आग्रह किया कि मैं इस मामले को परिषद के बाकी सदस्यों के सामने रखूं...”
“वह मेरे पास भी आया था,” धनवंतरी ने कहा। “उसे यह समझ ही नहीं आ रहा था कि यह बहुत छोटी सी बात है। हाँ, आप सही कह रहे हैं। वह ऐसे ही व्यक्ति हैं जो मन में द्वेष पालते हैं।”
“अगर एक रक्षक द्वारा अभिवादन न किए जाने पर उन्हें इतना बुरा लग सकता था, तो सोचिए कि इस सभा में बैठने का अवसर न मिलने पर उन्हें कितना बुरा लगा होगा।” वराहमिहिर ने अपनी तर्जनी उंगली से भारी सभा की मेज पर थपथपाया और चिकित्सक से विक्रमादित्य की ओर देखा। “एक परदादा जो मुख्य सलाहकार थे और एक पिता जो सलाहकार थे, सत्यवेद ने शायद सोचा होगा कि उनके लिए यहाँ एक सीट खाली रखी जाएगी। और जब चीजें उनकी उम्मीदों के मुताबिक नहीं हुईं, तो उन्होंने सिंहासन के खिलाफ कड़वी नाराजगी व्यक्त की।”
“क्या संदेश में यह बताया गया है कि वह बर्बरों से कितने समय से वेतन ले रहा है?” क्षपनाका ने मेज के उस पार से पूछा।
सम्राट ने ताड़ के पत्तों के छोटे ढेर को पलटते हुए सिर हिलाया। उन्होंने कहा, “यह कमांडर अतुल्यतेजा ने सूर्योदय होते ही भेजा था, जैसे ही सूर्ययंत्र चालू हुए। सत्यवेद और बाकी साथियों से पूछताछ शुरू होने पर हमें और जानकारी मिलेगी।”
"देखने से तो ऐसा लगता है कि सत्यवेद और यह व्यापारी... उसका नाम क्या है?" धनवंतरी रुका।
“आत्रेय।”
“आत्रेय। सत्यवेद और आत्रेय ही इस गिरोह का संचालन कर रहे थे। सत्यवेद को किले के भीतर से जानकारी मिलती रही होगी, और आत्रेय उसे शकों तक पहुंचाते

रहे होंगे। इसी तरह उन आदिवासियों को घटकर्परा के बारे में पता चला होगा।"
जैसे ही राजा और वराहमिहिर ने सहमति में सिर हिलाया, क्षपणक ने कहा, "अतुल्यतेज के संदेश में एक लड़की का जिक्र है जिसने साजिश का पर्दाफाश करने में मदद की।"
विक्रमादित्य ने एक बार फिर ताड़ के पत्तों पर नज़र डाली। "जी हां, अपारूपा।" उनकी भौहें आश्चर्य से ऊपर उठ गईं। "ऐसा लगता है कि वह आत्रेय की पुत्री हैं।"
"उसकी भूमिका वास्तव में क्या थी?"
"इसमें लिखा नहीं है," सम्राट ने उत्तर दिया। "लेकिन हमें उसके बारे में और जानकारी जुटानी होगी। अगर उसने साजिश का पर्दाफाश करने में मदद की है, तो उसे पुरस्कृत किया जाना चाहिए।"
वराहमिहिर ने आगे कहा, "श्रीस्थली कमान केंद्र का प्रमुख दत्ताका भी इसमें शामिल था। उसी ने हूण जासूस की हत्या में सत्यवेद की भूमिका का पर्दाफाश किया था।"
"जी हां," विक्रमादित्य ने कहा। "अतुल्यतेजा के नोट में उल्लेख है कि अमर सिंह ने दत्ताका को पदोन्नति के लिए पहले ही सिफारिश कर दी है।"
इसके बाद थोड़ी देर का विराम आया, जिसे क्षपणक ने तोड़ा।
"संदेश में बताया गया है कि अमारा सिम्हा आज सुबह साका बस्ती किबार के लिए रवाना हो गए हैं, और यह शहर दो से तीन दिन की घुड़सवारी की दूरी पर है। मुझे लगता है कि किबार में क्या हुआ, इसकी जानकारी मिलने में एक सप्ताह का समय लगेगा।"
पार्षद की आवाज़ में आशंका थी, जो स्वाभाविक थी। अवंती से कोई भी व्यक्ति इससे पहले कभी भी दुर्गम मरुस्थली में कदम नहीं रख पाया था; और यहाँ, योद्धाओं का एक दल महान रेगिस्तान में शकों से लड़ने के लिए जा रहा था, जिनके लिए यह रेगिस्तान पीढ़ियों से घर रहा था। अवंती के हमलावरों के लिए परिस्थितियाँ बहुत प्रतिकूल थीं।
"मैं अभी आपको बता सकता हूँ कि क्या होगा," धनवंतरी ने माहौल को हल्का करने के लिए मुस्कुराते हुए कहा। "अमारा सिंह कस्बे में प्रवेश करेगा और उसे देखते ही आधी आबादी मर जाएगी। दुर्भाग्य से, बाकी आधी आबादी उसका विरोध करने की कोशिश करेगी और उन्हें कड़वे अनुभव से यह सीख मिलेगी कि अमरा सिंह से दोबारा पंगा नहीं लेना चाहिए — अगर वे किबार से ज़िंदा निकल पाए तो।"

सम्राट और वराहमिहिर चिकित्सक के शब्दों पर मुस्कुराए, लेकिन क्षपणक ने अपनी आँखों में एक अजीब सी चमक के साथ धनवंतरी की ओर देखा।
"मुझे आप पर विश्वास है," उसने कहा, अब उसके मन में कोई चिंता नहीं थी। "अगर अमरा सिम्हा वो कर सकता है जो उसने तब किया जब नाग अही ने मुझ पर हमला किया था, तो वो साका बस्ती को अपने नंगे हाथों से तहस-नहस कर सकता है।"
क्षपणक के स्वर में एक ऐसी तसल्ली थी जो धनवंतरी की हल्की-फुल्की बातों से भी कहीं बढ़कर थी, और सभा की मेज के आसपास का तनावपूर्ण माहौल हल्का हो गया। विक्रमादित्य बोलने की इच्छा से अपने सलाहकारों की ओर देखने लगे, लेकिन तभी कक्ष का दरवाजा खुला और शंकु अंदर आ गए।
"सम्राट, नमस्कार," लड़की ने झुककर कहा। "मैं आपको उन लोगों की खबर लाई हूँ जो भगोड़ी ग्रीष्मा की तलाश में लावा गए थे।"
"अरे हाँ, ग्रीष्मा," राजा ने कहा। "क्या खबर है, शंकुबल?"
"माननीय न्यायाधीश, वह मिल गया है।"
विक्रमादित्य का चेहरा खिल उठा और पार्षदों ने एक-दूसरे को देखकर मुस्कुरा दिया।
"पहले सत्यवेद और अब यह। आखिरकार, खुशखबरी का दिन आ ही गया," वराहमिहिर ने कहा।
सत्यवेद के संदर्भ को न समझ पाने के कारण, शंकु ने भ्रमित होकर लंगड़े सलाहकार की ओर देखा, फिर राजा की ओर मुड़ गया।
"हां। जैसा कि हमें बताया गया था, वह भीवाहा में नहीं था, लेकिन लोगों ने पूछताछ की और पता चला कि वह लावा-मध्यमिका सड़क पर कुछ दूरी पर छिपा हुआ था।"
"और वह उनकी हिरासत में है?"
"जी हां। उन्हें उज्जैन लाया जा रहा है। वे आज शाम तक यहां पहुंच जाएंगे।"
"बहुत बढ़िया! उम्मीद है कि अब वह हमें दानवों तक पहुंचा सकेंगे।"
सम्राट उठने के इरादे से अपनी कुर्सी को मेज से दूर धकेलने लगे, लेकिन वराहमिहिर को अपनी सीट पर सीधा बैठते और मेज के चारों ओर ध्यान से देखते हुए देखकर रुक गए।
"हरिहारा कहाँ है?" पार्षद ने अचानक पूछा। "मुझे लगता है कि वह आज हमारे साथ नहीं आया है।"

“वह आज सुबह महिष्मती के लिए रवाना हो गया,” राजा ने कहा।
वराहमिहिर ने सोचते हुए अपनी ठुड्डी सहलाई। “मुझे लगा कि पिछले दो दिनों से वह यहाँ लगभग स्थायी रूप से मौजूद है।” एक पल रुकने के बाद, उनकी नज़रें उत्सुकता से धनवंतरी और सम्राट के बीच घूमती रहीं। “आखिर वह यहाँ आया ही क्यों था?”
सबने एक-दूसरे को देखा और कोई कुछ नहीं बोला। अंत में, हल्के से कंधे उचकाते हुए विक्रमादित्य ने कहा, "बस शिष्टाचार भेंट थी। उन्होंने अवंती में हो रहे सभी घटनाक्रमों के बारे में सुना था, इसलिए..."
सम्राट ने इस उम्मीद में अपने शब्दों को धीरे-धीरे कम कर दिया कि बात यहीं खत्म हो जाएगी, लेकिन चिकित्सक ने बिल्ली की तरह अपने शिकार पर झपटने की उग्रता के साथ उन पर हमला बोल दिया।
“तो, वह व्यापारियों और यात्रियों की अफवाहों पर भरोसा करने के बजाय खुद हालात का जायजा लेने आया था,” धनवंतरी ने गुस्से से कहा। “वह महल के चारों ओर ऐसे मंडराता रहा जैसे मधुमक्खी शहद के घड़े के चारों ओर मंडराती है। सिर्फ लालच, कोई शर्म नहीं। उसका व्यवहार राजा से ज्यादा एक जासूस जैसा था। निकम्मा आदमी!”
हरिहारा के अचानक और अप्रत्याशित भाषण ने सबको चौंका दिया, हालांकि कुछ लोगों ने भौंहें चढ़ाईं, लेकिन किसी ने भी हरिहारा का बचाव नहीं किया। वास्तव में, ऐसा लग रहा था कि सभी चुपचाप चिकित्सक की राय से सहमत थे। जब विक्रमादित्य को लगा कि किसी के पास कहने के लिए कुछ और नहीं है, तो वह उठ खड़े हुए।
“अभी के लिए बस इतना ही। मुझे जाकर प्रलूपी को अमरा सिम्हा की प्रगति के बारे में बताना होगा।”
धनवंतरी ने राजा को तीखी निगाहों से देखा। "मैं किसी को भेजकर उसे संदेश पहुंचा सकता हूँ।"
“मुझे पता है।” चिकित्सक के इशारे को सही ढंग से समझते हुए, विक्रमादित्य ने कृतज्ञता भरी हल्की सी मुस्कान दी। “लेकिन मुझे लगता है कि अगर मैं उसे बता दूं तो उसे अच्छा लगेगा।”

प्रलूपी के कक्ष में पहुँचकर जब सम्राट ने देखा कि दरवाजा थोड़ा खुला है, तो उन्हें खाँसी आई और उन्होंने जोर से गला साफ किया। फिर उन्होंने दरवाजे पर दस्तक दी और जवाब का इंतजार करने लगे। जब कोई जवाब नहीं आया, तो उन्होंने पुकारा, "बहन? मैं विक्रम हूँ।"

दो बार पुकारने पर भी जब प्रलूपी ने कोई उत्तर नहीं दिया, तो राजा ने दरवाजा धक्का देकर खोला और एक प्रतीक्षालय में प्रवेश किया। वहाँ से एक दरवाजा दाईं ओर शयनकक्ष की ओर जाता था, जबकि दूसरा बाईं ओर एक चौड़ी बालकनी की ओर खुलता था। विक्रमादित्य ने एक बार फिर शयनकक्ष के दरवाजे पर पुकारा, फिर मुड़कर बालकनी में चले गए, जिसे जंगल के तालाब जैसा दिखने के लिए चतुराई से सजाया गया था। नीचे हरी घास उगी हुई थी और एक छोटे से तालाब तक फैली हुई थी, जिसमें एक छोटा सा झरना बहता था और जहाँ दो बत्तखें चुपचाप तैर रही थीं। ऊपर शाखाओं का एक जाल था, जिसमें तोते, बुलबुल और मैना के पिंजरे रखे हुए थे। घास के बीच से एक पत्थर का रास्ता गुजरता हुआ दूर की रेलिंग तक जाता था, जहाँ से महल की झील का नजारा दिखता था।

विक्रमादित्य इस रास्ते पर धीरे-धीरे आगे बढ़े और दाएं-बाएं देखते हुए यह जानने की कोशिश करने लगे कि क्या उनकी बहन किसी पत्थर की बेंच पर आराम कर रही है। लेकिन प्रलूपी कहीं नज़र नहीं आई। राजा वापस मुड़ने ही वाले थे कि तभी उनकी नज़र बांस के झुरमुट के पीछे से एक आकृति को निकलते हुए दिखाई दी।

सम्राट ने उसे प्रलूपी समझकर पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि एक युवती सूखी टहनियों और गिरे हुए पत्तों से भरी टोकरी लिए खड़ी थी। यह महसूस करते हुए कि वह अकेली नहीं है, युवती ने भी उसी समय ऊपर देखा और उनकी आँखें क्षण भर के लिए मिलीं। फिर युवती ने अपनी दृष्टि नीचे कर ली और उसकी लंबी पलकें भारी पर्दों की तरह उसकी आँखों पर आ गईं।

"प्रणाम," उसने धीमी फुसफुसाहट में कहा, जिसकी आवाज़ केवल राजा तक ही पहुँची। साथ ही उसने अपना सिर झुकाया और अपने हाथों को टोकरी पर रख दिया, जिसे उसने शरमाते हुए अपनी कमर से बाँध लिया।

"मैं... बहन को ढूंढने आया था। वो कहाँ है?" विक्रमादित्य ने चारों ओर देखा, फिर उस महिला की ओर देखा। "और आप कौन हैं?"

"मैं मिथ्यामयी, राजकुमारी प्रलूपी की दासी हूं।"

“मैंने तुम्हें पहले कभी नहीं देखा।” सम्राट ने एक भौंह ऊपर उठाई। “एक नौकरानी, तुम कह रहे हो?”
“जी हां,” राजा के शब्दों पर महिला का चेहरा हल्का सा लाल हो गया। “महाराज, मैं इस शहर में नई हूं।”
“मैं समझ गया। और मुझे राजकुमारी कहाँ मिल सकती है?”
"मैं यहां हूं।"
विक्रमादित्य ने मुड़कर देखा तो प्रलूपी बालकनी की ओर खुलने वाले दरवाजे के चौखट से टेक लगाकर खड़ी थी। उसका व्यवहार ठंडा और उदासीन था, और वह उसे शत्रुता और उदासीनता के अजीब मिश्रण से देख रही थी।
“तुम क्या चाहते थे?”
सम्राट बोलने ही वाले थे कि वे रुक गए और उन्होंने एक पल के लिए अपने कंधे के ऊपर से मिथ्यामयी की ओर देखा।
“कोई बात नहीं,” प्रालुपी ने कहा। “वह तो बस एक नौकरानी है।”
विक्रमादित्य ने गहरी सांस ली। “मैं आपको यह बताने आया हूँ कि अमर सिंह कल रात उदयपुरी की चौकी पर पहुँच गए हैं। उन्हें पता चला है कि घातकपारा को शकों ने महामरुस्थल के किबर शहर में एक किले में बंदी बना रखा है। घातकपारा को छुड़ाने के लिए अमर सिंह और संसप्तक आज सुबह किबर के लिए रवाना हो गए हैं।”
दरवाजे के चौखट से उठते हुए, प्रलूपी ने सिर हिलाया और अपने भाई के पास चली गई। वह बिना कुछ कहे उसके पास से गुजरी और तालाब की ओर चल पड़ी, जहाँ वह पानी की गहराई में निहारने लगी।
“और कुछ चाहिए भाई?” उसने तीखे लहजे में पूछा।
सम्राट ने भौंहें चढ़ाईं, सिर हिलाया और मुड़कर जाने ही वाले थे कि प्रलूपी ने फिर से बोलना शुरू कर दिया।
“क्या आपने अपना मन नहीं बदला?”
एक पल के लिए विक्रमादित्य असमंजस में दिखे, फिर उन्हें बात समझ में आई।
"नहीं, और मैं ऐसा नहीं करने वाला।"
वह एक और थकाऊ बहस में उलझने से पहले ही वहां से चला गया।

निराशा के कड़वे स्वाद से मुंह सिकोड़ते हुए, प्रलूपी तालाब के किनारे एक बेंच पर बैठ गई। मिथ्यमयी की ओर देखते हुए, राजकुमारी यह देखकर आश्चर्यचकित रह गई कि उसकी दासी अपने भाई के जाते हुए चेहरे को घूर रही है। मिथ्यमयी तब तक साहसपूर्वक विक्रमादित्य का पीछा करती रही जब तक कि राजा दरवाजे से बाहर निकलकर उसकी दृष्टि से ओझल नहीं हो गए।
अपनी नौकरानी को तिरछी निगाहों से देखते हुए, प्रलूपी के होठों पर हल्की सी मुस्कान फैल गई क्योंकि धीरे-धीरे उसके मन में एक बिल्कुल नई संभावना का अहसास हुआ।

***

आकाश में सूर्य एक विशाल चूड़ी की तरह चमक रहा था, जो अपने शिखर के एक चौथाई हिस्से तक ही पहुंचा था और सपाट रेगिस्तान को पार करते हुए बारह घुड़सवारों के छोटे से जुलूस पर अपनी तेज धूप बरसा रहा था। सूर्य और गर्म हवा से खुद को बचाने के लिए सूती शॉल ओढ़े हुए, कालिदास और उनके सरदार खशी दुर के नेतृत्व में, वे ऊर्जा बचाने और अपने घोड़ों के शरीर में मौजूद कीमती पानी को जल्दी खत्म होने से बचाने के लिए धीरे-धीरे कदम बढ़ा रहे थे।
मरुस्थली में प्रकृति की कठोरता निरंतर बनी हुई थी, कालिदास मन ही मन सोच रहे थे। अपने घोड़े के खुरों की नीरस आहट में सो न जाने के लिए वे अपने मन को सक्रिय रखने का प्रयास कर रहे थे। दिन की गर्मी हमेशा कष्टदायी होती थी; रातें हमेशा ठंडी होती थीं; हवा और धूल लगातार ज़मीन और लोगों को झुलसाती रहती थी, और बारिश न के बराबर होती थी। मुन्ह जाते समय उन्होंने रेगिस्तान की कठोरता के प्रमाण देखे थे, लेकिन उन्होंने सोचा था कि बड़े शहरी इलाकों में हालात बेहतर होंगे। इस मामले में वे गलत साबित हुए - मुन्ह जैसे कस्बों में भी जीवन उतना ही कठिन था, और बल्कि, अधिक आबादी के कारण पानी की कमी और भी गंभीर हो गई थी। कुओं की कड़ी सुरक्षा और जल अधिकारों के कड़ाई से पालन के बावजूद, पानी को लेकर झगड़े आम बात थे, जो श्योरों के नेतृत्व कौशल की लगातार परीक्षा लेते थे। कालिदास को पता चला था कि पानी की चोरी करना गंभीर दंडनीय अपराध था, जिसमें अपराधियों को रेगिस्तान में निर्वासित कर दिया जाता था, जहाँ वे प्यास से मर जाते थे।

उन असंख्य महिलाओं के बारे में सोचते हुए, जिन्हें उसने मीलों रेगिस्तान पार करके दूर के कुएँ से पानी के दो छोटे-छोटे थैले लाने के लिए जाते देखा था, उस विशालकाय व्यक्ति ने यह महसूस किया कि सिंधुवर्त की महिलाओं की तुलना में हूण महिलाओं का जीवन कितना अन्यायपूर्ण था। सिंधुवर्त में पानी इतना प्रचुर मात्रा में था कि महिलाओं के पास कला के प्रति अपने प्रेम को पूरा करने के लिए पर्याप्त समय होता था। यहाँ, महिलाओं को अपने लिए केवल पानी की तलाश में लंबी यात्राओं के दौरान ही समय मिलता था; वे इस समय का उपयोग टूटे सपनों के शोकगीत रचने में करती थीं। कालिदास आसानी से समझ गए कि हूण लोग उस भूमि के प्रति इतने आसक्त क्यों थे जिसे वे 'ज़ारी उल्ला' कहते थे - यानी 'समृद्धि की भूमि'।

"हमने शायद एक पीढ़ी पहले उस समृद्ध भूमि की खोज की थी, जब किसी ने पूर्व की ओर जाने का फैसला किया था," खाशी दुर ने पिछली शाम आग के चारों ओर बैठकर उबले हुए चावल और दाल का भोजन करते हुए कहा था। "पहाड़ों को पार करने के लिए साहस चाहिए था, लेकिन जो भी वह व्यक्ति था, वह वापस आकर उस भूमि के बारे में बताने आया जो हरी-भरी घास और नीले पानी से भरी थी।"

सिंधुवार्ता के बारे में उस प्रारंभिक अग्रदूत के वृत्तांत ने कुछ हूण परिवारों को उनके पदचिन्हों पर चलने के लिए प्रेरित किया, और अंततः वे आकर उस समय के सलवा और गोश्रृंगा रियासतों में बस गए। हाशिये पर रहते हुए भी, ये बसने वाले फले-फूले, और उनकी ख्याति से और भी हूण परिवार सिंधुवार्ता में आ गए। लेकिन जैसे-जैसे उनकी संख्या बढ़ती गई, वे अधिक प्रमुखता से दिखाई देने लगे, जिससे उस क्षेत्र के मूल शासकों का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हुआ।

"हमारा उन्हें कोई नुकसान पहुंचाने का इरादा नहीं था," श्योर ने चावल खाते हुए कहा। "हम तो बस हर दिन पानी के लिए व्याकुल होने से छुटकारा पाना चाहते थे। उनके पास इतना पानी था और हमारे पास बहुत कम, फिर भी वे हमारे साथ साझा करने को तैयार नहीं थे। ज़ारी उल्ला के लोग हमसे घृणा करते थे, हमें गालियां देते थे और राजाओं ने अपने सैनिकों को हमें परेशान करने और हमारी बस्तियों से भगाने के लिए भेजा था।"

फिर भी, जल की लालसा और सुखमय जीवन की चाह ने अधिक हूणों को अर्बुदा पर्वतमाला पार करने के लिए प्रेरित किया, और धीरे-धीरे उनकी जनसंख्या बढ़ी और निषाद और कुंती के पूर्व राज्यों में फैल गई। लेकिन हूण आबादी के आगमन ने

स्थानीय लोगों के लिए खतरा और भी बढ़ा दिया, जिससे उनकी शत्रुता और भी प्रबल हो गई, और सांस्कृतिक संघर्ष के परिणामस्वरूप हिंसा की घटनाएं हुईं।

"उन्होंने हरिज़ का मज़ाक उड़ाया और हमारे लोगों पर हमला किया। हमें जवाबी कार्रवाई करने के लिए मजबूर होना पड़ा," खशी दुर ने बताया। "फिर उनके सैनिकों ने हमारी महिलाओं पर अत्याचार करना शुरू कर दिया। वे हमारी महिलाओं को गुलाम बनाकर ले गए और हमारे पुरुषों के सिर पहाड़ी रास्तों में खंभों पर टांग दिए, ताकि जो लोग उस पार जाने की कोशिश करें, उन्हें चेतावनी मिल सके। हमारे बच्चे अनाथ हो गए और ठंड और भूख से मरने के लिए छोड़ दिए गए। कुछ बचे हुए लोग मरे हुए बच्चों को वापस लाए, और जब हमने उनके छोटे, मुरझाए हुए शरीर देखे, तो हम समझ गए कि अब समझौता करने या दया दिखाने की कोई गुंजाइश नहीं है।"

यह वृत्तांत जाना-पहचाना था। भाषा, रीति-रिवाजों और धर्म में बाहरी भिन्नताओं का टकराव; भूमि और सत्ता पर नियंत्रण के लिए गहरा संघर्ष; दोनों पक्षों में पीड़ित होने की भावना, जिसके कारण रुख और कठोर हो गया — कालिदास समझते थे कि यहाँ अपराधी और पीड़ित एक ही अर्थ में थे, यह इस बात पर निर्भर करता था कि कहानी कौन सुना रहा है। लेकिन परिणाम यह हुआ कि हूण और शक, जिन्होंने सिंधुवर्त में इसी तरह के उत्पीड़न का सामना किया था, ने गठबंधन किया और एक साझा शत्रु से बदला लेने के लिए युद्ध छेड़ दिया। और इस प्रकार, सिंधुवर्त के राज्यों पर पहले संगठित हमले शुरू हुए, जिनका अंत ज़ारी उल्ला की विजय के साथ हुआ।

"हरिज़ के आशीर्वाद और आपकी मदद से, हम ज़ारी उल्ला को फिर से हासिल कर लेंगे," खशी दुर ने आत्मविश्वास से कहा था। चुपके से मुस्कुराते हुए उन्होंने आगे कहा, "इस बार, इस नेक लड़ाई में हमारी मदद के लिए हमारे साथ यहब्रे भी हैं।"

"आपने पहले याहब्रे का जिक्र किया था। वे क्या हैं?" कालिदास उत्सुक थे।

"कल सुबह, थ्रा'आखा," श्योर ने हंसते हुए कहा। "कल सुबह, हम ड्रोइबा से मिलेंगे और तुम खुद देख लोगे।"

इस प्रकार, वे यहाँ थे, सुबह की भीषण गर्मी में मेहनत करते हुए, उस जगह की ओर बढ़ रहे थे जहाँ भी द्रोइबा (एक प्रकार का जलमार्ग) उस समय मौजूद था। वे सूर्योदय के तुरंत बाद मुन से निकले थे; लेकिन कालिदास की दृष्टि में, वे अभी भी

किसी भी मंजिल के आस-पास नहीं थे। जिधर भी वह देखता, उसे केवल झुलसा हुआ और बंजर रेगिस्तान ही दिखाई देता।
"अब जब तुम हमारे बीच वापस आ गए हो, तो तुम्हें एक हूना को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करना चाहिए।"
कालिदास अपने गहन चिंतन से बाहर निकले और मुड़कर देखा तो उनके बगल में खशी दुर खड़े थे। वे अपने विचारों में इतने खोए हुए थे कि सरदार को अपने पास आते हुए देख ही नहीं पाए।
"तुम्हें किस तरह की स्त्री चाहिए, थ्राखा?" श्योर ने पूछा।
कालिदास ने उदासीनता से कंधे उचका दिए।
"हम्म, लगता है आप बहुत नखरे वाले हैं। या फिर आप बस शर्मीले हैं?" खाशी दुर ने सिर पीछे करके हँसते हुए कहा। "कोई बात नहीं, हम ज़ो एरामी के बेटे के लिए कोई न कोई उपयुक्त लड़की ढूंढ लेंगे। मुझे यकीन है कि संभावित दुल्हनों की कमी नहीं होगी।" उसने आँख मारी और फिर हँस पड़ा। "हुना औरतें दुनिया की सबसे खूबसूरत औरतें हैं।"
उस विशालकाय व्यक्ति ने विनम्रतापूर्वक मुस्कुराते हुए मुंह फेर लिया।
उन्हें कभी ठीक से पता ही नहीं चला कि उन्हें वह लड़की क्यों पसंद आ गई थी। लंबे समय तक वे उसे केवल वार्डन की बेटी के रूप में ही जानते थे, और जब आचार्य ने चाकुबाला और छक्का चलाने में उसकी प्रतिभा को पहचाना और उसे महल में प्रशिक्षण ले रहे बच्चों में शामिल किया, तब जाकर उन्हें उसका नाम पता चला - शंकुबाला, हालांकि वह सिर्फ शंकु कहलाना पसंद करती थी। महल में आने के बाद भी वे मुश्किल से ही एक-दूसरे से बात करते थे, और कालिदास को लगा कि अगर विक्रमादित्य ने शंकु को सलाहकार न बनाया होता तो शायद ऐसा ही होता। परिषद में साथ होने के बावजूद, वे कम ही बोलते थे, मौन में ही सुकून पाते थे, और कालिदास को आश्चर्य होता था कि वे इतनी कम बातें करते हुए भी एक-दूसरे को इतना कैसे समझ लेते थे।
मैं आपसे अपने साथ आने के लिए कहता, लेकिन मुझे पता है कि आप नहीं आएंगे। इतने साल बीत गए और अब तुम यही पल इस बात को उठा रहे हो? शंकु ने जवाब दिया था जब वे उस दिन साथ-साथ घोड़े पर सवार होकर जा रहे थे, जिस दिन उसने उज्जैनी और महल छोड़ा था।

उसे एहसास हुआ कि उसे यह बात बहुत पहले ही उठा लेनी चाहिए थी। अगर उसने ऐसा किया होता, तो शायद वह उसके साथ यहीं होती। इसके बजाय, वह चुप रहा, और वह उज्जैन में थी।

कालिदास खशी दुर के बारे में सोचने के लिए वापस मुड़ गए।

उन्होंने कहा, "आप जाहिर तौर पर अपनी हुना विरासत पर बहुत गर्व करते हैं। फिर, अगर मैं पूछूं, तो आप हमारी मातृभाषा के बजाय मुझसे अवंती में बात करने पर क्यों जोर देते हैं?"

खशी दुर उस विशालकाय योद्धा के साथ-साथ चलते हुए उसे ध्यान से देख रहा था। उसने कहा, "अवंती भाषा में बोलकर मैं उन लोगों की भाषा में निपुण हो रहा हूँ जिन पर मैं सिंधुवर्त पर आक्रमण करके विजय प्राप्त करने के बाद शासन करूँगा। जब आप उन लोगों की भाषा जान लेते हैं जिन्हें आपने जीत लिया है और अपने अधीन कर लिया है, तो आप उनकी आपके विरुद्ध षड्यंत्र रचने की क्षमता छीन लेते हैं। क्योंकि भाषा, मेरे मित्र, सूचना है, और सूचना ही शक्ति है।"

कुछ और मील चलने के बाद, समूह अंततः बकरी की खाल से बने चार तंबुओं के एक शिविर में पहुँचा, जो पिछली रात की आग के अवशेषों के चारों ओर एक मोटे घेरे में लगे हुए थे। वहाँ लगभग आधा दर्जन हूण योद्धा पहरा दे रहे थे, और उन्होंने श्योर और महेक (कालिदास को पुरुषों द्वारा दिया गया उपनाम, जिसका अर्थ 'तूफान' होता है) का स्वागत किया और उन्हें बताया कि तांत्रिक अभी-अभी रेगिस्तान के लिए रवाना हुए हैं।

"हम बिलकुल सही समय पर पहुँचे हैं," खशी दुर ने कालिदास की ओर मुस्कुराते हुए कहा। "अगर हम जल्दी करें तो आप सब कुछ देख लेंगे। आइए।"

जब कालिदास और श्योर चार पहाड़ी बकरियों की खोपड़ियों से चिह्नित पवित्र स्थान पर पहुँचे, तब तक आग जल चुकी थी और उसका धुआँ द्रोइबा के चारों ओर रेंगता और लिपटता जा रहा था। द्रोइबा आग के चारों ओर धीरे-धीरे कुछ बुदबुदाते हुए घूम रहा था और साथ ही एक हाथ से दूसरे हाथ में मुट्ठी भर रेत डाल रहा था। पश्चिम से गर्म हवा चल रही थी, जो उनके कपड़ों को फड़फड़ा रही थी और सफेद-नीले आकाश में धुएँ के भंवर बना रही थी।

काफी देर तक कुछ भी घटित नहीं हुआ। लेकिन जैसे ही कालिदास थकने लगे, तांत्रिक ने टहलना बंद कर दिया और रेगिस्तान की ओर मुड़ गया। रेत को कसकर

पकड़े हुए वह रेगिस्तान में चल पड़ा, धुआँ उसके पीछे-पीछे उसके शरीर से चिपकता हुआ, एक धब्बेदार, धुंधले अजगर के आकार में मंडरा रहा था। वह तब तक चलता रहा जब तक उसका चेहरा दिखना बंद नहीं हो गया, और फिर वह रुक गया।

कालिदास ने ध्यान से देखा कि कैसे शमन ने अपनी मुट्ठियों के बीच रेत को बाँटा। फिर, अचानक, आवेग में आकर, द्रॉइबा ने दोनों मुट्ठियों से रेत हवा में उछाल दी। उसी क्षण, उसके चारों ओर लिपटा धुआँ मानो हवा में उछल पड़ा, मानो फेंकी गई रेत का पीछा कर रहा हो। और एक पल बाद, द्रॉइबा के चारों ओर का पूरा रेगिस्तान हिल उठा, घूम गया... और धूल के एक गरजते स्तंभ के रूप में ऊपर उठा, जिसने शमन को पूरी तरह निगल लिया।

"क्या वह ठीक हो जाएगा?" कालिदास ने सरदार के कान में फुसफुसाते हुए पूछा।

शर्मीले ने बस सिर हिलाया, लेकिन उसमें इतना दृढ़ विश्वास था कि दैत्य की शंकाएँ दूर हो गईं। मानो उसे और आश्वस्त करने के लिए, धूल का घूमता हुआ स्तंभ खिसक कर रेगिस्तान में चला गया, और अपने पीछे द्रोइबा को सुरक्षित और बिना धुएँ के छोड़ गया। द्रोइबा ने घूमते हुए स्तंभ को देखा, और बाकी सभी की तरह, कालिदास ने भी देखा।

और उसने देखा कि स्तंभ दो टुकड़ों में टूट गया। दोनों भाग एक-दूसरे से दूर मुड़ते और नाचते हुए चले गए, और जैसे-जैसे वे घूमते गए, उनका आकार कम होता गया और वे धीरे-धीरे आकार लेने लगे, विशालकाय धूल के दानवों में तब्दील होते गए जो सौ फीट ऊँचे हवा में खड़े थे, रेगिस्तान पर मलबा बरसा रहे थे, उनके अविकसित मुँह गुफाओं की तरह खुल रहे थे और भीतर से उमड़ते हुए गरजते बादल दिखाई दे रहे थे, जिनके किनारे नीली बिजली की चमक से जगमगा रहे थे। उसी समय, उन मुँहों से एक भयंकर क्रोध की दहाड़ निकली, जो कालिदास को एक दर्जन क्रोधित बैलों की रंभाने जैसी सुनाई दी।

कालिदास को वह अपशगुन याद आया जो देवी माँ ने बहुत समय पहले सम्राट को बताया था, जब परिषद हूणों के बारे में जानकारी लेने आई थी। देवी ने कहा था कि उन्होंने पश्चिम में दूर से उठती धूल की दीवार के बारे में पक्षियों की आवाज़ सुनी थी, और परिषद में सभी ने मान लिया था कि यह किसी सेना के आगे बढ़ने से उठी धूल है। लेकिन सभी लोग पूरी तरह गलत थे।

Yah’bre.
कलिदास ने सिर हिलाते हुए कहा, "ये धूल-आत्माएँ नहीं थीं जैसा कि उसने पहले सोचा था।" हूण भाषा पर उसकी पकड़ अभी भी कमजोर थी। 'ब्रे' का अर्थ 'आत्माएँ' तो था, लेकिन अब उसे याद आया कि इसका अर्थ 'आध्यात्मिक शक्तियाँ' भी होता है। याह'ब्रे। धूल-आत्माएँ। हूण नरक से आए दुष्ट प्राणी, जिन्हें वश में करना कठिन था, लेकिन जो उन्हें अपने वश में करना जानता था, उसके हाथों में वफादार और शक्तिशाली हथियार बन जाते थे।
ड्रोइबा मुड़ा और उनकी दिशा में चल पड़ा, और उसके पीछे याहब्रे आज्ञाकारी कुत्तों की तरह, कीचड़, रेत, क्रोध और हिंसा से लथपथ, लोटते, गुर्राते और घूरते हुए आ रहे थे। वे अपने स्वामी के पीछे चल रहे थे, जिसने उन्हें अपने आदेश का पालन करने के लिए बुलाया था।
“इन्हें देखो,” शर्मीले पिता ने गर्वित माता-पिता की तरह उत्साह से कहा, और कालिदास का हाथ पकड़ लिया। उनका दागदार चेहरा खुशी से खिल उठा और अचानक सुंदर दिखने लगा। “बस इन्हें देखो। कितनी भव्यता है।”
ह्वीज़ के आशीर्वाद और आपकी सहायता से हम ज़ारी उल्ला पर फिर से कब्ज़ा कर लेंगे। खशी दुर ने कल रात भोजन के दौरान यही कहा था। कालिदास को अब समझ आ गया था कि सरदार का आत्मविश्वास निराधार नहीं था। याहब्रे हूणों की ओर से तबाही मचाने के लिए पूरी तरह से तैयार थे।
सिंधुवर्त में यहब्रे को ले जाने के विचार से कालिदास मन ही मन मुस्कुराए।

ग्रीष्मा

वह रात के अंधेरे में ऐसे दुम दबाकर भाग गया जैसे कोई कुत्ता अपनी पूंछ पैरों के बीच दबाकर भागता है।

इंद्र ने सोमा के प्याले से एक गहरा घूंट लिया, ठंडे, मसालेदार तरल को अपने होठों और गले को जलाते हुए नीचे जाने दिया। लगभग तुरंत ही, शराब उनके सिर पर चढ़ गई, जिससे उन्हें एक मदहोश कर देने वाला सुख का अहसास हुआ। उन्होंने दूसरा घूंट लेने के लिए प्याला वापस होठों पर रखा, उनका ध्यान बृहस्पति की लगातार बकबक पर पूरी तरह नहीं था।

"कीड़े ने मेरी नाक के नीचे ही राजकुमार जयंता से दोस्ती करने की हिम्मत दिखाई – भला मैं उसे ऐसा करने देता," चैंबरलेन ने अपने पुराने प्रतिद्वंद्वी की चाल को भांपते हुए गर्व से कहा। "वह अही को जगाने वाले मंत्रों पर नज़र रखे हुए था, यह तो मैंने काफी पहले ही समझ लिया था।"

"और मुझे लगता है कि मंत्र सुरक्षित हैं," इंद्र ने आश्वासन पाने के लिए गुरु की ओर देखने के लिए कुछ देर के लिए अपना पेय त्याग दिया।

"ओह, बिलकुल," बृहस्पति खिलखिलाते हुए हँसे और अपनी खुशी को रोकने के लिए हाथ जोड़ लिए, लेकिन फिर भी उनकी हँसी फूट पड़ी। "जैसे ही हमें इनके बारे में पता चला, मैंने जयंता से इन्हें मुझे सौंपने को कहा। मुझे यकीन है कि शुक्राचार्य जयंता से मुझसे मंत्र वापस लेने की कोई योजना बना रहे थे।"

"और वो ऐसे ही चला गया? बिना अलविदा कहे?"

"ओह, नकाब उतर जाने पर उसे इतनी शर्मिंदगी हुई कि वह मेरी आँखों में आँखें डालकर देखने की बेइज्जती बर्दाश्त नहीं कर सका। रात के अंधेरे में भाग जाना ही उसके लिए सबसे अच्छा उपाय था।" बृहस्पति ने तिरस्कारपूर्ण ढंग से अपना हाथ उसके चेहरे के सामने हिलाया। "यह सब तब हुआ जब उसने झूठ बोला था कि वह तुम्हारे लौटने का इंतजार कर रहा था, ताकि तुम दोनों मिलकर तय कर सको कि आगे क्या करना है।"

"वह इस बारे में झूठ नहीं बोल रहा था," देवराज ने अनमने ढंग से कहा। "सिंधुवर्त से लौटने के बाद हमें आपस में अपने अनुभव साझा करने थे।"

"ओह," बृहस्पति ने तीसरी बार कहा। उनका उत्साह थोड़ा कम हो गया था, और वे गहरी चुप्पी में डूब गए।
बातचीत में शामिल होने का मौका पाकर नारद ने इंद्र की ओर देखा और पूछा, "हे स्वामी, सिंधुवर्त की यात्रा कैसी रही?"
"बिल्कुल वैसा ही जैसा शुक्राचार्य ने भविष्यवाणी की थी," इंद्र ने उत्तर दिया और उठकर अमरावती की ओर खुलने वाली विशाल खिड़कियों में से एक की ओर चले गए।
उन्हें विक्रमादित्य के चेहरे पर उस सदमे की याद आई जब उन्होंने गंधर्वसेन को अपना असली पिता बताया था। उस क्षण को याद करते हुए, देवराज को राजा के आत्मविश्वास को झकझोर देने की गहरी संतुष्टि का अनुभव हुआ। लेकिन यह विजय क्षणिक थी, इससे पहले कि वे इसका ठीक से आनंद ले पाते, यह समाप्त हो गई; विक्रमादित्य शीघ्र ही संभल गए और उनके सामने अविचलित होकर खड़े हो गए।
उन्होंने कहा, "विक्रमादित्य कठोर, अहंकारी और अड़ियल है। वह गंधर्वसेना को अपना पिता मानने को तैयार नहीं था, उसने अपनी माँ को अपने पिता होने की गवाही देने के लिए बुलाने से इनकार कर दिया, उसने मुझसे किसी भी तरह की मदद लेने से इनकार कर दिया... उसने किसी भी तरह से मेरा स्वागत नहीं किया। उसने हर समय मेरी अवहेलना की, और उसमें इतनी धृष्टता थी कि उसने मुझसे अपने शहर को छोड़ने की मांग की।"
"हे प्रभु, उसके भीतर मौजूद देव रक्त ही उसे इतना हठी बनाता है," नारद ने कहा।
इंद्र ने तुरंत जवाब नहीं दिया। उन्होंने अपना प्याला खाली किया, फिर अपने होंठ और दाढ़ी को हाथ के पिछले हिस्से से पोंछा। जब वे मुड़े और राजनयिक से बात की, तो उनकी आवाज़ पत्थर की तरह कठोर थी। "भले ही उसकी रगों में मेरा खून दौड़ रहा हो, लेकिन इससे मुझे उसे उसकी औकात दिखाने से कोई नहीं रोक सकता। मैं जहाँ चाहूँ वहाँ जाता हूँ और जब तक चाहूँ वहाँ रहता हूँ, और कोई मुझे जाने के लिए नहीं कह सकता। मेरा पोता भी नहीं।"
नारद ने इंद्र के प्याले में पानी भरने का इंतज़ार किया। उन्होंने पूछा, "हे स्वामी, आपके आने का उद्देश्य क्या था? क्या आपके रहस्योद्घाटन ने राजा और उनके सौतेले भाई के बीच दरार पैदा कर दी, जैसा कि शुक्राचार्य ने भविष्यवाणी की थी?"

"हम्फ," महापुजारी का नाम सुनते ही बृहस्पति ने नाक सिकोड़ी, लेकिन बाकी दोनों देवताओं ने उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया।
“अभी कुछ कहना मेरे लिए जल्दबाजी होगी, लेकिन अगर शुक्राचार्य को लगता है कि मतभेद पैदा हो सकता है, तो शायद हो सकता है।” देवस्वामी ने दरबारी की बात अनसुनी कर दी, जो असहमति जताते हुए चुपचाप सिर हिला रहा था। “हमें जल्द ही पता चल जाएगा। मताली महल में है, और हमें उससे जल्द ही खबर मिलने वाली है।”
"क्या मताली को हलाहला के ठिकाने का पता चल गया है?"
इंद्र ने अपना सिर हिलाया और प्याले का सारा तरल अपने गले से नीचे उतार लिया। “लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि वह ऐसा करेगा। और जब वह ऐसा करे, तो मैं चाहता हूँ कि हम तैयार रहें।”
इंद्र ने नारद की ओर देखा, जिन्होंने सहमति में सिर हिलाया।
“हम लगभग तैयार हैं, स्वामी,” राजनयिक ने कहा। “मुझे इसका पूर्वाभास था, इसलिए आपकी अनुपस्थिति में मैंने सभी को युद्ध की तैयारी करने का आदेश दिया है। अश्विनों, मरुतों, अग्नेयी और उनके अग्नि-प्राणों के अलावा, देवों की नियमित टुकड़ियों को भी सतर्क कर दिया गया है। त्रिभानु को किन्नर टुकड़ियों को हमारी सेवा में लगाने का आदेश भेजा गया है, और मैंने तक्षक को भी अपनी नाग टुकड़ियों को हमारे लिए उपलब्ध कराने का निर्देश दिया है।”
“बहुत बढ़िया,” इंद्र ने कहा। “किन्नर और नाग कब हमारे साथ जुड़ेंगे?”
"मुझे उम्मीद है कि वे कुछ दिनों में यहां आ जाएंगे, प्रभु।"
“अच्छा। मुझे यह शक सता रहा है कि शुक्राचार्य का चुपके से चले जाना हमारे और विक्रमादित्य के बीच चल रहे गतिरोध के स्वरूप में किसी बदलाव के कारण है।” बृहस्पति को सिर हिलाते देख इंद्र ने धैर्यपूर्वक हाथ उठाया। “जी, गुरुदेव, मुझे पूरा यकीन है कि आपने भी उन्हें शर्मिंदा करके भगा दिया, लेकिन हमें शुक्राचार्य को कभी कम नहीं आंकना चाहिए। उनके जाने के तरीके से मुझे लगता है कि हमें विक्रमादित्य और उज्जैनी पर कड़ी नज़र रखनी चाहिए।”
अपना प्याला दोबारा भरने के लिए रुकते हुए, इंद्र ने अपने सलाहकारों की ओर देखा। “मुझे अंदर से महसूस हो रहा है कि किसी भी क्षण असुर वैषद के खंजर पर

कब्जा करने की कोशिश करेंगे। चाहे कुछ भी हो जाए, हमें उनसे पहले ही उस पर कब्जा करना होगा।"

*

अपने विचारों से परेशान होकर वह पूरी रात एक पल भी नहीं सो पाया था। उसके शरीर की हर मांसपेशी थकान से बेसुध हो चुकी थी, और सुबह की तेज धूप में पलकें झपकाने पर भारी और किरकिरी महसूस हो रही थीं। उसका सिर भारी लग रहा था, मानो गिर ही जाएगा, और उसे पूरा यकीन था कि वह आसानी से सो जाएगा। लेकिन जैसे ही वह लेटा, नींद उसके तकिए से गायब हो गई, और वह छत को घूरता रह गया और महारानी माँ की डांट भरी आवाज सुनता रहा।

तुम कभी अवंती के राजा नहीं बनोगे, इसलिए इस महल को अपना समझो और एक सैनिक से अपेक्षित गरिमा के साथ व्यवहार करना सीखो। अगर तुम ऐसा नहीं कर सकते, तो वापस उसी गटर में चले जाओ जहाँ से तुम आए हो।

देखो तो सही, तुम पूरे कीचड़ से सने हो और हर जगह गंदगी फैला रहे हो। कोई भी तुम्हें महल में खोया हुआ कोई साधारण बच्चा समझ सकता है - और यही तुम्हारी दुखद सच्चाई है।

वरारुची ने गहरी सांस ली और सूरज की चकाचौंध से बचने के लिए नीचे आंगन में हो रही हलचल को देखने लगा। शाही सेना के सैनिक युवा कप्तान पुल्यामा के नेतृत्व में कतारों में खड़े हो रहे थे, जो अभ्यास के आदेश दे रहे थे। सैनिक पूरी तरह से हथियारों से लैस थे, मानो युद्ध के लिए तैयार हो रहे हों। चौकी के द्वार को मजबूत किया जा रहा था, और पार्षद ने देखा कि अतिरिक्त सैनिकों को पहरेदारी के लिए तैनात किया गया था। यह सब देखकर उसके मन में थोड़ी सी चिंता जागी, लेकिन उसने बिना सोचे-समझे उसे दबा लिया।

मेरे पिता राजा महेंद्रदित्य हैं।

मुझे आपकी बात पर विश्वास है। लेकिन मैं महारानी माँ से भी यही सुनना चाहता हूँ।

वह नहीं देगी।

ऐसा क्यों?

क्योंकि मैं उसे ऐसा करने नहीं दूँगा। और क्योंकि वह आपके प्रति जवाबदेह भी नहीं है।

लेकिन वह अवंती की जनता के प्रति जवाबदेह है, विक्रम, वरारुचि ने मन ही मन सोचा। महारानी माँ अपनी प्रजा के प्रति जवाबदेह हैं। और तुम भी। तुम जनता को जवाब मांगने से नहीं रोक सकते। जनता सर्वोपरि है, विक्रम। हममें से कोई भी जनता से ऊपर नहीं है।

अपने पीछे लकड़ी की सीढ़ियों पर कदमों की आहट सुनकर वरारुचि ने मुड़कर देखा तो पाया कि शरमाना दो-दो सीढ़ियाँ चढ़ रहा था। उसके पीछे दो और लोग आए, लेकिन शरमाना के भारी-भरकम शरीर ने उन्हें तब तक छिपाए रखा जब तक वे छावनी के केंद्रीय बुर्ज की छत पर वरारुचि के साथ नहीं मिल गए।

"सुहासा, मेरी दोस्त। और कमांडर अजन्या," पार्षद ने नए आए लोगों को देखकर सच्ची खुशी से मुस्कुराते हुए कहा। "काफी समय हो गया। मुझे खुशी है कि आप आए।"

"सलाम कीजिए, पार्षद जी," दोनों में से बड़े सुहासा ने कहा। दोनों पुरुषों की मूंछें घुमावदार थीं, हालांकि सुहासा की मूंछें सफेद थीं जबकि अजन्या की मूंछें अभी भी ज्यादातर काली थीं।

"शरामना ने हमें बताया कि हमारी ज़रूरत है, इसलिए हम यहाँ हैं," सुहासा ने वरारुची को एक विशाल आलिंगन में लेते हुए कहा, जो दुर्लभ आत्मीयता और भाईचारे को दर्शाता था।

"धन्यवाद," वरारुचि गले लगने के बाद अलग हुए और अजन्या को सिर हिलाकर अभिवादन किया। "अवंती आप दोनों को धन्यवाद देती है।" उन्होंने आंगन की ओर देखा। "आपके आदमी?" उन्होंने भौंहें उठाकर सुहासा और अजन्या की ओर देखते हुए पूछा।

"हम आपकी सेवा में हैं। यहाँ और हमारी अपनी छावनियों में," अजन्या ने आश्वस्त करने वाली गहरी आवाज़ में उत्तर दिया।

"अवंती की सेवा में," वरारुची ने सौम्य भाव से सुधार किया। कुछ क्षण पहले तक जो थकान उन पर हावी थी, वह अब गायब हो गई थी। "क्या हम नीचे चलें?"

मेज पर बैठे, बगल में छाछ के गिलास रखे हुए, सलाहकार ने शाही सेना के तीनों अधिकारियों का जायजा लिया। उनका चेहरा गंभीर था, और उनकी निगाहें तीनों को ध्यान से देख रही थीं। उन्होंने अजन्या और सुहासा से पूछा, "क्या आप उन परिस्थितियों से अवगत हैं जिनके कारण हम यहां मिल रहे हैं?"

सुहासा ने गिलास से घूंट भरते हुए सिर हिलाया और अपनी मूंछों से झाग पोंछा। "शरामना ने हमें एक व्यापक जानकारी दी," उसने अपनी मूंछों को सहलाते हुए कहा।

"और आप दोनों... मुझसे सहमत हैं?" वरारुचि ने सुहासा से अजन्या की ओर देखा।

"जब से हमने बर्बरों को भगाने के लिए आपके साथ मिलकर लड़ाई लड़ी है, तब से हम हमेशा आपसे सहमत रहे हैं, पार्षद महोदय," सुहासा ने उत्तर दिया।

अजन्या को सिर झुकाते देख वरारुचि ने राहत की सांस ली। मेज पर कोहनियों को टिकाकर, उन्होंने उंगलियों को आपस में जोड़ा और सोच-विचार करते हुए बोले।

"आप महान रेगिस्तान से आने वाले खतरे से भली-भांति परिचित हैं— हूण और शक सेनाओं की वापसी। द्वारका को हूणों से बचाने के लिए हुए मुझे एक महीना भी नहीं बीता है। सिंधुवर्त की सेनाओं ने द्वारका में कई सैनिक खो दिए, और जब हूण अर्बुदों को पार करके आएंगे तो हम और भी सैनिक खो देंगे। युद्ध में सैनिकों का खोना अपरिहार्य है, लेकिन मूर्खतापूर्ण भावनाओं के कारण सैनिकों को खोना अक्षम्य है। कालिदास को हूणों के पक्ष में जाने देकर हमने ऐसे नुकसानों का मार्ग प्रशस्त किया है, मित्रों। अपनी मित्रता के खातिर हमारे सम्राट ने हमारे सैनिकों के जीवन को दांव पर लगा दिया है।"

तीनों अधिकारी अपनी सीटों पर थोड़ा हिले-डुले, एक-दूसरे की ओर देखा और सावधानी से सिर हिलाया। वे मूर्ख नहीं थे। वे जानते थे कि वरारुचि का उकसाना राजद्रोह के बराबर था। वरारुचि सम्राट का सलाहकार था।

और उसका सौतेला भाई।

"मैं कालिदास को महल से बाहर जाने की अनुमति कभी नहीं देता, लेकिन उन्हें जाने दिया गया। परिणामस्वरूप, कालिदास के विश्वासघात के कारण राजसेना और सीमा रक्षक दल के अनगिनत सैनिक शहीद होंगे। अब मैं इसे रोकने में असमर्थ हूँ, लेकिन मैं मांग करता हूँ कि सिंहासन उन सैनिकों के प्रति अपने कार्यों का औचित्य सिद्ध करे, जिनके जीवन को उसने जानबूझकर दांव पर लगाया है। सिंहासन अपने सैनिकों को मृत्यु के मार्ग पर तब तक नहीं धकेल सकता जब तक कि वह उन्हें यह न बता दे कि उन्हें सिंहासन की गलतियों के लिए क्यों मरना चाहिए।"

"साउंसलर, मैं इस पूरी बात की निरर्थकता से पूरी तरह सहमत हूँ," अजन्या ने कहा। "शाही सेना में एक कमांडर के रूप में, मैं जानता हूँ कि मेरे सैनिकों की जान

को बहुत बड़ा खतरा है क्योंकि काउंसलर—" वह रुका और खुद को सुधारते हुए बोला, "क्योंकि कालिदास हूणों को हमारी सेना के बारे में हर छोटी-बड़ी जानकारी दे सकता है।"

"आपने कहा कि आप सिंहासन से अपने कार्यों का औचित्य सिद्ध करने की मांग करते हैं..." मेज पर अपनी कोहनियों को टिकाते हुए, सुहासा ने वरारुची को गौर से देखा। "आप सिंहासन से वास्तव में क्या करवाना या कहलवाना चाहते हैं?"

अपने गिलास से एक घूंट भरते हुए, सलाहकार पीछे झुक गया। उसने शरमाना पर एक नज़र डाली। "सामान्य परिस्थितियों में, मैं यहाँ बैठकर आप सभी से इस बारे में बात नहीं कर रहा होता; मैं सम्राट से बात कर रहा होता, और उनसे कहता कि वे आप लोगों से बात करें, ताकि आप उनका संदेश अपने सैनिकों तक पहुँचा सकें और उनके डर को दूर कर सकें। लेकिन वह सम्राट अब महल में नहीं है। जो सम्राट अब महल में है, वह अपने लोगों से बात नहीं करता। अपने लोगों की तो बात ही छोड़िए, वह अब अपने सलाहकारों से भी बात नहीं करता। मुझे यकीन है कि आप घातकपारा के बारे में जानते हैं," वह रुका, और जैसे ही सैनिकों ने सिर हिलाया, उसने शरमाना की ओर इशारा किया। "मुझे उसके गायब होने की जानकारी यहाँ के सेनापति से मिली, महल से नहीं। एक... शब्द... भी नहीं।"

सुहासा, अजन्य और शरमण ने चिंता भरी भौंहों से एक-दूसरे की ओर देखा। यह चिंताजनक था।

"इन परिस्थितियों में, क्या मैं सम्राट से यह उम्मीद करूँ कि वह तुम्हारे सैनिकों के साथ जो हो रहा है, उस पर सहानुभूति दिखाएँगे? नहीं," वरारुचि ने ज़ोर देकर कहा। "क्या मैं सम्राट से यह उम्मीद करूँ कि वह अपने कार्यों को उचित ठहराएँगे? नहीं। सम्राट को अब कोई परवाह नहीं है।" वह रुके और अचानक आगे बढ़े, एक-एक करके सभी सैनिकों के चेहरों को घूरते रहे, जब तक कि उन्हें यकीन नहीं हो गया कि उनका पूरा ध्यान उन पर है।

"उज्जायिनी में दो दिन पहले जो कुछ हुआ था, उससे आप अवश्य परिचित होंगे।" उन्होंने यह देखने के लिए कुछ देर रुककर पूछा कि क्या वे लोग उनकी बात समझ पाए हैं। "इंद्र का आगमन..." उन्होंने आगे कहा।

"हां, हां," सुहासा ने सिर हिलाया।

“क्या आपको पता है कि क्या-क्या हुआ था? इंद्र ने सम्राट से महारानी माँ के बारे में क्या कहा था?”
तीनों अधिकारी स्पष्ट रूप से असहज दिख रहे थे। लेकिन यह देखकर कि वरारुचि उनकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा कर रहा है, सुहासा ने हल्के से सिर हिलाया।
“खैर, महल पर इतना बड़ा आरोप लगने के बाद, आप महारानी माँ से क्या उम्मीद करते हैं?” सलाहकार एक चेहरे से दूसरे चेहरे की ओर देखते हुए, उन लोगों को अपने सवालों का सामना करने के लिए मजबूर कर रहे थे। “मैं उम्मीद करता हूँ कि महारानी माँ इंद्र के दावों का सार्वजनिक रूप से खंडन करेंगी। क्या यह उचित उम्मीद होगी?” उन्होंने उन लोगों की ओर देखा, उनका समर्थन चाहा, और उन्होंने सिर हिलाया। “क्या यह महल का अवंती के लोगों के प्रति न्यूनतम कर्तव्य नहीं है? लेकिन नहीं। इंद्र के आने और उनके द्वारा लगाए गए आरोपों के दो दिन बाद भी, महल की ओर से पूरी तरह चुप्पी है। महारानी माँ अपने लोगों को सच क्यों नहीं बता रही हैं? क्या इसलिए कि उन्हें कुछ छिपाना है? अगर ऐसा है, तो क्या उनके लोगों को यह जानने का अधिकार नहीं है कि वह क्या छिपा रही हैं?”
वरारुचि एक बार फिर पीछे झुक गए, ताकि उनके प्रश्न अधिकारियों के मन में अच्छी तरह से बैठ जाएं। जब उन्हें लगा कि उन्हें सोचने-समझने का पर्याप्त समय मिल गया है, तो उन्होंने अपनी कोहनियाँ मेज पर टिका दीं। “मैं आपको एक और बात बताता हूँ। कल सुबह मैं सम्राट के पास गया और सुझाव दिया कि महारानी माँ इंद्र द्वारा लगाए गए आरोपों के बारे में लोगों को संबोधित करें। लेकिन सम्राट ने मेरी बात सुनने से इनकार कर दिया। वे यही कहते रहे कि राजा महेंद्रादित्य उनके पिता थे, और महारानी माँ को इसमें घसीटने की कोई आवश्यकता नहीं थी। मैं सम्राट की बात पर विश्वास करना चाहता हूँ, लेकिन महारानी माँ को मुझे आश्वस्त करना होगा। उन्हें बस इंद्र के आरोपों का खंडन करना है, लेकिन वे स्थिति स्पष्ट करने से इनकार कर रही हैं। क्यों?”
उस छोटे, घुटन भरे कमरे में, वरारुची द्वारा बोए गए बीज खामोशी में जड़ पकड़ रहे थे और अंकुरित हो रहे थे। एकमात्र खुली खिड़की से युद्ध अभ्यास और लड़ाई के अभ्यासों की आवाज़ आ रही थी।
"पार्षद महोदय, आप क्या करने का प्रस्ताव रखते हैं?" सुहासा ने अंततः पूछा।

"जैसा कि मैंने पहले कहा, क्या मुझे इस नए सम्राट से कुछ कहने की उम्मीद है? नहीं। यह सम्राट सोचता है कि वह जनता के प्रति जवाबदेह नहीं है। महारानी माँ भी सोचती हैं कि वह जनता के प्रति जवाबदेह नहीं हैं। लेकिन जनता जवाबदेह है। हम जनता हैं, और हम सच्चाई जानने पर अड़े हैं—सम्राट के जन्म की सच्चाई। उनके पिता कौन हैं, इस बारे में सच्चाई। हम जानना चाहते हैं कि आदित्यों के सिंहासन पर बैठा व्यक्ति वास्तव में आदित्य है या नहीं। हमें जवाब चाहिए।"

और आप सम्राट और महारानी माँ से हमें जवाब कैसे दिलवाएंगे?

"कमांडर अजन्या, मैं यह करने का प्रस्ताव रखता हूँ।" पार्षद ने हाथ से इशारा करते हुए सैनिकों को पास बुलाया। अपनी आवाज़ को धीमी और रहस्यमयी फुसफुसाहट में बदलते हुए उन्होंने कहा, "इसके लिए मुझे आप सबका पूरा समर्थन चाहिए।"

*

जब ग्रीष्मा को सिंहासन कक्ष में लाया गया, तो शंकु उस व्यक्ति के विशाल कद को देखकर दंग रह गया। वह अपने साथ चल रहे सैनिकों से लगभग एक हाथ लंबा था और उसका शरीर भी उसी के अनुरूप गठीला था। उसके बाल थोड़े बिखरे हुए थे, उसकी खुरदरी भूरी दाढ़ी और मूंछें उसे एक खूंखार रूप दे रही थीं। शंकु को निषाद के घने जंगलों में डाकू के रूप में राहगीरों के सामने उसकी भयावह छवि का ख्याल आए बिना नहीं रह सका।

विक्रमादित्य अपने सिंहासन पर आगे झुकते हुए बोले, "ग्रीष्मा। जंगली ग्रीष्मा।"

"जी... सम्राट।" बूढ़े डाकू ने अपने साथ आए लोगों को गुस्से भरी निगाहों से देखा। उनमें से एक को सिर झटकते देख ग्रीष्मा ने झुककर और हाथ जोड़कर प्रणाम किया। "प्रणाम, महाराज।"

"नमस्कार," राजा ने उत्तर दिया। "तो, आप कभी डाकू हुआ करते थे, है ना?"

सिंहासन कक्ष में सम्राट, चार सलाहकार और कुछ चुनिंदा दरबारी उपस्थित थे। ग्रीष्मा की निगाहें एक चेहरे से दूसरे चेहरे पर घूम रही थीं, क्योंकि वह सोच रही थी कि राजा का प्रश्न उन्हें किस ओर ले जा रहा है और उनके लिए आगे क्या होने वाला है।

"जी हां, माननीय महोदय," अंततः उत्तर आया। "लेकिन मैं एक सम्मानित व्यक्ति था।"

“माननीय?” विक्रमादित्य ने मुस्कुराते हुए कहा। “लूटपाट में सम्मान कहाँ है?”
“मेरा मतलब है कि उस औरत, उस दुल्हन के साथ जो हुआ, उससे मेरा कोई लेना-देना नहीं है... अगर बात उसी की है तो। यह उन तीन नीच आदमियों का काम था जिन्हें मैं कभी भाई मानता था।” यह सोचकर उसके होंठ घृणा से टेढ़े हो गए। “उन तीनों को तो अपने किए की सज़ा मिलनी ही चाहिए थी, बाकी को नहीं।”
"आपका मतलब दंडक में है?"
"जी हां, माननीय न्यायाधीश। अन्य लोगों को उनकी कोई गलती न होने के बावजूद सजा सुनाई गई थी। और उनकी मृत्यु भी उनकी कोई गलती न होने के कारण हुई।"
विक्रमादित्य एक क्षण के लिए चुप रहे। "हमें दंडक के बारे में बताइए।"
शंकु को यकीन था कि सिंहासन कक्ष को रोशन करने वाले अनगिनत दीपों की रोशनी में ग्रीष्मा का चेहरा थोड़ा पीला पड़ गया था। वह घबराकर इधर-उधर हिलने लगा और उसने अपना गला साफ किया।
अंत में उन्होंने कहा, "यह ऐसी जगह नहीं है जहां मैं कभी वापस लौटना चाहूंगा।"
"ऐसा क्यों?"
डाकू ने अपने चारों ओर उत्सुक चेहरों की ओर देखा जो उसे घूर रहे थे। "मुझे सौ सोने के सिक्के मिल जाएंगे, है ना?" उसने पूछा।
“राजगद्दी कभी अपना वादा नहीं तोड़ेगी,” सम्राट ने कहा। “अब हमें दंडक के बारे में बताइए।”
“यह एक ऐसी जगह है जहाँ अथाह आतंक है। मीलों तक फैला जंगल, जहाँ हर कदम पर मौत मंडराती रहती है। बाघ, तेंदुए, जंगली सूअर, अजगर, ज़हरीले कोबरा और सांप, मगरमच्छ, बिच्छू... हर कोई आपको मार डालने के लिए तैयार है। और अगर ये नहीं, तो मच्छर तो हैं ही, जो हर पल मंडराते रहते हैं, हवा में घने बादल छाए रहते हैं। जंगल हमेशा नम रहता है, और सूरज की रोशनी ज़मीन तक मुश्किल से ही पहुँच पाती है। हर झाड़ी और हर पेड़ के तने के पीछे मौत और खतरा मंडराता रहता है। मैंने अपने एक आदमी को पेड़ पर बैठे अजगर द्वारा ज़मीन से खींचे जाते देखा है। मैंने दूसरे को चीखते-चिल्लाते झाड़ियों में घसीटते देखा है, जिसे बाद में पता चला कि उसने उसका सिर चबा डाला था। मैंने एक आदमी को बैल के आकार के जंगली सूअर द्वारा सींगों से मारते देखा है।” उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और काँप उठा। “यह जानकर बहुत बुरा लगता है कि आपका शिकार

किया जा रहा है। रात में बाघों की गुर्राहट सुनाई देती है; तेंदुआ झाड़ियों में गायब हो जाता है। और आप जानते हैं कि जो आप सुन और देख रहे हैं, वह आपको देख रहा है, सही मौके का इंतज़ार कर रहा है हमला करने के लिए।”
"तब तुम्हें आखिरकार समझ आ गया होगा कि तुम्हारे आतंक से आतंकित जंगलों से गुजरते समय तुम्हारी डकैती के शिकार लोगों ने कैसा महसूस किया होगा," वराहमिहिर ने कहा।
“हम शिकार करते थे, लेकिन कभी किसी को मारते नहीं थे...” ग्रीष्मा ने पार्षद की ओर देखा और यह समझते हुए कि वह किसी अधिकारी से बात कर रहे हैं, उन्होंने आगे कहा, “...माननीय। हम हमेशा जान बख्श देते थे। लेकिन दंडका में, हर दिन जीवन-मरण का संघर्ष था। चार साल तक, हर दिन मैं बस एक और दिन जीने के लिए संघर्ष करता रहा।”
“जनस्थान और दानवों के बारे में आप क्या जानते हैं?”
विक्रमादित्य ने अचानक, बिना किसी चेतावनी के, प्रश्न पूछ डाला और शंकु ने बूढ़े डाकू को लड़खड़ाते हुए देखा। उसने पलकें झपकाईं और निगल लिया।
"अगर आप चार साल तक दंडका के अंदर रहे होते, तो आप उनसे जरूर मिले होते।"
“वे...” ग्रीष्मा का चेहरा और भी पीला पड़ गया। “वे उन दरिंदों से भी बदतर हैं जिनके बारे में मैंने तुम्हें बताया था। वे हवा की तरह तेज़ और बिजली की तरह बेरहम हैं। और वे अपने शहर की ज़बरदस्त रक्षा करते हैं। एक बार हम उनके बहुत करीब चले गए, और उन्होंने हम पर हमला कर दिया। हम भाग निकले, लेकिन वे हममें से दो को बंदी बनाने में कामयाब रहे। हम एक हफ़्ते बाद उन दोनों को किसी तरह बचाने की उम्मीद में लौटे, लेकिन जो नज़ारा हमने देखा, वह यह था कि उन्हें शहर के द्वार के पास पेड़ों पर कीलों से ठोंका गया था। तीरों से छेदे हुए, और जंगली जानवरों और पक्षियों द्वारा आधे खाए हुए। वे बर्बर हैं।”
“क्या आपने दानवों के बारे में कुछ सीखा है... उनके शहर के बारे में, उनके शासक के बारे में...?”
“एक बार हमारी मुलाकात कोसला के एक बूढ़े व्यक्ति से हुई, जो एक और निर्वासित था और पता नहीं कैसे सालों तक दंडक में जीवित रहा। उसने अपने लिए एक ऊंचे पेड़ पर झोपड़ी बना रखी थी, शायद इसी वजह से। लेकिन वह बहुत

बीमार था - आप जानते हैं, पेड़ पर चढ़कर बीमारी से बचा नहीं जा सकता। वह हमें देखकर खुश हुआ और हमने उसके मरने से पहले कुछ दिन उसके साथ बिताए।"
ग्रीष्मा ने बोलना बंद कर दिया और उदास होकर सामने देखने लगी, उसका ध्यान उस बूढ़े व्यक्ति पर केंद्रित था। सम्राट ने वर्षों पहले हुई उस मृत्यु के प्रति सम्मान के कारण डाकू को नहीं छेड़ा; बल्कि वह अपने सिंहासन पर बैठा ग्रीष्मा के स्वयं लौटने की प्रतीक्षा करने लगा।
"बूढ़े आदमी के अनुसार, दानवों का नगर जादू से चलता है," डाकू ने अंत में कहा।
"ऐसा लगता है कि दानव जादू के उस्ताद हैं। वे पेड़ों और पत्थरों से असंभव काम करवा सकते हैं," उसने कहा। बूढ़े आदमी ने हमें यह भी बताया कि दानवों में उनके राजा शालिवाहन से बड़ा कोई जादूगर नहीं है।
शालिवाहन, शंकु ने मन ही मन फुसफुसाते हुए नाम को याद कर लिया।
"और जनस्थान जाने का रास्ता... क्या आप उसे जंगल के बीच से ढूंढ सकते हैं?" राजा ने पूछा।
"यह आसान नहीं है, लेकिन हो सकता है—" ग्रीष्मा अचानक रुक गई, चिंतित दिख रही थी। "आप ऐसा क्यों पूछ रहे हैं, महाराज?"
क्योंकि आप ही हमें शहर तक ले जाएंगे।
"नहीं, नहीं... नहीं, महाराज।" विरोध में हाथ हिलाते हुए ग्रीष्मा पीछे हटने लगा। उसका चेहरा पीला पड़ गया था, आँखें भय से चौड़ी हो गई थीं। "मैं निर्वासितों के जंगल में वापस नहीं जा रहा, कृपया... मैं नहीं जाऊँगा।"
वह अपने रक्षकों की तनी हुई तलवारों के सामने आकर रुक गया। सम्राट की ओर मुड़कर उसने दर्द भरी आवाज में कहा।
"माननीय न्यायाधीश, मुझे लगा था कि यह सोने के सिक्कों के बारे में है," उसने शिकायत की। "मुझे किसी ने नहीं बताया कि मुझे दंडक में वापस जाना है। मेरे साथ धोखा हो रहा है..."
"ग्रीष्मा, कोई तुम्हें धोखा नहीं दे रहा है," विक्रमादित्य की आवाज़ ने गुस्से भरे स्वर को चीरते हुए कहा। "तुम्हें वादे के मुताबिक सौ सोने के सिक्के मिलेंगे। दरअसल, हमें अंदर ले जाने से पहले ही तुम्हें सिक्के मिल जाएंगे। हम तुमसे बस इतना चाहते हैं कि तुम जनस्थान तक हमारा मार्गदर्शन करो। हमें अंदर ले जाओ और वापस ले आओ।"

“अगर मैं वहाँ मर जाऊँ तो सोने के सिक्कों का क्या फायदा? नहीं, महाराज,” डाकू ने अपने झबरा सिर को हठपूर्वक हिलाते हुए कहा। “मैं यह नहीं कर सकता। निर्वासितों के जंगल में जाना पागलपन है। आप वहाँ क्यों जाना चाहते हैं? मुझे सोने के सिक्के नहीं चाहिए। जनस्थान तक ले जाने के लिए किसी और को ढूंढिए।”
“तुम इनकार करते हो?” सम्राट ने चतुराई से पूछा।
ग्रीष्मा ने एक बार फिर अपना सिर हिलाया, जिससे उसके इनकार के बारे में कोई संदेह नहीं रह गया।
“बहुत खूब। इस स्थिति में, तुम्हें वैसे भी दंडक वन वापस भेज दिया जाएगा।” डाकू के चेहरे पर हैरानी देखकर विक्रमादित्य ने हल्की सी मुस्कान बिखेरी। “तुम्हें आजीवन वनवास की सजा सुनाई गई थी, लेकिन तुम भाग निकले। अब जब तुम पकड़े गए हो, तो तुम्हें अपनी शेष सजा पूरी करने के लिए वहीं वापस भेज दिया जाएगा—जो तुम्हारे मामले में, तुम्हारी मृत्यु तक होगी।”
“नहीं, महाराज, कृपया,” ग्रीष्मा ने विनती की। “कृपया ऐसा न करें।”
“मैं आपको एक रास्ता बता रहा हूँ,” सम्राट ने अचानक समझदारी से कहा। “हमें जनस्थान ले चलो।”
डाकू को सिर हिलाते देख विक्रमादित्य ने आगे कहा, “किसी भी तरह से तुम्हें दंडक में जाना ही होगा। अगर तुम हमें अपने साथ ले जाकर वापस ले आते हो, तो तुम वहाँ से ज़िंदा निकल जाओगे और तुम्हें सौ सोने के सिक्के इनाम में मिलेंगे। वरना, तुम अंदर जाओगे, वहीं रहोगे और वहीं मर जाओगे। तो, तुम्हारा क्या कहना है?”
“यह तो सरासर अन्याय है...” ग्रीष्मा ने कहना शुरू किया, लेकिन राजा ने उसे बीच में ही रोकते हुए उस पर झल्लाकर उसकी बात काट दी।
“ग्रीष्मा, यही एक रास्ता है। हाँ या ना?”
अत्यंत अनिच्छा के साथ, डाकू ने अंततः सिर हिलाया, उसके कंधे हार के भाव से झुक गए थे।
“अच्छा। एक और सवाल। क्या आप जानते हैं कि दानव किस भाषा में बात करते हैं?”
“जब हम जनस्थान के बहुत करीब पहुँच गए और उन्होंने हम पर हमला किया, तो वे अवंती भाषा में चिल्ला रहे थे...” ग्रेसमा ने अनजाने में ही आश्चर्य से ऊपर देखा, मानो उसे इस बात का अहसास अभी-अभी हुआ हो। उस याद से उसके चेहरे का

रंग उड़ गया। "मैं उन्हें समझ गया था। वे चिल्ला रहे थे और एक-दूसरे को उकसा रहे थे कि हम सबको मार डालें और किसी को भी न छोड़ें।"
"धन्यवाद। अब आप जा सकते हैं।"
जब शंकु ने उसे सिर झुकाए और पैर घसीटते हुए बाहर ले जाते देखा, तो उसने सोचा कि उसके मन में ग्रीष्मा पहले से ही मौत की सजा पा चुका है।
जब सिंहासन कक्ष में फिर से वे दोनों अकेले रह गए, तो विक्रमादित्य ने सलाहकारों और दरबारियों पर एक नज़र डाली। उन्होंने विजय भाव से कहा, "यह काम हो गया। अब यह तय करना है कि जनस्थान की यात्रा कौन करेगा।"
किसी के कुछ कहने से पहले ही क्षपनाका आगे बढ़ीं। उन्होंने कहा, "मैं करूँगी।"
सम्राट ने उसकी ओर देखा, लेकिन धनवंतरी ने पहले बात की। "मुझे लगा कि वरारुचि को वापस बुलाने का यही सही समय है," उसने विक्रमादित्य पर एक नज़र डालते हुए कहा। "ग्रीष्मा ने जो बताया है, उससे तो लगता है कि जंगल खतरों से भरा है..."
"क्षमा कीजिए, लेकिन क्या आप यह कह रहे हैं कि इसमें बहुत खतरे हैं, इसलिए मुझे अंदर नहीं जाना चाहिए?" क्षपणका ने पूछा। "क्या इसलिए कि मैं खतरों से निपटने के लिए सक्षम नहीं हूँ, या इसलिए कि मैं एक स्त्री हूँ, और आपको लगता है कि एक स्त्री पर इस काम के लिए भरोसा नहीं किया जा सकता?"
"क्षपणक, मेरा मतलब बिल्कुल भी वो नहीं था," चिकित्सक के कंधे निराशा से झुक गए। "मुझे पता है कि तुम यह काम करने में पूरी तरह सक्षम हो..."
"अच्छा," क्षपणक ने बीच में ही बात काटते हुए राजा की ओर देखा। "तो फिर यह तय हो गया।"
विक्रमादित्य अभी अपने फैसले पर विचार ही कर रहे थे कि शंकु ने आगे बढ़कर कहा, "मैं कभी कुछ नहीं मांगती, सम्राट, लेकिन आज मैं एक अपवाद बना रही हूँ।"
जब राजा आश्चर्य से उसकी ओर मुड़े, तो लड़की ने गहरी साँस ली। "दानवों से संपर्क करने का विचार मेरी दादी, जो भविष्यवक्ता थीं, से आया। ग्रीष्मा तक पहुँचने का मार्ग मेरे पिता से मिला। मुझे लगता है कि नियति ने मेरे परिवार और मुझे इस यात्रा से जोड़ा है। मुझे शालिवाहन से मिलने और दानवों की सहायता लेने की अनुमति दीजिए।" वह क्षपणक की ओर मुड़ी। "बहन, कृपया मुझे यह मौका दीजिए।"

शंकु के कंधे पर हाथ रखते हुए, क्षपणका मुस्कुराई और सम्राट की ओर देखते हुए बोली, “मुझे शंकु की दंडक के खतरों से निपटने की क्षमता पर पूरा भरोसा है। मेरा प्रस्ताव है कि वह मेरी जगह जाए।”
विक्रमादित्य ने कहा, “हे शंकुबल, हम देवी और तुम्हारे पिता के ऋणी हैं। दोनों ने सिंहासन का सम्मान अर्जित किया है। सिंहासन अब तुम्हें जनस्थान जाकर दानवों के साथ संधि करने का दायित्व सौंपता है। तुम्हारे साथ एक सैन्य टुकड़ी होगी।”
“मुझे किसी सैन्य टुकड़ी की जरूरत नहीं है, सम्राट। मुझे छह बहादुर आदमियों और ग्रीष्मा से ज्यादा कुछ नहीं चाहिए।”
कमरे में मौजूद सभी लोगों की भौंहें हैरानी से तन गईं। एक बुजुर्ग दरबारी ने बीच में टोकते हुए कहा, "पार्षद जी, आपने ग्रीष्मा की बातें सुनीं कि दानव कितने क्रूर होते हैं और वे अपने शहर की रक्षा कैसे करते हैं। छह आदमी दानवों से भरे शहर की रक्षा कैसे कर सकते हैं?"
“अगर आप शांति से जा रहे हैं, तो अपने साथ सेना क्यों ले जा रहे हैं, महाराज?” शंकु ने पूछा। “आचार्य तो बारह आदमियों के साथ ओद्रा गए थे; दानवों के लिए यह अलग क्यों होना चाहिए? अगर दानवों को अपनी ओर सेना बढ़ती हुई दिखाई देगी, तो वे निश्चित रूप से खतरा महसूस करेंगे और हम पर हमला कर देंगे। हमें अपनी रक्षा करनी होगी और बेवजह खून-खराबा होगा। नहीं, समूह जितना छोटा होगा, उतना ही अच्छा होगा। छह ऐसे आदमी जिनके दिल में साहस हो और मुझ पर विश्वास हो। मुझे बस इतना ही चाहिए।”
विक्रमादित्य ने वराहमिहिर की ओर देखा और कहा, “इस मिशन के लिए छह सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों को चुन लो।” शंकु की ओर मुड़कर उन्होंने पूछा, “तुम कब रवाना होने का इरादा रखते हो?”
"कल, अगर इससे पहले संभव न हो तो।"

विद्रोह

सड़क के किनारों और बैरकों, अस्तबलों, शस्त्रागारों और अन्य भवनों के बीच के खुले स्थानों में पाले की मोटी परत जमी हुई थी, लेकिन सड़क घोड़ों के खुरों और सैनिकों के कदमों से कीचड़ से लथपथ भूरी थी। सुबह की शांत हवा में एक नम ठंडक एक अदृश्य कफ़न की तरह छाई हुई थी, जो मत्स्य के उत्तर-पश्चिमी छोर पर स्थित कासवती की चौकी में प्रवेश करते समय राजा बाणहस्त और शशिवर्धन के कंधों पर भारी पड़ रही थी।

किसी बड़े जानवर की खाल से बने एक साधारण लबादे में दुबके बाणहस्त ने उदास आकाश की ओर थकी हुई निगाहों से देखा और कंपकंपाते हुए विराटपुरी की गर्माहट और उमंग को याद करने लगे। उत्तर-पश्चिम का सन्नाटा इतना गहरा था कि ऐसा लग रहा था मानो वे पृथ्वी के दूसरे छोर पर आ गए हों। और अगर उन्हें कासवती के बारे में ऐसा महसूस हो रहा था, तो वे सोच रहे थे कि वत्स के धूप से भरे मैदानों में जन्मे और पले-बढ़े शशिवर्धन का उस जगह पर क्या हाल होगा। बाणहस्त को लग रहा था कि राजकुमार मत्स्य की सीमा पर सेवा करने के अपने संकल्प पर दोबारा विचार कर रहे होंगे।

राजा ने शशिवर्धन पर एक नज़र डाली, जो अपनी काठी पर अजीब तरह से बैठा था, ज़ुकाम से चेहरा लाल किए हुए, अपनी ऊनी कमीज़ की आस्तीन से नाक पोंछ रहा था। बाणहस्त को अब भी यकीन नहीं हो रहा था कि राजकुमार मत्स्य की रक्षा में शामिल होने के बारे में गंभीर है। भले ही वह गंभीर था, राजा को यह अच्छा

विचार नहीं लगा - वह नहीं चाहता था कि उसके सबसे अच्छे मित्र का इकलौता बेटा, जो अब वत्स का राजा भी बनने वाला था, अफीम और केसर की खेती करने वालों और लुटेरे गिरोहों से भरे इस पहाड़ी इलाके में मर जाए। लेकिन फिर उसकी नज़र राजकुमार के अंगरक्षक पीयूष और शशिवर्धन के साथ आए नौ अन्य सैनिकों पर पड़ी। बाणहस्त ने मान लिया कि राजकुमार के कौशांबी लौटने की संभावना है, बशर्ते वह कोई बहुत ही वीरतापूर्ण या पूरी तरह से मूर्खतापूर्ण काम न करे।

सैन्य भवनों और कासवती नगरवासियों के स्वामित्व वाले कुछ घरों और प्रतिष्ठानों के बीच से बेतरतीब ढंग से रास्ता बनाते हुए, काफिला एक खुले चौक पर पहुँचा, जिसके एक छोर पर कासवती के छावनी कमांडर का छोटा सा मुख्यालय स्थित था। उनके आगमन की खबर छावनी तक देर से पहुँची थी, और जैसे ही वे चौक पार करने लगे, सामंत और नौकर चारों दिशाओं से उनका स्वागत करने के लिए दौड़ पड़े, जिससे हलचल मच गई। बाणहस्त और शशिवर्धन लगभग छावनी कमांडर के क्वार्टर तक पहुँच ही गए थे कि स्वयं कमांडर लड़खड़ाते हुए, धुंधली आँखों और लाल चेहरे के साथ बाहर निकला।

"प्रणाम, महाराज," उन्होंने दो छोटी सीढ़ियाँ उतरते हुए और झुककर प्रणाम करते हुए कहा। "मैं कल रात देर तक जागा हुआ था, और मुझे इतनी सुबह आपसे मिलने की उम्मीद नहीं थी। अगर मुझे पहले से पता होता..."

"हमने रात भर ठंडे, कमज़ोर तंबू में बिताने के बजाय घोड़े पर सवार होकर ही आगे बढ़ने का फैसला किया," बानाहस्ता ने घोड़े से उतरते हुए बीच में ही कहा। लगाम एक इंतज़ार कर रहे सहायक को सौंपकर, उन्होंने अपने दुबले-पतले शरीर को फैलाया और चौकी पर एक नज़र डाली। फिर, अपने घोड़े से उतर चुके शशिवर्धन की ओर मुड़कर उन्होंने कहा, "राजकुमार, मैं कमांडर अद्री हूँ, चौकी का प्रभारी। कमांडर, जैसा कि आप जानते हैं, राजकुमार यहाँ आपके साथ आ रहे हैं। मुझे आशा है कि आपने उनके ठहरने को आरामदायक बनाने के लिए कदम उठाए होंगे।"

"जी हां, महाराज," गैरीसन कमांडर ने शशिवर्धन को जल्दी से झुककर प्रणाम करते हुए कहा। "राजकुमार, आपके आगमन से कसवती गैरीसन सम्मानित महसूस कर रहा है। अगर मैं गलत नहीं हूं, तो यह आपकी इस क्षेत्र की पहली यात्रा है?" वह शशिवर्धन से लगाम लेने के लिए आगे बढ़ा।

शशिवर्धन, बाणहस्त के साथ शामिल हो गए, जो अपनी चौकी का निरीक्षण जारी रखे हुए थे। राजा की दृष्टि चौक के एक कोने में जल्दबाजी में बनाए गए तंबुओं के समूह पर टिक गई।
"मुझे लगता है कि ये हमारे सहयोगियों की सेनाएं हैं?" उसने पूछा।
“जी महाराज,” अद्री ने उत्तर दिया। “राजा भूमिपाला के दरबार से, कोसल की भारी घुड़सवार सेना की सौ टुकड़ियाँ हैं।” हाथ घुमाते हुए उन्होंने आगे कहा, “हमारे पास उनकी पैदल सेना की पाँच सौ टुकड़ियाँ और अनार्तों की कुछ सौ और टुकड़ियाँ भी हैं।”
“सुनिश्चित करें कि उन्हें अच्छे से खाना मिले और उनकी ठीक से देखभाल हो,” बानाहस्ता ने इमारत की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए तंबुओं की ओर इशारा किया। “उन्हें अतिरिक्त कंबल और फर दें। वे गर्म जलवायु वाले क्षेत्रों से आए हैं और इस ठंड के आदी नहीं हैं। वे सैनिक तो हैं ही, साथ ही हमारे मेहमान भी हैं।”
जोर से सिर हिलाते हुए, चौकीदार ने अपने राजा और शशिवर्धन को एक चौकोर कमरे में ले गया, जिसके एक कोने में लकड़ी की आग जल रही थी। कमरा अँधेरा और धुएँ से भरा था, लेकिन अपेक्षाकृत गर्म था, और यही सबसे ज़रूरी था। अपना भीगा हुआ लबादा उतारकर बाणहस्त एक कुर्सी पर बैठ गए, और शशिवर्धन ने भी उनका अनुसरण किया। उनके अंगरक्षक, पीयूष, अंदर आए और द्वार पर खड़े हो गए, और कुछ ही देर में चौकीदार के तीन अधिकारी भी उनके साथ आ गए। जैसे ही एक अधिकारी ने मेज पर नीले साटन का नक्शा खोला, चौकीदार ने आगंतुकों के हाथों में शराब के घड़े थमा दिए। अपने घड़े से एक लंबा घूँट लेते हुए, बाणहस्त ने महसूस किया कि शराब उनके शरीर में गर्माहट भर रही है। गला साफ़ करते हुए, उन्होंने उन लोगों को घूरकर देखा।
"ताज़ा खबर क्या है?" उसने पूछा, उसके गहरे, नुकीले चेहरे पर आग की लपटें चमक रही थीं।
“उत्तर दिशा में स्थित तीन निगरानी मीनारों पर हमला किया गया और उन्हें जला दिया गया...” अधिकारियों में से एक ने कहना शुरू किया, लेकिन राजा ने उसे बीच में ही रोक दिया।
"रुको, यह तो पिछले हफ्ते की बात है, है ना?"

“जी नहीं, महाराज,” दूसरे अधिकारी ने कासवती और उसके आसपास के क्षेत्र के चित्रित मानचित्र पर उंगली रखते हुए उत्तर दिया। “पिछले सप्ताह नष्ट किए गए निगरानी बुर्ज यहीं दक्षिण-पश्चिम में थे। उत्तर में स्थित तीनों बुर्जों पर पिछले दो दिनों में हमला हुआ था।”
उस आदमी के शब्दों को समझने में कुछ क्षणों का सन्नाटा छा गया।
“क्या इन हमलों में हमने अपने कुछ जवान खोए?” बानाहस्ता ने अपनी आवाज में घबराहट को छिपाने की पूरी कोशिश की।
"नहीं, माननीय न्यायाधीश। हमलों के समय किसी भी टावर पर कोई सैनिक तैनात नहीं था।"
"और कुछ?"
“कल सुबह तड़के, यहाँ से कुछ मील पश्चिम में बीस जवानों के एक गश्ती दल पर घात लगाकर हमला किया गया,” एड्री ने कहा। “यह एक छोटी-सी झड़प थी जो ज़्यादा देर तक नहीं चली।” एक सन्नाटा छा गया। “माननीय, हमारे दो जवान शहीद हो गए, जबकि पाँच अन्य घायल हो गए।”
गुस्से से राजा का जबड़ा तन गया। "हमलावरों का क्या हुआ? क्या उनमें से कोई मारा गया या पकड़ा गया?"
“मुझे खेद है, महाराज। वे हमेशा की तरह घोड़े पर सवार तीरंदाज थे। हमारे सैनिकों के जवाबी हमले से पहले ही वे भाग निकले।”
"क्या हमलावर डाकू हो सकते थे? मेरा मतलब है, मुझे बताया गया है कि इन इलाकों में बहुत सारे डाकू हैं।"
सभी की निगाहें शशिवर्धन की ओर मुड़ गईं, जिसने छावनी में प्रवेश करने के बाद पहली बार बात की थी। बाणहस्त ने राजकुमार को शराब का घड़ा एक ही बार में खाली करते देखा था; उसे संदेह था कि शराब ने उस युवक की जुबान खोल दी थी।
“महामहिम, डाकू अगर संभव हो तो कानून के रखवालों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना पसंद नहीं करते,” अद्री ने जवाब दिया। “गश्ती दल पर घात लगाकर हमला करना और सैनिकों को मारना धंधा चलाने का बहुत बुरा तरीका है, क्योंकि इससे केवल कानून के रखवालों का गुस्सा ही भड़कता है।”
“हमने गश्ती दल पर चलाए गए तीरों की बारीकी से जांच की, महोदय,” अधिकारियों में से एक ने धीमी आवाज में कहा। “वे निश्चित रूप से साका मूल के थे।”

"ओह," राजकुमार शांत हो गया। उसने अपना खाली घड़ा उठाया, उसमें देखा और वापस मेज पर रख दिया। अद्री ने तुरंत एक जग से घड़ा भर दिया। बाणहस्ता ने मन ही मन तय कर लिया कि जब शशिवर्धन आसपास हो तो वह सेनापति को शराब का सेवन संयम से करने के लिए कहेगा।
"हमारे पास और क्या है?" उसने पूछा।
"फिलहाल बस इतना ही, माननीय न्यायाधीश।"
राजा मानचित्र को ध्यान से देख रहे थे और एकाग्रता से अपनी नुकीली दाढ़ी खींच रहे थे। दक्षिण-पश्चिम और उत्तर में स्थित पहरेदार मीनारें नष्ट हो चुकी थीं, और पश्चिम में गश्ती दल पर हमला हुआ था। हमले एक विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए थे, जिससे रक्षा व्यवस्था कमजोर पड़ गई थी और पूरा क्षेत्र असुरक्षित और असुरक्षापूर्ण हो गया था।
शशिवर्धन ने लड़खड़ाती आवाज़ में कहा, "मुझे शकों की रणनीति समझ नहीं आ रही है। मेरा मतलब है, वे हमारे किले जला रहे हैं और हमारी सेना पर हमला कर रहे हैं, लेकिन अभी तक हम पर आक्रमण क्यों नहीं कर रहे हैं? क्या वे हमसे डरते हैं?"
"उनकी रणनीति तो लुटेरों की ही है," बानाहस्ता ने मन ही मन आह भरते हुए कहा। यह वही आदमी था जिसने युद्ध के बुनियादी नियम भी जाने बिना ही बर्बरों से लड़ने का बीड़ा उठाया था। अब उसके जीतने की उम्मीद बहुत कम थी।
"यह क्या है?"
जब आप किसी क्षेत्र पर कब्जा करते हैं, तो आपको उसे सैनिकों से सुरक्षित करना पड़ता है। जितना अधिक क्षेत्र आप कब्जा करते हैं, उसे बनाए रखने के लिए आपको उतने ही अधिक प्रयास करने पड़ते हैं, और आपके पास सैनिकों की संख्या उतनी ही कम होती जाती है। सैनिकों को स्थानांतरित करने से कब्जा किए गए क्षेत्र को खोने का खतरा रहता है। इसलिए, एक बार क्षेत्र पर कब्जा करने के बाद, आप हमलावर से रक्षक बन जाते हैं। लेकिन यदि आपकी रणनीति छापेमारी की है, तो आप लगातार गतिशील रहते हैं, कभी भी किसी क्षेत्र की रक्षा करने के लिए बाध्य नहीं होते, हमेशा हमलावर की स्थिति में रहते हैं। आप फुर्तीले होते हैं, जबकि आपका प्रतिद्वंद्वी सुस्त होता है और आसानी से आगे नहीं बढ़ सकता। आप अपने प्रतिद्वंद्वी को जहाँ चाहें वहाँ परेशान करने के लिए स्वतंत्र होते हैं, क्योंकि आपको

क्षेत्र पर कब्जा बनाए रखने के लिए सैनिकों को तैनात करने का बोझ नहीं होता। एक हमलावर के रूप में, आप रक्षा करने वाली सेना को धमका सकते हैं, परेशान कर सकते हैं और आम तौर पर उसे हताश कर सकते हैं - आप प्रतिद्वंद्वी को बुरी तरह से परेशान कर सकते हैं।

"मैं समझ गया।" शशिवर्धन ने सिर हिलाया। अपना घड़ा खाली करके वह पीछे झुक गया। आग और शराब का असर हो चुका था और ऐसा लग रहा था कि चर्चा में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं रही।

बाणहस्ता चिंतित आँखों से मानचित्र पर वापस लौट आया। उसने शशिवर्धन को यह नहीं बताया था कि छोटे-छोटे हमलों में उलझकर घुसपैठिए सिंधुवर्त की सेना के साथ खिलवाड़ कर रहे थे, उन्हें बड़े पैमाने पर रक्तपात होने से पहले तनाव में रखे हुए थे।

उन्होंने कहा, "चौकियों का पुनर्निर्माण करवाएं और दिन-रात बड़ी टुकड़ियों की तैनाती करवाएं। गश्ती दल की संख्या बढ़ाकर तीस कर दें, जिनमें से प्रत्येक में कम से कम आधा दर्जन घुड़सवार सैनिक हों।"

"माननीय, मैंने पहले ही निगरानी मीनारों के पुनर्निर्माण का आदेश दे दिया है और काम जारी है," चौकी के कमांडर ने उत्तर दिया। "हमने अग्रिम चौकियों पर सैनिकों को भेजना भी शुरू कर दिया है। लेकिन हमें प्रत्येक चौकी पर और अधिक सैनिकों की आवश्यकता है। हमारे पास सैनिकों की भारी कमी है।"

"पांच सौ सैनिक और सौ तीरंदाजों को आपकी सेना में शामिल होने के लिए नियुक्त किया गया है। वे कुछ दिनों में यहां पहुंच जाएंगे।"

"मुझे डर है कि यह पर्याप्त नहीं होगा, महाराज। हमें कम से कम इससे दोगुनी संख्या और इन पहाड़ियों की रक्षा के लिए कुछ घुड़सवार सेना की सहायता की आवश्यकता है।"

बानाहस्ता ने एक गहरी आह भरी और कुर्सी पर पीछे झुक गए। "मत्स्य की एक लंबी सीमा है जिसमें चार छावनियाँ हैं, और मेरे पास चार छावनियों के कमांडर हैं जो मुझसे मेरी क्षमता से दोगुने सैनिक मांग रहे हैं। कमांडर, मैं अपने संसाधनों के साथ पूरी कोशिश कर रहा हूँ। आशा है आप भी ऐसा ही करेंगे।"

एड्री ने अपनी नज़रें झुका लीं और सिर हिलाया। मेज के दूसरी ओर जहाँ शशिवर्धन बैठा था, वहाँ से हल्की सी खर्राटे की आवाज़ आई।

राजा अपनी कुर्सी घुमाकर पियुषा की ओर देखने लगे। "राजकुमार के साथ यहाँ आने के लिए धन्यवाद, सेनापति। यह भूमि भले ही ठंडी और शत्रुतापूर्ण हो, लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मत्स्य के सैनिकों में कभी भी स्नेह और भाईचारे की कमी नहीं होगी।"

"हमें आपके सैनिकों के साथ लड़ने पर गर्व है," अंगरक्षक ने जवाब दिया।

"तो फिर बहादुरी से लड़ो, और सिंधुवर्त के लिए लड़ो।" अपनी कुर्सी पीछे धकेलते हुए बाणहस्ता खड़े हुए और अद्री को संबोधित करते हुए बोले, "राजकुमार के विश्राम करने के बाद, मैं उन मीनारों की ओर चलना चाहता हूँ जिन पर हमला हुआ था। चलिए उत्तर की ओर वाली मीनारों से शुरू करते हैं।"

बाणहस्त के द्वार की ओर बढ़ते ही चौकी के सेनापति ने प्रणाम किया। राजा मोर्चे पर जाना चाहते थे, ताकि उनकी सेना—और वत्स, कोसल और अनर्तों की टुकड़ियाँ—उन्हें निहारने के लिए किसी चौकी के आराम से आदेश देने के बजाय, ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों पर सवार होकर सैनिकों से बात करते हुए देख सकें। इससे संदेश फैलेगा, सैनिकों का मनोबल बढ़ेगा, और जब समय आएगा, तो उन्हें उम्मीद थी कि सैनिक और भी अधिक जोश के साथ युद्ध में उतरेंगे।

बरामदे में आते ही बाणहस्त ने सिर उठाया और ठंडी, स्वच्छ हवा में सांस ली। उन्होंने पश्चिम की ओर बढ़ते हुए अर्बुदा पर्वतों की ओर जाते हुए पहाड़ियों का अवलोकन किया। पश्चिम की ओर देखते हुए, उन्हें विराटपुरी से निकलते समय मिली खबर याद आई—कालिदास और विक्रमादित्य के बीच मतभेद होने और उज्जैनी महल छोड़ने की एक परेशान करने वाली खबर। खबर संक्षिप्त थी, लेकिन उसमें कालिदास के हूण वंश का होने और सीमा की ओर पश्चिम की ओर जाने का जिक्र था। बाणहस्त ने शशिवर्धन को इस बारे में कुछ नहीं बताया था—वे राजकुमार के मन पर और बोझ नहीं डालना चाहते थे—लेकिन अब अकेले होने पर, वे उस खबर के प्रभाव के बारे में चिंतित हुए बिना नहीं रह सके।

अगर कालिदास सचमुच हूण थे, और अगर उन्होंने बर्बरों का साथ दिया था, तो आने वाले युद्ध का परिणाम बर्बरों के पक्ष में पहले से ही तय था, उन्होंने उदास मन से सोचा। तो फिर पहाड़ियों पर घूमकर और अपनी सेना का मनोबल बढ़ाकर वे किसे धोखा दे रहे थे? और वे एक शराबी राजकुमार को तलवारबाजी में माहिर होने का दिखावा करने की अनुमति क्यों दे रहे थे?

बाणहस्त को यह अहसास होने लगा था कि दिन-ब-दिन अपने राज्य और सिंधुवर्त की रक्षा करने को लेकर उनका आत्मविश्वास कम होता जा रहा था।

*

"त्वक, त्वक।"

सबसे आगे चल रही बैलगाड़ी के चालक ने अधीरता से लगाम झटक दी, और बैलों ने जुए पर अपना पूरा भार डाल दिया, जिससे घरेलू सामानों के पहाड़ के नीचे लगभग दबी हुई बैलगाड़ी कांप उठी और चरमरा गई। विशाल लकड़ी के पहिये पहले तो लगभग न के बराबर ही चले, फिर धीरे-धीरे गति पकड़ी, और पूरी डगमगाती हुई संरचना सड़क पर चल पड़ी। इसी तरह सामान से लदी चार और बैलगाड़ियाँ पहली गाड़ी के पीछे-पीछे चल रही थीं, जिससे थकी हुई चरमराहट और किचकिच की आवाज़ों का एक काफिला बन गया। जो परिवार जा रहे थे, वे सबसे पीछे थे, उनके कंधे झुके हुए थे मानो हर कोई यादों का बोझ ढो रहा हो, और हर कोई एक बार रुककर उन चीजों को उदास निगाहों से देखता था जिन्हें वे छोड़ रहे थे।

पास के एक तटबंध से लोगों और बैलगाड़ियों के इस दयनीय जुलूस को देखकर विक्रमादित्य ने दुखी होकर आह भरी। वे अपने घोड़े पर सवार थे, उनके बाईं ओर क्षपनाका और दाईं ओर नगर रक्षक दल का एक वरिष्ठ सेनापति बैठा था। उन्होंने सेनापति से पूछा, "क्या आपके सैनिकों को जनता से किसी प्रतिरोध या असहयोग का सामना करना पड़ा है?"

"माननीय, यह परिस्थितियों पर निर्भर करता है," कप्तान ने अपने दुबले-पतले कंधों को उचकाते हुए कहा। "कुछ जगहों पर तो कोई घटना नहीं हुई – हम उन्हें राजमहल के आदेश बताते हैं, वे समझ जाते हैं और हमारे लिए काम आसान कर देते हैं। लेकिन दूसरी जगहों पर हठधर्मिता है, बात मानने से इनकार है।" उन्होंने अपनी ठुड्डी से पाँच जा रही गाड़ियों की ओर इशारा करते हुए कहा। "उनमें से चार परिवारों को कोई समस्या नहीं हुई, लेकिन पाँचवीं गाड़ी में बैठा बूढ़ा आदमी अड़ियल था। वह यही कहता रहा कि लोगों को पहले कभी इस तरह की असुविधा नहीं हुई, यहाँ तक कि पिछले हूण आक्रमण के दौरान भी नहीं। उसे परिवार के बाकी सदस्यों के साथ जाने के लिए मनाना बहुत मुश्किल था।"

“याद रखें कि किसी भी प्रकार की बल प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए,” राजा ने याद दिलाया। “किसी को भी अपना घर छोड़कर जाने की अनिश्चितता पसंद नहीं होती। आइए हम उनके दर्द को और न बढ़ाएं।”
“महाराज, आपके डर के बारे में सैनिकों को बता दिया गया है। वे सावधान रहेंगे।”
क्षपनाका ने पूछा, "अब तक कितने परिवारों को विस्थापित किया जा चुका है?"
"पार्षद महोदय, मेरे पास आज सुबह के आंकड़े नहीं हैं, लेकिन कल दोपहर से लेकर कल देर रात तक हमने लगभग बीस परिवारों को स्थानांतरित कर दिया था।"
“सिर्फ बीस?” क्षपणक थोड़ा चिंतित लग रहा था। “पूरे शहर से?”
“सभी नहीं, पार्षद जी। हमने उत्तर और उत्तर-पश्चिम के जिलों से शुरुआत की थी। कल हमें बस इतना ही कवर करना था। ये बीस आंकड़े केवल उन्हीं क्षेत्रों से हैं।”
क्षपणक को राहत महसूस हुई।
विक्रमादित्य ने बादलों से घिरे आकाश की ओर तिरछी नज़र से देखा। हवा में बारिश की हल्की सी आहट थी। “जिन लोगों को निकाला गया है... क्या उनके पास रहने के लिए कोई और जगह है? या उन्हें अस्थायी शिविरों में ले जाया जा रहा है?”
“उनमें से अधिकतर लोगों के पास रहने की जगह है,” कप्तान ने जवाब दिया। “केवल कुछ ही लोग शिविरों की ओर जा रहे हैं।”
“शिविरों का प्रभार किसे सौंपा गया है?” सम्राट ने क्षपणक से पूछा।
“मैं नगर सुरक्षा बल का कमांडर हूँ। लेकिन मैं व्यवस्थाओं की देखरेख कर रहा हूँ। मेरा इरादा आज दोपहर बाद और कल शिविरों का दौरा करने का है ताकि यह सुनिश्चित कर सकूँ कि सभी व्यवस्थाएँ ठीक से संपन्न हैं।”
“यह अच्छी बात है। सुनिश्चित करें कि शिविरों में पर्याप्त मात्रा में तंबू हों। कोई भी बिना आश्रय के न रहे, खासकर बारिश होने पर। साथ ही, पर्याप्त भोजन और पानी की व्यवस्था भी सुनिश्चित करें।”
मैंने इसका ध्यान रखा है, लेकिन मैं दोबारा जांच करूंगा।
विक्रमादित्य ने कप्तान की ओर मुड़कर कहा, "आज शाम को महल को उन परिवारों की संख्या के बारे में सूचना भेज देना जिन्हें आज निकाला गया है।"
"जी हां, माननीय।"
राजा और क्षपणक ने अपने घोड़ों को थोड़ा सा हिलाया और एक शांत गली में उतर गए। हवा तेज़ हो गई और ऊपर पेड़ों की डालियाँ हिलने लगीं, जिससे सम्राट और

क्षपणक पर पत्तों की बौछार होने लगी। जैसे-जैसे वे आगे बढ़े, लोहे के व्यापारियों की तबाह बस्ती नज़र आने लगी। कुछ मरम्मत का काम शुरू हो चुका था, लेकिन बहुत कुछ अभी भी वैसा ही था जैसा अही के हमले के अगले दिन था।
“हमारे लौह भंडार की क्या स्थिति है, क्या आप जानते हैं?” विक्रमादित्य ने टिप्पणी की।
"वराहमिहिर के पास नवीनतम आंकड़े होंगे, लेकिन मुझे संदेह है कि वे बहुत अच्छे नहीं हैं," निराशाजनक जवाब आया।
“मुझे आश्चर्य है कि ओड्रा में आचार्य का क्या हाल रहा होगा। अब तक तो उन्हें रानी अभिरामी से मिल लेना चाहिए था।” सम्राट रुककर तमालपत्र के पेड़ की लटकती शाखा से एक पत्ता तोड़ लाए। जैसे ही उन्होंने पत्ते को अपनी उंगलियों में मसलकर उसकी सुगंध ली, उन्होंने आगे कहा, “मुझे उम्मीद है कि वे उन्हें हमारे साथ व्यापार करने के लिए मना पाए होंगे।”
क्षपणक ने सिर हिलाया लेकिन कोई जवाब नहीं दिया। वे चुपचाप आगे बढ़ते रहे, गली से निकलकर उज्जैन की मुख्य उत्तर-दक्षिण सड़क पर मुड़ गए, जहाँ दिन की चहल-पहल शुरू हो चुकी थी।
क्षपनाका ने अचानक कहा, “मुझे अभी-अभी यह बात समझ में आई कि शंकु के जनस्थान जाने के बाद, हमारे पास अब केवल चार पार्षद बचे हैं। नौ से घटकर चार रह गए हैं।”
विक्रमादित्य ने सिर हिलाया। “यह बात मेरे मन में कल रात आई थी। इसीलिए मुझे उम्मीद है कि आचार्य ओड्रा की अपनी यात्रा पूरी करके वापस लौट रहे होंगे।”
“हमें वररुचि को भी वापस बुला लेना चाहिए।” क्षपनाका ने अपने राजा की ओर तिरछी नज़र से देखा।
कुछ देर सोचने के बाद जवाब आया, "हमें ऐसा करना ही होगा। महल लौटते ही मैं उसे संदेश भिजवा दूंगा।"
वे अभी सौ कदम भी मुश्किल से चले ही थे कि महल के रक्षकों का एक घुड़सवार सड़क के दूसरे छोर पर दिखाई दिया। वह सरपट दौड़ रहा था, और उसे सड़क पर तेजी से आते देख विक्रमादित्य और क्षपणक सतर्क हो गए और अपने घोड़ों को आगे बढ़ाते हुए बीच रास्ते में ही रक्षक से मिलने के लिए दौड़ पड़े। जैसे ही वे एक-दूसरे के करीब पहुँचे, सम्राट ने घुड़सवार को विस्मया के रूप में पहचान लिया। जब

राजा और सलाहकार अभिवादन करने की दूरी पर आ गए, तो विस्मया ने अपने घोड़े की लगाम खींची और नीचे उतर गया।
“तुम्हें इतनी जल्दी क्यों है?” राजा ने पूछा।
“माननीय महोदय, पार्षद धनवंतरी और पार्षद वराहमिहिर ने मुझे आपको लेने के लिए भेजा है।”
“क्यों?” विक्रमादित्य और क्षपणक ने घबराहट से एक-दूसरे की ओर देखा। केवल कोई अत्यंत महत्वपूर्ण और संवेदनशील मामला ही हो सकता था जिसके लिए रक्षकों के प्रमुख को भेजा गया हो।
“महामहिम... वे...” विस्मया रुक गई, मानो सही शब्दों की तलाश कर रही हो।
क्षपणक ने अधीरता से आग्रह किया, "आगे बढ़ो।"
गार्डों के मुखिया ने माफी मांगते हुए अपने पैर हिलाए। “यह...” उन्होंने जल्दी से चारों ओर देखा ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कोई आस-पास न हो, और पूरी तरह से आश्वस्त होने के लिए, उन्होंने अपनी आवाज़ धीमी कर ली। “यह पार्षद वरारुची के बारे में है।”
“उसका क्या हाल है?” सम्राट पहले तो हैरान दिखे, फिर चिंतित हो गए। “क्या वह ठीक हैं?”
"जी हां, महाराज। बात बस इतनी सी है कि... उसने आपसे अवंती के राजा पद से इस्तीफा देने की मांग की है।"
विक्रमादित्य और क्षपणक विस्मय को देखते हुए पलकें झपकाते रह गए, वे इतने स्तब्ध थे कि सुनी हुई बात का पूरा अर्थ भी नहीं समझ पा रहे थे। वे धीरे-धीरे मुड़े, मानो मालवा और गोश्रृंग के कुशल कठपुतली कलाकारों के हाथों की कठपुतलियाँ हों, एक-दूसरे को बड़ी-बड़ी आँखों से देखने लगे, और फिर महल के रक्षकों के प्रमुख की ओर देखा, जो उनके सामने सिर झुकाए खड़े थे।
“क्या वह मुझसे अवंती के राजा पद से हटने की मांग कर रहा है?” ये शब्द धीरे-धीरे निकले, हर एक शब्द संदेह और अविश्वास से भरा हुआ था।
“जी हां, सम्राट।”

*

भूमिपाला ऊपरी मंजिल के बरामदे में कंधे झुकाए, हाथ पीछे रखे टहल रहे थे, उनके चेहरे की शिकन से ऐसा लग रहा था मानो उन पर कोई तूफान मंडरा रहा हो। उनके दरबारी कद्रू, कीर्तन और अधीपा के साथ दो अन्य महल अधिकारी भी शामिल हो गए थे, और वे पांचों एक तरफ खड़े होकर राजा को निहार रहे थे, उनके चेहरे पर उदासी और चिंता साफ झलक रही थी।

"मुझे उसकी जान के साथ जुआ नहीं खेलना चाहिए था। कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं..." राजा ने उदास मन से अपनी दाढ़ी के बीच से बुदबुदाते हुए कहा। "मुझे जोखिम का पता था, लेकिन मैंने पल्लवन के साथ ऐसा जोखिम उठाया, जो मुझे कभी नहीं उठाना चाहिए था। यह सब मेरी गलती है," उन्होंने निराशा में सिर हिलाया।

"माननीय महोदय, कृपया स्वयं को दोष देना बंद करें," काद्रू ने विनती की। "जो होना था वो हो गया। पार्षद पल्लवन की मृत्यु के लिए आप जिम्मेदार नहीं हैं।"

"लेकिन ऐसा ही है," भूमिपाला गुस्से में इधर-उधर घूमते हुए अड़े रहे। "मैंने ही उसे गिरिव्रज जाने की इजाज़त दी थी ताकि वह मगध की राजसभा को शूरसेना के बारे में सच्चाई बता सके। अगर मैंने उसे जाने न दिया होता, तो वह पकड़ा ही न जाता। और मैंने ही संगीतकार की जगह कैदी को भेजने का मूर्खतापूर्ण विचार सोचा था – मुझे पता होना चाहिए था कि कोई न कोई मेरी चाल समझ जाएगा और पल्लवन को इसकी कीमत अपनी जान देकर चुकानी पड़ सकती है।" राजा के होंठों से निराशा और अपराधबोध की एक टूटी हुई सिसकी निकली। उन्होंने अपने हाथ अपने चेहरे पर रख लिए और दुख से खुली हथेलियों को घूरने लगे। "पल्लवन का खून मेरे हाथों पर है।"

"ऐसा नहीं है, महाराज।" कोसल की सेना के वृद्ध सेनापति अधीपा, भूमिपाल के मार्ग में दृढ़ता से आगे बढ़े। "महाराज, पल्लवन का खून शूरसेना के हाथों पर है। और शूरसेना को इसकी कीमत चुकानी होगी। कोसल हर हाल में इस कर्ज को चुकाएगा। यह कर्ज शूरसेना को घुटने टेकने पर मजबूर कर देगा।"

सेनापति के शब्द जोशीले, सशक्त और प्रेरणादायक थे, और भूमिपाला ने देखा कि उनके दरबारी कंधे उचकाकर और सीना चौड़ा करके उनका समर्थन कर रहे हैं। राजा ने अधीपा की आँखों में देखा और उनमें एक ऐसा दृढ़ संकल्प पाया जो उन्होंने

कई वर्षों से नहीं देखा था। उन्होंने सेनापति का कंधा पकड़कर उसे हल्के से दबाया, मानो धन्यवाद व्यक्त कर रहे हों।
“महाराज, आपका क्या प्रस्ताव है?” राजा ने पूछा।
"युद्ध।"
भूमिपाल ने बाकी दरबारियों की ओर देखा और पाया कि उनमें से किसी के पास कुछ और कहने को नहीं था। वह मुड़ा और बरामदे की रेलिंग की ओर चल पड़ा। उस पर झुककर उसने अजिरावती नदी के फैलाव पर विचार किया, जो उत्तर की ओर पहाड़ों से तेज़ी से मैदानों की ओर बह रही थी, और फिर वहाँ फैलकर धूप में एक आलसी, मोटे मगरमच्छ की तरह आराम कर रही थी। आलसी और मोटा। उसने महसूस किया कि यह कोसल का सटीक वर्णन था। उसका राज्य अजिरावती नदी के आशीर्वाद से धन्य था, जिसने मिट्टी को उपजाऊ बनाए रखा था, और कृतज्ञ भूमि वर्षों से अपनी उपज बरसा रही थी। हूण-शक आक्रमण के चरम पर भी, आक्रमणकारियों ने कभी कोसल पर कब्जा नहीं किया था, और राज्य उनकी बर्बरता के सबसे बुरे परिणामों से बचा रहा था। पश्चिम में वत्स, मत्स्य और अवंती तथा पूर्व में मगध से घिरा कोसल वर्षों से सुखमय रहा था - लेकिन अब अनिश्चितता की ठंड हवा में बह रही थी।
“हमारे सर्वश्रेष्ठ सैनिक मत्स्य में सीमा की रक्षा कर रहे हैं।” भूमिपाला ने अधीपा की ओर मुड़कर पूछा, “क्या हम ऐसे शत्रु से युद्ध कर सकते हैं जो संख्या और क्षमता में हमसे कई गुना अधिक शक्तिशाली है?”
“कई बार युद्ध की कीमत से परे जाकर शांति की कीमत का आकलन करना ज़रूरी हो जाता है—जो युद्ध की कीमत से भी कहीं ज़्यादा हो सकती है, महाराज,” सेनापति ने उत्तर दिया। “शांति का क्या अर्थ, यदि वह हमारी गरिमा और आत्मसम्मान को छीन ले, महाराज? पल्लवन को शूरसेना की सेना ने मार डाला है, और यदि हम पलटवार नहीं करते, तो हम कोसल के लोगों को क्या संदेश दे रहे हैं? क्या वे यह संदेश दे रहे हैं कि कोसल के नागरिकों का कोई मूल्य नहीं है? क्या वे यह संदेश दे रहे हैं कि कोई भी हमारी जान लेने के लिए स्वतंत्र है और हम अपनी रक्षा में एक उंगली भी नहीं उठाएंगे? लड़ने की हमारी इच्छा इस बात से तय होनी चाहिए कि क्या सही है, न कि इस बात से कि जीत संभव है या नहीं।”

“माननीय महोदय, मैं आपसे सहमत हूँ,” कीर्तना ने अधीपा के बगल में खड़े होते हुए कहा। “मैं हमेशा से युद्ध को लेकर सतर्क रही हूँ, लेकिन अगर हम इस आक्रमण के खिलाफ कार्रवाई नहीं करते हैं, तो हम कमजोर और अप्रभावी साबित होंगे, और हम अपनी जनता का विश्वास खोने का जोखिम उठाएंगे।”

भूमिपाला ने सिर हिलाया। “मैं सहमत हूँ, इसलिए नहीं कि मुझे लोगों की राय की चिंता है, बल्कि इसलिए कि मैं पल्लवन का बदला लेना चाहता हूँ। हमें लड़ना ही होगा, और हम लड़ेंगे।” वह रुका और सोचते हुए अपनी दाढ़ी खुजाने लगा। “लेकिन इससे यह तथ्य नहीं बदलता कि मगध एक श्रेष्ठ युद्ध शक्ति है। हम स्थिति को थोड़ा संतुलित करने के लिए क्या कर सकते हैं; हम किससे सहायता मांग सकते हैं?”

“मुझे नहीं लगता कि हमें किसी से मदद मांगनी चाहिए—हम निराश ही होंगे,” कद्रू ने कहा। दूसरों को असमंजस में देखते हुए उसने आगे कहा, “हमारे सभी सहयोगियों ने सिंधुवर्त की रक्षा के लिए अपनी सेनाएं तैनात कर रखी हैं, जैसे हमने की हैं, इसलिए मुझे संदेह है कि उनमें से किसी के पास मगध के साथ हमारी लड़ाई के लिए सैनिक होंगे। हम अवंती से अनुरोध कर सकते हैं, शायद उनसे यह पूछ सकते हैं कि क्या वे हमें पार्षद अमर सिंह या पार्षद वरारुचि दे सकते हैं, लेकिन चूंकि वे देव और असुरों के हमलों से निपट रहे हैं, मुझे नहीं लगता कि हमारा अनुरोध स्वीकार किया जाएगा।”

"खैर, पार्षद कालिदास के अदालत छोड़ने की खबर के बाद, अवंती खुद ही उथल-पुथल से जूझ रही है," कीर्तना ने आगे कहा।

“क्या उस खबर में कोई सच्चाई है, महाराज?” दूसरे दरबारियों में से एक ने घबराकर पूछा। “ऐसी अफवाहें फैल रही हैं कि पार्षद कालिदास हूण जासूस हैं, और यह कि...”

“अगर अफवाहों पर यकीन किया जाए तो कुछ भी सच माना जा सकता है,” भूमिपाला ने कड़े शब्दों में चेतावनी दी, हालांकि मन ही मन वह उज्जैन में हो रही घटनाओं और सिंधुवर्त में सभी पर उनके पड़ने वाले प्रभावों को लेकर चिंतित थे। फिर भी, उन्हें अपने आदमियों को काबू में रखना था। “हमें अभी तक यह नहीं पता कि जो कुछ कहा जा रहा है उसमें से कितना सच है, लेकिन ऐसा लगता है कि कालिदास अब सम्राट विक्रमादित्य के साथ नहीं हैं। ऐसा क्यों है, आगे क्या होगा... इन सवालों के जवाब अभी तक हमारे पास नहीं हैं। लेकिन मैं सलाहकारों से सहमत

हूं," उन्होंने कद्रू और कीर्तन की ओर इशारा करते हुए कहा। "हम अपने सहयोगियों से मदद नहीं मांग सकते; ऐसा लगता है कि हमें यह लड़ाई अकेले ही लड़नी होगी।" दरबारी अचानक निराश होकर एक-दूसरे की ओर देखने लगे।

"हम अकेले नहीं हैं, महाराज। हमारे पास वह संगीतकार है, जो राजा सिद्धसेना की हत्या का प्रत्यक्षदर्शी था," अधीपा ने उन्हें याद दिलाया। "हमें उसकी कहानी जल्द से जल्द सार्वजनिक करनी होगी। खबर को मगध में तेजी से फैलने दें ताकि लोगों के मन में संदेह पैदा हो सके। हमें शूरसेना को कमजोर करने के लिए हर संभव उपाय अपनाना होगा। इसी से मुझे किकाटा प्रतिरोध की याद आती है। जब से शूरसेना ने राजा सिद्धसेना की हत्या का इस्तेमाल किकाटाओं के खिलाफ नफरत भड़काने के लिए किया है, किकाटा जनजाति के सदस्य अपने ऊपर होने वाले हमलों के खिलाफ बचाव के लिए एकजुट हो रहे हैं। मुझे बताया गया है कि अब यह एकजुटता मगध के खिलाफ सशस्त्र प्रतिरोध का रूप ले चुकी है। हम किकाटा प्रतिरोध के नेताओं से संपर्क कर सकते हैं और देख सकते हैं कि हम एक-दूसरे की मदद कैसे कर सकते हैं।"

"यह तो बहुत अच्छी खबर है, जनरल।" थोड़ी राहत महसूस करते हुए भूमिपाला ने एक गहरी साँस ली। "क्या हमें पता है कि किकाटाओं के नेता कौन हैं और हम उनसे कैसे संपर्क कर सकते हैं?"

"मेरी जानकारी के अनुसार, प्रतिरोध ने मगध के दक्षिण-पश्चिम में स्थित जंगलों में, ऋक्षा पर्वतमाला की तलहटी में अपनी जड़ें जमा ली हैं। मैं उनके नेताओं के बारे में पूछताछ शुरू करूँगा और उनसे संपर्क स्थापित करने का प्रयास करूँगा।"

"ऐसा करो, और हाँ, चलो गजकेतु ने उस सुबह गिरिव्रज के महल की सीढ़ियों पर जो देखा, उसकी खबर फैलाना शुरू करें।" भूमिपाला ने चुनौती भरे अंदाज़ में अपनी दाढ़ी हवा में लहराई। "चलो शूरसेना के विरुद्ध युद्ध की तैयारी करें। चलो पल्लवन का बदला लें।"

*

"उन्होंने आज सुबह मुसिली की चौकी पर शाही सेना के एक हिस्से को संबोधित करते हुए यह मांग रखी। उनके साथ तीन चौकी कमांडर थे, और जिन सैनिकों को उन्होंने संबोधित किया वे उनके अधीन थे।"

उन्होंने अपने भाषण में वास्तव में क्या कहा?
धनवंतरी ने धीरे से गला साफ किया। "आज सुबह मिली शुरुआती खबरों के अनुसार, वरारुचि चाहते हैं कि आप सिंहासन छोड़ दें क्योंकि आप..." वे रुके, "... क्योंकि उनका दावा है कि आप जन्म से आदित्य नहीं हैं, और केवल एक आदित्य ही अवंती के सिंहासन का उत्तराधिकारी हो सकता है।"
राजा ने वैद्य से नज़रें हटा लीं और ठंडी हवा में लहराते पर्दों पर टिक गईं, जो झील पर हल्की बूंदा-बांदी ला रही थी, जिससे झील की सतह बारिश की बूंदों और लहरों के बीच नाचने लगी थी। परिषद की मेज के पास केवल चार ही लोग थे - सम्राट, धनवंतरी, वराहमिहिर और क्षपणक। अन्य छह सलाहकारों की अनुपस्थिति में, मेज विशाल प्रतीत हो रही थी, कांसे, सोने, मूंगे और नीलमणि से निर्मित एक भव्य, बंजर, शिकारी विस्तार, जो कमरे की हर चीज़ को बौना बना रहा था। परिषद की शक्ति में लगातार हो रही कमी को देखकर क्षपणक कंपकंपी से कांप उठीं और खिड़कियों से आती तेज़ हवा से बचने के लिए उन्होंने अपनी बाहें मोड़ लीं।
"लेकिन विक्रम, उसकी यह मांग सशर्त है," वराहमिहिर ने कहा। "उसने स्पष्ट रूप से कहा है कि वह चाहता है कि महारानी माँ इंद्र द्वारा लगाए गए आरोपों का खंडन करते हुए सार्वजनिक घोषणा करें। बशर्ते महारानी माँ तुम्हारे आदित्य वंश की पुष्टि करें..."
"...मैं राजा बना रह सकता हूँ," सम्राट ने सलाहकार का वाक्य पूरा किया। वह खिड़की से नज़रें नहीं हटा रहा था, और उसकी आँखों में एक उदास भाव था। "मुझे पता है।"
विक्रमादित्य चिंतन में डूबे रहे और तीनों सलाहकारों ने कुछ नहीं कहा। अंत में, वराहमिहिर ने चुप्पी तोड़ी। "शायद महारानी को मनाया जा सके..."
नहीं, वह ऐसा नहीं करेगी।
सम्राट ने वराहमिहिर की ओर अचानक मुड़कर सिर हिलाया और कहा, "मैंने उसे वचन दिया है कि उससे पूछताछ नहीं की जाएगी।"
"उसे बस इतना करना है..." लंगड़े पार्षद ने कहना शुरू किया, लेकिन उसे एक बार फिर बीच में ही रोक दिया गया।
"वह झूठ नहीं बोलेगी, और मैं उसे सच बोलकर सबके सामने खुद को अपमानित नहीं करने दूंगी।"

विक्रमादित्य के शब्दों का पूरा अर्थ समझ में आते ही सलाहकारों ने एक-दूसरे की ओर देखा। राजा मुड़े और खिड़की के पास गए, जहाँ से हल्की-हल्की बूँदें कमरे में आ रही थीं। बाहर झुककर उन्होंने उन बारीक बूँदों को अपने ऊपर उठे चेहरे पर गिरने दिया, जिससे उनकी त्वचा में जलन होने लगी। उन्होंने एक पल के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं, ताकि हवा और पानी उनकी जलती हुई त्वचा को आराम दे सकें।
“मुझे इस बात की परवाह नहीं कि मेरा असली पिता कौन है। मैं महेंद्रादित्य के सिवा किसी को अपना पिता नहीं मानता।” चेहरे से पानी पोंछते हुए सम्राट ने फिर अपने सलाहकारों की ओर रुख किया। “लेकिन क्या इससे मुझे अवंती पर शासन करने की वैधता मिल जाती है, वह वैधता जो वरारुचि मांग रहे हैं? शायद नहीं। अगर अवंती पर सिर्फ आदित्य ही शासन कर सकते हैं, तो मैं नहीं कर सकता क्योंकि मैं आदित्य नहीं हूँ।”
"कृपया मुझे बताएं कि आप इस मांग को मानने के बारे में नहीं सोच रहे हैं," धनवंतरी की आवाज आशंका से भर उठी।
“विक्रमा, जल्दबाजी में फैसले मत लो...” वराहमिहिर ने अपनी बात शुरू की।
“नहीं, मैं पद नहीं छोड़ रहा हूं,” सम्राट ने स्पष्ट किया।
वह मेज के पास आया। “हालात अलग होते तो मैं ऐसा करता। लेकिन अब अवंती के सामने इतने सारे खतरे हैं कि थोड़े समय के लिए भी उसका राजा न होना नामुमकिन है। मैंने अपनी प्रजा की रक्षा करने का वचन दिया है। जंगली, देव और असुर किसी भी समय आ सकते हैं, इसलिए मैं अपनी प्रजा को सिर्फ इसलिए नहीं छोड़ूंगा क्योंकि अब मैं उनका राजा नहीं हूं। यही एक कारण है।”
बैठते हुए राजा ने हाथ हिलाकर दूसरों को भी बैठने का इशारा किया। “इसके अलावा, अगर मैं वरारुचि की मांगों को मान लेता हूँ, तो मैं एक तरह से महारानी माँ को कटघरे में खड़ा कर दूँगा और सबकी ओर से उनका न्याय करूँगा। एक ही झटके में मैं उनकी गरिमा को उज्जैन की सड़कों पर घसीट दूँगा; मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैंने पिता को वचन दिया था कि मैं माता के सम्मान की रक्षा करूँगा। मैंने महारानी माँ से भी यही वादा किया है।”
“हम समझते हैं, विक्रम,” वराहमिहिर ने कहा।
“अगर मुझे पद न छोड़ने का तीसरा कारण चाहिए, तो वह वरारुचि के कार्यों की अनुचितता है— उसने मुसिली में जो किया है, वह राजद्रोह के बराबर है।” सम्राट का

चेहरा कठोर और अटल हो गया। "जब वह मेरे पास आकर महारानी माँ से इंद्र के आरोपों का खंडन करने की माँग करने लगा, तो मैंने उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन उसने मेरी बात नहीं सुनी। मैं समझता हूँ कि वह दुखी है; वह पिता से बहुत प्रेम करता था, और इंद्र के अपमान से उसे बहुत आहत हुआ होगा। मुझे भी आहत हुआ था। और आज भी होता है। लेकिन उस समय संवाद की आवश्यकता थी—विद्रोह की नहीं।"
"इसीलिए तो मैं चाहता था कि उस सुबह कोई उसके पीछे जाए, विक्रमा," धनवंतरी ने कहा। "कोई ऐसा जो उससे बात कर सके, उसकी शिकायत का समाधान कर सके। लेकिन तुम उसे अकेला छोड़ना चाहते थे।"
"उस सुबह तो वह बात करना नहीं चाहता था," राजा ने उत्तर दिया। "पर तुम सही कह रहे हो। शायद मुझे तुम्हें रोकना नहीं चाहिए था।" वह कुछ पल सोच में पड़ गया। "और उस दिन, मुझे लगा कि मैं वरारुचि को अच्छी तरह जानता हूँ। लेकिन जिस वरारुचि को मैं जानता था, वह यह वाला नहीं है। जिसे मैं जानता था, वह कभी भी अपने समर्थन में सेना जुटाकर महल को चुनौती देने के बारे में नहीं सोचता।"
"मुसिली ही क्यों?" क्षपनाका ने उत्सुकता से पूछा। "यह तो एक उचित सैन्य छावनी भी नहीं है।"
"शायद इसलिए कि शरमाना उस चौकी का सेनापति है," चिकित्सक ने कंधे उचकाते हुए कहा। "वह वरारुचि का पुराना वफादार है, जैसे सुहासा और अजन्या, अन्य सेनापति जिन्हें वरारुचि का समर्थन प्राप्त प्रतीत होता है। इन सभी ने हूणों और शकों के विरुद्ध अभियान में वरारुचि के साथ मिलकर लड़ाई लड़ी थी।"
"क्या यही एकमात्र कारण है कि उन्होंने वरारुचि का समर्थन किया है?" क्षपनाका ने इस संभावना से हैरान होकर पूछा।
"हमें नहीं पता," वराहमिहिर ने कहा। "मुझे शक है कि उसने उनके डर का फायदा उठाया होगा या किसी तरह उनके अहंकार को संतुष्ट किया होगा। अधिक जानकारी मिलने पर हमें बेहतर पता चलेगा।" वह रुका और भौंहें उठाकर अपने साथियों की ओर देखा। "सवाल यह है कि अब हम आगे क्या करें? इस पर हम कैसे प्रतिक्रिया दें?"
धनवंतरि ने कहा, "हमें वररुचि को बातचीत में शामिल करना चाहिए।"

“अभी नहीं,” विक्रमादित्य ने किसी के कुछ कहने से पहले ही असहमति जताते हुए कहा। “हम पहले उसे संदेश भेजेंगे, जिसमें उससे कहेंगे कि वह अपनी मांगें वापस ले ले और अपने द्वारा एकत्रित सैनिकों को भंग कर दे। बिना किसी शर्त के। जब वह सहमत होगा, तभी सिंहासन उससे बातचीत करेगा।”
“वह तुम्हारा भाई है, विक्रमा।”
"ऐसा लगता है कि इस विचार ने उन्हें पीछे नहीं रोका है।"
क्षपणक और वराहमिहिर ने अनिश्चितता भरी निगाहों से एक-दूसरे को देखा।
"मेरी राय में, स्थिति पूरी तरह से बेकाबू होने से पहले हमें उनसे बात कर लेनी चाहिए," चिकित्सक ने दृढ़ता से कहा।
“सेना जुटाना और सिंहासन के विरुद्ध भड़काऊ भाषण देना राजद्रोह है,” राजा ने तीनों सलाहकारों को ध्यान से देखते हुए कहा। “वरारुचि इस बात से भलीभांति परिचित था, और इसके परिणामों से भी, फिर भी उसने ऐसा किया। उसे याद दिलाना होगा कि ऐसे कृत्यों को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। हमें यह स्पष्ट करना होगा कि सिंहासन को धमकाकर या डराकर बातचीत के लिए मजबूर नहीं किया जाएगा। वरारुचि को अपना विद्रोह रोकना होगा—अवंती के राजा के रूप में मुझे इससे कम कुछ भी स्वीकार्य नहीं है।”

पलायन

चौड़े पत्थर के चबूतरे से उत्तरा तोसाली का अबाधित दृश्य दिखाई देता था, जो खाड़ी की ओर धीरे-धीरे ढलानदार था, जहाँ नावों और मछली पकड़ने वाली नौकाओं की

छोटी-छोटी बत्तियाँ आने वाली धाराओं के उफान में हिलती-डुलती थीं। शहर स्वयं महल के दोनों ओर फैला हुआ था, जिसका बायाँ भाग समुद्र में बाहर की ओर मुड़कर एक चट्टानी टीला बनाता था, जिस पर उत्तरा तोसाली के अधिष्ठाता देवता को समर्पित एक मंदिर का शिखर बना हुआ था।

वेताल भट्ट ने ठंडी रात की हवा में झुकते हुए और गहरे रंग की सुगंधित लकड़ी से बने एक फ्लास्क से सोमा की चुस्की लेते हुए, इन सब बातों को एक नज़र में समेट लिया। ऋक्ष पर्वत पार करने के बाद उन्होंने पहली बार स्नान किया था और चंदन की खुशबू से महकते साफ कपड़े पहने हुए थे। फिर भी, तमाम सुख-सुविधाओं के बावजूद, आचार्य के चेहरे पर शिकन थी, शॉल के नीचे उनके कंधे तनाव से सिकुड़े हुए थे और वे बढ़ती बेचैनी को दर्शाते हुए एक पैर से दूसरे पैर पर हिल रहे थे।

वे अंततः सूर्यास्त के समय उत्तरा तोसाली में पहुँचे, और प्रधान सलाहकार को बड़ी राहत मिली क्योंकि शहर के द्वार पर तैनात रक्षक ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया, जिससे शहर से होते हुए महल तक की उनकी यात्रा सुगम हो गई। महल में भी उनका अत्यंत सम्मानपूर्वक अभिनंदन किया गया, और आचार्य को अभिरामी से सफल मुलाकात की उम्मीद सताने लगी थी, तभी उन्हें पता चला कि रानी शहर में नहीं हैं - वे पाँच दिन पहले अपने भाई वीरयंका के साथ फसल उत्सव मनाने तोसाली गई थीं, और उन्हें ओद्रा लौटने में कुछ दिन लगेंगे।

वेताल भट्ट के पास इसका सीधा सा हल था। वह तोसाली जाने के लिए तैयार थे और वहाँ अभिरामी से मिलने को तैयार थे, और अगर रास्ते में कहीं रानी से मुलाक़ात हो जाए तो और भी अच्छा होगा। लेकिन ओद्रा के भले मंत्रियों ने उन्हें धैर्यपूर्वक समझाया कि उनकी रानी समुद्र मार्ग से यात्रा कर रही हैं, इसलिए बेहतर होगा कि आचार्य उत्तरा तोसाली में उनका इंतज़ार करें। तो अब वह यहाँ थे, सुगंधित मदिरा पी रहे थे और अप्रत्याशित देरी से नाराज़ होकर दाँत पीस रहे थे, साथ ही भूत दलदल में बीते हर अनमोल पल को कोस रहे थे।

अपने बाईं ओर दरवाजा खुलने की आवाज सुनकर, पार्षद ने मुड़कर देखा तो एक आकृति छत पर आ रही थी। आचार्य को ओद्रा के किसी अधिकारी या महल के किसी सेवक की उम्मीद थी, इसलिए उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि आने वाला व्यक्ति उन्हें कुछ जाना-पहचाना सा लग रहा था। जब उस व्यक्ति ने मुस्कुराकर

अभिवादन में हाथ उठाया, तब जाकर वेताल भट्ट ने उसे पहचाना और पूरी हैरानी से उसे घूरने लगे।
“राजगुरु जी, नमस्कार,” उस व्यक्ति ने मुस्कुराते हुए झुककर कहा।
“कुलपति सुदासन, आप यहाँ क्या कर रहे हैं?” वेतला भट्टा ने अचानक कहा।
वांगा के पुराने गणराज्य के प्रमुख ने तुरंत जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, वे आचार्य के पास गए और एक बार फिर औपचारिक रूप से झुककर प्रणाम किया। उन्होंने कहा, "मुझे बताया गया था कि आप यहाँ हैं। आप शाम को आए थे, है ना?"
“जी हां।” राजगुरु ने अपने सामने खड़े उस गरिमामय चेहरे को निहारते हुए देखा, जो हाल के दिनों में वांगा द्वारा झेली गई सारी पीड़ाओं का बोझ लिए हुए था। “आप यहां देखने की मुझे बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी।”
“हाहा, ये तो बहुत लंबी कहानी है,” सुदासन ने आह भरी। “आपने ताम्रलिप्ति में हुए नरसंहार के बारे में तो सुना ही होगा।” जब वेताल भट्ट ने सिर हिलाया, तो कुलाधिपति ने कहा, “जब भद्रक और अन्य दो सरदारों ने अपनी वफादारी बदल ली, तो कपिल के नेतृत्व में शूरसेना की सेना ने वंगा पर आसानी से कब्जा कर लिया। फिर मगध के सेनापति दैपायन ने भद्रक की मदद से हमारी महासभा के सत्रह सदस्यों को पकड़ लिया और उन सभी को ताम्रलिप्ति के मुख्य बाजार में फांसी पर लटका दिया।”
"निर्दयी हत्या," मुख्य पार्षद ने भयभीत होकर घूरते हुए कहा।
कुलाधिपति ने सिर हिलाया। “हममें से बाकी लोग ताम्रलिप्ति से भाग गए। हम पूर्व की दलदली भूमि में छिप गए, लेकिन जब हमें पता चला कि वे हमारी तलाश कर रहे हैं, तो हमें एहसास हुआ कि अंततः हम पकड़े जाएँगे। हमने कहीं शरण लेने का फैसला किया, और हमारे पास केवल तीन ही विकल्प थे: प्राग्ज्योतिषपुरा, श्रीभोज और श्रीविजय के राज्य, या यहाँ। इसलिए, हम यहाँ हैं।”
“और रानी अभिरामी ने आपको शरण दी है?” आचार्य के चेहरे पर आशा की झलक थी। वे जानते थे कि अगर उन्होंने शरण दी है, तो इसका मतलब है कि ओद्रा और कलिंग बाहरी लोगों के प्रति नरम रुख अपना रहे हैं, जो एक अच्छा संकेत है।
“अभी नहीं। आपकी तरह हम भी उसके राजा वीरयंका के दरबार में जाने के बाद ही यहाँ पहुँचे हैं। हम भी उसके लौटने का इंतज़ार कर रहे हैं, ताकि वह हमारे भाग्य

का फैसला कर सके।" सुदासन ने घबराकर अपने होंठ चाटे। "मुझे उम्मीद है कि वह हमारी स्थिति पर सहानुभूति जताएगी।"
"ठीक है।" वेतला भट्टा ने अपनी निराशा छिपाने की कोशिश की। वे अपनी शराब की चुस्की लेने ही वाले थे कि चांसलर के हाथ खाली देखकर और शिष्टाचार याद करके उन्होंने कहा, "आपका गिलास कहाँ है? क्या मैं आपके लिए सोमा मंगवा दूँ?"
"नहीं, नहीं, मैं ठीक हूँ," सुदासन ने सिर हिलाया। फिर, राजगुरु की ओर उत्सुकता से देखते हुए, "आप ओड्रा क्यों आए हैं?"
"आपकी तरह, मेरी कहानी भी लंबी है," आचार्य ने उत्तर दिया। फिर उन्होंने कुलाधिपति को सिंधुवर्त में लोहे की बढ़ती कमी, उज्जैन में लोहा व्यापारियों की बस्ती पर अही के हमले और लौह अयस्क की आपूर्ति में भारी कमी की आशंकाओं के बारे में बताया। "सम्राट अवंती, ओद्रा और कलिंग के बीच लौह अयस्क की खरीद के लिए एक व्यापार संधि स्थापित करना चाहते हैं, साथ ही श्रीभोज और श्रीविजय के साथ व्यापार जारी रखने के लिए तोसाली और उत्तरा तोसाली बंदरगाहों का उपयोग करना चाहते हैं।"
"अच्छा ऐसा है।"
सुदासन कुछ देर चुप रहा, शहर की रोशनी और खाड़ी में चांद के प्रतिबिंब को निहारता रहा। अंत में, उसने वेताला भट्टा की ओर मुड़कर पूछा, "आपको ऐसा क्यों लगता है कि अभिरामी और वीरयंका अवंती के साथ व्यापारिक गठबंधन के लिए सहमत होंगे?"
चांसलर के लहजे में चुनौती और संदेह का भाव था, जिससे राजगुरु अचानक क्रोधित हो गए। "वही चीज़ जो आपको यह सोचने पर मजबूर करती है कि वे आपको राजनीतिक शरण देने के लिए सहमत हो जाएँगे - उम्मीद।"
सुदासन के शब्दों का गहरा असर हुआ और उन्होंने अपनी निगाहें झुका लीं, मानो वे टूट चुके हों। अपनी कठोरता पर पछतावा करते हुए वेतला भट्टा ने चांसलर के कंधे पर हाथ रखा। "मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था। मेरा इरादा आपको दुख पहुँचाने का नहीं था। मुझे लगता है कि थकान और तनाव के कारण ऐसा हुआ।"
"कोई बात नहीं, राजगुरु," सुदासन मुस्कुराया। "मैंने खुद ही ऐसा चाहा था, इसलिए कृपया माफी न मांगें।"

आचार्य ने सोम समाप्त किया और खाड़ी की ओर मुड़कर देखने लगे। उन्हें अपने होंठ चबाते और मुंडेर पर उंगलियों से थपथपाते देख कुलाधिपति ने पूछा, "क्या कोई और बात आपको परेशान कर रही है?"

"मुझे उज्जैन वापस जाना ही होगा। शहर पर लगातार खतरा मंडरा रहा है, लोग बहुत डर में जी रहे हैं, और सम्राट और उनकी परिषद पर बहुत दबाव है। मैं व्यापारिक समझौते को जल्दी सुलझाकर वापस लौटना चाहता था, लेकिन लगता है अब मुझे कुछ दिन और इंतजार करना पड़ेगा।" उन्होंने हथेली से दीवार पर ज़ोर से मारा। "काश मैं तोसाली जाकर रानी से मिल पाता, लेकिन ये लोग तो इसके लिए उत्सुक नहीं लगते।"

अब सुदासन की बारी थी कि वह वेताला भट्टा के कंधे पर दिलासा भरा हाथ रखे। "यह निराशाजनक हो सकता है, लेकिन समय और भाग्य अपनी गति से चलते हैं, राजगुरु। हम केवल धैर्य रख सकते हैं और जो कुछ भी हमारे नियंत्रण से बाहर है उसे शालीनता से स्वीकार कर सकते हैं।"

आचार्य काफी देर तक चुप रहे, फिर अंत में उन्होंने आह भरी और कुलाधिपति को सिर हिलाकर सहमति दी। दोनों व्यक्ति वापस मुड़कर चंद्रमा को पिघलते हुए चांदी की तरह चमकते हुए और लहरों पर सवार होकर तट पर आते हुए देखने लगे।

*

उंगलियों से कोई चीज बनाने से पहले, वह दिमाग में बनती है।

घटाकरपारा को उस बूढ़े बढ़ई के निर्देश याद आए जो उन्होंने और अतुल्यातेजा को कई साल पहले उस भीषण गर्मी में दिए थे, जब वे दोनों उसकी छोटी सी दुकान में झुके हुए बैठे थे, हाथों में चाकू लिए, बांस की बांसुरी तराशना और लोहे की लकड़ी से पक्षियों के घोंसले बनाना सीख रहे थे, जबकि क्षिप्रा नदी बाहर शांत रूप से बह रही थी।

अगर आप इसे अपने मन में नहीं देख सकते, तो आपकी उंगलियां कितनी भी फुर्तीली क्यों न हों, कोई फायदा नहीं। यही उसकी समस्या है... अतुल्यातेज की ओर इशारा करते हुए... वह देख नहीं सकता, इसलिए बना भी नहीं सकता।

अपनी हथेली में चाबी का भार महसूस करते हुए—जो कठोर और बर्फीली थी, लेकिन हाथ की गर्मी से पिघलने लगी थी—राजकुमार सोचने लगा कि क्या उसने जो

देखा वह सही था। उसे उम्मीद थी कि वह सही ही देख रहा था। उसका भाग निकलना इसी पर निर्भर था।

उसने दूसरे हाथ से फिसलन भरी चाबी को बड़ी सावधानी से उठाया, उसकी बर्फीली ठंड से उसकी उंगलियां सुन्न हो गईं। ऊंची खिड़की से आती चांदनी में उसने चाबी को ध्यान से देखा और उस पर पिघल रहे पानी को फिर से इकट्ठा करके उसे बर्फ की तरह जमा दिया। जब चाबी उसकी संतुष्टि के अनुसार फिर से बन गई, तो उसने उसे सावधानीपूर्वक उस ताले में डाल दिया जिससे उसकी कलाइयां एक दूसरे से और दीवार के ब्रैकेट से बंधी हुई थीं।

अपने अपहरणकर्ताओं से आमना-सामना होने की सुबह से ही—और जब उसे पता चला कि वह पानी के साथ कुछ कमाल के करतब कर सकता है—घटकरपारा ने जागते हुए लगभग हर पल इस नई कला में महारत हासिल करने में बिताया। उसे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि यह रहस्यमयी प्रतिभा कहाँ से और कैसे आई, लेकिन उसने जल्दी ही महसूस किया कि जितना ज़्यादा वह इस पर काम करता, उतना ही वह पानी को आकार देने में माहिर होता जाता। पहले दिन दोपहर तक, वह घड़े और छोटी तश्तरियों जैसी साधारण वस्तुओं के टेढ़े-मेढ़े मॉडल बनाने में सक्षम हो गया था, और शाम तक, वह जानवरों की कच्ची लेकिन पहचानने योग्य आकृतियाँ बनाने में कामयाब हो गया था। सुबह होते ही उसने फिर से काम शुरू किया और पूरी सुबह पानी को बर्फ या भाप में बदलने और फिर बर्फ और भाप को वापस पानी में बदलने की कला में महारत हासिल कर ली। दोपहर के बाद से, उसका पूरा ध्यान उन तीन औजारों को बनाने, बिगाड़ने और फिर से बनाने पर केंद्रित था जिनकी उसे कैद से बाहर निकलने के लिए ज़रूरत थी।

राजकुमार ने मन ही मन चाबी पर विचार करते हुए, ताले के खांचे के दबाव को महसूस करते हुए, उसे धीरे से ताले में घुमाया। एक पल के लिए रुकावट आई—घातक क्षण जब घटाकरपारा को लगा कि उसकी कोशिशें बेकार जा रही हैं—और फिर ताला खुल गया, जंजीरें ढीली होकर ज़मीन पर गिर गईं। पत्थर के फर्श पर उनकी भारी आवाज़ इतनी तेज़ थी कि मुर्दे भी जाग जाएं, लेकिन राजकुमार आने वाले कदमों की आहट सुनने के लिए इंतज़ार करता रहा, फिर भी कोई जाँच करने नहीं आया। पिछले दो दिनों से वह असाधारण रूप से अच्छा कैदी रहा था, हमेशा शांत रहता था और बिना किसी शिकायत के खाता-पीता था; उसने अनुमान लगाया

कि शकों ने आखिरकार यह तय कर लिया था कि उसे कड़ी निगरानी की ज़रूरत नहीं है।

अपनी कलाई रगड़ते हुए और बांहों को हिलाते हुए, जिससे रक्त संचार बेहतर हो सके, उसने अपनी उंगलियों से बर्फ की चाबी की ओर इशारा किया। चाबी पल भर में पिघलकर तरल हो गई, लेकिन गुरुत्वाकर्षण के कारण ज़मीन पर गिरने के बजाय, वह पानी की एक बूंद की तरह ऊपर उठी और राजकुमार के सामने लटक गई, चाँदनी में पारे की बूंद की तरह चमकती हुई, हवा के झोंकों में धीरे-धीरे लहरें मारती और डोलती रही।

घटाकरपारा का ध्यान दरवाजे की ओर गया। उन्होंने अपने अंगरक्षकों को कई बार दरवाजा बंद करते देखा था और इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि उनकी जंजीरों को खोलने वाली चाबी और दरवाजे के ताले में लगने वाली चाबी एक ही थी। उन्होंने यह भी समझ लिया था कि दरवाजे में कुंडी लगी होने के बावजूद, उनके अंगरक्षक शायद ही कभी उनका इस्तेमाल करते थे, वे केवल ताले पर ही निर्भर रहते थे। उस रात, भोजन परोसे जाने के बाद, राजकुमार ने विशेष ध्यान से देखा कि महिला अपने पीछे दरवाजा कैसे बंद करती है, और ताले में केवल चाबी के घूमने की आवाज सुनकर उन्हें राहत मिली।

पानी की बूंद बर्फ में बदल गई, जिसे घटाकरपारा ने फिर से चाबी का आकार दिया - उसने महसूस किया कि वह जितनी बार ऐसा करता, उतना ही कुशल और तेज़ होता जाता। बर्फ की चाबी को ताले में डालकर राजकुमार ने उसे एक बार फिर घुमाया; ताला खुल गया। चाबी बाहर निकालते हुए उसने गहरी सांस ली, दरवाजा थोड़ा सा खोला और बाहर झाँका, उसे आधा आभास था कि दूसरी तरफ एक-दो पहरेदार होंगे।

बाहर का रास्ता अंधेरा था लेकिन खाली था।

दरवाजा धीरे से खोलकर राजकुमार अंदर दाखिल हुआ और उसे सावधानी से बंद कर दिया। वह दबे पांव गलियारे से बाहर निकला और एक के बाद एक कई कमरों से गुजरा, कुछ खाली थे तो कुछ में सोए हुए लोग थे। यह देखकर कि कहीं भी कोई पहरेदार तैनात नहीं था, घटाकरपारा को लगा कि शकों ने उसके भागने की कोशिश करने या बाहर से किसी के आकर उसे बचाने की संभावना को पूरी तरह से नकार दिया था। पहली बात तो वह समझ गया था; पानी पर अपनी जादुई शक्ति का ज्ञान

प्राप्त करने के बाद से उसका व्यवहार बहुत अच्छा था, और शकों को उसका आत्ममग्न होना विनम्रता और आज्ञाकारिता जैसा लगा होगा। लेकिन दूसरी बात उसे चिंतित कर रही थी - अगर शकों को लगता था कि कोई उसे बचाने नहीं आ सकता, तो आखिर वह था कहां?

तर्क कहता था कि वह मरुस्थली में कहीं शक साम्राज्य के किसी गढ़ में होगा। लेकिन क्या वह किसी शहर में था या किसी दूरस्थ, दुर्गम ठिकाने में? और मरुस्थली विशाल थी, जिसका मतलब था कि वह सिंधुवर्त की सुरक्षा से सैकड़ों मील दूर कहीं भी हो सकता था। उसे बस इतना पता था कि अगर वह भागने में सफल हो गया, तो उसे अर्बुदों की ओर पूर्व दिशा में जाना होगा।

लेकिन वह तो बहुत बाद की बात थी। पहले तो उसे उस जगह से निकलना था जहाँ वह था—और उसे उस जगह के भूगोल के बारे में ज़रा भी जानकारी नहीं थी। वह केवल सलाखों वाली खिड़की से दिखाई देने वाले आकाश के छोटे से टुकड़े से ही परिचित था।

सोते हुए शक परिवार के ऊपर से कदम रखते हुए, घटाकरपारा उस द्वार तक पहुँचे जिसे उन्होंने इमारत का मुख्य द्वार समझा। अंधेरे में टटोलते हुए, उन्होंने कुंडी ढूँढी, दरवाजा खोला और एक सुनसान गली में कदम रखा, जिसके दोनों ओर गहरे रंग की मिट्टी की ईंटों से बने मकान थे। गली एक छोटी सी चढ़ाई से नीचे जाती थी, और उसके अंत में, राजकुमार एक खुले आयताकार मैदान में पहुँचे जो किसी बाजार जैसा लग रहा था। कस्बा—क्योंकि यह एक कस्बा था, यह बात उन्हें अब चाँदनी में चमकती छतों की संख्या से समझ आ रही थी—सोया हुआ था, आसपास कोई भी नहीं था, और घटाकरपारा को खुद पर गर्व होने लगा था...

तभी अचानक खुले बाजार के दूसरी ओर से एक कुत्ता उस पर भौंकने लगा।

वह जानवर आवारा और कुपोषित था, लेकिन रात के सन्नाटे में उसकी भौंकने की आवाज़ बहुत तेज़ थी। वह लगातार गुस्से से भरा भौंकता रहा, उसकी आवाज़ शहर की इमारतों से टकराकर गलियों में गूंजती रही। राजकुमार ने गाली दी और चुपचाप, बिना हिले-डुले, छाया में छिपने की कोशिश की, लेकिन कुत्ता धोखा खाने वाला नहीं था। उसे उसकी गंध आ गई थी, वह जानता था कि वह अभी भी वहीं है, इसलिए वह लगातार भौंकता रहा।

घटाकरपारा समझ गए थे कि कुत्ता उनकी योजनाओं को बिगाड़ सकता है। किसी भी जिज्ञासु शक पहरेदार से उलझने के मूड में न होते हुए, उन्होंने अपने हाथ में पकड़ी पानी की बूंद को उंगलियों से घुमाया। बूंद को मसलते हुए, उन्होंने उसे बर्फ की एक सख्त, जमी हुई गेंद का आकार दिया, जिसे उन्होंने कुत्ते पर फेंक दिया। गेंद कुत्ते को लगी, जिससे वह डर के मारे चीख उठा। मुड़कर वह अंधेरे में भाग गया। राजकुमार कुछ क्षण तक यह देखने के लिए इंतजार करते रहे कि क्या कुत्ता वापस आएगा, उनकी उंगलियां पहले से ही पानी की एक नई गेंद से खेल रही थीं जो लगभग जादुई रूप से उनके हाथों में प्रकट हो गई थी।

जब उसे यकीन हो गया कि कुत्ता वापस नहीं आएगा, तो घटाकरपारा छिपने की जगह से निकल आया। अभी भी छाया में चलते हुए, वह एक टूटी-फूटी गली से होते हुए दूसरी गली में चला गया, ढलान से नीचे की ओर रास्ता बनाते हुए एक ऊंचे लकड़ी के बाड़े तक पहुंचा। बाड़े को कस्बे के एक बड़े हिस्से को घेरते हुए देखकर राजकुमार को लगा कि वह शायद कस्बे की सीमा तक पहुंच गया है, और उसे बस बाड़ के पार जाना है और वह आज़ाद हो जाएगा। उसने पीछे मुड़कर देखा, यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह अकेला है। बाड़े को अपने बाईं ओर रखते हुए, वह चलने लगा, उसके ऊपर या नीचे से जाने का रास्ता ढूंढ रहा था।

वह अचानक बाड़ में बने उस खाली स्थान पर पहुँच गया। बाड़ अचानक बाईं ओर मुड़ गई, और उसका पीछा करते हुए, घटाकरपारा ने खुद को दो गायब लट्ठों से बनी खाली जगह को घूरते हुए पाया, जो उसके लिए उसमें से निकलने के लिए काफी चौड़ी थी। उसने अनुमान लगाया कि उस खाली स्थान की मरम्मत इसलिए नहीं की गई थी क्योंकि कस्बे के लोग उसे शॉर्टकट के रूप में इस्तेमाल कर रहे थे। राजकुमार करवट बदलते हुए उस दरार से निकल निकला। उसका एक पैर और आधा शरीर दूसरी तरफ निकल चुका था और वह अपने बाकी शरीर को बाहर खींच ही रहा था कि तभी दरार के ठीक बाहर एक आकृति प्रकट हो गई। चौंककर उसने ऊपर देखा, और वह आकृति भी उसे घूर रही थी।

"कदेह?" उस आदमी ने कहा। लहजे से घटाकरपारा समझ गया कि कोई सवाल पूछा गया है।

क्या पूछा गया था और जवाब में क्या कहना था, यह न जानते हुए, बाड़ के आधे अंदर और आधे बाहर मूर्खतापूर्ण ढंग से लटके हुए राजकुमार ने उस आदमी को

बस घूर कर देखा, इस बात से बुरी तरह वाकिफ कि चांदनी पूरी तरह से उस पर पड़ रही थी। उसके सिर में अभी भी घाव से थोड़ा दर्द हो रहा था, और अब दर्द मानो और बढ़ गया था, मानो उसके दिमाग में कोई चेतावनी बज उठी हो।
"हेई'इसा... घुर..." उस व्यक्ति ने कहा, उसका स्वर अचानक सतर्क हो गया, और घटाकरपारा ने उसे अपनी कमर पर लटकी तलवार की ओर हाथ बढ़ाते हुए देखा।
"बुरा विचार," राजकुमार ने बाड़ से बाहर निकलते हुए बुदबुदाया। उसके हाथ में एक छोटा खंजर था, जो चांदनी में गीला और सफेद चमक रहा था।
वह व्यक्ति घटाकरपारा से लंबा था, जिससे उसकी पहुंच अधिक थी, लेकिन राजकुमार उससे कहीं अधिक फुर्तीला था। जैसे ही उस व्यक्ति ने अपनी तलवार निकाली और उसे एक बड़े घुमावदार चाप में घुमाया, घटाकरपारा ने उनके बीच की दूरी कम कर ली, उस व्यक्ति के वार करते हुए हाथ के नीचे झुककर वह तेजी से ऊपर उठा। उसने पास आकर उस व्यक्ति का खाली हाथ पकड़ लिया और उसे इतनी जोर से मरोड़ा कि वह दर्द से चीख उठा।
दर्द और ध्यान भटकाने का वह क्षण ही राजकुमार के लिए काफी था। जैसे ही शक ने अपना हाथ जकड़ी हुई पकड़ से छुड़ाने की कोशिश की, घटाकरपारा और करीब आ गया और बर्फीले खंजर को उसकी पसलियों के ठीक नीचे, उसके पेट में घुसा दिया। खंजर अंदर चला गया और आदमी चीखने के लिए मुंह खोलने ही वाला था कि राजकुमार ने उसका हाथ छोड़ दिया और उसका मुंह बंद कर दिया। दर्द से कराहता हुआ आदमी जमीन पर गिर पड़ा, उसकी आंखें पीड़ा से चौड़ी हो गई थीं, और घटाकरपारा भी घुटनों के बल बैठ गया, और खंजर को आदमी के पेट में और गहराई तक धकेलता रहा। राजकुमार की उंगलियों पर गर्म खून बह रहा था और वह जानता था कि खंजर जल्दी ही पिघल जाएगा।
शक ने घटाकरपारा के हाथ में खांसा और घुट-घुट कर उल्टी की। कटार गायब थी, पानी खून से सना हुआ था। राजकुमार के मन में आया कि वह उस आदमी की तलवार लेकर उसकी पीड़ा समाप्त कर दे, लेकिन यह देखकर कि वह आदमी पहले ही बेहोश हो रहा था, उसने ऐसा न करने का फैसला किया। वैसे भी, उसे इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण काम करना था।
वह झटपट खड़ा हुआ और चारों ओर देखा। वहाँ कोई नहीं था। सब कुछ साफ़ था।

घटाकरपारा शक पर्वत के ऊपर से छलांग लगाकर रात के अंधेरे में अंधाधुंध भागा, उसकी छोटी सी परछाई उससे चिपकी हुई सपाट, रेतीले रेगिस्तान में उसका पीछा कर रही थी।

*

कौन सा पिता— वो जो कल आए थे या वो जिनकी अस्थियां हमने पवित्र क्षिप्रा में बिखेरीं? कौन सा?

मैंने सुना कि आपने इंद्र को सबके सामने मुझसे सवाल करने का मौका देने से कैसे इनकार कर दिया। आप खड़े हो गए... आपने मुझे अपमान से बचा लिया। लेकिन अब आपको यह बार-बार करना होगा।

विक्रमादित्य ने अपने हाथों के बीच विशाखा के सफेद और बेजान हाथ को सहलाया और अपनी उंगली से नसों के जाल पर एक बारीक आकृति बनाई। रानी की खिड़की के बाहर, उस शाम आखिरकार जो बारिश हुई थी, वह पास के पेड़ों की पत्तियों पर पड़ रही थी। रात गहरी थी, चाँद बादलों के पीछे छिपा हुआ था। राजा और रानी के अलावा, शयनकक्ष खाली था, गृहिणी और दासियाँ अपने सम्राट के सम्मान में बगल के कमरे में चली गई थीं।

मैं अब इस महल की सेवा नहीं कर सकता। मैं उस सिंहासन के प्रति निष्ठा की शपथ नहीं ले सकता जो मेरे परिवार की मृत्यु का कारण बना। अवंती के प्रति मेरा कर्तव्य यहीं समाप्त होता है।

राजा ने गहरी सांस ली और विशाखा के चेहरे की ओर देखा, यह सोचते हुए कि उन्हें वहां क्या देखने की उम्मीद थी। पहचान की एक झलक? समझ की एक झलक? सहानुभूति की एक लौ?

अगर मुझे कभी याद न आए तो क्या सब ठीक रहेगा? या फिर सब कुछ निराशाजनक रूप से रुक जाएगा?

"तुम्हें याद तो था, मेरी प्रियतमा," सम्राट ने मन ही मन विशाखा से बात करते हुए कहा। "लेकिन फिर तुम दोबारा चली गईं।"

जैसा कि बाकी सबने भी किया।

उस शाम परिषद कक्ष में प्रवेश करते ही, परिषद की मेज के चारों ओर खाली कुर्सियों की संख्या देखकर वे दंग रह गए थे। उज्जैन में केवल धनवंतरी, क्षपणक

और वराहमिहिर ही बचे थे, उनकी परिषद अधमरी थी। उन्हें घटकर्पर के भाग्य का कोई अंदाजा नहीं था, और वे यह भी नहीं जानते थे कि आचार्य, अमर सिंह और अब शंकु के लिए भाग्य में क्या लिखा है। नौ सदस्यीय परिषद कभी शक्तिशाली, दृढ़ और अडिग थी, उज्जैन के संकल्प और श्रेष्ठता का प्रतीक थी। लेकिन अब, यह पूरी तरह से बिखर चुकी थी, भीतर और बाहर से चूर-चूर, ठीक उसी तरह जैसे उनका प्रिय नगर।

वह हर चीज़ को संभालने की पूरी कोशिश कर रहा था, लेकिन बुरी तरह नाकाम हो रहा था। परिषद बिखर रही थी। महल बिखर रहा था। शहर बिखर रहा था। हर कोई और हर चीज़ एक-दूसरे से दूर होती जा रही थी।

एक-एक करके तुम सब चले गए। तुममें से हर वो व्यक्ति जो मुझे प्रिय था।

विक्रमादित्य ने रानी का हाथ अपने होठों तक उठाया और उसे धीरे से चूमा।

अब मैं किसके कंधे का सहारा लूँ, किसकी बाहों में सुकून ढूँढूँ? अब मैं कहाँ जाऊँ, विशाखा? कहाँ?

*

अलाव से निकलती चिंगारियाँ आग की लपटों से भागते हुए जुगनुओं की तरह सर्पिलाकार रूप में ऊपर उठ रही थीं, नारंगी रोशनी के छोटे-छोटे बिंदु रेगिस्तानी हवा में दरवेशों की तरह चक्कर लगा रहे थे, तालियों की गड़गड़ाहट और खीनोर के तारों की मधुर झंकार के बीच। एक आदमी ऊँची, उदास धुन में छोटी बांसुरी बजा रहा था, जबकि दो औरतें एक बेसुरा गीत गा रही थीं जिसके बोल कालिदास की समझ से परे थे, लेकिन उन्हें दूर धुंध में छिपे विशाल नीले आकाश और नीले पहाड़ों के बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया।

खाना अभी परोसा नहीं गया था, लेकिन मुन्ह के किले में किसी को भी खाने की ज़्यादा इच्छा नहीं थी, क्योंकि किण्वित चावल के पानी से बनी स्थानीय शराब 'इन्ताह' भरपूर मात्रा में उपलब्ध थी। कालिदास का पीतल का घड़ा तीन बार भरा जा चुका था, और किले के खुले आँगन के एक कोने में अकेले बैठे हुए वह चहल-पहल को देखते हुए थोड़ा चक्कर महसूस करने लगे थे।

द्रोइबा द्वारा याहब्रे को प्रकट करने का दृश्य देखने के बाद मुन में लौटने के तुरंत बाद, खशी दुर ने क्षितिज के विभिन्न कोनों में एक दर्जन दूत भेजे। उनके आह्वान पर,

उसी सुबह से, मुन के बाहर हूणों के बड़े और छोटे समूह एकत्र होने लगे थे। कालिदास को पता चला कि ये विभिन्न हूण जनजातियाँ थीं, जिनमें से प्रत्येक का नेतृत्व एक छोटा श्योर कर रहा था जो खशी दुर के प्रति निष्ठावान था। कुछ साका सरदार भी पास से अपने योद्धाओं के दल के साथ आए थे, ताकि वे खशी दुर की युद्ध योजनाओं को अपने युद्ध-प्रमुखों तक पहुँचा सकें। कालिदास का परिचय अधिक महत्वपूर्ण हूण श्योरों से कराया गया, और उन सभी ने ज़ो एरामी की प्रशंसा की। और निःसंदेह, वे सभी उनके वापस लौटने के लिए उनके प्रति आभारी थे।

खाशी दुर ने उसे बताया था कि अगले कुछ दिनों में रेगिस्तान के हर कोने से और भी लोग आएंगे। एक दर्जन से अधिक कबीले, सभी हथियारों से लैस और हरिज़ के झंडे तले एकजुट होकर, पूर्व की ओर पहाड़ों को पार करते हुए ज़ारी उल्ला, यानी समृद्धि की भूमि की ओर लंबी यात्रा के लिए तैयार थे।

एक नया गीत शुरू हुआ, पुरुषों और दो महिलाओं के बीच एक अश्लील युगल गीत, जो व्यंग्य से भरा हुआ था। कबीलों के मिलन के दौरान खूब गले मिलना और पीठ थपथपाना हुआ, और रात पीतल के घंटियों की खनक, परिचित हंसी की गूंज और पुरानी यादों की आहों से भर गई - पुरानी दोस्ती की आवाज़ें जो शुक्र है कभी नहीं बदलीं, कालिदास ने सोचा।

कालिदास के घड़े में अभी चौथी बार इनताह डाली ही गई थी कि उन्हें अपने कंधे पर किसी का हाथ महसूस हुआ। उन्होंने चारों ओर देखा तो उन्हें खशी दुर दिखाई दिया, जिसने दूसरे हाथ से इशारा करते हुए कालिदास को अपने साथ आने को कहा। खुश कबीलेवासियों से भरे गलियारों से मुस्कुराते हुए और एक-दूसरे को धक्का देते हुए, कालिदास और श्योर एक सीढ़ी चढ़े जो उन्हें एकांत बालकनी तक ले गई, जहाँ तीन वरिष्ठ हूण सरदार भेड़ की खाल के कंबलों पर आराम कर रहे थे। उन्होंने कालिदास का ऐसे स्वागत किया मानो वे उन्हें हमेशा से जानते हों, और कंबलों पर उनके लिए जगह बना दी। द्रॉइबा एक कोने में आँखें बंद करके सुस्त बैठा था, हालाँकि कालिदास को इस बात पर पूरा शक था कि वह सो रहा था।

जब खशी दुर ने यह सुनिश्चित कर लिया कि कालिदास आराम से हैं और उनका घड़ा भरा हुआ है, तो वे स्वयं भी कंबलों पर लेट गए। उन्होंने कालिदास को अवंती भाषा में संबोधित करते हुए कहा, "जैसा कि आप जानते हैं, हम सिंधुवर्त की ओर प्रस्थान करने के लिए एकत्रित हो रहे हैं।"

कालिदास ने अपना सिर झुकाया।
"सिंधुवर्त और उसके राज्यों के बारे में आपको बहुत कुछ पता है, जिसके बारे में हमें कुछ भी नहीं पता। अवंती राज्य हमारे लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह सिंधुवर्त के राज्यों के गठबंधन का नेतृत्व करता है। हमें अवंती और विक्रमादित्य में रुचि है। हमें उनके बारे में बताएं। उनके परिषद के अन्य सदस्यों के बारे में भी बताएं। अवंती की धरती पर कदम रखने से पहले हमें जो कुछ भी जानना चाहिए, वह सब हमें बताएं।"
कालिदास ने सिर हिलाया और अपने घड़े से एक बड़ा घूंट लिया। फिर, धीमी और रुक-रुक कर बोली जाने वाली हूण भाषा में, उन्होंने अवंती, विक्रमादित्य और परिषद के बारे में बात की।
उन्होंने देर रात तक बात की और हुना सरदारों को सब कुछ बताया।

*

उज्जैनी महल की गलियारों में एक परछाईं धीरे-धीरे सरकती हुई गुजरी, जो रात के समय के कारण किसी को दिखाई नहीं दी, और साथ ही साथ वह महल के पहरेदारों की नजरों से भी बड़ी कुशलता से बच निकली। वह एक अंधेरे से दूसरे अंधेरे में, एक कोने से दूसरे कोने में सरकती हुई, कभी-कभी तो रोशनी के घेरे को पार करते समय पूरी तरह से गायब हो जाती थी, जिससे केवल सबसे सतर्क पहरेदारों को ही हवा में मशालों की टिमटिमाती रोशनी और अंधेरे के बदलते खेल में कुछ भी अजीब महसूस होता।
परछाई एक सीढ़ी से ऊपर चढ़ी और एक गलियारे से नीचे उतरी, फिर एक गलियारे में मुड़ गई जो प्रलूपी के कक्षों की ओर जाता था। गलियारे के एकांत में, परछाई अधिक स्थिर हो गई, मानो अब उसे पता न चलने का पूरा भरोसा हो गया हो, और जैसे ही वह गलियारे को रोशन करने वाले दीपक की हल्की रोशनी के नीचे से गुजरी, उसका चेहरा क्षण भर के लिए दिखाई दिया।
विस्मया।
महल के रक्षकों का मुखिया गलियारे के अंत तक पहुँचा, जहाँ प्रलूपी के कक्ष का द्वार उसके रास्ते में रुकावट बन गया। वह असमंजस में पड़कर द्वार के सामने रुक गया—और फिर वह बंद द्वार से फिसलकर अंदर चला गया, अंधेरे और भारी

लकड़ी से रिसता हुआ, इस तरह कि एक पल वह द्वार के बाहर था और अगले ही पल वह दूसरी तरफ पहुँच गया।
राजकुमारी के कक्ष में प्रवेश करते ही विस्मया इधर-उधर देखने लगा, उसे समझ नहीं आ रहा था कि किस तरफ जाए। दाहिनी ओर के दरवाजे की दरार से झाँकते हुए, वह पीछे हटा और बाईं ओर, जंगल के तालाब और झरने वाले सुंदर बालकनी की ओर चल पड़ा। एक घुसपैठिए की मौजूदगी से परेशान होकर, ऊपर पिंजरों में बैठे पक्षी अपनी जगह से हिलने लगे और अपने पंख फड़फड़ाने लगे, और एक बत्तख ने नाराज़गी से क्वैक किया।
"सावधान रहो, नहीं तो पक्षी जाग जाएंगे और वे राजकुमारी को जगा देंगे।"
विस्मया आवाज की तरफ मुड़ा और उसने देखा कि मिथ्यामयी बालकनी के दूर वाले कोने से बाहर निकली। “हम नहीं चाहते कि राजा की बहन को हमारे बारे में सच्चाई पता चले, है ना?” उसने उसके पास आते हुए कहा।
गार्डों के मुखिया ने अपना सिर हिलाया।
"माटाली, इतनी रात को आप यहां क्यों आए हैं?"
विस्मया के चेहरे में एक सूक्ष्म परिवर्तन आया, और पल भर के लिए, उस पर देव के भाव उभर आए, आँखें झुकी हुई और ठंडी थीं, मुँह एक निर्मम, आधी गुर्राहट में नीचे की ओर मुड़ा हुआ था। फिर वह वापस विस्मया के रूप में आ गया, उसकी विकृत नाक के ऊपर उसकी छोटी, भूरी दाढ़ी पर उसकी आँखें तेज थीं।
“मुझे हमारे स्वामी इंद्र का संदेश मिला है,” उसने धीमी आवाज़ में कहा। “वे जानना चाहते हैं कि वीषाद के खंजर का पता लगाने में आपने कितनी प्रगति की है।”
महिला ने देवता को घूरकर देखा, और देवता ने भी उसे घूरकर देखा। बालकनी में सन्नाटा पसरा हुआ था। पक्षी अपने पिंजरों में वापस सो गए थे।
“उर्वशी, मैं उसे क्या बताऊं?”
“उन्हें बता देना कि मुझे अभी तक सही अवसर नहीं मिला है। महल में आए हुए मुझे अभी सिर्फ दो दिन ही हुए हैं, और मैं अभी तक राजकुमारी का विश्वास हासिल नहीं कर पाई हूँ।”
मताली ने सिर हिलाया। “मेरा सुझाव है कि आप सभी का विश्वास जीतने में और भी तेज़ी लाएँ। हमारे स्वामी का धैर्य समाप्त हो रहा है।”

“अगर तुमने अपना काम किया होता और पता लगा लिया होता कि खंजर कहाँ छिपा है, तो ऐसा नहीं होता। तुम्हारी इस नाकामी की वजह से ही मुझे मिथ्यामयी बनकर यहाँ आना पड़ा...”
"मैंने कोशिश की; मैं अभी भी कोशिश कर रहा हूँ," मताली ने धीमी, गुर्राती आवाज़ में बात काटते हुए कहा।
“अच्छा, हम दोनों की यही राय है। चलो हम दोनों और तेज़ी से और ज़्यादा मेहनत से काम करें।”
एक संक्षिप्त सहमति में सिर हिलाकर, देव जाने के लिए मुड़े। लेकिन खुद को रोकते हुए, उन्होंने पीछे मुड़कर देखा।
"बस जिज्ञासावश पूछ रही हूँ, उर्वशी, यह कौन सा सुनहरा अवसर है जिसका आप इंतजार कर रही हैं?"
अप्सरा ने अपना सिर झुकाया और उसकी नज़र बालकनी के एक कोने में लटके दीपक की रोशनी पर पड़ी। मातली ने उसमें एक ठंडी, छलपूर्ण चमक देखी, जो दूर क्षितिज पर बिजली की तरह क्षणभंगुर थी।
"सम्राट को बेहतर तरीके से जानने का अवसर," उसने जवाब दिया, उसकी आवाज़ की मखमली लय में मोहक अंदाज़ का हल्का सा संकेत था।

प्रस्थान

अमरा सिंह और संसप्तक किबार की बस्ती की ओर रेंगते हुए आगे बढ़ रहे थे, सचमुच रात के आकाश के नीचे धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे, इस बात से सावधान थे

कि शहर के रक्षकों द्वारा तैनात किसी भी पहरेदार को सतर्क न कर दें।
क्षितिज पर कस्बे को देखते ही अमारा सिम्हा समझ गया कि इस पर कब्ज़ा करना आसान नहीं होगा। सबसे पहले तो, किबार एक सपाट रेगिस्तानी इलाके के बीचोंबीच स्थित था, जहाँ न तो कोई टीला था, न रेत का टीला और न ही रेगिस्तानी पेड़ों का कोई झुंड, जो उसे और उसके आदमियों को छुपने का मौका दे सके। उन्हें कस्बे की नज़रों से दूर रहना पड़ा, रेगिस्तान की भीषण गर्मी में तपते हुए रात होने का इंतज़ार करना पड़ा। लेकिन जैसे ही सूरज डूबा, चाँद निकल आया, इसलिए फिर से, देखे जाने के डर से उन्होंने कस्बे के ज़्यादा करीब जाने की हिम्मत नहीं की।
उन्होंने आधी रात तक इंतज़ार किया, लेकिन रेगिस्तान में बहुत दूर होने के कारण कस्बे पर हमला करना व्यर्थ था। घोड़ों के खुरों की आवाज़ और उनके द्वारा उड़ाई गई धूल से ही चेतावनी मिल जाती और कस्बेवासियों को बचाव के लिए पर्याप्त समय मिल जाता। अमारा सिम्हा को विशेष रूप से साका के तीरों का डर था; उन घातक तीरों की बौछार में फंसकर, वह जानता था कि कीबार में प्रवेश करने का उनका कोई मौका नहीं है। इसलिए, वे सावधानी से आगे बढ़े, ताकि उनकी मौजूदगी का पता न चले।
जब वे कस्बे के चारों ओर बनी किलेबंदी से आधा मील से भी कम दूरी पर थे, तब बलवान पार्षद ने अपने घोड़े की लगाम खींची। अपनी चौड़ी कुल्हाड़ी उठाते हुए, उन्होंने अंगमित्रा की ओर तिरछी नज़र डाली, जिसने सिर हिलाकर जवाब दिया। अमर सिंह ने पीछे मुड़कर अपने पीछे सवार संसप्तकों को देखा, अपनी कुल्हाड़ी ऊँची उठाई और उसे ज़ोर से झटका दिया। हल्की चाँदनी में भी उनकी आँखें धधक रही थीं और उनके होंठों से मौन युद्धघोष निकल रहा था। जवाब में, संसप्तकों ने भी अपने हथियार उठा लिए, सभी मौन थे लेकिन युद्ध के लिए पूरी तरह तैयार थे।
अमारा सिम्हा मुड़ा और किबार की ओर मुँह किया। उसके पीछे शपथ के योद्धाओं ने भी ऐसा ही किया। पार्षद ने अचानक अपना सिर झुकाया और अपने घोड़े को सरपट दौड़ाया, और किबार पर हमला शुरू हो गया।
चाहे यह शकों की ओर से आत्मसंतुष्टि हो—जिन्होंने रेगिस्तान के इतने गहरे हिस्से में अपने ऊपर हमले की कल्पना भी नहीं की थी—या फिर ईश्वर की कृपा, शहर के इतने करीब तक बिना किसी की नज़र में आए घुसपैठ करने में कामयाब होने से

हमलावरों को युद्ध की शुरुआत में ही बढ़त मिल गई। उनके साथ मौजूद हूण जासूस ने उन्हें शक किले की बनावट का मोटा-मोटा अंदाज़ा दे दिया था, और अमारा सिंह और समसप्तक किले के एकमात्र मुख्य द्वार की ओर तेज़ी से बढ़े। द्वार पर दो पहरेदार तैनात थे जिन्हें आसानी से हटा दिया गया, और देखते ही देखते हमलावर किबार के अंदर पहुँच गए।

अमर सिंह को यह तो पता ही था कि एक अनजान शहर में घातकपारा को कहाँ ढूँढना है—यह मानते हुए कि सत्यवेद झूठ नहीं बोला था और घातकपारा अभी भी यहीं थे और कहीं और नहीं गए थे—इसलिए राजकुमार तक पहुँचने की उनकी रणनीति सरल थी। उन्होंने संसप्तकों को शकों पर निर्दयता बरतने का निर्देश दिया था, उन्हें बुरी तरह पीटने और उन्हें स्तब्ध कर आत्मसमर्पण कराने के लिए कहा था, ताकि वे अपने बंधक को छोड़ने के लिए तैयार हो जाएँ, बशर्ते उन्हें अकेला छोड़ दिया जाए। और हमलावरों ने ठीक वैसा ही किया।

गली-गली, इमारत-इमारत, संसप्तक बेरोकटोक आगे बढ़ रहे थे, उन्हें इस बात की परवाह नहीं थी कि वे किस दिशा में जा रहे हैं, बस उन्हें मारने के लिए शक मिल जाएं। कस्बे के अधिकांश निवासी और सैनिक अभी भी नींद से जाग रहे थे और सोच रहे थे कि आखिर हुआ क्या था जब उन्हें उनके घरों के दरवाजों और बाहर की गलियों में मार गिराया गया। हमलावर अपनी कार्यकुशलता में निर्दयी थे, और जल्द ही, किबार की गलियां जान बचाकर भाग रहे लोगों से भर गईं, कस्बे की हवा मरने वालों की चीखों से कांप उठी।

यह जानते हुए कि गाँव का सबसे बड़ा घर हमेशा मुखिया का होता है, अमारा सिम्हा किबार की सबसे बड़ी इमारत, कस्बे के केंद्र में स्थित दो मंजिला इमारत की ओर बढ़ा। उसके आने की आहट सुनाई दी; उसे रोकने के लिए आए चार साका रक्षक कोशिश करते-करते गिर पड़े। वह आगे बढ़ता रहा, लेकिन जैसे-जैसे वह करीब पहुँचता गया, उसे और अधिक प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। हमला कुछ समय पहले शुरू हो चुका था, और साका योद्धाओं को फिर से संगठित होने का समय मिल गया था। अब वे चीखते हुए बाहर आए, उनकी लंबी तलवारें चाँदनी में लहरा रही थीं। अमारा सिम्हा को उनमें से छह ने घेर लिया, और ये लोग अधिक बलिष्ठ और दृढ़ निश्चय के साथ लड़े, पार्षद पर वार करते हुए, उसके आगे बढ़ने को रोक दिया।

अमरा सिंह ने उनके हमले को नाकाम कर दिया और खुद भी जोरदार प्रहार से पलटवार किया। तलवारें कुल्हाड़ी से टकराईं, जिससे चिंगारियां उड़ने लगीं और खून जमीन पर फैल गया क्योंकि तलवारें सुरक्षा घेरे को भेदती हुई आगे बढ़ गईं। साका जनजाति के तीन सैनिक पार्षद के प्रकोप में मारे गए, लेकिन अतिरिक्त सैनिक उससे मुकाबला करने के लिए आ गए। और भी सैनिक शामिल हो गए, जो उसे चारों ओर से काटने की कोशिश कर रहे थे, और एक तलवार ने उसके बाएं कंधे से लेकर पीठ तक एक लंबा घाव कर दिया।

दर्द उमड़ पड़ा और अमरा सिंह के सिर तक पहुँच गया। उसी क्षण, उसने अपने गालों पर गर्मी महसूस की और अपनी नसों में कुछ जंगली और बेहद आदिम भावना का उभार महसूस किया - खून की अचानक प्यास, शिकार करने और मारने की प्रबल इच्छा।

पलक झपकते ही उसे एहसास हुआ कि शिकार ठीक उसके सामने है। दुबका हुआ। घबराकर पीछे हट रहा है। डर से कराह रहा है।

साका योद्धा अब उससे लड़खड़ाते हुए दूर भाग रहे थे, हताशा में एक-दूसरे को ठोकर मारते और कुचलते हुए, उसकी पकड़ से बचने के लिए छटपटाते और हाथ-पैर मारते हुए। उनकी निगाहें उस पर टिकी हुई थीं, वे भयभीत थे, लड़ने का उनका संकल्प अचानक और अशोभनीय ढंग से टूट रहा था, जिसके कारण या तो उन्होंने भय से अपने हथियार गिरा दिए या डर के मारे उनका इस्तेमाल करना ही भूल गए।

उनके व्यवहार से थोड़ा हैरान और साथ ही इस बात से भी अचंभित कि उसके नुकीले दांत अचानक उसके मुंह में लंबे और तेज हो गए थे, अमारा सिम्हा ने अपने सबसे करीब खड़े उस बर्बर को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया। तभी उसने देखा कि उसकी बांह सुनहरे-भूरे रंग के महीन बालों से ढकी हुई थी, जबकि उसकी उंगलियों पर लंबे, घुमावदार काले पंजे फिर से उग आए थे। इससे पहले कि वह कुछ समझ पाता, उसका हाथ उस योद्धा की पीठ पर जा लगा, जिसे वह पकड़ने की कोशिश कर रहा था, पंजे गहरे धंस गए, मांस को बुरी तरह से नोच डाला। सैनिक दर्द से चीख उठा।

ताजा और गर्म खून की गंध अमारा सिम्हा तक एक लहर की तरह पहुंची, और सलाहकार के मुंह में पानी आ गया जब उसने सैनिक के सिर के पिछले हिस्से पर दूसरी बार वार किया। वार की ताकत से उस आदमी का सिर धंस गया, और गिरते

ही अमारा सिम्हा अपने अगले शिकार की ओर झपटा। एक भयंकर गुर्राहट के साथ, उसने दूसरे योद्धा के पैरों को उखाड़ फेंका, उसे जोर से नीचे गिराया और फिर अपने पंजों को उसकी गर्दन में गाड़कर उसकी रीढ़ की हड्डी तोड़ दी। घाव से खून की फुहार निकली, जिससे सलाहकार के घने, काले बाल बारीक बूंदों से भीग गए।
अमर सिंह शिकार के रोमांच से आनंदित होकर दहाड़ा। शेर की दहाड़ की तरह। उसे देखते ही शक वंश के लोग भागने लगे और बड़े घर की ओर रास्ता बनाने लगे। एक हाथ में कुल्हाड़ी लिए, सिंह-मानव रूप में पूरी तरह रूपांतरित हो चुका वह सलाहकार उछल-कूद करते हुए घर के दरवाजे की ओर बढ़ा। एक और जोरदार दहाड़ के साथ उसने दरवाजा तोड़ दिया और अंदर कदम रखा, जहाँ दो पहरेदारों ने उसे घेर लिया। पहले अमर सिंह ने अपने बाएं हाथ से प्रहार किया, जिससे वह उड़ गया; दूसरे ने उसकी गर्दन पकड़कर उसे हवा में उठाया और फिर पीठ के बल जमीन पर पटक दिया। जैसे ही वह आदमी दर्द से चीख उठा, सिंह-मानव उस पर झुक गया, उसे जमीन पर दबा दिया और भयंकर क्रोध में उसके चेहरे पर गुर्राया। रक्त की प्यास सलाहकार के कानों में गूंज रही थी, साथ ही उसे अपंग करने और टुकड़े-टुकड़े करने की तीव्र लालसा भी थी।
ऊपर से घबराहट भरी आवाज़ें गूंज उठीं, फिर सीढ़ियों से नीचे भागते कदमों की अफरा-तफरी सुनाई दी। अमारा सिंह तुरंत उठ खड़े हुए और सीढ़ियों की ओर मुड़ गए, उनकी कुल्हाड़ी आधी बंधी हुई थी, अगले हमले का सामना करने के लिए तैयार। लेकिन सैनिकों के बजाय, दो युवतियाँ नज़र आईं, दोनों डरी हुई और इतनी बुरी तरह कांप रही थीं कि मुश्किल से खड़ी रह पा रही थीं। उनके पीछे एक अधेड़ उम्र का आदमी लगभग तीन साल के बच्चे को गोद में लिए हुए था, और उसके पीछे एक बूढ़ा आदमी था जिसकी लंबी, सफेद दाढ़ी थी। पाँच जोड़ी आँखें उस विशालकाय आदमी को घोर भय से घूर रही थीं - और फिर वे औरतें धीरे-धीरे आखिरी कुछ सीढ़ियाँ नीचे उतरीं, कांपती और सिसकती हुई। घुटनों के बल बैठकर, उन्होंने हाथ जोड़कर विनती की, उनके मुँह से शब्द निकल रहे थे, जिनमें से किसी का भी अर्थ अमारा सिंह को समझ नहीं आया, हालाँकि वे उनका इरादा समझ गए थे। दोनों आदमी भी उन औरतों के साथ उनसे विनती करने लगे, अधेड़ उम्र के आदमी ने छोटे बच्चे को घुटनों के बल बिठाकर हाथ जोड़कर दया की भीख मंगवाई।

अपने सामने घुटनों के बल बैठे, हाथ जोड़े, आश्चर्य और बोधहीनता से उसकी ओर घूरते बच्चे को देखकर अमारा सिम्हा शर्म और घृणा से भर गया। बच्चे की आँखों में देखने में असमर्थ, अपने मन में उठ रही पागल आवाज़ों की बात मानने से इनकार करते हुए, उसने अनिच्छा से अपना हाथ नीचे गिरा दिया और भयभीत परिवार से थके हुए स्वर में मुँह फेर लिया।

फिलहाल, हत्याएं समाप्त हो चुकी थीं। कस्बे ने पूरी तरह से आत्मसमर्पण कर दिया था।

*

असुरों की सेना में लगभग दो सौ सैनिक थे, उनके गंभीर चेहरे मशालों की रोशनी से जगमगा रहे थे, उनके सींग तेल से काले और चमकदार पॉलिश किए हुए थे, उनके नुकीले भाले आग की तरह चमक रहे थे, और उनकी परछाइयाँ उस विशाल गुफा की दीवारों पर पड़ रही थीं जहाँ वे एकत्रित थे। उनके सामने, एक ऊंचे ग्रेनाइट शिलाखंड पर, जो एक चबूतरे का काम कर रहा था, हिरण्याक्ष खड़ा था, उसका चेहरा गर्व से लाल था, और उसकी आँखें आशा और उम्मीद से दमक रही थीं।

"तुमने स्वयं को महागुरु के हाथों में सौंप दिया है," उन्होंने सेना का अवलोकन करते हुए कहा। "उन पर विश्वास रखो, वे तुम्हें सीमावर्ती लोक में ले जाएंगे और वापस ले आएंगे। भाइयों और बहनों, डटकर लड़ो। पाताल के लिए लड़ो।"

"पाताल के लिए!" भीड़ ने ज़ोरदार आवाज़ में जवाब दिया, अपने भाले ज़मीन पर पटकते हुए, जिससे अंधेरे में बसेरा कर रहे चमगादड़ उड़ गए। जैसे ही गुफा सरसराहट और चीख-पुकार से भर गई, असुर स्वामी शुक्राचार्य की ओर मुड़े।

"वीशादा का खंजर जल्द ही हमारा होगा," उसने मुस्कुराते हुए कहा। "काश तुम भाई के लौटने से पहले इसे लेकर वापस आ जाओ, ताकि हम उसे उपहार में दे सकें।"

"मैं कोशिश करूंगा," प्रधान पुजारी ने उत्तर दिया। "हालांकि मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता क्योंकि सीमावर्ती लोक में प्रवेश करने में कुछ समय लग सकता है, जबकि हिरण्यकशिपु किसी भी समय लौट सकता है। फिर भी, मैं कोशिश करूंगा।"

“मुझे पूरा यकीन है कि आप ऐसा करेंगे,” हिरण्यक्ष थोड़ा रुका। “भाई आपसे मिलने के लिए उत्सुक होंगे।”
“मैं भी उनसे मिलने के लिए उत्सुक हूं। बहुत समय हो गया है। लेकिन हमारी मुलाकात उम्मीद से ज्यादा लंबी चल सकती है।”
“ऐसा क्यों है, महागुरु?” हिरण्याक्ष ने उत्सुकता से प्रधान पुजारी की ओर देखा।
शुक्राचार्य असुर स्वामी के सामने खड़े हो गए और उनका सामना किया।
“यदि मेरी अनुपस्थिति में हिरण्यकशिपु लौट आए, तो मुझे उसे एक अत्यावश्यक कार्य सौंपना है। इस कार्य के कारण उससे मेरी मुलाकात में देरी हो सकती है। यदि मैं वहां न रहूँ, तो मैं चाहता हूँ कि तुम उसे बता दो कि मैं क्या करवाना चाहता हूँ।”
हिरण्याक्ष ने प्रणाम किया। “महागुरु, आप उससे क्या चाहते हैं?”
मैं चाहता हूं कि वह देवलोक जाए।
असुर स्वामी के चेहरे पर आश्चर्य देखकर शुक्राचार्य ने सिर हिलाया, उनकी आँखों में ठंडे गुस्से की चमक थी क्योंकि एक कड़वी याद ताजा हो गई थी। "मेरी प्रतिष्ठा दांव पर लगी है, और मैं हिसाब बराबर करना चाहता हूँ।"

*

“क्या यह कोई मज़ाक है?” अमारा सिम्हा गुस्से से भड़क उठी। “क्या यह मूर्ख मुझसे उम्मीद करता है कि मैं उसकी चालों में फंस जाऊं? उसे बता दो कि उसके पास सच बताने का आखिरी मौका है।”
उनके साथ आए दुभाषिए ने किबार के शायोर साका की ओर रुख किया। दोनों ने कुछ देर बातचीत की। वह व्यक्ति डरा हुआ था, लेकिन अपने लहजे में दृढ़ था, एक पैर से दूसरे पैर पर हिलता हुआ, पार्षद पर बेचैन निगाहें डालता हुआ, मानो उसे किसी भी क्षण उसके शेर-मानव रूप में वापस लौटने की आशंका हो। अंत में, असहाय भाव से कंधे उचकाते हुए दुभाषिए ने पार्षद की ओर देखा।
“उसका कहना है कि उसे राजकुमार के साथ क्या हुआ है, इसकी कोई जानकारी नहीं है। वह कहता है कि राजकुमार को जब से यहाँ लाया गया है, तब से वह इसी कोठरी में है, और वह कसम खाकर कहता है कि राजकुमार आज रात पहले भी यहाँ आया था। ऐसा लगता है कि उन्होंने उसकी जाँच की थी।”
“क्या उसे इस कोठरी में बंद कर दिया गया था?”

"हाँ।"
“तो अब वो कहाँ है?” अमारा सिम्हा ने नाटकीय अंदाज़ में कोठरी के अँधेरे में झाँका, जो बकरी के बालों के कंबल, मिट्टी के घड़े और ज़मीन पर पड़ी खुली बेड़ियों के अलावा खाली थी। “वो मुझे यहाँ... या वहाँ कहीं नहीं दिख रहा।” उसने संकरी खिड़की और बाहर रात के आसमान के आयताकार टुकड़े की ओर देखा। “वो उस रास्ते से भी बाहर नहीं जा सकता था। और वो चाबी के छेद से तो बिल्कुल नहीं निकल सकता था।” वह घूमकर साका सरदार के चेहरे पर घूरने लगा, जो मशाल की रोशनी में डर से काँप रहा था। “राजकुमार कहाँ है, मेरे दोस्त? मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारा एक दाँत टूटा हुआ है, इसलिए मैं तुमसे ये सवाल इकत्तीस बार और पूछ सकता हूँ। मैं वादा करता हूँ कि ये बहुत दर्दनाक होगा।”
शब्दों से नहीं तो कम से कम उस व्यक्ति ने पार्षद के हावभाव से खतरे को समझ लिया। उसने दुभाषिए का हाथ पकड़ लिया और बेताब होकर बड़बड़ाने लगा, उसे यह यकीन दिलाने की पूरी कोशिश कर रहा था कि वह सच कह रहा है।
"वह शपथ लेकर कहता है कि राजकुमार को कहीं और नहीं ले जाया गया है और वह कुछ घंटे पहले यहीं था।"
“लेकिन जब हम अंदर गए तो वह यहाँ नहीं था, और दरवाजा बाहर से बंद था।” पार्षद ने साका को संदेह भरी निगाहों से देखा। “और कोठरी की दोनों चाबियाँ वहीं थीं जहाँ उन्हें होना चाहिए था।”
“माननीय न्यायाधीश,” दुभाषिया थोड़ी देर रुका, फिर बोलने का फैसला किया। “अगर वह झूठ बोल रहा होता, तो हमें इस खाली कोठरी में क्यों लाता, जबकि उसे अच्छी तरह पता था कि इससे हमारी नज़र में उसकी छवि खराब होगी? अगर उसे पता होता कि राजकुमार कोठरी में नहीं है, तो हमें यहाँ लाना उसकी बहुत बड़ी मूर्खता होती।”
अमारा सिंह गुस्से से भर उठा और गहरी सांस ली। “अगर उसे ही नहीं पता कि राजकुमार कहां है, तो किसे पता होगा? वह इस वीरान जगह का मुखिया है, है ना?” सिर हिलाते हुए वह गुस्से से बोला, “बस बहुत हो गया। मुझे जवाब चाहिए, और मैं उन्हें हर हाल में हासिल करूंगा। चलो इस आदमी को आंगन में फांसी पर लटका देते हैं।”

जैसे ही कुछ संसप्तक उसे बांहों से पकड़कर घसीटने लगे, शक ने ज़ोर-ज़ोर से विरोध किया, गिड़गिड़ाया और चीख-चिल्लाकर अपनी पूरी ताकत लगा दी। अमर सिंह और दुभाषिया उनके पीछे-पीछे गए, और छोटा समूह अंततः एक छोटे से आंगन में पहुंचा, जहां जमीन में एक खूंटा गाड़ा गया था। संसप्तक अभी शक को खूंटे से बांध ही रहे थे कि एक बूढ़ी औरत दरवाजे पर प्रकट हुई, अपने सीने पर हाथ पटकते हुए अमर सिंह की ओर इशारा किया।

"रुको," दुभाषिए ने दोनों संसप्तकों से कहा।

उसने महिला से कुछ सवाल पूछे, जिनके जवाब उसके पास तुरंत तैयार थे, और वह बोलते समय लगातार रोती और हाथ-पैर हिलाती रही। उसकी बातें सुनकर साका सरदार राहत से झूम उठा और उसने अमारा सिम्हा को एक टूटी-फूटी, सुलह भरी मुस्कान भी दी। अंत में, दुभाषिया पार्षद की ओर मुड़ा।

"उसने बताया कि किलेबंदी के बाहर एक साका सैनिक बेहोश पड़ा मिला। ऐसा लगता है कि उसे चाकू से गंभीर चोट लगी थी। देखने में तो ऐसा लग रहा था कि वह हमारे हमले में घायल हुआ है, लेकिन अभी-अभी उसे होश आया है और वह कह रहा है कि राजकुमार को भागने से रोकने की कोशिश करते समय उसे चोट लगी थी।"

"उसने घटाकरपारा को रोकने की कोशिश की? कहाँ? कब?"

"आधी रात के समय। किलेबंदी में एक दरार के पास। ऐसा लगता है कि उनके बीच हाथापाई हुई और राजकुमार ने उसे चाकू मार दिया।"

अमर सिंह ने अपने कंधे के ऊपर से हाथ बढ़ाकर अपनी पीठ पर लगे घाव पर खून से सनी पट्टी को टटोला। एक साधारण से संसप्तक ने घाव को धोकर हल्दी के मिश्रण से उपचारित किया था, जिससे खून बहना तो रुक गया था, लेकिन घाव में बहुत दर्द हो रहा था, खासकर जब वह अपनी पीठ की मांसपेशियों पर ज़ोर डालता था।

"राजकुमार अपनी कोठरी से कैसे बाहर निकला?" उसने अपना हाथ हटाकर उसे ध्यान से देखते हुए पूछा, और यह देखकर राहत महसूस की कि उसकी उंगलियों पर ताजे खून के कोई निशान नहीं थे।

"पता नहीं, लेकिन यह आदमी निश्चित है कि वह राजकुमार ही था।" दुभाषिया ने महिला से कुछ शब्द कहे और सिर हिलाया। "वह निश्चित इसलिए है क्योंकि वह उन

लोगों में से एक था जो राजकुमार को अरबुदास पर्वतमाला पार करके और रेगिस्तान से होते हुए यहाँ लाए थे।”
"क्या उसे पता है कि राजकुमार को चाकू मारे जाने के बाद उसके साथ क्या हुआ?" दुभाषिया और महिला ने फिर से बात की।
“उसने बताया कि राजकुमार उसे खून से लथपथ जमीन पर छोड़कर रेगिस्तान में भाग गया।”
अमरा सिंह ने पूर्व दिशा से धीरे-धीरे उजाले होते आकाश की ओर देखा। कुछ ही क्षणों में रेगिस्तान का प्रचंड सूर्य उदय हो जाएगा। उन्होंने राजकुमार के सूर्य-चिह्न वाले पदक को देखा, जो उनकी हथेली पर सपाट पड़ा था और जिसे उन्होंने सरदार के कब्जे से बरामद किया था।
“घटकरपारा पूर्व दिशा की ओर जाने के लिए काफी समझदार है,” उसने पदक पर उंगलियां बंद करते हुए और उसे अपनी कमरबंद में रखते हुए कहा। “उसे कुछ घंटों की बढ़त मिली है, लेकिन मुझे लगता है कि वह पैदल है, जबकि हमारे पास घोड़े हैं।” उसने संसप्तक में से एक की ओर उंगली से इशारा करते हुए गति बढ़ाने का संकेत दिया।
“अंगमित्रा को ढूंढो और उससे कहो कि वह सबको जल्दी से इकट्ठा करे। खाने-पीने का सामान भर लो। सूरज पूरी तरह से क्षितिज से निकलने से पहले ही हम राजकुमार को बचाने के लिए निकल पड़ते हैं।”

*

अलाका झील के ऊपर छाए घने कोहरे के बादल से एक छोटा सा धुंध का गुबार अलग हुआ और शांत जल के उस हिस्से के दूसरी ओर स्थित एक जंगली भूमि की ओर बह गया।
जैसे ही वह ज़मीन के पास पहुँचा, उसकी बनावट बदल गई। वह और घना और कोणीय होता गया, भीतर से रूपांतरित होता गया, और जैसे ही वह ठोस ज़मीन पर पहुँचा, उसके अपारदर्शी आवरण से पैर निकले, फिर घुटने, कमर, दोनों हाथ और फिर शेष शरीर। कुछ ही क्षणों बाद, एक पूर्ण रूप से निर्मित यक्ष झील से दूर धुंध भरे रास्ते पर चल पड़ा, धुंध की अंतिम कुछ लकीरें उसकी उंगलियों के बीच से निकलकर हवा में उड़ गईं।

यक्ष कोहरे के दूसरे आवरण में प्रवेश कर गया, इसलिए यह बताना असंभव था कि वह किस दिशा में जा रहा है, लेकिन वह आत्मविश्वास से आगे बढ़ता रहा, जब तक कि अचानक कोहरा छंटकर एक पर्दे की तरह हट नहीं गया और उसके पैरों के पास एक विशाल, चमकता हुआ कुंड दिखाई दिया। कुंड सीप से बना था, और उसके केंद्र में संगमरमर का एक मंडप था, जो झूलते हुए बांस के पुलों से कुंड के किनारे से जुड़ा हुआ था। मंडप के अंदर, कुबेर दो अन्य यक्षों के साथ बैठे थे, दोनों अपनी-अपनी बांसुरियों पर सुबह का राग बजा रहे थे। दोनों बांसुरियों की मधुर ध्वनि ठीक उसी क्षण हवा में गूंज उठी जब कोहरे का पर्दा हटकर उस यक्ष के सामने आया।

संगीत समाप्त होने तक यक्ष ने प्रतीक्षा की, फिर अपने स्वामी को अपने आगमन की सूचना देने के लिए गला साफ किया। कुबेर ने अपना भारी, दाढ़ीदार चेहरा यक्ष की ओर घुमाया और अपने आगंतुक को पहचानते हुए, उसे अपने पास बुलाने के लिए एक मोटा हाथ हिलाया। उसी समय, यक्ष स्वामी ने दोनों संगीतकारों को सिर झुकाकर अभिवादन किया, जो खड़े हो गए और चुपचाप चले गए। जब वे और नया आया यक्ष अकेले रह गए, तभी कुबेर ने सिर हिलाया।

"मुझे बताओ कि तुमने मानव राजा के बारे में क्या सीखा है।"

यक्ष ने लंबे समय तक बिना रुके बोलना जारी रखा, और जब तक उनका भाषण समाप्त हुआ, हल्की धूप कोहरे को चीरकर बाहर आने लगी और इंद्रधनुष की छोटी-छोटी आकृतियाँ रंगीन भ्रमों की तरह इधर-उधर चमकने लगीं। कुबेर यक्ष का वृत्तांत ध्यानपूर्वक सुनते रहे, हर शब्द को मनन से सुनते रहे। जब वृत्तांत समाप्त हुआ, तो वे सफेद रेशमी तकियों पर पीछे झुक गए और चिंतनशील भाव से अपनी दाढ़ी सहलाने लगे।

“तो, विक्रमादित्य इंद्र के पोते हैं,” उन्होंने टिप्पणी की।

“हाँ, महाराज। हालाँकि, मानव राजा गंधर्वसेन को अपना पिता मानने से इनकार करता है। उसने इंद्र के सामने ही यह बात कह दी थी और फिर उसे अपने नगर से बाहर निकाल दिया था।”

“काश मैं देख पाता कि उस समय इंद्र का चेहरा कैसा होता,” कुबेर ने मुस्कुराते हुए और खुशी से अपनी जांघ थपथपाते हुए कहा। “अपने ही पोते के हाथों बाहर का

रास्ता देखना – वाकई कमाल है।" आखिरी शब्द पर उनकी आवाज़ में आदर और प्रशंसा का भाव आ गया, जो केवल विक्रमादित्य के लिए ही हो सकता था।
"मनुष्य राजा की इच्छाशक्ति लोहे की होती है, मेरे स्वामी।"
"हम्म। और इन सबका संबंध वीषादा के खंजर से है।" यक्ष स्वामी ने आश्चर्य से सिर हिलाया। "सर्वज्ञ ने हलाहल की रक्षा के लिए एक मनुष्य को चुना।"
"हे प्रभु, वह नरक की अग्नियों का स्वामी है," यक्ष ने याद दिलाया। "मैंने इंद्र का सामना करते हुए दिति की राक्षसी रचनाओं को उसके हाथों में जलते हुए देखा था। और उसके सलाहकार नौ पवित्र मोतियों के धारक हैं।"
"नरक की अग्नियों का स्वामी, जिसके पास हलाहल भी है।" कुबेर ने यह सुनकर आश्चर्य से अपना सिर हिलाया। "नरक की अग्नियाँ और हलाहल – ये दो ऐसी चीजें हैं जिनकी असुर और देव दोनों ही हमेशा से लालसा करते रहे हैं, पर व्यर्थ। एक मानव राजा के पास ये दोनों चीजें देखकर उन्हें कितना दुख होता होगा! मुझे जरा भी आश्चर्य नहीं है कि शुक्राचार्य और इंद्र ने विक्रमादित्य के पतन की साजिश रचने के लिए अपने मतभेद भुला दिए।"
यक्ष ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, और कुछ देर तक कुबेर मौन रहे, वे अभी भी सोच में डूबे हुए थे।
"तो, जो आपने देखा है, उससे क्या शुक्राचार्य की राजा और उसके सलाहकारों को विभाजित करके नौ मोतियों की शक्ति को तोड़ने की योजना कारगर साबित हो रही है?" उसने पूछा।
जी हां, महाराज। सलाहकारों में से एक राजा की सेवा छोड़कर अवंती के शत्रुओं के पक्ष में चला गया है। और अब, चूंकि विक्रमादित्य वास्तव में गंधर्वसेना का पुत्र है, इसलिए राजा के सौतेले भाई ने राज्य पर शासन करने के अधिकार को लेकर उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया है। मैं महल के केंद्रीय गलियारे में पर्दों के पीछे छिपा हुआ था, जब सौतेले भाई ने राजा को चुनौती दी। मैंने उनकी बहस सुनी और जान लिया कि मानव राजा के लिए इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा। और ऐसा ही हुआ।
"दिलचस्प।" एक गहरी साँस लेते हुए कुबेरा कुशन से उठी और मंडप के किनारे तक चलकर रेलिंग पर झुक गई और साफ पानी को निहारने लगी। "बहुत दिलचस्प।"
यक्ष चुप रहा।

"और वीशादा का खंजर आखिर कहाँ है?" कुबेरा मुड़ा, उसकी आँखें संभावनाओं से चमक रही थीं।
"मुझे नहीं पता, स्वामी जी। यह एक रहस्य है क्योंकि परिषद में कोई भी इसके बारे में कभी बात नहीं करता।"
ठीक है। आप जा सकते हैं।
तालाब के एकांत में, कुबेर राजा और उसके सलाहकारों के बारे में उसे बताई गई हर बात पर विचार कर रहा था। यक्ष जितना अधिक इस बारे में सोचता, उतना ही उसे यह प्रतीत होता कि देव और असुर मानव राजा पर विजय प्राप्त कर लेंगे; कि हलाहल के लिए होने वाले युद्ध में विक्रमादित्य सबसे पहले शहीद होंगे।
उसने फैसला किया कि अब यक्षों के लिए अपनी चाल चलने का सही समय आ गया है।

*

सूरज निकले हुए काफी देर हो चुकी थी, लेकिन पायोशनी नदी के उत्तरी किनारे पर स्थित ऊँची चट्टानों ने उसे छिपा रखा था, जिसके कारण चौकी से नदी तक जाने वाला संकरा रास्ता अभी भी छाया में था। आठ लोगों का छोटा समूह उस रास्ते से गुजरा, जिन पर हेहेया के सैनिक, जो चौकी के भीतर खड़े थे, उत्सुकता से नजर रख रहे थे। वे गर्दनें उठाकर उस दल की आखिरी झलक पाने की कोशिश कर रहे थे जो एक ऐसे प्रयास पर निकल रहा था जो स्पष्ट रूप से निराशाजनक और असफल होना तय था।
आठ यात्री, चौकी के एक नाविक के साथ, नदी पर पहुँचे, जहाँ नाव को एक छोटे से टीले पर खड़ा किया गया था। समूह के दो सैनिकों की मदद से, नाविक ने नाव को पानी में धकेल दिया, और सभी लोग सावधानीपूर्वक नाव में चढ़ गए। युवती के इशारे पर, नाविक ने नाव का डंडा उठाया और नाव को किनारे से दूर धारा की ओर धकेल दिया।
शंकु ने नाविक से नज़रें हटाकर अपने साथ आए छह सैनिकों को देखा, फिर ग्रीष्मा को। छहों सैनिक जवान और उत्साही थे, सैन्य अनुशासन के बेदाग उदाहरण थे, जबकि भगोड़ा बूढ़ा और थोड़ा सुस्त था, नाव के बीचोंबीच उदास बैठा था। उज्जैन छोड़ने के समय से ही शंकु को यह स्पष्ट हो गया था कि ये लोग ग्रीष्मा को पसंद नहीं

करते थे, और बदले में, बूढ़ा डाकू उनसे नफरत करता था। और उससे भी। और उस मिशन से भी जिसमें उसे मजबूरी में शामिल होना पड़ा था।
एक आह भरकर उसने पयोशनी दर्रे और उसके आगे स्थित चौकी की ओर देखा, लेकिन दर्रे पर बने विशाल लकड़ी के द्वार (अंधे राक्षस और पिशाचों के हमले के बाद, जैसा कि चौकी के प्रमुख ने उसे बताया था) पहले से ही बंद थे; बाद में, नाविक को वापस अंदर आने देने के लिए उन्हें थोड़ा सा खोला जाएगा। उसने अपनी निगाहें आकाश की ओर उठाईं, जो हल्के नीले रंग का था और बादलों से भरा हुआ था, मानो बारीक ब्रश की लकीरें हों। यही वह आकाश था जिसे वह पीछे छोड़ रही थी, एक जाना-पहचाना आकाश।
अपनी प्रतिभा का सदुपयोग करो, मेरे बच्चे।
जब वह आशीर्वाद लेने गई थी, तब उस देवदूत ने यही कहा था।
उसके पिता फूट-फूटकर रोए थे, इस डर से कि शायद वे उसे फिर कभी न देख पाएं। उन्होंने स्वेच्छा से जाने के लिए उसे कोसा और राजघराने को ग्रीष्मा के बारे में बताने के लिए खुद को भी कोसा। वे उसके साथ जाना चाहते थे, लेकिन जब ग्रीष्मा ने मना कर दिया तो उन्होंने उसे कोसा।
फिर भी उसने उसे अपना आशीर्वाद दिया था और उससे कहा था कि वह उससे प्यार करता है।
वह उसी आकाश को पीछे छोड़ रही थी।
शंकु ने पलकें झपकाईं और मुड़ी, और इस बार उसका चेहरा सीधे नाव की ओर बढ़ते घने पेड़ों की दीवार की ओर हो गया। पेड़ ऊँचे और एक-दूसरे के करीब उगे हुए थे, और उनके बीच की जगहें अंधेरी और उदास थीं। एक नम और घनी धुंध उन जगहों से होकर गुजर रही थी, धूसर और भूतिया सी, पेड़ों के तनों के चारों ओर लिपटी हुई और पेड़ों के बीच मालाएँ बनाती हुई, ऊपर की पत्तियों से रेंगती हुई और नीचे की झाड़ियों में रिसती हुई, उसकी उंगलियों जैसी लताएँ नाव को इशारा कर रही थीं, उन्हें अंधेरे में खींच रही थीं।
सबसे बढ़कर, वहाँ सन्नाटा छाया हुआ था। बासी और मृत्यु के समान।
कीचड़ से सनी नदी की आवाज़ सुनते हुए, जो नाव के खंभे और पतवार से टकरा रही थी, शंकु निर्वासितों के जंगल को घूर रहा था।

***** समाप्त 3 रा भाग *****

sjeet